LOK SABHA DEBATES

(Tenth Session)



(Vol. XXXIX contains Nos. 41 to 50)

LOK SABHA SECRETARIAT NEW DELHI

Price : Rs. 4 00

CONTENTS

(Fifth Series, Volume XXXIX, 10th Seesion, 1974)

| No. 46—Monday, April 29, 1974 Vassakha 9, 1896 (Saka) | | | | | | | | Columns |
|--|---------------------------|---------------|----------------|--------------|--------|-------|------------|---------------------|
| Obituary Reference Oral Answers to Questions: | • | ı | | | | • | | 12 |
| *Starred Questions Nos. 8 | 73; 87 | 4, 87 | 9, 88 0 | , 882 | and a | 883 | • | . 2-32 |
| Written Answers to Question | ns . | | | | | | | |
| Starred Questions Nos 872, | 875 t | 0 878 | , 881 | and 8 | 884 to | 893 | | 32 4 5 |
| Unstarred Questions Nos. 8. 8538 to 8618 and 8620 t | 446 to to 864 <u>4</u> | 84 4 9 | , 8451 | to 8 | 531, 8 | 533 W | 8536, • | 45—232 |
| Statements correcting Answering dated 25-3-1974 . | ers to ' | USQ | No. 4 | 332 a | nd US | Q No | . 4411 | . 233—3 4 |
| Rs. Adjournment Motion | • | • | | | | | • | . 234-38 |
| Papers Laid on the Table | | | | | | | | . 238—41 |
| Assent to Bills . | | | | • | • | • | • | . 241 |
| Estimates Committee— | | | | | | | | |
| Reports and Minutes—propublic Accounts Committee Reports—presented | | 7 | • | • | • | • | • | . 24142 . 242-43 |
| Committee on Public Under | | • | • | , | • | • | • | |
| Reports and Minutes—property Direct Taxes (Amendment) | | | | • | • | • | • | 24344 |
| (i) Report of Select Comm | | | ented. | | • | • | • | . 244 . 244 |
| Evidence—Laid Business Advisory Committ | · · | • | • | • | • | • | • | |
| Forty-second Report—ad | | • | • | • | • | • | • | . 244—45 |
| | | | | | | | | |

^{*}The sign+marked above the name of a Member in dicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member. 655 L.S.—I

| Matter under Rule 377— | | | | | | | C | COLUMNS |
|---|---------|--------|--------|--------|-------|--------|-----|------------------|
| ported Detection of Secret | Mobile | Radio | Statio | n in A | legha | laya . | | 245—51 |
| Demands for Grants, 1974-75 | | | | | | | : | 251 — 451 |
| Ministry of Home Affairs— | • | | | | | | | |
| | | | | | • | | • | 261 — 73 |
| Shri H. K. L. Bhagat | | • | • | . • | • | | • | 274—82 |
| Shri Jagannathrao Joshi | | • | | • | | • | • | 282-93 |
| Shri R. S. Pandey . | | • | | • | • | • | | 294—30 0 |
| Shri Ishaque Sambhali | | • | • | • | • | • | • | 300-19 |
| Shri Bhagwat Jha Azad | | | | | | | • | 319-28 |
| Shri K. S. Chavda | | • | | | | | ٠ | 329-33 |
| Shri Shashi Bhushan | • | • | • | • | • | • | • | 333-41 |
| Shri Frank Anthony Snri Darbara Singh . | | • | • | • | • | • | • | 3448 |
| Snri Darbara Singh . | | • | • | • | • | • | • | 3 48 54 |
| Shri Piloo Mody . | | | | | | | | 354-59 |
| Shri Dinesh Chandra Gosv | | | | | | | | 35965 |
| Shri Samar Guha | • | • | • | • | • | • | • | 365-73 |
| Shri Kartik Oraon . | • | • | • | • | • | • | • | 373—82 |
| Shri R. P. Ulaganambi | • | • | • | | | | • | 382—88 |
| Shri D. Basumatari . | • | • | • | | | • | | 38894 |
| Shri Anadi Charan Das | | | | | | | | 39599 |
| Shri K. Marak . | | | | | | | | 400-03 |
| Shri Md. Jamilurrahman | | • | • | • | ٠ | • | ٠ | 403—16 |
| Shri Birender Singh Rao Shri Kushok Bakula | • | | • | • | | • | • | 416-19 |
| Shri Kushok Bakula | | • | • | • | • | • | • | 41922 |
| Shri M. Satyanarayan Rao | | | | | | | | 422-24 |
| Shri Uma Shankar Dikshit | | • | • | • | • | • | • | 424-34 |
| Statement Re. Presidential El | ection | | | | | | | 451 54 |
| Shri H. R. Gokhale | | | | | | • | · | 45354 |
| | | | | • | • | • | • | 400-04 |
| Appropriation (No. 2) Bill, 19 | 974—Ini | roduce | d. | | | • | ٠ | |
| Motion to consider- | | • | | | | • | | 45-576 |
| Shri Yeshwantrao Chava | n. | | | | | | 455 | , 46974 |
| Shri Madhu Limaye | | | | | | | | 45564 |
| Shri S. M. Banerjee | | | | | | | | 46569 |
| Clauses 2, 3 and 1 . | | | | • | | | | 476 |
| Motion to pass . | | | | | | | | 476 |
| Shri Yeshwantrao Chav | an . | | | | | | | 476 |
| Re. Half-an-Hour Discussion | | | | | | | | 4006 |

j

I

LOK SABHA

Monday April, 29 1974/Vaisakha 9, 1896 (Saka)

The Lok Sabha met at Eleven of the

[MR. SPEAKER in the Chart]

OBITUARY REFERENCE

MR. SPEAKER Honourable Members, I have to inform the House of the sad demise of Shri G L. Mehta, who passed away at Bombay, on the 28th April, 1974, at the age of 74.

Shri Mehta was a Member of the Assembly in 1947. He Constituent served the country in various capacities and held several important positions with distinction. A parliamentarian, journalist and diplomat, he started his career in the now-defunct Bombay Chronicle as an Assistant Editor. He was our former Ambassador to the United States and showed his diplomatic acumen while holding that office. He had recently retired as Chairman of the Industrial Credit and Investment Corporation of India and the Indian Investment Centre. He was also Chairman of the Bombay Branch of the Indian Council of World Affairs since 1966. He was associated with the Planning Commission, the Hindustan Shipyard and the National Shipping Board, being Member of these bodies. He was awarded the 'Padma Vibhushan' in 1969 for his meritorious service to the nation.

We deeply mourn the loss of this friend. I am sure the House will 656 LS-2

join me in conveying our condolences to the beraved family.

2

The House may stand in silence for a short while to express its sorrow.

(The Members then stood in silence for a short while.)

ORAL ANSWERS TO QUESTIONS

Post of Chief Executive of the S.C.I.

lying vacant

%73. SHRI SHASHI BHUSHAN: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) since when the post of Chief Executive of the Shipping Corporation of India has been lying vacant:
- (b) whether the regional offices of the Shipping Corporation of India have been demanding more autonomy and power; and
- (c) the steps taken or proposed to be taken to check the deterioration in the working of the Shipping Corporation of India?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY SHIPPING AND OF TRANSPORT PRANAB (SHRI KUMAR MUKHERJEE): (a) Shri C. P. Srivastava relinquished charge of the office of the Chairman and Managing Director of the Shipping Corporation of India, on the afternoon of 31st December, 1973. Capt. R. D. Kohli, one of the Executive Directors. was given overall charge of the Corporation from the same date till a new Chairman and Managing Director is appointed by the Government.

- (b) No, Sir.
- (c) Does not arise.

शकि भृष्य : अभ्यक्ष महोदय, मंत्री के दिया से में जानना ग ह कि श्रविकांश पब्लिक सैक्टर में "ढीप तस मैनेजमेंड" चल प्हा है और उस में भं " भाप ने पिछले "उ हाजरानी नियम" के चेयरमैन की बहर भेजा तो उस से पहले इस का प्रबन्ध गरना भावस्थक या ि वहा एक चेयरमै : रे । मै जानना चाहर र कि ऐसा क्यों नहीं किया । घीर इस के भाय-साथ यह भी जानना चाहता ह वि र रकार की एक पौलिसी रही है कि परिसक सैक्टर में वह इस बात की हमेमा काश्मा करेगी कि पांध्सक सैक्टर के लोगों को ही उस में बड़े बड़े स्वान पर नियुक्त विया जाए। इस सम्बन्ध में आप की क्या नाय है ?

बोब्हून कीर परिष्कृत संती (बी क्रमसापति क्रिपाठी): र्थामन् जब के श्रीबारतव जी गये हैं तभी से इस बात पर विचार निया जा रहा है कि शिपिंग कार-पोरेशन शाफ इंडिया बहुत बडी जगह है और बड़ा भारी काम है, व रोडों रुपये की रत्कार की पूजी वहां लर्न हुई है, तो एक याग्य व्यक्ति उस के लिये ढढा जाये श्रीर यही कोशिश की जा रही है। लेकिन इस बीच में वहां का काम चलता रहे इस लिये एनी सस्थान के ही ज एवं सीनियर टैकर्न वल ऐंग्जीक्यूटिय डायपेस्टर पहे हैं, श्री कहली, वह चेयरमैन का काम कर रहे हैं।

पौलिसी की बात यह है 'र जहां तक होता है मुनासिब यही समझा जाता है कि जो लंग प्राथान के हैं वही रखें गा। लंकिन कोई एव निश्चित पौलिसी भई है। क्योंकि जैसा पाम है वैसा देख कर के नियक्ति करने को सावण्यकता होती है।

शा शिक्ष पुष्प : मैं यजी महोदय से जानना चाहता हू कि जहा तक पब्लिक सॅक्टर र मंनेजमेट का प्रमन है उस पर जाने के लिये एक निश्चित नीति तो भाप की

बननी चाहिये, और क्या यह सही है कि पब्लिक सैक्टर में झामतौर पर बड़ी जगह इस्तिवे खाबी रखी जाती हैं कि कुछ माई॰ सी० एस०, भाई० ए० एस० रिटायर होने वाले होते हैं भीर जब तक वह रिटायर नहीं हो जाते वह इसी प्रशिक्षा में रहते हैं कि उन को किसी पव्लिक सैक्टर का वेयरमैन बनाया जाये यहा तो ऐसी स्थिति नहीं है।

भी कललायति जियाठी कम से कम शिविय कोरपोरेशन में यह स्थिति नहीं है कि हम देख रहे हैं कि काई भाई। सी। एस। रिटायर हो रहा है इसलिये उस के लिये जगह खाली रखी जाये। मैं यह बताना हं माननीय सदस्य को ऐनी स्विति बिपिन कोरपोरेशन में नही है।

श्री हरि किशोर लिह : प्रध्यक जी, में जानना चाहता हूं कि जो उच्च मधिकारी भवकाश प्रहण करने वाले होते हैं उसकी सुबना सरकार को कब मिल जाती है ? भीर सरकार उसके सबध में क्यो नहीं पूर्व निम्बय कर लेती है जबकि कोई उच्च स्थान रिक्त नहीं रहता भीर रिक्तता की बजह से कार्य में व्यवधान न बाये ? जैसा माननीय शांश भूषण जी ने कहा है.....

श्राप्यका महोदय . आप प्रश्न कीजिये, लम्बा चौड़ा भाषण क्यो करते हैं ?

भी हरि किसोर सिंह. प्रश्न स्पष्ट है कि रिक्त हं.ने के पूर्व ही उम स्थान पर नियुक्ति क्यो नहीं कर दी जाती है ?

की कललापति किपाठी: मान्यवर, मैंने बताया कि जगह तो खाली नहीं है, श्रोफिश-येटिय चार्ज है ही । लेकिन कोई योग्य व्यक्ति मिल जाये, बहुत बड़ा काम है, बड़ी कैपिटल लगी हुई है, ऐडॉर्मानरट्रेटिव योग्यता भी चाहिये भीर फिर कुछ कमशियल विजनेस लाइक ज्ञान भी चाहिये । तो ऐसे योग्य व्यक्ति को दुढने में थोड़ा समय लगता है।

ः **की हरि किकोर किंदु** : क्या सरकार को नालूम नहीं रहता कि अमुक व्यक्ति अवकाश कहन करने वाला है ? यह तो साल, 6 महीने पहले सरकार को मालूम रहता है।

बी कमकायित क्रियाठीः मालूम रहता है तब तो कोई योग्य व्यक्ति हर वक्त तो अवेलएविल नहीं रहता है।

SHRI VAYALAR RAVI: May I know from the hon. Minister, though we have a policy evolved by Government to build the management cadre in the organisation itself, for example, in the Shipping Corporation of India, whether we have persons to take charge, at the top level, of the Chairman or the Managing Director? If not, why cannot we try to evolve a policy to have such a cadre in the organisation itself instead of searching for someone from outside?

SHRI PRANAB KUMAR MUKHER-JEE So far as the individual organisation is concerned, it is not possible to create a cadre within the organisation itself. So far as public sector undertakings are concerned, perhaps, it is known to the hon Member that the Bureau of Public Enterprises maintains a list of the distinguished persons who can be appointed in top posts of the public undertakings.

Wherever a vacancy arises in any of the public sector undertakings it is the usual partice to have the names of the persons who are in the waiting list of the Bureau of Public Enterprises in a particular category. So far as this particular question of Shipping Corporation is concerned, my senior colleague has already answered that the top post never remained vacant even for one day Somebody was officiating therein.

वी जनसम्ब निष्य : श्रीमन्, मैं मती महोवय से जानना चाहूंना कि वैयरमैन की निवृक्ति के लिये क्या त्रोतीजर है और उस त्रोतीजर के अन्तर्गत वे कब तक वैधरमैन की निवृक्ति कर लेना चाहते हैं।

श्रापक्ष महोदय पूम-पूम कर वही बात मा जाती है।

भी भनकाम निभा मैं प्रोसीजर की बात कर रहा हूं भीर उनका कहना है कि हम चैयरमेन को दूइ रहे हैं। इसलिये दोनों में भन्तर है।

भी कमलापति किया : दूढ कर एपान्हट करना, मान्यवर, यही प्रोसीवर है।

बी ए॰ वी॰ सर्वा में यह जानना चाहता हू कि यह जो वर्तमान चैयरमैंन बे, जिन की तरक्की हो गई है या दूसरी जगह भेज दिये गये हैं, इस भवधि में या उनके समय में कार—पोरशन के काम में जो तरक्की हुई है, तो क्या यह इस बात का बोतर है कि जो मौजूदा लोग वहा पर काम कर रहे हैं, वे भज्छा काम करते हैं भीर इमिलये काम बडा है? तो मैं जानना चाहूगा कि उन लोगों के बीच में से किसी भादमी को सलेक्ट करके नियक्त करने में क्या भापत्त है?

अञ्चल सहोहच पहले भी यह प्रश्न भा चुका है, मामने कौन सा नया प्रश्न पूछ लिया।

SHRI A. P. SHARMA: What is the difficulty in finding out a suitable man from amongst the existing persons?

MR. SPEAKER: The question is not relevant. It has already been asked by Mr. Shashi Bhushan.

Purchase of wheat from Australia

*874. SHRI RAM BHAGAT PAS-WAN:

SHRI M. SUDARSANAM:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether our country had approached Australia for the purchase of wheat from that country; and
- (b) if so, the response of the Australian Government?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHNDE): (a) and (b). Yes, Sir. A small quantity of wheat has been purchased from the Australian Wheat Board.

श्री राम श्रमत पासवान : मैं ग्रापके माध्यम से मंत्री महोदय से जानना चाहना हूं उन्होंने कहा है कि थोड़ा सा खरीद किया है— कि क्या सरकार ने चालू वर्ष में देश में कितना गेहूं पैदा होगा, इसका कुछ श्रदाजा है या उससे हमारे देश की श्रावश्यकता की पूर्ति हो सकेगी या नही ? अगर श्रावश्यकता की पूर्ति नहीं होगी, तो किस देश में श्रीर कितना गेहूं मंगाने का प्रस्ताव है, यह माननीय मंत्री महोदय से जानना चाहुगा ?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: At the outset I would like to appeal to the hon. Members through you that as far as prices and quantities are concerned, I hope, in the national interest the hon. Members will not press for the question because of international implecations.

(Interruptions)

As far as the assessment is concerned we continue to make periodical assessment and final estimates of production of wheat have not still been received. So, it will be difficult to tell about the gap between our requirements and import but we pro-

pose to import some harmattiss, that decision has been taken by Government of India—but the precise quantity will depend on review from time to time.

श्री सटल विद्वारी वाजपेयी: सम्प्रल जी, क्या यह सच है कि हम विदेशों से जो गेहूं खरीद रहे हैं, उसको भारत लाने के लिये पर्याप्त जहाज हमारे पास नहीं है ? क्या यह सच है कि कैनाडा के बन्दरवाहों पर खरीदा हुआ हमारा केंद्र पड़ा है और वहा हमें डेंगुरेज देना पड़ रहा है। भीर लाने के लिये जहाज उपलब्ध नहीं है ? क्या यह स्थित झास्ट्रेलिया में भी पैदा होगी ?

shri annasaheb P. Shinde: A: the moment the wheat which is being imported is mostly the wheat which has been offered by Soviet Union and for that full arrangement have been made for transporting it to India and it is going on almost to schedule. As far as the Canadian wheat is concerned still we have to finalise the whole procedure of purchases though one thing is true that in the international world the vessels are not easily available but as and when we decide to import from that country we shall try to arrange for the necessary vessels.

SINGH SHRI BIRENDER Whether it is a fact that the production of wheat this year is far short of the estimated target of production? Has it come to his notice that some foreign experts have stated that the total wheat production in this country this year will be about 23 million tonnes only. Secondly, Sir, it is necessary that the country knows the price which is being paid to various countries for certain quantity of wheat being purchased. It is also necessary that the farmers in this country know as to what the Government is paying. outside. This is also important toprevent any under-hand dealing by the Government officials who go out to purchase wheat. So, the hon. Minister may tell us as to what is the approximate price of wheat purchased from Australia on landing in India?

ANNASAHEB P. SHINDE: SHRI Sir, as far as the estimates of wheat production are concerned, I am not prepared to take the discouraging view which the hon, Member is taking. Of Course, various estimates are being given by various agencies. My own estimate in wheat production is not going to be less than what it was last year It can be marginally less or marginally more. The reason being though there were not rains in North India yet the production in Gujarat and other areas will compensate the shortfall in production in North India. As far as international prices are concerned, they had gone up to 251 dollars but now the prices are coming down and have come down 151 dollars. Last week there was slight upward trend but there is encouraging downward trend in the international position because of improved production all over the world.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: Sir, he has not answered my question.

MR. SPEAKER: No, no. You want to go much beyond the scope of the question.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: I have specifically asked for the price of the wheat purchased from Australia, which he can easily give.

MR. SPEAKER: When he says that perhaps it may not be in the public interest....

SHRI BIRENDER SINGH RAO: He does not even give the estimate of this year's production. That is not at all difficult to give. That is not outside the scope of the question either.

SHRI SAMAR GUHA: It is a strange thing that he does not like to give the price. It is known or it will be known when Australia will give it to the other countries.

MR. SPEAKER: Perhaps it may not be in public interest to give it.

SHRI SAMAR GUHA: After all, we have this practice in the rules, that when the says that it is not in the public interest, the Speaker has got the right to ask what the public interest involved is.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: May I know from the hon. Minister whether he has got any long-range arrangement with regard to purchase of wheat from outside, that is to say, whether he has any prospective planning for the production targets of each year and whether any long-term agreement has been made so that we may not suffer from year to year because of the shortages in the indigenous production of wheat?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: Since we are a very big country, J appreciate the point made by the hon. Member that perhaps some long-term arrangement could be in our national interest This question was specifically taken up with the Australian Government, but unfortunately the Australian Government themselves have their own difficulties, because they feel that their production last year was very bad and their stocks are not there, and, therefore, they are hesitant to enter into any long-term arrangement, since they have entered into long-term arrangements already with China and Egypt which they are not in a position to carry out fully because of their own difficulty. So, there is some hesitation in the international world to enter into long-term arrangements.

SHRI P. VENKATASUBBAIAH: What about other countries?

SHRI RAMCHANDRAN KADANhow many countries Government have approached for purchase of wheat and what the response from the Governments of those countries is?

MR. SPEAKER: The main question is Very Specific ...

SHRI K. S. CHAVDA: The hon. Minister has already replied about Canada.

MR. SPEAKER. That was a different question. That was about the prices.

SHRI K. S. CHAVDA: Shri Bajpai had already asked about it. I think the hon. Minister is willing to reply.

MR. SPEAKER: I do not object to it, if he is able to give the information. The hon. Member wants to know whether the hon. Minister is in a position to say which other countries were approached for the supply of wheat.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: May I point out that this is really outside the scope of the main question? But if you want me to say something, I can do so.

MR. SPEAKER: I do not come in. It is a matter between the hon. Minister and the hon. Member. If the hon. Minister wants to answer it he can do so.

SHRI K. S. CHAVDA. It is in the interests of the country. Let him answer it

MR. SPEAKER: It is in public interest to answer it. That is what the hon Member says.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: In general, in the world there are only four important countries which export wheat, outside the EEC, and they are the USA, Canada, Argentina and Australia.

SHRI RAMCHANDRAN KADAN-NAPPALLI: May I know whether the imported Russian wheat is not transported from the port?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: That is outside the scope of the main question, because he has asked whether there is some difficulty about unloading of Russian wheat.

RAMCHANDRAN KADAN-NAPPALLI: It is all about imports.

MR. SPEAKER. It is not a question of unloading but it is only a question of loading.

PRF. MADHU DANDAVATE: In: deference to the request made by the hon. Minister not to make any reference to prices in the national interest I shall not make any reference to the prices. But in view of the gapbetween the food needs of the country and the actual production, since it has become very clear that for some time at least import will be necessary, I would like to know from the hon. Minister if his answer to the question is that only small quantities of wheat have been brought from Australia, whether if the imports are to be made from different countries, it would not be advisable, instead of having imports on the repayable basis. in kind which may actually mean more expenditure at a later stage when the prices go up, to get more wheat from countries like Australia or others?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: It is a suggestion for action.

FROF. MADHU DANDAVATE: Action or inaction?

MR. SPEAKER: It is a good suggestion.

Proposal to subside installation of mechanical compost plants

*879. SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

SHRI R. S. PANDEY.

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government propose to subsidise the installation of mechanical compost plants; and
- (b) if so, the broad features thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) Yes, Sir.

(b) A statement is placed on the Table of the Sabha.

STATEMENT

During the Fifth Five Year Plan period, the Ministry of Agriculture propose to give grant to the Muncipal Corporation/Committees or Agro-Industries Corporations to the extent of 33 per cent. of the capital cost for setting up of 45 compost plants, in cities having population of 3 lakhs or above. An outlay of Rs. 6.7 crores has been proposed for assisting the setting up the these mechanical compost plants. In addition, the Ministry of Works and Housing have proposed an outlay of Rs. 10 crores in the Fifth Five Year Plan to assist the municipal corporations on the following items to setting up of mechanical compost plants --

- Financial support for technical personnel in the integrated scheme.
- Non-recurring grant for purchase of trucks, wheel barrows etc.
- 3 Non-recurring grant for improvement of workshop facilities.

- 4. Non-recurring gram for construction of collection sites.
- Non-recurring grant for providing mechanical sieves and other equipment to the remaining 95 class I towns.
- Setting up project formulation Group/project management Group, Survey/investigation and field studies.

Financial assistance to the local bodies is proposed to be provided for the above items, at rates ranging from 25 to 50 per cent. of the computed deficiencies for these items. This is likely to raise the total subsidy element for seting up of compost plants to nearly 50 per cent. The remaining capital cost will either be met by the Corporations themselves or by raising loans from the nationalised banks.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY: Mr. Speaker, Sir, now that there is a great shortage of inorganic fertilisers, and in view of the fact that the amount orpposed to be allotted for the compost plants is only Rs. 6.7 crores, may I know whether the Government will consider the question of increasing this amount, or doubling this amount?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: After the said amount is actually spent, perhaps it can be considered.

SHRI M. RAM GOPAL REDDY: It is mentioned that cities having a population of three lakhs or above are going to be given this subsidy. There are so many cities which are having a population between 20 and 70 lakhs. I want to know whether two or three units will be established in such cities.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: It will all depend for instance for big cities like Calcutta, Bombay, etc., perhaps there would not be need to set up more than one compost processing plant. But after the first plant.

comes into operation, and we get some experience, perhaps this can be considered at that time.

MR. SPEAKER; There is another Member clubbed with this question. Shri R. S. Pandey.

SHRI R. S. PANDEY: Thank you very much.

MR. SPEAKER: He may put his question.

SHRI R. S. PANDEY: I said, "Thank you very much."

MR. SPEAKER: It is very unusual on your part. Now Dr. Ranen Sen.

DR. RANEN SEN: There was a proposal from the Government of West Bengal to instal a mechanical compost plant in Calcutta in order to deal with two things; one, the garbage in the city that has accumulated or is accumulating every day in huge quantities and secondly, to provide manure for the country. May I know whether such a proposal has come from the Government of West Bengal and, if so, what is the reaction of the Government of India to such a proposal?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: We propose to help such proposals by giving a subsidy to the tune of 33 per cent. Acutally, some subsidy would also be coming forward, from the Ministry of Works and Housing. So, almost 50 per cent help will be available from the Central Government to any State including West Bengal for this purpose.

SHRI RANABAHADUR SINGH:
May I know from the Government
whether, in view of the fertiliser shortage and also in view of the proposal
to set up these compost plants, the
Central Government is considering
any legislative measures by which the
garbage that is usually used for the
reclamation purposes in the larger
cities would be stopped from being

used for this purpose and would be diverted towards the manufacture of compost?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: If the concerned State Governments tell the Central Government that some legislative support is required, I do not think that the Government of India will hesitate to extend the necessary support for the State Governments for this purpose.

SHRI A. K. M. ISHAQUE: May I know whether any assessment has been made as to what is the quantum of garbage that accumulates in Calcutta every day and how this garbage is disposed of, and whether it is a fact that the fisheries are being silted by this garbage—

MR. SPEAKER. This question is of a very general nature, and you are asking a very specific question about Calcutta. It is much better you give a separate notice for that.

SHRI A. K. M. ISHAQUE: The scheme that the Central Government talks of is that—

MR. SPEAKER: You cannot put questions which ask for a detailed or statistical information. Do not take advantage of a very large question.

SHRI A. K. M. ISHAQUE: The question is about installation of mechanised compost plants.

MR. SPEAKER: Not in Calcutta but everywhere.

SHRI A. K. M. ISHAQUE: Calcutta is No. 1 city.

MR SPEAKER: I am not sure about it; I think Chandigarh is No. 1.

SHRI A. K. M. ISHAQUE: My second question is: Have the Ministry any plan to use...

MR. SPEAKER: It is not essential that when one question is irrelevant you have a right to ask a second one. Do not lead me to this practice. Please sit down now; you may have a better one next time.

SHRI A. K. M. ISHAQUE: He may answer to the first part of the question; it is very relevant; whether any thought has been given how the garbage of Calcutta is utilised for manure purposes.

MR. SPEAKER: I am still of the same opinion.

श्री हुकम चन्द कछबाय : कितनी राज्य सरकारों ने कचरा भीर मैले पानी से खाद बनाने की योजनायें बनाकर भाषके पास भेजी हैं भीर किस प्रकार की मदद भाष से मांगी है ?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: My senior colleague convened a conference of Ministers concerned with this subject and the Government of India's intention is to help the State Governments to go ahead with the compost making plants, use organic manure etc. Now we have started receiving proposals from the State Government. Exact information is not with me at the moment. Now it is known to all the State Governments and they are processing the projects on this basis. By the end of the Fifth Plan year it is proposed to cover 45 cities with compost manufacture plants and to have 50,000 gobar gas plants in the country as a whole.

Fresh appointments instead of reinstatement of retrenched staff in FCI +

*880. SHRI VAYALAR RAVI:

SHRI RAMACHANDRAN KADANNAPPALLI:

Will the Minister of AGRICUL-TURE be pleased to state:

(a) whether fresh appointments have been made in Food Corporation of India during the last three months

and more than 500 vacancies have not been filled while many have been retrenched; and

(b) if so, the reasons for the fresh appointments and not taking retrenched people?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). The Food Corporation of India has imposed a ban on fresh recruitment and no retrenchments have recently taken place. However, certain fresh appointments on a purely temporary basis had to be made to meet the emergent local requirements mainly at the Ports in the Southern and Western Zones. Retrenched employees who were from the Northern zone could not have been considered for appointment in these distant places only for a short duration.

SHRI VAYALAR RAVI: In the regional offices of the Food Corporation of India, especially in Madhya Pradesh and some other States they have written to the State Government to depute certain people for certain categories. Many vacancies are still there according to the answer to my question. But retrenched people are not appointed to those vacancies. The Minister has assured us that whenever a vacancy arose, they will be taken first. People with three or four years service have been retrenched. When vacancy arises in Kerala and other places why cannot they absorb those people in the vacancies that so arise?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: First of all I should like to submit that no retrenchment is taking place now though it is known to the hon. Member that we have surplus staff; for instance our storage is only 30 per cent of the capacity but we are having 100 per cent staff. In certain ports in the south congestion developed and category 3 staff were required

for two or three months normally. Andhra and Maharashtra Governments have protested that if there were vacancies why cannot recruit local people? Since these posts were temporary for a few months people will have to be recruited locally because if we transfer people from far away places, they say: we have no housing, what are we to do? If there is any clear cut long term vacancy, we can bear this point in mind.

SHRI VAYALAR RAVI: As the Government issued a directive saying: no further appointment, did the Government issue another directive saying: no further retrenchment also.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: I have made it clear that we do not propose to resort to further retrenchment unless some unforeseen factors come up or new situation develops.

SHRI RAMACHANDRAN KADAN-NAPPALLI: Sir, in the context of the new food policy, I would like to know whether the FCI management threatened the workers of retrenchment. I would like to know, what are the concrete proposals before the Government to utilise the services of the labourers to the fullest extent?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: If there are clear vacancies and if new recruitment is to take place, as my senior colleague has assured on the floor of the House, we will give first preference to those who have been retrenched. I would also like to correct the general impression which is prevalent in this regard. These retrenched employees were temporarily recruited for a particular purpose. Despite that, on humanitarian grounds. we have given an assurance that if there is going to be a permanent recruitment for permanent purposes, these employees will be given preference.

SHRI SAMAR GUHA: Sir, I would like to know whether it is a fact that the present Chairman of the FCI

having the background as the Chairman of the Joint Intelligence Committee of the Cabinet Secretariat has developed a propensity to utilise the CBI machinery in dealing with legitimate trade union activities and in this connection. I would also like to know whether it is a fact that he suspended the Joint Manager (Port Operations) Shri P. K. Sen Gupta, Senior Manager, Shri A. K. Das. Assistant Managers, Shri S. M. Biswas and Shri B. Das, since September and their cases have been referred to the CBI on the plea of irregular employment.

MR. SPEAKER: The question is of a general nature. If you want to ask about particular individuals, the proper way is to give a separate question.

SHRI SAMAR GUHA: Their cases have been referred to CBI. This is a preparatory attempt to retrench them. Already, eight months have passed. Still, CBI have not been able to prepare prima facie cases against them. This is against the directive of the Central Vigilance Commission that in such cases, no employee should be kept suspended for more than three months. I would like to know, what steps Government is going to take in regard to these four employees who have been suspended.

MR. SPEAKER: I am very much afraid, this is not covered by this question.

(Interruptions)

SHRI SAMAR GUHA: Their cases have been referred to CBI. That is why I have mentioned that this gentleman has a propensity to utilise the CBI machinery. This is because these people are working with trade union organisations and have a trade union background.

MR SPEAKER: I do not want to interrupt you or prevent you from asking questions But, this question is about retrenchment. You are asking about the Officers who have been suspended and against whom CBI is enquiring.

SHRI SAMAR GUHA: This action is of a vindictive nature with a view to retrench them.

MR. SPEAKER: Dr. Sen, you are really of view that this is covered?

DR. RANEN SEN. Retrenchment is the objective of the FCI organisation. In order to achieve that, they are suspending certain persons. That is the idea.

MR. SPEAKER: These persons have been suspended and investigations are going on in regard to an entirely different matter rather than in regard to retrenchment.

SHRI SAMAR GUHA: Their cases have been referred to CBI on grounds of irregular employment and not on charges of corruption or anything. During the last eight months, CBI has not been able to prepare prima facte cases against them.

MR. SPEAKER: I am not prepared to enter into an argument with you. I better keep quiet. I leave it to the Minister.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: It is a question about retrenchment. He is asking about some suspension.

SHRI SAMAR GUHA: They are very good officers. Because they have participated in the trade union work. they have been suspended on the plea of irregular appointment. Their cases have been referred to the CBI. For eight months the CBI could not frame any prima facie case. According to the standing orders, if no charge is framed within three months, the employee will have to be reinstated.

MR. SPEAKER: I am afraid this is not covered by the main question.

SHRI SAMAR GUHA: Sir, you pull up the Minister. This is not the way of dealing with cases.

MR. SPEAKER: I assure you that if you give a specific question, I will give you full cooperation in bringing this matter before the House. Why do you thrust this in this question?

SHRI SAMAR GUHA: I will give a short notice question.

MR. SPEAKER: So, you are convinced that it is not connected with this.

ं भी अवल सिंह कि: जब नई पालिसी के मुताबिक होलसेल ट्रेडर्स किसानों से माल खरीदेंगे, तो फिर ऐसी सूरत में फूड कारपोरेशन में और लोगों की भर्ती की क्या ब्रावश्यकता है ?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: The hon, Member is asking whether in the light of the new wheat policy there is any need to recruit more people. Sir, it is outside the purview of the main question.

MR. SPEAKER: I am sorry, I did not follow it fully, यह सब,त इसमें नही

भासका है।

की कटल विहारी वाजपेशी: क्या यह सब है कि उत्तर प्रदेश में 1600 के करीब कर्मवारी काम पर से हटाये गये थे और उन्हें काम पर वापिस लिये बिना नई भर्ती हो रही है यदि हा तो इसका क्या कारण है?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: This case of the 800 employees was fully discussed in the House. They were recruited last year purely temporarily for opening some centres when the new khariff policy came in. But when we found that the centres were not functioning properly and that their services were not required, tehey were retrenched. They were recruited only for a specific purpose with the clear understanding that their services would be terminated after three or six months. Since then

we have given an assurance to this House that when any new recruitment is likely to take place, we will give first preference to these people.

SHRI DINEN BHATTACHAR-RYYA: What is the total number of permanent employees in the FCI and how many are casual or recruited through the contractors?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: For specific categories of employees I require notice.

SHRI DINEN BHATTACHAR-RYYA: Is it not a fact that a large number of employees recruited by the FCI are casual employees? In that context, what is the total number of permanent employees and casual or temporary workers?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: First of all, it will not be correct to say that most of the employees who are recruited for the FCI are recruited either as casual or temporary employees because, those who are recruited against certain vacancies or posts, there is no question of recruiting them as casual or temporary employees.

Secondly, as regards the observation which the hon. Member made about retrenchment of 49 or 50 employees in Calcutta, I think, the House should know that some employees were recruited as typists even though they did not know a word of typing. Some money had passed off; some people were involved. Therefore, in consultation with the West Bengal Government and the Public Service Commission. those who were not regard as qualified were retrenched. Fresh interviews were held and those who were qualified were recruited. I do not think the hon. Member should support such things, the mal-practices, which are not in the interest of the country.

SHRI B. V. NAIK: The hon, Minister, in the course of his reply, said

that there is over-staffing in the FCI inasmuch as that as against 30 per cent utilisation of godown storage capacity, there is 100 per cent staffing. He indicated that storage utilisation capacity is one of the criteria. May I know from the hon. Minister what are the factors on the basis of which he says that there is over-staffing? We have been hearing it from the Indian Airlines onwards. This is relevant; it is concerned with retrenchment,

MR. SPEAKER: I have not yet come out with my observation and you say, it is relevant. Who said, "It is not relevant"?

SHRI B. V. NAIK: I was apprehensive, due to past experience.

MR. SPEAKER: The past experience shows that this is also relevant.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: There are well-established norms for that. I do not think anybody can arbitrarily decide whether staff is surplus. There are clear posts against certain specific assignments. Naturally, when there are no clear posts, when the work is not there, the staff is said to be in excess.

SHRI B. V. NAIK: What are those norms? It is better we do not put the question. if we are to receive half answers.

MR. SPEAKER: It is much better!

SHRI SEZHIYAN: In reply to the question put by Mr. Bhattacharyya, the hon. Minister said that certain unqualified persons had been recruited and that it had been found out that some money had passed off. This is a very serious thing. I would like to know from the hon. Minister as to who was responsible for the recruitment of unqualified persons, how much money was passed off as surmised by him and what action has been taken against the persons who abused the powers given to them.

MR. SPEAKER: I think, for casual recruitment, the remark was also casual.

SHRI SEZHIYAN: No. Sir.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: Some trade union workers and some officers of the Food Corporation are involved. They have been suspended. A specific inquiry has been entrusted to the C.B.I. As far as the retrenchment is concerned, the Public Service Commission was consulted and, in consultation with them, the action was taken.

Expenditure on Technical Higher Secondary School at Narela, Delhi

*882. SHRI R. S PANDEY: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state

- (a) whether a sum of Rs. 6 lakhs per year is being spent on running the technical Higher Secondary School of Narela in Delh₁ and the output of this school is only one successful student; and
- (b) if so, the justification for such huge expenditure without any results?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P YADAV) (a) and (b). The Technical Higher Secondary School as Narela Delhi is running a three year course leading to the award of a certificate by the Central Board of Secondary Education, Delhi. In the Board Examination of 1973 for the final year students, the number of successful candidates was one out of 61 who appeared. An expenditure of Rs. 5.32 lakhs on salaries, scholarshipz, tools and materials was incurred on this school during 1973-74 for all the three classes namely 9th, 10th and 11th.

The reasons for the unsatisfactory performance of this school are being examined by the Government in consultation with the Delhi Administration for evolving suitable remedial measures.

श्री राम सहाय पांडे: श्रीमन्, मंती जी ने अपने वक्तव्य में कहा कि उन्हें इस से बडा असन्तोष है और इसी असन्तोष के कारण, अनसैटिस्फैक्ट्री परफारमेन्स के कारण उन्होंने दिल्ली प्रशासन के कन्सलटेशन में कोई उपाय निकालने की कोश्रिश की है। में समझता हूं कि उन्हें सेनोष होना चाहिये—6 लाख खर्च करके एक विद्यार्थी पास हुआ—इतना अन्धेर शिक्षण संस्थाओं में है और आपके नेतृत्व में हैं—में श्रो० नूकलहमन साहब को कह रहा हूं—6 लाख खर्च होने पर एक पास हुआ, अगर 61 पास होते तो शायद साढे तीन करोड़ रुपये खर्च होते। आज हम ने यह सवाल पूछा तो यह जानकारी मिली, यदि नही पूछते तो यदन को कुछ सालूम ही न होता।

म्राप ने 1973-74 के बारे में बतलाया है---में जानना चाहता हूं कि इसके पहले क्या हालत थी भीर यह किस प्रकार का टैकनीकल स्कूल है, उनके खिलाफ क्या एक्शन लिया गया, जो रुपया खर्च किया गया है इसका दायित्व किस पर है ?

भ्राध्यक्ष महोदय : ग्रापका प्रश्न है कि एक कैंसे पास हो गया ?

भी डी॰ पी॰ यावष: शब्यक्ष थी, माननीय सवस्य ने जो चिन्ता व्यक्त की है, मैं भी उन का साथ चिन्तित हूं। जहां तक रिजल्ट का सवाल है, 1971 में भी बहीं विन्ताजनक स्थिति थी, 24 में से 3 पास हुये थे। 1972 में 44 में से 8 पास हुये, 1973 के बारे में बतला चुका हूं कि 61 में से 1 पास हुआ। सइसलिये स्थिति चिन्तानजक है, में खुद इसके लिये चिन्तित हूं और माननीय सदस्य को प्राश्वासन देना चाहता हूं कि जो भी उचित कार्यवाही हो सकती है, हम ने इनीशियेट की है और इसके परिणाम अच्छे होंगे।

बी राज सहाय पांडे: आपने बतलाया कि 1970-71 में भी इसी तरह से हुआ, तब से आप क्या कर रहे थे ?

स्राज्यक्ष महोदय : उस वक्त भी काफी जिन्ता हुई थी ।

भी भटल बिहारी वाजपेयी: अध्यक्ष महोदय, चिन्ता होने के प्रतिरिक्त क्या मंत्री महोदय ने यह पता लगाने का प्रयत्न किया कि शिक्षा संस्थाओं में इस प्रकार की जो गड़बड है— क्या अध्यापक उपयुक्त नहीं है या पाठ्य-क्रम दोषपूर्ण है या छात—चयन ठीक तरह से नहों होता? तीन साल से लगातार यह स्थिति चल रही है मंत्री महोदय की चिन्ता समस्या को हल नहीं कर सकती—इसलिये वे क्या कार्यवाही कर रहे हैं?

श्री डी॰ पी॰ यावव : ग्रध्यक्ष जी, मैंने खुद्बुग्नपने डिपार्टमेंट से—एजूकेशन मिनिस्ट्री से—एक सीनियर प्राफिसर को इस काम के लिये डिप्युट किया है—वह इस को देखेंगे घीर वहा पर जो इन्फ़ा-स्ट्रक्चर ध्रवेलेबिल है,

उसका धच्छे से धच्छा उपयोग की हो--इसके बारे में भी वे प्रपने सुझाव देंगे i

SHRI GIRIDHER GOMANGO; I would like to know from the hon. Minister whether, after spending Rs. 6 lakes if the result is one—the successful candidate is only one—this expenditure is productive or unproductive.

MR. SPEAKER: Productive or unproductive does not matter; the Minister is very much worried about it

SHRI D. P. YADAV: Yes, Sir the expenditure is on the high side....

Costal Ships ewned by Shipping Companies

*883. SHRI DEBENDRA NATH MAHATA:

SHRI LUTFUL HAQUE:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) the number of Coastal ships at present in the country, owned by the Shipping Companies; Company-wise; and
- (b) the percentage of Indian built ships in the Coastal shipping at present?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) A statement indicating the number of Coastal ships at present in the country owned by different shipping companies is laid on the table of the House.

(b) Out of the total of 60 vessels the Indian built ships number 5 or 8.5 per cent of the total.

Statement

| Name of Shipping C | 0. | | | Dry Cargo vessels | Tankers | Passengers cum-cargo | Total |
|------------------------------|----|-----|---|----------------------|---------|-------------------------|-------|
| Shipping Corpn. of India . | | | | 5 | 2 | 5 | 12 |
| Scindia Steam Nav. Co | | | | 3 | - | _ | 3 |
| Malabar Steamships Co | | | | 4 | - | _ | 4 |
| Africana Co. Pvt. Ltd | | | | 3 | | | 3 |
| South East Asia Shipping Co. | | | | 3 | - | _ | 3 |
| Lakshmi Lines Ltd | | | | 1 | | | I |
| Nicobarese Commercial Co | | | | 1 | | - | 1 |
| R.A.J. Lines Ltd | | | | 1 | - | _ | T |
| Collis Lines Pvt. Ltd | | | | r | | | 1 |
| Hind Shipping Agencies . | | | | 2 | - | | 2 |
| Western Star Line Pvt. Ltd. | | | | 1 | | - | 1 |
| Kerala Lines Ltd | | | | 2 | _ | | 2 |
| Cochin Shipping Co | | | | 2 | - | | 2 |
| Damodar Bulk Carriers Ltd. | | | | 1 | | - | 1 |
| Ravindra Shippers | | | | 1 | | | 1 |
| Tolan Shipping | | | | 2 | | - | 2 |
| Mogul Line Ltd | | | | 2 | | 2 | 4 |
| Thakur Shipping Co | | | | 2 | - | | 2 |
| India Steamship Co. Ltd | | | | I | *** | | I |
| Umon of India | | | | I | | 5 | 6 |
| Indoceanic Shipping Co | | | | 1 | | | 1 |
| Nilhat Shipping Co | | | | 1 | | - | 1 |
| Himalaya Shipping Co | | | | 2 | | | 2 |
| Andamans Line | | | | 1 | | | r |
| Great Eastern Shipping Co | | | | | 1 | | 1 |
| Varun Shipping Co | | • | • | _ | 1 | | t |
| | To | TAL | | 44 | 4 | 12 | 60 |

SHRI DEBENDRA NATH MAHATA: I want to know whether the coastal ships numbering sixty owned by different companies are sufficient to meet the demand of our country. If not, what steps are going to be taken? Secondly, I want to know whether the Government have kept in view the fact that Haldia Port will offer new opportnity to Coastal Shipping as regards supply of coal is concerned to the souther and wesetern parts of the country, in order to take over the burden of Railways in respect of coal from Bihar and West movement Bengal?

SHRI PRANAB KUMAR MUKHER-JEE: In fact the present arrangement of the coastal shipping is not quite satisfactory and in view of that we have made arrangements by the end of the Fifth Five-Year plan like this. The tonnage capacity so far as coastal shipping is concerned would be of the order of 6 lakhs G R.T. And in view of that we have already placed orders for and foreign ships. 20 indigenous Secondly, in regard to coal transport from Haldia we have made already. arrangements for transporting coal of about 6.5 million tonnes by the end of 1978-79 by coastal shipping.

SHRI DEBENDRA NATH MA-HATA: Sir, is it a fact that the private sector companies which are building ships are facing great losses due to shortage of shipyards. Are you think-..g of giving them subsidy as is being done in other parts of the world?

SHRI PRANAB KUMAR MUKHER-JEE: Sir, so far as shipping is concernd it is not correct to say that they are incurring losses. So far as shipbuilding is concerned subsidy to the shipyard etc. is being given by the Government.

SHRI DEBENDRA NATH MA-HATA.: Already the hon. Minister stated in the statement that coastal shipbuilding private sector people are facing losses due to shipyards. Is it a fact that all over the world they are given subsidy?

SHRI PRANAB KUMAR MUKHER-JEE: So far as shipbuilding is concerned I have said that they are given subsidy. What I told was about the general shipping business when you asked me about loss.

भी मधु लिमये: ग्रष्टयक्ष महोदय, भारत का इतना लम्बा किनारा है, लेकिन मती महोदय के बयान के श्रनुसार सिर्फ 12 पैसेन्जर कम-कार्गों जहाज चल रहे हैं। क्या मत्री महोदय इम बात की श्रीर ध्यान देगे कि पश्चिमी किनारे पर—मैंगलोर श्रीर बम्बई के बीच, जहां रेलवे लाइन नहीं है, मधिक पैसेन्जर जहाज चलाने के बारे मे सरकार कोई ब्यवस्था करेगी

श्चर्यक्ष महोक्य: यह नो श्रापने श्रलेहदा. सवाल कर दिया है।

श्री मधु (लन्ये : यह बिल्कुल रेलेबेन्ट सवाल है, सिर्फ 12 जहाज है ग्रीर इतना लम्बा किनारा है।

श्री भटल विहारी वाजरेवी : किनारे का मामला है, इसलिये भासकता है। भी मधु लिसवे : विलकुल ग्रा सकता है, 12 जहाजो का मामला है।

प्रध्यक्ष महोक्य : क्योंकि किनारा लम्बा है इसलिये ठीक है ।

भी मधु लिमये: इर्सालये कि 12 जहाजों से काम नहीं चल सकता है।

SHRI PRANAB KUMAR MUKHER-JEE: We are already considering this.

MR. SPEAKER. It is a good suggestion for action.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: In view of the basis approach of the Government of India to have more and more self-reliance.

MR. SPEAKER: Please make your question short.

SHRI B. K. DASCHOWDHURY: I have seen the statement of the hon Minister in which it has been stated that out of sixty ships which are manufactured by various shipping companies, only 12, that is 8.5 per cent of the ships, are being indigenously built.

I would like to know from him, in view of this approach of the Government to be more and more self-reliant and to have more and more ships, will more ship building yards for construction of ships be permitted? What happened to the proposal to Haldia Shipbuilding yard so that you may have more and more ships?

SHRI PRANAB KUMAR MUKHER-JEE: I have answered this question many times on the floor of the House and, in fact, we are trying to augment our indigenous ship building capacity. As a result of that, I have already mentioned that 12 ships we are going to have on the coastal shipping from the Hindustan Shipyard which is hundred per cent indigenous.

MR. SPEAKER: Now, Question Hour is over.

WRITTEN ANSWERS TO QUESTIONS

F.C.I. Employees Prosecuted and Reinstated

*872. SHRI V. MAYAVAN:

SHRI P'M MEHTA:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) how many Food Corporation of India officials whose cases are forwarded to the C.B.I. have been prosecuted so far:
- (b) whether any departmental action was taken against some employees found guilty of corruption charges; and
- (c) how many such employees were re-metated?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) 143 employees of the Food Corporation of India have been prosecuted by the C.B.I. (State Police so far.

- (b) Yes, Sir.
- (c) In all, 649 employees of the Corporation were placed under suspension. Of them, 345 have since been re-instated on various grounds such as acquittal by Courts, finalisation of departmental proceedings and as a result of periodical review of their cases. An employee removed from service as a result of a departmental enquiry was re-instated when on appeal the penalty imposed was reduced to withholding of two grade increments.

Regular Shipping Service between India and Mauritius

•875. SHRI S. A MURUGANAN-THAM: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether Government have examined the feasibility of introducing a regular shipping service between India and Mauritius; and
- (b) if so, the facts thereof? 655 LS-3

THE MINISTER OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI KAMLA-PATI TRIPATHI): (a) and (b) The Shipping Corportion of India is already operating a cargo service to Mauritius from East and West Coasts of India. This is a promotional service Four sailings are planned during the current year.

तेल भीर तिसहन निगम की स्थापना

*876. डा॰ लक्ष्मीनारायण पांडेय क्या कृषि मंत्री यह बनाने की क्रपा करेगे कि

- (क) किन-किन राज्य सरकारों ने खाद्य नेल और निलहन निगम की स्थापना का प्रस्ताव किया है : और
- (ख) सरकार ने इस सर्वध में क्या कार्यवाही की हैं ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री अध्या साहिष पी० शिन्दे) : (क) ऐसा निगम स्थापित करने की आवश्यकना ममय-ममय पर प्रकट की गई है । लेकिन इस मंबंध में विशेष रूप में मुझाव गुजरान सरकार से ही प्राप्त हुआ। था ।

(ख) भागत मरकार ने खाद्य तेल ग्रीर निलहन निगम की स्थापना करने की बात सिद्धान्त रूप में स्वीकार कर नी है। इसके न्योरे तयार विये जा रहे है।

Report of National Commission on Agriculture on Small Farmers and Marginal and Agricultural Labour

*877 SHRI S. N MISRA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to strate.

- (a) whether Government have considered interim report of the National Commission of Agriculture on orientation of programmes of Small Farmers and Marginal Farmers and Agricultural Labourers Development Agencies; and
 - (b) if so, with what result?

THE MINISTER OF STATE IN THE AGRICULTURE MINISTRY OF (SHRI B. P MAURYA): (a) Yes, Sir

(b) The main recommendations of the National Commission on Agriculture in the Interim Report on Reorientation of Programmes of Small Farmers, Marginal Farmers and Agri-Labourers Development Agencies have been accepted by the Government of India and incorporated in the programmes for the benefit of Small Farmers. Marginal Farmers and Agricultural Labourers to be implemented during the Fifth Five-Year Plan.

दिकम विश्वविद्यालय क्षेत्र में जिमी-मेग्नेटिक प्रयोगशाला की स्थापना

*878 भी फुलचन्द्र वर्गाः क्या शिक्षा समाज कल्याण और संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेगे कि

- (क) क्या भारत सरकार ने ग्रन्तर्राष्ट्रीय जिब्रो-मेग्नेटिक सोमाइटी के सहयोग स विक्रम विश्वविद्यालय, उज्जैन (मध्य प्रदेश) के प्रांगण में एक जिथ्री-मेग्नेटिक (भ्-चुम्बकीय प्रयोगशाला स्थापनि करने का निर्णय किया है अगेर
- (ख) यदि हा. तो इस संबध में मुख्य बाते क्या है ?

शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मंत्री (प्रो० एस० नुरुल हसन) (क) ग्रीर (ख) : विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा भेजी गयी सूचना के अनुसार, भारतीय भू चम्बकीय संस्थान, बम्बई के निदेशक ने विश्वविद्यालय प्रागण में एक ग्रस्थायी भ-च्म्बकीय प्रयोग-शाला की स्थापना करने हेत् ब्रावश्यक सुविधाब्रो की व्यवस्था करने के लिये जुलाई, 1973 में विश्वविद्यालय को लिखा था । विश्वविद्यालय इससे महमत हो गया और तब संस्थान के श्रधिकारियों ने स्थान के उपयुक्त होने की द्विट में उसका सर्वेक्षण किया ।

Centre for Study of Developing Societies

- *881. SHRI RAMAVATAR SHASTRI Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:
- (a) whether the Centre for the Study of Developing Societies a beneficiary of funds from U.S. Foundation, is seeking affiliation with Delhi University:
- (b) whether this Centre was not given affiliation by the Jawaharlal Nehru University; and
- (c) whether Government have investigated into the sources of funds and other activities of the Study Centre and if so, the findings thereof?

THE MINISTER OF EDUCATION. SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) to (c) The Centre for the Study of Developing Societies is being supported by an annual maintenance grant of Rs 2.5 lakhs by the Ministry of Education and Social Welfare since July, 1967 The Centre also gets project grants from other Government departments and the Indian Council of Social Science Research. According to the information furnished by the Centre, it does not receive any finanassistance cial from anv Foundation.

The Ministry of Education and Social Welfare had approached the Jawaharlal Nehru University to agree to merge the Centre with the University but the terms offered by the University for merger were found unacceptable to the Centre. The proposal, therefore, did not materialise. The Delhi University has been requested to take over the Centre as a maintained Insti-. tution. The matter is under consideration of the University.

The working of the social science research institutions receiving grant from the Government of India is reviewed periodically. In1971, the Government appointed a Visiting Committee to review the work done by the Centre. The report of the Committee indicates that the Centre has done a 'remarkable piece of work in research in political science and related disciplines'.

Imposition of Compulsory Levy by Gujarat on Groundnut Oil

*884. SHRI P. M. MEHTA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether attention of the Union Government has been drawn to the press report dated the 3rd April, 1974 that due to failure of the foodgrain procurement policy, the Gujarat Government is considering imposition of a compulsory levy at least on ground-nut oil to create buffer stock;
- (b) if so, whether Government efforts to procure wheat, paddy, and bajra have not met with even partial success and the groundnut oil makers are not in a mood to honour their commitmnet to give 30,000 tonnes of oil as voluntary levy; and
- (c) what steps Government propose to take in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) Certain press reports about the comparatively low pace of procurement of foodgrains in Gujarat and also about a proposal said to be under consideration of the Gujarat Government for imposition of compulsory levy on groundnut oil to create a buffer stock have come to the notice of the Ministry.

(b) The State Government have reported that the procurement of paddy and coarse careals during 1973-74, though higher than in the previous years, has fallen short of the target due to such factors as damage caused to the bajra crop by excessive rains

towards the harvesting time, tendency on the part of producers and traders to hold stocks, reduction in trader's levy on bajra and a prolonged political agitation in the State. In the case of wheat, the 1974-75 marketing season has just started and already 2183 tonnes have been procured. The State Government have informed that there is no commitment by groundnut oil millers to give any specific quantity of oil to them.

(c) The State Government have informed that they are prosecuting those who have failed to give paddy levy. They do not anticipate any difficulty in the procurement of wheat

No compulsory levy on groundnut oil is envisaged by the State Government. The Central Government are not in favour of levy on groundnut oil and have already advised the State Government accordingly after seeing the press reports.

Commercial Production of Oil from Sunflower

*885. SHRI DHAMANKAR: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether steps are being taken for commercial production of oil from sunflower in the country in order to meet the increasing demand for edible oils and shortage thereof; and
- (b) if so, the progress made in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) Yes. Sir.

(b) The commercial cultivation of sunflower has been taken up from 1972-73 under a Centrally Sponsored Scheme. An area of about 1.18 lakh hectares was covered during 1972-73 and the expectation is that this might have gone up to 2.50 lakh hectares during 1973-74.

Target of Coastal Dry Cargo Shipping Tonnage

*886. SHRI SAKTI KUMAR SAR-KAR: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state the target of coastal dry cargo shipping tonnage during the Fifth Plan period?

THE MINISTER OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI KAMLA-PATI TRIPATHI): The Fifth Five Year Plan target for dry cargo shipping has been proposed at 6 lakhs grt.

Reorganisation of Government Museums

*887. SHRI G. Y. KRISHNAN: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government propose to reorganise the Government museums in the country; and
- (b) if so, the main features of the proposal?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI **YADAV**): (a) and (b). Government do not propose to the Central Museums organise shifting any section from one museum to another However, the recommendations of the Central Museums Review Committee for improved functioning of the Central Museum, viz. National Museum, New Delhi Jung Museum. Hyderabad and Indian Museum, Calcutta, are being implemented subject to the constraints of financial allocations.

Strike in Delhi University *888. SHRI HARI SINGH:

SHRI M. M. JOSEPH:

Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether Departments and administrative offices of Delhi University were paralysed in the first week of April, 1974 on account of a token strike and if so, the reasons for the said strike:
- (b) whether any charter of demand had been submitted by the employees or any other organisation and if so, the main features thereof; and
- (c) the action taken to fulfil the demands?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) According to the informtion received from the University of Delhi. a token strike was observed by the Delhi University College and Karmachari Union on 3rd April, 1974. However, some of the teaching departments of the University did function. The token strike was observed for early implementation of the Third Central Pay Commission's recomendations for the University and college employees.

- (b) There was no other charter of demand from any other organisation.
- (c) The University Grants Commission had appointed two Committees to make recommendations regarding revision of pay scales of (i) class IV and ministerial staff and (ii) technical and laboratory staff including the staff of the library, press, medical colleges and hospitals, PWD and farms etc., respectively in Central Universities in the light of the recommendations made by the Third Central Pay Commission The first Committee submitted its recommendations in respect of certain categories of posts. which have since been approved by the University Grants Commission and Government. The recommendations of this Committee in regard to the remaining posts and the recommendations of the second Committee are awaited.

नहुं की नई बच्चली नीति का भूत्यों पर प्रमाय

889. भी शंकर बवाल सिंह : क्या
कृषि मत्री यह बताने की कृषा करेगे कि गेहूं
के संबंध में नई सरकारी नीति की घोषणा
के बाद विभिन्न राज्यों में मूल्यों का उतारबहाव किस रूप में हुआ है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री प्रज्या साहित पी० शिल्डे) नई नीति की घोषणा करने के बाद बिहार, गुजरात, हरियाणा, पंजाब और उत्तर प्रदेश में गेहू के मूल्यों में 2 से 38 रुपयं प्रति क्विटल की गिरावट और मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र और राजस्थान में 2 से 29 रुपये प्रति क्विटल की बिंद हुई है। कर्नाटन में मूल्य स्थिर रहे।

New Type of Fertilisers evolved at Food Research Centre, Jamshedpur

*890 SHRI JAGANNATH MISHRA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state.

- (a) whether 'Sanjeevani' a new type of fertilizers has been developed by American experts of the local food research Centre Jamshedpur, and
- (b) if so, the facts regarding its

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE).

(a) and (b) The Food marketing Centre of Xavier's Institute, Jamshedpur have taken up grinding of indigenously available basic slag and have branded it as "Sanjeevani". The basic slag, which is a by-product of the steel plants, can be used profitably in acid soils as a soil conditioner and as a source of phosphate.

Meeting of Dr. Norman E. Borlaug with Minister of Agriculture

*891. SHRI N. SHIVAPPA:

SHRI D. D. DESAI-

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether agricultural Scientist Dr. Borlaug had met him on 11th March 1974 at New Delhi.
- (b) if so, whether he had given him a first hand account of the crops in the various states of India;
- (c) whether he had urged the Central Government to rush supplies of diesel and fertilisers to farmers of states, and
- (d) if so Governments action thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) to (1) Dr N. E Director of the Wheat Improvement Programme of the International Maize and Wheat Research Centre, Mexico. called on Minister of Agriculture on March 11, 1974. He gave his impressions of the wheat crop he had seen in several parts of India. He mentioned that crops in peninsular India and Madhya Pradesh looked excellent and were free of diseases to him the crops in Punjab, Haryana and Western Uttar Pradesh were also good but they are likely to suffer if adequate quantities of diesel and electricity were not available to run the tubewells While he suggested the supply of more diesel, he did not mention about rushing fertilizers to Punjab and Haryana but stressed in general about the need for global action in improving fertilizer availdeveloping to countries. Minister appraised him of the steps already taken to assure supplies of diesel to the maximum extent possible to farmers in these States

Capital outlay for Ship Building Industry

*892. SHRI S. N. SINGH DEO: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to gtate:

- (a) whether any capital outlay has been made for ship building industry for 1974-75:
- (b) if so, main features of the outlay; and
- (c) whether no amount has been sanctioned for the development of shipyard in Haldia and if so, the the reason therefor?

THE MINISTER OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI KAMLA-PATI TRIPATHI); (a) Yes, Sir.

(b) The following capital outlays have been made for ship building during 1974-75:—

(Rs. in lakhs)

| | • | |
|------|--|---------|
| i. | Investment in Hindustan Shipyard Limited | 180.00 |
| iı | Loan for Dry Dock Project in Hindustran Shippard Ltd | 25 00 |
| iii. | Loan for Cochin Ship- yard Limited | 2000.00 |
| iv. | Subsidy for ship-building. | 140.00 |
| v. | New Shipyards . | 30.00 |
| vi. | Central Marine & Research Organisation | 75.00 |
| | | 2450.00 |
| | | |

(c) A sum of Rs. 50 crores has been provided for the establishment of new shipbuilding yards during Fifth Plan period. The Report of the Techno-Economic Working Group, set up to evaluate both technically and economically various sites recommended by the State Governments (including Haldia) and to indicate the types and sizes, which can with advantage be constructed at the sites recommended has been received and is under active

examination. No final decision has so far been taken with regard to the locations of new shippards in the country.

Cultivation of New Strains of Minor Millets by Adivasts of M.P.

*893. SHRI . RANABAHADUR SINGH: Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state:

- (a) the new strains of improved minor millets like Kodon, Kutki Sawan and Mejhari that the I.C.A.R. has recommended for cultivation by Adivasi farmers of Madhya Pradesh for the coming reason;
- (b) how do the yields of these new strains compare with the traditional seeds so far being used, and
- (c) which research station has provided the data on these new strains and if so, data available and the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B P. MAURYA): (a) to (c). Sarda (Ragi) and Arjuna (Setaria) two improved varieties of minor millets have been recommended for cultivation in Madhya Pradesh. The varieties E 28. E 4840 (Regi) IP 606, IP 600, IP 19 and IP 22 (Paspalum); Isc 480, Isc 703 and SR 118 (Setaria) and IPM 1006 and IPM 307 (Panicum) have also been found to be promising.

These varieties have been tested at several locations in the millet growing areas in the country under the All India Coordinated Millet Improvement Project. In Madhya Pradesh, tests were conducted at Dindori, Indore and Gwalior. The Millet Specialist of the Govt. of Madhya Pradesh is in-charge of the yield evaluation trials at Dindori, Indore and Gwalior. The yield data of these varieties are given in the Statement.

STATEMENT

Prom sing new varieties of minur millets, identified during Kharif 1970 and 1971 as a result of trials conducted at several location;

| Crop | Varieties | Mean grain yield/quintal hectare | No of locations where trials were conducted | |
|--------------------|--|---|---|--|
| Ragı (Meruwa) | IE 28 EC 4840 PR 202 PR 722 CO 8 (Lcoal) | 24 0 22 68 30 01 30 39 20 6 | 13 | |
| Paspalum (Kodo) | IPS 49 IPS 92 IPS 158 IPS 600 IPS 606 Niwas-1 | 13 3 42 9 12 7 12 9 13 0 14 09 | 7 | |
| Setaria (Kutki) | Isc 480 Isc 703 SR 118 Aryuna | 17 1 16 0 16 5 12 6 | 10 | |
| Panicum (Sawan) | IPM 307 IPM 1006 Dindori-1 | 7 87 11 07 4 83 | 5 | |

Promotion of Diploma Holders as Assistant Engineers

8446 SHRIS D SOMASUNDA-RAM

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state

(a) whether about 300 diploma holders were promoted to the post of Assistant Engineers for which minimum qualification prescribed is Degree in Engineering, ignoring many Engineering Graduates with 10 or more years of service as Junior Engineers in the Department who are recruited in the interest of the efficiency of the

Department as replied to USQ. No 1807 on the 23rd November, 1970, and

(b) the reasons for not operating the existing recruitment rules 3(b) read with part IV to redress the grievances of Engineering Graduates?

THE MINISTER OP STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA) (a) Yes, about 300 non-graduate Junior Engineers have been promoted as Assistant Engineers on the basis of the Common Seniority list of both graduate and non-graduate Junior Engineers

The minimum qualification of a degree in engineering is required only for direct recruitment to the post of Assistant Engineer. For promotion to that grade, no such qualification has been prescribed.

The cadre of Junior Engineer in the C.P.W.D. consits of both graduate and non-graduate engineers and promotions have been made from the common seniority list of these two groups of officers on the basis of merit cumseniority. There is no question of ignoring the claims of graduate Engineers. Those Graduate Engineers who were within the zone of consideration and were included in the select list by the Departmental Promotion Committee, were also promoted.

(b). Rule 3(b) read with part IV of the Recruitment Rules for Central Engineering Service Central Electrical Engineering Service, ClassII deals with appointment of temporary engineers temporary Section Officers (now Junior Engineers) as Assistant Engineer in consultation with the Union Public Service Commission. All the senior graduate engineers are permanent section officers (1e. permanent Junior engineers). To ignore them and to open a channel for only the temporary ones will not be desirable.

Effect of Power shortage in Agricultural Sector of Andhra Pradesh

8447. SHRI Y. ESWARA REDDY:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state how far powershortage has affected agricultural sector in Andhra Pradesh?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): No survey has been made in Andhra Pradesh to assess the effect of power shortage on agriculture sector during 1973-74. In actual practice it is very difficult to isolate the precise effect of power or agricultural production as the level of agricultural production in a particular year depends on a number of factors such as weather, supply

of irrigation water, use of important inputs like fertilizers etc.

Recommendations of Third Pay Commissions in respect of Drawing Teachers of Delhi Schools

8448. SHRI HARI SINGH:

Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Third Pay Commission has not recommended any pay scale for the drawing teachers, Grade III in Delhi who are in the Grade of Rs. 220—430:
- (b) whether the representatives of these teachers had submitted memoranda to the Deputy Education Minister on 20th April, 1973, 12th July, 1973 and 26th December, 1973 demanding T.G.T. scales on the principle of equal pay for equal work and the representatives of this Association had also had talks with the Joint Education Adviser on 9th August, 1973; and
 - (c) if so, the action taken thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D P YADAV) (a) The Third Pay Commission has recommended a pay scale of Rs. 425-640 for Headmasters, Primary Schools, who are also in the pay scale of Rs 220-430. For the other school staff like Physical Education teachers, Art and Craft teachers, and Librarians working in the schools, suitable revised scales, according to the recommendations of the Third Pay Commission, have to be fixed after taking the existing relativities or parities into account. The revision of pay scale of Drawing Teachers Grade III who are in the pay scale of Rs. 220-430 will also be decided upon in the light of recommendations of the Third Pay Commission.

(b) and (c). Yes, Sir. The matter is under consideration in consultation with Delhi Administration.

Import of Soyabean Oil from U.S.A.

40

8449. SHRI M. KATHAMUTHU:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government have decided to import Soyabean oil from U.S.A.; and
- (b) if so, the broad outlines there-of?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P MAURYA): (a) and (b). Recent purchases of edible oils from abroad include 10,000 tonnes of soyabean oil of American and or Western European Origin, at \$595 per tonne, c. & f., for shipment in July August, 1974.

Promotion of the Junior Engineers to Assistant Engineers in C.P.W.D.

8451. SHRI S. D. SOMASUNDA-RAM:

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether the proposed Departmental examination by less competent authority than the university authorities for the promotion of the Junior Engineers to Assistant Engineers in C.P.W.D. would further aggravate the situation of the underemployed Engineering Graduates who are now being treated equivalent to the Diploma Holders in service matters as per Third Pay Commission recommendation; and
- (b) if so, what are the other proposals under consideration for the promotion of Junior Engineers?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHI OM MEHTA): (a) and (b). No

final decision has been taken so far on the question of filling up certain vacancies in the grade of Assistant Engineer in the C.P.W.D. on the basis of a limited Departmental competitive examination. The question as to which authority should conduct the examination will be decided only after a final decision in regard to this method of filling up of the vacancies at the level of Assistant Engineer, is taken.

Recruitment of only First Class Graduate Engineers in C.P.W.D.

2452. SHRI S. D. SOMASUNDA-RAM: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether the Third Pay Commission has recommended to withdraw the six advance increments hithertogiven to the Engineering Graduates working in C.P.W.D. as it amounts to under-utilisation of these Engineers;
- (b) whether in view of the availability of a very large number of Graduate Engineers including first class Graduate Engineers for selection as junior engineers, the Engineer-in-Chief of C.P.W.D. had issued instructions for restricting recruitment to only First Class Graduate Engineers;
- (c) whether the Diploma holders are promoted to higher post while First Class Engineering Graduates with more than 10 years service are available in the department; and
 - (d) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) Yes.

(b) The Central Public Works Department needs some Graduate Engineers in the grade of Junior Engineer

also. In 1968, the department noticed that it was rather short of good graduates at that level. Instructions were secordingly issued by the department to the Appointing Authorities to give preference for recruitment of Junior Engineers, to First Class Engineering Graduates. The position has since changed as recruitment of Junior Engineers is now being made on the basis of an All India Competitive Examination for which the minimum qualification prescribed is diploma.

(c) and (d). Till November, 1971 promotions to the grade of Assistant Engineers was made from Graduate Junior Engineers and Non-Graduate Jumor Engineers in the ratio of 1:1 in accordance with the quotas adopted in the year 1955. The Delhi Court in its judgment dated November, 1971 in the writ Petition filed by Shri M. Ramayya and others have held that the said quotas have not been properly and effectively determined. In view of this, promotions to the grade of Assistant Engineers are now made on the basis of meritcum-seniority from a common seniority list of Junior Engineers irrespective of whether they are graduates or diploma holders. As a large number of non-graduate Junior Engineers are senior to graduate Junior Engineers in the combined seniority list, majority of Junior Engineers promoted after the 5th November, 1971 to the grade of Assistant Engineer belong to the former category.

Pay Scales of Artists in C.H.D.

8453. SHRI PAOKAI HAOKIP: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Artists working in the Central Hindi Directorate reached the maximum of their old pay scales six to ten years back;
- (b) whether the pay of these Artists have been fixed at the maximum in the revised pay scales as recommended by the Third Pay Commission; and

(c) the future prospects of these young Artists who have still to serve 20—25 years more in the Government of India?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPART-MENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) to (c). The two artists working in the Central Hindi Directorate were recruited in 1961 and 1963 respectively and reached the maximum of their original scale of pay in 1966 and 1968. After the revision of the pay scales of artists on the recummendations of the Third Pay Commission. their pay has been fixed at the maximum of the higher revised scale. These artists have been recruited for their specific professional requirements, and at present no higher posts in their field of specialisation have been sanctioned in the Directorate.

Maintenance and Safe Custody of Answer Books by Board of Secondary Education, Delhi

8454. SHRI N. P. YADAV: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 3398 on 18th March, 1974 regarding maintenance and safe custody of answer books by Board of Secondary Education, Delhi and state:

- (a) reasons for not laying a copy of the Manual of Rules and Regulations of the Central Board of Secondary Education, Delhi on the Table of the House;
- (b) practice followed by the Board in this regard during the past three years;
- (c) since when the period of three months for preservation of the Answer Books has been introduced and the special reasons warranting such departure from the past practice; and

(d) the name and designation of the officer entrusted with the disposing of the used Answer Books of the Examination held in March, 1973 and whether he had ensured that there was no disputed case in the lot?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D P. YADAV): (a) The relevant rule No. 10 (vin) of Section IIfi Chapter VII of the Manual of Rules and Regulations of the Central Board of Secondary Education regarding maintenance and safe custody of answer books had been quoted in to in reply to part (a) of Question No. 3398 However, a copy of the Manual has been supplied to the Library of the Lok Sabha Secretariat.

- (b) The used answer-books were destroyed soon after the expiry of 3 months of the date of declaration of the results of examinations.
- (c) The rule for destroying answerbooks after a period of 3 months from the date of declaration of the result has been in force since 1965. There has been no departure from this past practice.
- (d) The Secretary, Central Board of Secondary Education, was an incharge of this work. Before destroying the answer-books. it was ensured that there was no disputed case in the lot

Copying Answers in Higher Secondary Examinations in Delhi

8455. SHRI K. LAKKAPPA. Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

(a) whether recently two candidates appearing in the Higher Secondary Examination at the Government Boys'

- Higher Secondary School, Nauroji Nagar, New Delhi were caught by some high Officer during his surprise visit of the Centre as they were found copying answers reported to have been made available to them by their teachers with the connivance of the invigilators;
- (b) whether these boys were let off at the intervention of the involved teachers and an official of the Education Ministry, but later their answer papers have been sealed:
- (c) the names of the involved teachers as also the official of the Ministry;
- (d) whether one of the teachers involved in this case already stands debarred by the Board; and
- (e) if so, what action Government propose to take against the invigilators, teachers and the official of the Ministry?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION SOCIAL WELFARE AND IN THE DE-PARTMENT OF CULTURE (SHRI D P. YADAV): (a) Two cases of use of unfair means by students taking their examination at the Government Boys Secondary School, Higher Nauroix Nagar, Centre, were reported to the Central Board of Secondary Education by the Centre Superintendent No. candidate was, however, caught by any higher officer during a surprise visit of the Centre.

- (b) No, Sir. The boys were not let off but their cases were reported to the Central Board of Secondary Education Their answer books were sealed and forwarded to the Board and necessary action is being taken by the Board, as per their rules.
- (c) to (e). In view of reply to part (b) the question do not arise.

Home to accommodate Aged, Infirm, Ailing and Physically-handicapped Freedom Fighters

8456 SHRI M D. JAMILURRAH-MAN Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state

- (a) if and when the Home and/or Health Ministry approached his Ministry for sparing a building for a Home to accommodate the Aged, Infirm, Ailing and Physically-handicapped Freedom fighters, and
- (b) action so far taken to provide it?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MINI-STRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA) (a) and (b) In February, 1974, the Ministry of Home Affairs approached the Directorate of Estates for allotting suitable accommodation for starting a temporary Home for Freedom Fighters Two type V houses at Band Roard were offered. but the Ministry of Home Affairs did not find them suitable asked for two other houses The matter is under consideration

कुछ चुनी हुई रूसी पुस्तको का भारतीय भाषाची मैं चनुवाद ग्रीर प्रकाशन

- 8457. भी चन्त्रूलाल चन्त्राकर न्या शिक्षा, समाच कल्याण और संस्कृति मत्री यह यह बताने की कृपा करंग कि
- (क) क्या वर्ष 1970 मे भारत रूप संपुक्त बोर्ड ने कुछ चुनी हुई रूमी पुन्तको का भारतीय भाषाओं में अनुवाद तथा प्रकाशन करने का निश्चय किया था, और

(ख) यदि हा, तो उनकी सक्या कितनी है भीर प्रकाशित होने वाली पुस्तको की पाठ्य सामग्री क्या है ?

किका और सवाब कस्याय मंत्रास्य तथा संस्कृति विभाग में उपमंत्री (भी ठी० थी० यादव): (क) चुनिन्दा रूसी पुस्तको के भारतीय भाषाग्रो मे ग्रनुवादो के प्रकाशन के लिये रूसी जानने वाले भारतीय विशेषको तथा रूसी विशेषको के बीच सहयोग सबग्री प्रमाव पर बोर्ड की जून, 1970 में हुई बंठक मे विचार किया गया था। तथापि वाई ठोग योजना तैयार नहीं की गई थी,

(ख) प्रश्न नही उठता ।

सध्य प्रदेश में भूमि खरीवने तथा मकान बनाने के लिए गरीबो की केम्ब्रीय निधि

8458. भी चन्द्रताल चन्द्राकर: क्या निर्माण भीर भावास मन्नी यह बताने की कृपा करेगे कि:

- (क) क्या मध्य प्रदेश सरकार ने वर्ष 1973-74 में मकान बनाने के लिए गरीबों को जमीन खरीदने के उद्देश्य से केन्द्रीय सरकार से कुछ रकम की माग की बी;
- (ख) यदि हा, तो कितनी रकम की मांग की गई बी और कितनी रकम राज्य सरकार को बी गई;

- (ग) क्या राज्य सरकार ने कितने जिलों के लिए धलग-धलग रकम की मांग की बी उन जिलों को बहुत कम भौरजिन जिलों का उल्लेख नहीं किया गया था उनको बिल्कुल भी नहीं दी गई, भौर
- (भ) क्या मध्य प्रदेश सरकार ने इस मद पर कई करोड रुपये खर्च कर दिए है जबिक ग्रन्य राज्यों को इस प्रयोजन के लिए केन्द्रीय सरकार से सहायता मिलती है?

संसदीय कार्य विभाग तथा
निर्माण धीर धाजास मंत्रालय में राज्य
मंत्री (श्री घोम मेहता) (क) से (ग)
1973-74 तक, मध्य प्रदेश सरकार ने
15 00 करोड रुपये की केन्द्रीय महायता
ध्रपनी परियोजनाम्रो के लिए मागी थी जो,
जहा भ्रावश्यक हो, भूमि का भ्रजन करने तथा
ध्रामीण क्षेत्रों मे भूमिहीन मजदूरो को भ्रावास-स्थल
स्थल देने के लिए केन्द्रीय क्षेत्र योजना के
भ्रष्ठीन राज्य म 9,59 000 भ्रावास-स्थलो
के विकास के लिए थी।

प्रारम्भ मे, निम्नलिखित कारणो से राज्य सरकार मे प्राप्न किसी भी परियोजना को स्वीकार करना सभव नही हुन्ना था:—

(i) राज्य मरकार ने उन भूमिहीन
मजदूरों को वाम भूमि के प्रधिकार
देने के बारे मे कोई कानून नही
बनाया था जिन्होंने गैर-सरकारः
भूमि पर मकान, झुग्गिया बनाई
हुई हैं। यह शर्त इम योजना के
भन्तर्गत केन्द्रीय सहायता प्राप्त
करने के लिए पूरी की जाने वाली
धावस्वक शर्तों मे से एक है।

(ii) योजना को देश भर में कार्यानिवत करने के लिए वर्ष 1973—
74 में 5 करोड रुपये की बजट
व्यवस्था की गई थी जिसे मितव्ययिना के उपाय के रूप में घटा
कर 3.5 करोड रुपये कर दिया
गया है । वर्ष 1972—73
में अनुमोदित परियोजनाओं के
मम्बन्ध में लगभग 12 करोड
रुपये की प्रत्याशित श्रिधनीत
वचनबढताओं की तुलना में यह
घटाई गई राशि श्रपर्याप्त समझी
गई।

स्थित का पुनरीक्षण किया गया तथा यह मालूम हुआ कि पहले म्बीकृत की गई परियोजनाओं के लिए राज्य सरकारों की मागो तथा निधियों की उपलब्धता के अनुसार, कुछ नई परियोजनाए स्वीकृत की जा सकती थी। तदनुसार, भारत सरकार ने 199 63 लाख रुपये की अनुसातित लागत के 1,34,496 आवास स्थलों के विकास के लिए मध्य प्रदेश सरकार की परियोजनाए स्वीकृत की। परियोजनाए स्वीकृत की। परियोजनाए स्वीकृत की। परियोजनाए का तस्काल निष्पादन करने के लिए राज्य सरकार को 49.91 लाख रुपये की राशि दे दी गई।

(घ) मध्य प्रदेश सरकार द्वारा व्यय की गई राशि मालूम नहीं है। स्वीकृत ग्रावास स्थलों की संख्या, उनकी ग्रनुमोदित लागत तथा विभिन्न राज्य सरकारों को, जिनमें मध्य प्रदेश भी शामिल है, योजना के ग्रधीन दी गई निधियों का एक विवरण पन्न सलग्न है।

31-3-74 तक ग्रामीण क्षेत्रों में, भूमिहीन मजदूरों को भावास-स्थल देने की योजना के अन्तर्गत स्वीष्ट्रत परियोजनाओं तथा दी गई निधियों का विवरण।

| कम मं० | राज्य का नाम | स्वीकृत परि- योजनाझों की मख्या | म्रावास स्थलों की स० | भ्रनुमोदित लागत | | दी गईं केन्द्रीय वित्तीय सहायता | |
|-----------|----------------|---|-------------------------|--------------------|------------|---------------------------------------|------------|
| | | - | | (লান্ত্র | ₹ | इपयो मे |) |
| 1 | मान्ध्र प्रदेश | 19 | 79,598 | 131 | 13 | 32 | 78 |
| 2 | विहार | 44 | 32,608 | 62 | 87 | 15 | 71 |
| 3 | गुजरात | 85 | 1,62 676 | 306 | 58 | 76 | 6 5 |
| 4 | हरिय।णा | 1 | 5 3 | 0 | 08 | 0 | 06 |
| 5 | हिमाचल प्रदेश | 7 | 583 | 0 | 87 | 0. | 38 |
| 6 | कर्नाटक . | 109 | 1.72,597 | 239 | 38 | 59 | 84 |
| 7 | केरल | 960 | 96 000 | 677 | 76 | 358 | 44 |
| | | (पचाय | ा ने) | | | | |
| 8 | मध्य प्रदेश | 73 | 1,34,496 | 199 | 63 | 49 | 91 |
| 9 | महाराष्ट्र | 83 | 1,08,962 | 164 | 56 | 41 | 14 |
| 10 | उडीमा . | 2 | 3 349 | 8 | 40 | 2 | 10 |
| 11 | पंजाब | 3 | 12,082 | 31 | 68 | 16 | 56 |
| 12 | राजस्थान | 46 | 17,832 | 28 | 76 | 7 | 19 |
| 13 | तमिल नाडु . | . 36 | 33,692 | 75 | 5 1 | 56 | 64 |
| 14 | उत्तर प्रदेश | . 27 | 19,808 | 30 | 85 | 7 | 71 |
| 15 | पश्चिमी वगाल | . 12 | 11,166 | 19 | 3 9 | 4 | 85 |
| | সাভ | 1,507 | 8,85,502 | 1977 | 45 | 729 | 96 |

бī

National Highways Works

8459, SHRI Y. ESWARA REDDY: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state.

- (a) whether Government are aware of the fact that due to Central Government's inability to pay Rs. 5.24 crores for National Highways Original works for Andhra Pradesh, several major bridge works like Khandaleom, Thandwa, Nagarali etc. which are in good progress have to be stopped;
- (b) if so, what Government wants the State to do to complete these national highways; and
- (c) whether it is not possible for the Centre to reconsider and sanction the amount from the money which various Government's could not spend in 1973-74 as Rs. 30 crores were unspent in West Bengal?

THE DEPUTY MINISTER IN THE SHIPPING AND MINISTRY TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) The Government of Andhra Pradesh had requested for the allotment of funds amounting to Rs. 5.24 crores during 1973-74, for National Highway (Original) Works, However, after disallowing the inadmissible expenditure and keeping in view the available resources in the light of the current financial stringency, a sum of Rs. 4.55 crores was finally allotted. The major bridge works. bridges at namely Khandaleom, Thandwa and Nagarali. which are presumably printing errors for Khandaleru, Thandawa and Nagavalli are already almost complete.

(b) All the State Governments, including the Government of Andhra Pradesh, have been requested to take immediately a critical work-wise review of all projects in progress, to draw up their inter-se-priorities and thereafter to take up in the first instance only such works as command the

highest priority and to slow down other works or not take up works which have not yet been started unless the State Government feel that the same for justifiable reasons should and could be proceeded with in a manner that the expenditure is contained within the available allocations,

(c) There was no unspent amount of Rs. 30 crores in West Bengal during 1973-74 so far as National Highways are concerned. However, taking into account the pace of expenditure on National Highway works in various States vis-a-vis the availability of funds, the allocation for Andhra Pradesh for National Highway (Original) Works for 1973-74 was increased from Rs 390 lakhs to Rs 455 lakhs. As the financial year 1973-74 is already over, the question of sanctioning additional funds for that year does not arise at this stage.

Boycott of Examinations by Government-aided School Teachers in Delhi

8460. SHRI C. JANARDHANAN: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Government-aided School Teachers Association (Delhi) has decided to boycott invigilation duty in the School examinations; and
- (b) if so, their demands and Government's response thereto?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) and (b). In a memorandum submitted to the Chief Executive Councillor, Delhi Administration, the Government aided School Teachers Association of Delhi had intimated that they would resort to a total boycott of the annual examination to be held in their respective

schools to get certain demands conceded. The main demands made by the Association were:—

- (1) Speedy implementation of the Delhi Schools Education Act, 1973 and the Rules framed thereunder;
- (11) Prompt and firm action against the erring Managements.
- (111) Immediate absorption of teachers of the Schools closed by the Managements:
- (iv) Formation of Consultative Committee at the level of the District and the Directorate of Education, Delhi and
- (v) Improvement in pay scalerecommended by the Third Pay Commission and grant of Selection Grades to teachers on completion of six years' service.

The matter was discussed by the Director of Education with the representatives of the Association and the notice of boycott of the examination was withdrawn. The demands are, however, being looked into by the Delhi Administration.

Consultative Body to advise on purchase of New and Old Ships

8461 SHRI M KATHAMUTHU Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state.

- (a) the Indian National Shipping owners Association has suggested to the centre to constitute a consultative body to advise on purchase of new and old ships; and
- (b) if so, what is Government's reaction?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (STRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE). (a) No specific suggestion has been made by the

Indian National Ship-owrers Association to the Central Government in the recent past for constituting a Consultative Committee to advise on purchase of new and old ships

(b) Does not arise.

Quantity of Milk supplied to Token Holders during March, 1974 in Delhi

8462. SHRI SUKHDEO PRASAD VERMA Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state.

- (a) the total quantity for which milk token have been issued by the Delhi Milk Scheme as on 30th March, 1974:
- (b) the total quantity of milk provided to the token-holders as on 30th March, 1974; and
- (c) the reasons for the short supply, if any?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE P. MAURYA): (SHRI B (a) The Delhi Milk Scheme is at present distributing 30 lakh litres approximately daily against milk tokens presented at The **De**lhi its milk depots Scheme had issued milk tokens which should normally have been returned by the token holders when they transfer their residence from Delhi but experience has been that such tokens are often not returned to the Delhi Milk Scheme Nevertheless, the effective requirements of token holders is in the neighbourhood of 3 lakh litres daily.

- (b) On 30th March, 1974, the Delhi Milk Scheme supplied 2,88,248 litres of milk to its customers.
- (c) Marginal shortages in regard to supply occur at particular milk depots on account of the following reasons:
 - i Some token holders draw more than their normal require-

ments on certain days within their quotas than usual;

- ii. Tokens not returned to Delhi Milk Scheme as a result of transfer of residence are left with relative and friends who draw milk on these unauthorised tokens intermutually on account of increase in demand for milk in summer months, and also due to difference in price of milk sold by Delhi Milk Scheme viz-a-viz milk available in the open market. These tokens are seized for cancellation at the time checking of milk tokens with reference to ration cards.
- iii. Marginal reduction may occur on account of sudden and unavoidable technical difficulties at the Central dairy.

Provision of Bus Stops for Express bus service at Mandir Mars, New Delhi

8463. SHRI SUKHDEO PRASAD VERMA Will the Minister of SHIP-PING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether in spite of the large number of schools situated on the Mandir Marg, New Delhi not a single stop for express bus service of D.T.C. is provided there; and
- (b) if so, whether Government propose to take steps in this direction?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) Yes, Sir.

(b) Most of the students attending schools situated on the Mandir Marg use the Gole Market Bus Stop, which is in close proximity to Mandir Marg. Express stops have also been provided at Gole Market. Normally, express stops are provided at heavy loading points. This is not the position in 655 LS-4

regard to Mandir Marg which is a sparsely inhabitated area. The existing ordinary but stops on the above Marg are considered adequate to serve the needs of the area

Disparities in Pay Scales of University and College Lecturers

8464. SHRI SUKHDEO PRASAD VERMA: Will the Minister of EDUCA-TION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the revised pay scales fixed by the Government for University teachers have created disparities between the pay scales of University lecturer and College lecturer; and
- (b) if so, whether Government would look into the anomaly?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF, S. NURUL HASAN): (a) and (b). The pay scales of Lecturers in Universities and Colleges, according to the 1966-71 scheme, were as follows:

The revised pay scales recently approved by the Government for lecturers on the recommendations of the University Grants Commission, are:

It will be observed that the disparity between the pay scales of university and College lecturers has been sought to be minimised.

इक्टीर में मार्डन बेकरील का यूनिट स्थापित किया जाना

8465. श्री गंगा चरण दीकित: न्या कृषि मनी यह बताने की कृपा करेगे कि:

- (क) क्या सरकार का विचार मध्य प्रदेश के इन्दौर डिवीजन में किसी स्थान पर मार्डन बेकरीज का एक यूनिट स्थापित करने का है;
- (ख) यदि हा, तो कब तक ग्रौर किस स्थान पर स्थापित किया जायेगा; ग्रौर
- (ग) किसी स्थान विशेष पर मार्डन वेकरीज का यूनिट स्थापित करने के लिए क्या कसोटी ग्रपनाई जाती है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री प्रक्यासाहिब पी॰ शिग्दे) (क) ग्रौर (ख). जी हा। मार्डन बेकरीज का इन्दौर मे एक सयत लगाने का विचार है। इस सयत्न के विसीय वर्ष 1975-76 के दौरान कार्य प्रारम्भ कर देने की ग्राशा है।

(ग) इस सम्बन्ध मे ग्रपनाई गई मुख्य कसौटी माग सम्भाव्य कार्य करने सम्बन्धी सुविधाए ग्रौर बिजली ग्रादि जैसी सेवा सुविधाये है।

वर्ष 1972-73 में ग्रायातित उर्वरक में मध्य प्रदेश का हिस्सा

8466. श्री गंगाचरण दीक्षितः क्या इति मती यह बनाने की कृपा करेंगे कि वर्ष 1972-73 में मध्य प्रदेश को कितना आयातित उर्वरकं सप्लाई किया गया ? कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (बी सज्जासाहिक पी॰ शिन्के) वर्ष 1972-73 मे मध्य प्रदेश को 38,559 मीटरी टन नाइट्राजन भीर 5,068 मीटरी टन पो $_2$ शो $_5$ के बराबर उर्वरको की मप्लाई की गई थी।

Enhancement of prices of Plots after Execution of Lease Deeds

8467 SHRI SHAFQUAT JUNG Will the Minister of WORKS AND HOUS-ING be pleased to state

- (a) why enhancement at Rs 240 per sq metre has been/is being claimed by DDA for plots after the execution of lease deeds when the Delhi Administration had fixed such enhancement at Re 1/- in April, 1969,
- (b) whether the enhancement is not included in the rate of Rs 32/- per square yard charged as full cost of the plots sold to them, and
- (c) whether such an enhancement was not advertised calling for their applications in October, 1967, if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA) (a) The enhancement fixed was Rs 2 per square yard in respect of developed land

- (b) The rate of Rs 32/- per sq yd. fixed in the case of Pankha Road scheme does not include the enhancement
- (c) In the advertisement, applications were invited on prescribed forms containing the terms and conditions of allotment Class 5(2) of the terms and conditions of allotment referred to recovery of enhanced premium.

Sale of D.D.A. Plots at fixed Price

8468. SHRI SHAFQUAT JUNG: Will the Minister of WORKS AND HOUS-ING be pleased to state:

- (a) the significance of the sale of plots by the D.D.A. at the fixed price or the auctioned bid and treating them as Lease after Sale;
- (b) why Sale Deeds for sale of plots have not been executed and the Lease Deeds drawn instead for execution;
- (c) whether the residential plots are being charged both premium at full cost of the land plus 2½ per cent of that amount as ground rent on the development, incidental, departmental charges etc when all other societies are charged 2½ per cent ground rent on the undeveloped land only; and
 - (d) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) and (b). All allotments by the Delhi Development Authority are made on lease hold basis. Consequently Lease Deeds have to be executed and not Sale Deeds

(c) and (d). In the case of plots developed by the Delhi Development Authority, annual ground rent is recovered on the development etc. charges also, since these charges are incurred by the Delhi Development Authority. In the case of Co-operative Societies to whom undeveloped land is allotted, the annual ground rent does not make into account development etc. charges since these are incurred by the Societies themselves.

Enhancement of Premium to meet the Award of Court for Acquisition Cost of Plots included in the Lease Deeds by D.D.A.

8469. SHRI SHAFQUAT JUNG: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state the circumstances under which a Clause for the enhancement of premium to meet the award of the Court for enhanced acquisition cost has been included in the Lease Deeds executed by the DDA. with the Low/Middle Income Groups for plots sold to themat 32 per sq yard when the Lease Deeds for plots auctioned at Rs. 30 and Rs. 32 have no such clause?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MINI-STRY OF WORKS AND HOUSING (SHR! OM MEHTA): Presumably, the Member is referring to the Middle Income Group plots in the Pankha Road Residential Scheme. It was not considered desirable to insert a clause relating to the recovery of additional premium to meet the enhanced cost of acquisition awarded by Courts in the terms and conditions of auction, as the bid amounts fetched in auction vary from plot to plot, while the same predetermined rates are applicable in all the cases of allotment, except corner plots.

Arrangement for supply of Fertiliser to Eastern Region of M.P.

8470. SHRI RANA BAHADUR SINGH. Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state:

(a) whether Government propose to rationalize the arrangements for supply of fertilizer to the Eastern region of M.P. by fertilizer factories of the West and South; and

(b) whether arrangements made for 1973-74 for the supply of fertilizers to Districts like Rewa and Sidhi is proposed to be made the basis for a permanent arrangement?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). Government only makes statewise allocations of fertilisers from imports and domestic production. As regards arrangements for the supply of fertilizers within the State, the position is that as far as imported fertilizers are concerned. they are given to the State Governments for distribution through cooperatives and other public channels to any region within a State. As regards fertilizers produced by domestic units, only that portion of the fertilizers which are distributed through cooperative and other public channels are within the control of the State Government for purposes of distribution. As for the remaining quantity of indigenous production, the State Governments can, in consultation with the manufacturers, draw up an agreed supply plan within the State. The question of making permanent the arrangements made for supply of fertilizers to districts like Rewa and Sidhi in 1973-74, is to be decided by the Madhva Pradesh Government with reference to the position indicated above.

उत्तर प्रदेश दारा चीनी की मांग

8471. श्री हुकम चन्द कछवाय: क्या कृषि मंत्री यह बनाने की कृपा करेगे कि !

- (क) गत 5 महीनों में उत्तर प्रदेश ने केन्द्रीय सरकार से कितनी चीनी मांगी बी; ग्रौर
- (ख) पूरा कोटान देने के क्या कारण हू

इवि मंत्रासय में राज्य मंत्री (की बीट पीट मीर्य): (क) और (ख). 1967 68 मीर 1968-69 के वर्षों के दौरान जनसंख्या और खपत सम्बन्धी झदतों को ध्यान में रख कर विभिन्न राज्यों को लेवी चीनी के मासिक झावंटनों का झंदाजा लगाने की सामान्य पद्धति के झनुसार, उत्तर प्रदेश को लेवी चीनी की निम्नलिखित मात्रा झावंटित की गई थी:—

| मास | म्रावंटन |
|----------------|----------|
| | मीटरी टन |
| नवस्बर, 1973 | 24,739 |
| विसम्बर, 1973 | 24,739 |
| जनवरी, 1974 | 26,072 |
| फरवरी, 1974 | 26,072 |
| मार्च, 1974 | 26,072 |
| भ्रप्रैल, 1974 | 26,072 |
| | |

इस भवधि के दौरान, उत्तर प्रदेश सरकार ने लेवी चीनी के मासिक कोटे की बढा कर 32,000 मी० टन कर देने के लिए जोर दिया था। **s**स चीनी निर्यात करने की संदर्भ में राज्य सरकार मन गध पर विचार करने तक, राज्य सरकार को जनवी, 1974 के लिए 4,000 मी। टन, फरवरी, 1974 के लिए 6,000 मी॰ टन ग्रीर मार्च, 1974 तथा मत्रैल, 1974 के प्रत्येक महीनों के लिए, 4,000 मी० टक ग्रतिरिक्त तदर्थं भावंटन किए गए थे। तीमलनाडु की चाबल की मांग और सप्लाई

73

8472 श्री हुकम चन्द कछवायः क्या कुकि मती यह बताने की कृपा करेगे कि :

- (क) गत पाच महीनों मे केन्द्रीय सरकार द्वारा तमिलनाडु को कितना चावल सप्लाई किया गया ,
- (ख) राज्य मरकार ने इस अवधि में केन्द्रीय सरकार से कितने चावल की माग की थी. और
- (ग) चावल का पूरा कोटा सप्लाई न किये जाने के क्या कारण हैं ?

कृषि मक्षालयं में राज्य मंत्री (श्री झण्णासाहित्र पी० शिन्वे): (क) से (ग) तिमलनाडु चावल की दृष्टि मे अधिशेष है। राज्य का चावल सप्लाई नहीं किया गया वा क्योंकि राज्य सरकार ने आवटन के लिए नहीं कहा था।

उत्तर प्रदेश को परिवहन सुविधाए तथा राजपथो के निर्माण के लिए विसीय सहायता

8473. श्री शुक्तम अन्य कछवाय वया नौबहन श्रीर पश्चिहन मत्री यह बनाने की कुश करेगे कि

(क) केन्द्र सरकार द्वारा गत दो वर्षों मे परिवहन सुविधानों की व्यवस्था करने तथा राजपथो के निर्माण के लिये उत्तर प्रदेश सरकार को कितनी वित्तीय सहायता दी गई,

- (ख) इस अवधि के दौरान इस प्रयो-जनार्थं राज्य सरकार द्वारा कितनी सहायन। की माग की , और
- (ग) वित्तीय वर्ष 1974-75 मे उक्त नार्य के लिये राज्य को कितनी वित्तीय सहायता दी जायेगी [?]

नीवहन श्रीर परिवहन मत्रालय में उपमत्री (श्री प्रणव कुमार मुखर्जी (क) भीर (ख) भारत सरकार न गत दो वर्षों के दौरान सडक परिवहन के विकास के लिये उत्तर प्रदेश सरकार का भनुदान या भन्य वित्तीय सहायता नहीं दी है। राज मार्गो के क्षेत्र मे, भारत करकार मुख्य रूप म राजमार्गों स सम्बन्धित है जाकि केन्द्रीय विषय है। इसलिये उनके विकास भीर रखरखाव पर म्राने वाला सारा खर्च भारत सरकार वहन करती है। केन्द्रीय वित्तीय सहायता कुछ परियोजनाधी के लिये ऋण के रूप मे दी जाती है, जिनमे भ्रन्य बाता क साथ-साथ अन्तर्राज्य या आधिक महत्व की चुनी हुई राज्य सडके पुल शामित है। इसके धलावा कुछ योजनामा के मन्तर्गत कतिपय विशेष सडको के लिये और धन भी व्यवस्था की जाती है। निम्न लिखित तालिका उत्तर प्रदेश सरकार से प्राप्त मतिम नागः भौर उप-लब्ध साधनों को ध्यान में रखने हुए विभिन्न योजनाम्रो के मन्तर्गत उन मांगो के लिये किये गए भावटन को स्थिति दिखात है:

| Minimum and urganization of the control of the cont | 197 | 72-7 | 3 | | 19 | 73-7 | 4 | |
|--|--------------------------------------|------|--------------|-----------|--------------------|-------|------|-------------|
| | राज्य सरक द्वारा सूचि ग्रन्तिम | वत | | त | राज्य द्वारा स् | (चित | | टित रुम |
| | - | | (| रुपर्य | नार्खी | में) | | |
| राष्ट्रीय राजमार्गों का विकास ग्रीर निर्माण | 895 (| 00 | 8 9 5 | 00 | 1380 | 00 | 1320 | 00 |
| 2 केन्द्रीय सडक निधि | 39 7 | 78 | 3 9 | 70 | 39 | 12 | 24 | 51 |
| 3 अन्तर्रांज्यीय या आधिव महत्व की राज्य सडकों के विकासार्थ ऋण सहायता 4 गगा और फरुखाबाद में रामगगा तथा मिर्जापुर हरिद्वार में गया नदी पर भ्रीर राय बरेली में इल मक नदी परपुलों बै | 38 0 ; ; | 10 | 33 | . οσ | 72 | 50 | 38 | 50 |
| निर्माण के लिए केन्द्रीय गैर योजना ऋण सहायता 5 राष्ट्रीय राजमार्गों के बारे में पाचवीं योजना के लिए ग्रग्निम कार्यवाही | 55 (| 90 | | 95 | 287 | | 287 | 945 8 50 |
| 6 पार्श्ववर्ती मडक (राज्य माग |) 63 2 | 29 | 12 | 74* | (| 6 0 | | † |

⁽ग) 1974-75 के लिए ग्रावटनों का फैसला तभी किया जा सकता है जबकि उक्त वर्ष के लिए बजट श्रनुमान ससद द्वारा मतदस्त हो जावेंगे ।

^{*}इसमें 50, 55, 255 रुपये की रकम शामिल नहीं है, जोकि गत वर्षों में दिए गए अनुदानों में से अप्रयुक्त पड़ी है भीर राज्य की 33 29 लाख रुपये की कुल माग में से 1972— 73 में समजित की गई है।

^{† 1973-74} के लिए राज्य मरकार को कोई भुषतान न किया गया, क्योंकि इस परियोजन के लिए वह पहले ही से भ्रप्रयुक्त केन्द्रीय भ्रनुदान प्राप्त कर रही थी भ्रीर उसे यह अनुरोध किया गया था कि वह 1973-74 के लिए भ्रपनी मागे पूरी करने हेतु न खर्च किए गए शेय का इन्नेमान करे।

Lifting of Ban on House Building Advance

8474. SHRI R. N. BARMAN.

SHRI N. E. HORO

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whethe a large number of Central Government Employees have been allotted flats by the Delhi Development Authority, New Delhi by draw of lots in the Middle Income Group;
- (b) whether due to a ban on the grant of House Building Advance imposed by the Central Government these employees will not be able to purchase flats thus losing an opportunity to own a flat in New Delhi;
- (c) whether Government are proposing to lift the ban especially in the case of those Employees who have been allotted flats by the Delhi Development Authority, New Delhi; and
- (d) if so, when it is proposed to grant House Building Advance to such employees?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) Yes, Sir.

- (b) Yes, to some extent.
- (c) and (d). The ban on sanction of house building advance has been lifted. Priority will be given to the commitments already made by the sanctions issued and to applications pending with the Ministry at the time of the imposition of ban last year. Fresh applications can be invited only after assessing the availability of funds during the year.

Number of Quarters completed and allotted for Class III and IV Employees

8475. SHRI VAYALAR RAVI: Will the Minister of WORKS AND HOUS-ING be pleased to state:

- (a) the total number of quarters completed and distributed for Class III and IV employees of Central Government in the country for 1972-73 and 1973-74 and their State-wise break up; and
- (b) other quarters under construction in the country for the same?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) The Ministry of Works and Housing constructs and allots only general pool accommodation. Post and Telegraphs, Defence. Information and Broadcasting and Railway Ministries construct their own houses and allot them. For the rest, the Ministry constructs but allotment is made by the Ministries concerned.

Houses are not constructed or allotted according to the class of employees. The types of houses are based upon the pay (and not pay scale) of an employee. Hence, there will be numerous cases where two or more classes of employees are entitled to and occupy the same type of house. However, generally speaking, the bulk of class III and IV employees would be living in type I and II houses.

Information relating to these for 72-73 and 73-74 is being collected and will be laid on the table of the House.

(b) It is presumed that the intention is to ask for the houses! Tats of these types under construction and that the term 'other quarters' has no other significance except to distinguish between quarters already built and allotted and those under construction.

Information on this basis for type I and II quarters wil be laid on the table of the House along with the information at (a).

Discovery of Stocks of Groundnut Oil during Raids in Guierat

8476. SHRI P. M. MEHTA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether large stocks of groundnut and groundnut oil was unearthed during the last six months in Raikot and other parts of Gujarat State;
- (b) whether in Gujarat State large scale hóarding has been going on in the case of these oils:
- (c) whether in view of this discovery more raids are being conducted in the State; and
- (d) whether there is any proposal to conduct such raids in other parts of the country to get the crude oil and other kinds of oil from the hoarders?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) to (c) Information has been called for from the Gujarat Government and will be laid on the Table of the Sabha, when received.

(d) Presumably, the information is cought for in respect of vegetable oils, including unrefined oils. The Ministry has already requested the various State Governments to issue suitable Orders for curbing speculative trading in and hoarding of, stocks of oilseeds and oils and to ensure rigid enforcement. The responsibility for taking actual action for unearthing hoarded stocks rests with the State Governments.

Takeover of Wholsale Trade in Oil Seeds

Written Answers

8477. SHRI Y. ESWARA REDDY: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government decided to takeover wholesale in oil seeds; and
- (b) if so, the main features thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) No such decision has been taken by the Government.

(b) Does not arise.

Communication received in D.D.A. Office

8478 SHRI BHOLA MANJHI; Will the Minister of WORKS AND HOUS-ING be pleased to state:

- (a) whether the Vice-Chairman. Delhi Development Authority does not reply to any communications received from public, various Regd Agencies/Associations/Federations as a matter of policy;
- (b) if the reply to part (a) above be in the negative, the number of communications received by his office during the last 12 months and the number of those to which a reply was sent by his office; and
- (c) the number of communications sent by the Lawrence Road Welfare Federation with effect from the 1st June, 1973 to date (upto 30-12-73) and action taken on each communications?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) No. Sir.

- (b) The information is not readily available.
- (c) So far as it has been possible to ascertain from the D.D.A's records, six communications were received by them during this period, one direct. one through the Municipal Engineer and the rest through the Ministry of Works and Housing/Lt. Governor, Delhi. The first one was replied to on 6th July, 1973, the second was forwarded to the C.E. (CPWD), Delhi Administration under intimation to the Federation and in the remaining ones, reports were sent by the D.D.A. to the authorities concerned.

फरीबाबाद की प्रेस कालोनी से लकड़ी के खोखों का हटाया अभा

8479. श्री हुकम निम्ब कछवाय : क्या निर्माण भीर भावास मनी विह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या फरीदाबाद मे प्रेस कालोनी में सडक के दोनो ग्रोर बने लकड़ी के खोखों को हटाने के बारे में हरियाणा सरकार से बातबीत कर ली गई है; ग्रीर यदि हां, तो उक्त खोखे कब नक हटा दिये जायेंगे;
- (ख) क्या हिन्याणा सरकार का विचार प्रेस कालोनी में सडक के दायीं ग्रोर दुकानों का ग्राबंटन करने का है जहा ये खोखे खड़े किये गये हैं ग्रीर जो स्थान प्रेस कालोनी का है; ग्रीर यदि हां, तो क्या केन्द्रीय सरकार ने इसकी स्वीकृति दे दी है;
- (ग) क्या हरियाणा सरकार ने प्रेस कालोनी के मीतर एक शराब की दुकान के लिए लाइसेंस विया है तथा क्या इसके लिए भारत -सरकार से अनुमति ली गई है; भीर

(घ) क्या प्रेस कालोनी से सड़को की मरम्मत करने तथा वहां कूड़ेघर (डंगहिल) बनाने का प्रस्ताव है ?

संसदीय कार्य विभाग तथा निर्माण गौर धावास मन्त्रालय में राज्य मंत्री (भी भ्रोम मेहता): (क) से (घ). सूचना एकत की जा रही है तथा सभा पटल पर रख दी जायेगी।

CBI inquiry recommended into promotion of Scientists in I.C.A.R.

8480. SHRI SAMAR GUHA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Chairman of the I.C.A.R. Inquiry Committee urged the Government to institute a CBI inquiry into many cases of serious allegations in regard to promotion and appointment of different categories of scientists and scientific officers in I.C.A.R.; and
- (b) if so, the nature of the recommendations made by the Committee and the steps taken by the Government to institute CBI inquiry into these cases?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) and (b). No, Sir. The Chairman of the ICAR Inquiry Committee had however, referred to the Minister of Agriculture, for sympathetic consideration cases relating to service matters of two employees of one of the Institutes under the Council. These cases were duly examined and action considered appropriate was takes.

Subsidy for Imported Fertilizers

8481. SHRI PRABODH CHANDRA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government are going to allow a big subsidy for importing fertilizers, and
 - (b) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE). (a) and (b) There has been a steep increase in the prices of fertilisers in the world markets and in the ocean freight especially during the last one year with the result that import costs of fertilizers have risen considerably. The issue price of imported fertilizers have not been increased in proportion to the import costs, lest the price levels prove to be a disincentive to fertilizer use and thereby adversely affect agricultural production.

Construction of Quarters by Delhi Administration

8482. SHRI AMBESH: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether the Delhi Administration, Delhi has constructed quarters in Delhi/New Delhi during the last three years; and
- (b) if so, the number of quarters, category-wise, allotted to the Scheduled Castes/Scheduled Tribes employees during the above period year-wise?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS ANDHOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) Yes, Sir.

(b) The information is as follows:-

| | | | | | | | TYPE | S | | | |
|-------|---|---|---|----|-----|-----|------|-----|----|-----|-------|
| Year | | | | - | I. | II. | III. | IV. | v. | VI. | Total |
| 1971 | • | • | • | • | 49 | 10 | 1 | 2 | •• | 2 | 64, |
| 1972 | | | | • | 116 | 3 | 3 | | 4 | 1 | 127 |
| 1973 | | | | | 30 | 7 | x | 10 | 1 | | 49 |
| TOTAL | • | • | | ٠. | 195 | 20 | 5 | 12 | 5 | | 240 |

Policy of Government in regard to sanction of Old Age Pension to S.C. & S.T.

8483 SHRI GADADHAR SAHA: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

(a) the present policy of the Central Government with regard to selection, sanction of old age pension cases, from among the old, disabled, helpless tribal and scheduled caste persons and

economically, educationally backward minority Community persons;

- (b) allocation under the scheme, State-wise, during 1972-73, 1973-74 and 1974-75; and
- (c) the number of such persons benefited under the scheme, State-wise?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI ARVIND NETAM): (a) The Central

Government does not have any scheme of old age pension.

(b) and (c). Do not arises,

Marine Pollution

8484. PROF. MADHU DANDAVATE: SHRI BIRENDER SINGH RAO

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether there is a marine pollution due to the oil carried by the modern ships getting mixed up with sea water; and
- (b) if so, what steps are taken to prevent the marine pollution affecting health and hygiene?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) Marine Pollution occurs as a result of accidental spillage of oil into sea following a marine casualty to an oil carrying tanker, or as a result of deliberate discharge of oil into sea by ships.

(b) The International Convention for Prevention of Pollution of the Sea by Oil, 1954, as amended in 1962 specifies the precautionary measures to be taken for minimising accidental pollution and for preventing deliberate pollution. India has ratified this Convention.

Amount advanced for Small Farmers Development Agency and Marginal Farmers Agricultural Labourers Programme by Nationalised Banks and Financial Institutions

8485. SHRI ARJUN SETHI Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state.

(a) the total amount advanced for the final Farmers Development Agency and Marginal Farmers and Agricultural Labourers Programme by the nationalised banks and other financial institutions upto date, Statewise;

- (b) whether Government are aware of the fact that in some of the States the progress has not been satisfactory; and
 - (c) if so, the reasons therefor?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) A statement is laid on the Table of the Sabha. | Placed in Library. See No. LT-6858/74|.

- (b) Yes, Sir.
- (c) The main reason for the slower pace in loans advanced is the weakness of institutional credit structure in the project areas, particularly in the Eastern States. Special assistance is provided by the Agencies for strengthening cooperatives like nonoverdue cover to the Central Cooperative Banks, managerial subsidy to the Primary Cooperatives and Central Cooperative Banks and share capital loans for enrolment of new membersof Primary Cooperatives. One of the aims of the Fifth Plan is to reduce regional disparities between States in the extension of institutional credit. Various measures for the strengthening of the cooperative and increasing the coverage of commercial banks are included in the Plan.

Growth of Black Money due to Pagri System

3486. SHRI P. G. MAVALANKAR: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state;

(a) whether Government are aware that in four metropolitan cities of Delhi. Bombay, Calcutta and Madras as well as in other major cities of India, there exists the evil practice-

of "Pagri" for relinquishing tenancy or transference of business or residence from one to another;

- (b) whether the said practice is rempant and has already created huge amounts of unaccounted money; and
- (c) what steps Government are taking to curb this evil practice?

THE MINISTER OF STATE THE DEPARTMENT OF PARLIA-MENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUS-ING (SHRI OM MEHTA) (a) to (c). In certain studies regarding the effect of rent control on 'housing' in the metropolitan cities of Bombay and Calcutta, reference has been made to the prevalence of the practice of "Pagri". The extent to which this practice is prevalent in the cities of India is not known. It is with a view to curbing this practice that the rent control legislations applicable Delhi Bombay, Calcutta and Madras and in some other States have already provisions to prohibit and penalise this practice

मेडीं का प्रापात

8487. श्री महादीपक सिंह शास्य : स्था कृषि मन्नी यह बताने की कृपा करेगे कि:

- (क) क्या ग्रास्ट्रेलिया ग्रीर न्यूजीलैण्ड में सुधरी नस्ल के मेडी के ग्रायात का प्रस्ताव सरकार के क्याराधीन है, ग्रीर
- (ख) इससे क्या लाभ होने की सम्भावना

हृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बी० पी० मोयं): (क) केन्द्रीय भेड फार्म हिसार हरियाणा) के लिए कोलम्बी योजना कै मन्तर्गत भ्रास्ट्रेलिया से कोरिडेस नस्स की भेडो के बायात के बलावा न्यूजीलैण्ड सेभेडो का बायात करने का कोई विशेष प्रस्ताव नही है।

(ख) कोरिडेल नस्ल की मेडे मास मौर जन दोनो ही उद्देश्यों को पूरा करती है मौर सकर प्रजनन के लिए इनके ब्यापक उपयोव से जन मौर मास दोनों की ही मच्छी किस्म के उत्पादन में वृद्धि होती है।

मांझी नदी पर पुल के लिए केन्द्रीय सहायता

8488. श्री चित्रका प्रसाद: क्या नौवहन ग्रौर परिवहन मनी यह बताने की कृपा नरेगे कि

(क) क्या माझी न्या के ऊपर के वर्तमान पीपे के पुल के स्थान पर पक्के पुल का निर्माण करने व लिए विक्तीय महायता देने का मरकार का विचार है, और

(ख)यदि हा, तो कब तक ?

नीवहन भीर परिवहन मंत्रालय मेंउपमंत्री (भी प्रणव क्यार मखर्जी): (क) भीर (ख) माझी के निकट घाषरा नदी पर पल तैयार होन पर राज्य मडक पर पहेगा। सका निर्माण मुख्यत उत्तर प्रदेश मरकार से सम्बन्धित है। परन्तु राज्य सरकार ने पाचवी योजना के दौरात ग्रन्तर्श-ज्यीय या आधिक महत्व राज्य की सहको पूली केन्द्रीय सहायता कार्यक्रम के अन्तर्गत वेन्द्रीय वित्तय महायता के लिए ग्रपने प्रस्तावा म इस पुल परियाजना को शामिल किया है। चिक पाचवी पचवर्षीय योजना श्रभी प्रारम्भिक प्रवस्था मे है। इस समय यह बताना कठिन है नि इम कार्य के लिए पाचवी योजना मे उपलब्ध होने वाली बहुत सीमित व्यवस्था म किसी सड /पुल परियोजना को किस हद तक शामिल किया जा स्केगा। इसी कारण से यह बनाना मभव नहीं है कि पूल का कब तक निर्माण हो सकेगा ।

विकास विदेश विद्यालय में कथित प्रनियमितताएं

8489. श्री फूलचन्द वर्माः क्या शिक्षा, समाज कल्याण श्रीर संस्कृति मही यह बताने की क्या करेंगे कि:

- (क) क्या विश्वविद्यालय धनुदान आयोग द्वारा विक्रम विश्वविद्यालय को दिय गयं धनुदान में से किये गयं खर्चे में श्रष्टाचार श्रोर श्रनियमिननाश्रों के बारे में शिकायत मिली हैं. श्रीर
- (ख) यदि हा, तो इस सम्बन्ध मे स्रव तक क्या कार्यवाही की गई है स्रोर भविष्य मे क्या कार्यवाही करने का विचार है ?

शिक्षा समाज कल्याम तथा संस्कृति मंत्री (प्रो॰ एस॰ न्डल हसन) : (क) भीर (ख) विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा भेजी गई सूचना के अनुसार विश्वविद्यालय के एक भतपूर्व कर्मचारी ने इस आशय का आरोप लगान हए अभ्याबेदन दिया था कि नई दिल्ली में कौमैनम मेले में विश्वविद्यालय द्वारा भाग लेन नथा विश्वविद्यालय स्तर पर उज्जैन मे गाधी जनाब्दी मनाने के लिए हिए गए खर्च मे ग्रनियमितनाए की गई है। ग्रभ्यावेदन पर विश्वविद्यालय की रिपोर्ट प्राप्त होने पर कलाधाति न मध्य प्रदश उच्च शिक्षा धनदान ग्रायोग भोपाल वे ग्रध्यक्ष द्वारा शिकायत की जाच करवायी कि क्या कथित मनियमितनाम्रो के विरुद्ध जान का कोई प्रत्यक्ष मामला है। ग्रध्यक्ष ने कुलपति को अपनी रिपोर्ट में यह बताया कि शिकायत मे उल्लिखित कथित र्धानयमिततायो के मामले पर उन्हें जाच की कोई प्रयत्यक्षतः भावश्यकता प्रतीन नही हुई है।

Central Assistance to West Bengal for schemes on Agriculture and Minor Irrigation

8490 SHRI S N SINGH DEO. Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state.

- (a) total assistance given by the Ministry to West Bengal during last three years, in regard to schemes 10-lating to agriculture and minor 17 1-gation scheme-wise;
- (b) the scheme approved by the Government for the State; and
- (c) the achievements of the schemes, scheme-wise upto date?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B P MAURYA): (a) to (c). A statement is laid on the Table of the House [Placed in Library See No LT-6854/74].

Central Assistance to West Bengal for Roads a

8491 SHRI S N SINGH DEO Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state.

- (a) the total assistance given by his Ministry to the Government of West Bengal during the last three years relating to roads, scheme-wise;
- (b) the scheme approved by the Central Government for the State; and
- (c) the achievements of the schemes schemes-wise up-to date?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHRIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE); (a) to (c) The following total amount of money was provided to West Bengal Govt.

during the last 3 years for various , categories of approved road schemes:

(Rs. in lakhs)

| (1) Development and cons- truction of National High- | |
|--|----------|
| ways | 832 • 54 |
| (ii) Special Roads | 41.56 |
| (in) Central Road Fund | 137.33 |
| (iv) Loan assistance for deve- lopment of State Roads of Inter-State or Economic Importance | 81 · 84 |
| (v) Central non-plan loan assistance for construction of the second bridge over the river Hooghly. | 450.00 |
| (vi) Advance action for 5th Plan in respect of Na- tional Highways | 15.26 |
| (vii) Maintenance & Repairs of National Highways . | 310.34 |

A substantial number of works approved against the above mentioned schemes are in various stages of progress. The West Bengal Govt. have, in fact, spent more than their allocations in respect of items (i) & (vii) above. (maintenance and original works on National Highways in 1971-72 and 1972-73).

Behaviour of Head Master, Nagar Palika Primary School No. III, Moti Bagh, New Delhi

8492. SHRI R. N BARMAN: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state.

- (a) whether the Secretary of Parents' Teachers Association, an elected body, have made certain allegations against the Head Master of Nagar Palika Primary School No. III, Moti Bagh-I, New Delhi:
- (b) whether the behaviour of the Head Master is not fair towards the lady teachers of the school, resulting in hinderance in the smooth imparting of education to the children; and

(c) if so, what steps Government proposes to take against the Headmaster of this particular school?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) Secretary, Parent Teachers Association of the Nagar Palika Primary School No. III, Moti Bagh I, had made certain allegations against the Headmaster of the School but, on investigation by the N.D.M.C. authorities, the allegations were found to be baseless.

- (b) No Sir.
- (c) Does not arise.

Fertilizer distribution taken over by State Government

8493. SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

SHRI Y. ESWARA REDDY:

Will the Minister of AGRICUL-TURE be pleased to state:

- (a) whether some of the Governments have taken over the fertilizer distribution in the States: and
- (b) if so, the names of those States?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). Fertilisers distributed with in a State are from imported stocks and from domestic production. As far as the distribution of imported fertilizers in the States is concerned, the entire quantity is given to the State Governments who, in turn, distribute it through public channels, like Cooperative Societies and State agencies.

As regards the indigenously produced fertilizers distributed within the State, the distribution is partly

through public agencies and partly through private dealers. Recently some of the states have introduced a system of distribution of fertilizers against permits/identity cards issued by the state government authorities but the channels of distribution remain as before.

Ban on Liquor Advertisements

8494. SHRI DHAMANKAR: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) the salient features of the advice given by Ministry of Law and Justice in connection with the ban on liquor advertisements as sought by the Central Prohibition Committee;
- (b) whether in the light of this advice, some instructions have been given to the States for enacting legislation to ban commercial advertisements in support of "spirituous products" as required by the Directive Principles of State Policy relating to prohibition; and
- (c) if so, the reaction of the State Governments thereto?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI ARVIND NETAM): (a) The legal advice was that restrictions on commercial advertisements of spirituous products can be said to be reasonable and justifiable. The State Governments can enact legislation for this purpose.

(b) and (c). The above opinion was placed before the Central Prohibition Committee at its meeting held on March 26. 1974, at which representatives of States/Union Territories were present. The Committee

recommended legislative ban on advertisements but suggestd a Central Legislation, if possible. The recommendations of the Central Prohibition Committee are under examination.

Difference between prices of imported Fertilisers and Domestic Controlled Price

8495. DR. KARNI SINGH: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) the increased cost of imported fertilisers per tonne;
- (b) the domestic controlled price of these fertilisers;
- (c) the loss Government is likely to suffer during 1974-75 as a result of this difference in the imported price and the domestic issue price; and
- (d) the manner in which the Government propose to make up this loss?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) There has been a steep rise in the prices of fertilisers during the last one year. For example the FOB price of urea which was a little over U.S. \$ 60 per M.T. in 1969 has now become more than U.S. \$ 250 per M.T. The FOB price of MOP which was about Canadian \$ 21 per M.T. in 1969 is now over U.S. \$ 42 per M.T. The FOB price of DAP which was U.S. \$ 50-55 per M.T. in 1969 rose to over U.S. \$ 115 per M.T. in 1973. The prices of other fertilisers also have been going up similarly.

Alongwith increase in the prices of fertilisers, there has been a steep rise in the ocean freight rates. Freight rate which was U.S. \$ 10-12 per M.T. in 1971-72 from U.S.A. and West Europe has risen to over \$ 60 per M.T. now.

(b) The statutorily controlled retail prices of Urea, Ammonium sulphate and CAN (imported) as well as indigenous and the retail prices of other imported fertilisers for sale to the farmers effective from the 16th Oct. 1973 are as under:—

[R: Per Tonne]

| Pool Issue | | | | Price | Dist, Margu | n Retail | Price |
|-----------------------------|---|-----------|---|------------|-------------|----------|--|
| (1) | | der grade | | (2) | (3) | | (4) |
| Urea 46% N . | • | | • | 970 | 80 | 1050 | These retail Price |
| Urea 45% N . Amm. Sulphate: | • | • | • | 950 | 80 | 1030 | trolled under the Fertilisers (Control) Order, 1957. |
| (100 K.G. packing) | | | | 535 | 55 | 590 | |
| (50 Kg. packing). | | | | 545 | 55 | 600 | |
| CAN 26% N . | • | | | 585 | 60 | 645 | |
| CAN 25% N . | | | | 560 | 55 | 615 |) |
| DAP | | | | 1240 | 95 | 1335 | |
| NP 20-20-20 . | | | | 1120 | 80 | 1200 | |
| MOP | | | | | | | |
| (100 Kg pack.n | | | | 620 | 50 | 670 | |
| (50 kg packin | | | | 630 | 50 | 680 | |
| NPK (15-15-15 | | | | 1295 | 80 | 1375 | |
| | | | | | | | |

(c) and (d). Purchase of fertilisers for consumption in 1974-75 are still going on It is not possible at this stage to precisely estimate the loss the Government will have to suffer during 1974-75 as a result of the difference between the import price and the issue price of fertilisers

Committee to decide price formula for Fertilizers

8496 SHRIMATI SAVITRI SHYAM:

SHRI VIRBHADRA SINGH:

Will the Minister of AGRICUL-TURE be pleased to state:

(a) whether Government have decided to set up a Committee of ex-

perts to decide a rational price formula for fertilizer, and

(b) if so, the time by which the Committee is expected to submit its report?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) No, Sir. However, a Committee set up by the Government under the chairmanship of Shri Quraishi, has been asked among other things, to make recommendations regarding distribution margins for fertilizers.

(b) The Committee is expected to submit its report shortly.

Mode of selection of staff to depute on fereign assignment from C.P.W.D.

8497. SHRI S. D. SOMASUNDA-RAM. Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether draftsmen, civil and electrical, working in C.P.W.D. have been selected for posting to Irag:
- (b) whether in some cases, they were selected for the second time to go abroad; and
- (c) what was the mode of selection to depute to foreign assignment from C.P.W.D.?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA) (a) The selection has not yet been finalised.

(b) and (c). The question do not arise

Functioning of Khandsari Sugar Mill in Tripura

3498 SHRI BIREN DUTTA Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether foundation has been laid for Kandsari Sugar Mill in Trioura; and
- (b) when the mill is expected to start functioning?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P MAURYA); (a) and (b). According to information reveived in October, 1973, by the National Sugar Institute, Kanpur Government of Tripura intend to start a khandsari Sugar Mill in September, 1974. The confirmation of the Government of Tripura is however, awaited.

655 LS-5.

Scheme to restrict admission in Universities

8499. SHRI SAMAR MUKHERJEE: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Planning Commission has formulated any scheme to restrict admissions in Universities; and
- (b) if so, the main features of the scheme?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D P YADAV) (a) and (b) Attention is invited to the reply given to the Lok Sabha Unstarred Question No. 4397 on March 25, 1974

No scheme for restricting higher education as such has been formulated by the Planning Commission. In fact the Planning Commission have stated that a direct strategy involving a ceiling on admissions may not be practicable. The Planning Commission have, however, proposed a strategy which will reduce the rush to Universities while effectively enlarging the scope of receiving higher education if the need is keenly felt. The strategy includes the following components:—

- (a) Vocationalisation of higher secondary education enabling large numbers to enter employment at the end of secondary stage;
- (b) Limiting admissions to regular institutions which should conform to certain welldefined standards on the basis of merit while making suitable reservations supported by coaching classes and adjustment courses for the backward classes; and

(c) The total number of students and employees in the College are 76 and 20 respectively.

(c) Providing the rest of the social demand for higher education through Evening Colleges Correspondence Courses and private study

Establishment of Institute of Pharmacy in Delhi

8500 SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL Will the Minister of EDU-CATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state

- (a) the progress made in the estabishment of Institute of Pharmacy under Hamdard (waki) Dawakhana,
- (b) whether it will be aided and ie cognised by the Government, and
- (c) the number of scholars and employees of the Institute?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF S NURUL HASAN) (a) The Hamdard College of Phaimacy was larted in 1972 under the Management of Hamdard (Wakf) Dawakhana The College offers two year Diploma course of four year Degree Course in Pharmacy The Diploma course was introduced in 1972 and the Degree Course in 1973

(b) For the Diploma Course, the College is provisionally recognised by the Board of Technical Education, Delhi The proposal of the College for grant-in-aid for the Diploma Course is under consideration of the Delhi Administration

For the Degree Course, the College has been granted affiliation by the D lhi University All Degrees awarded by Statutory Universities are a cognized by Government A proposal for grant-in-aid for the Degree of the University Grants Commission

Prohibition in States

8501 SHRI SHANKER RAO SAVANT Will the Minister of EDU-CATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state which States and Union Territories are following the policy of strict prohibition, which of modified prohibition and which have done away with prohibition altogether?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI ARVIND NETAM) Prohibition formally enforced in the whole nf the Gujarat State Prohibition is also tormally enforced in parts of Uttar Pradesh and Rajasthan In varying degrees certain other states have prohibition programme by observing dry days etc The policy is to gradually (re) introduce prohibition everywhere

Formation of Slum Clearance Board

8502 SHRI P VENKATA-SUBBAIAH·

SHRI PRABODH CHANDRA.
Will the Minister of WORKS AND
HOUSING be pleased to state.

- (a) whether the Delhi Administration has urged the Centre to form an autonomous slum clearance board;
- (b) if so, the reaction of the Central Government thereto, and
- (c) the action proposed to be taken in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIA-MENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUS-ING (SHRI OM MEHTA) (a) No formal proposal has been received.

(b) and (c) Do not arise.

Port Workers' Strikes and Unions in Major Ports

8503 SHRI DEBENDRA NATH MAHATA Will the Minister of SHIP-PING AND TRANSPORT be pleased to state

- (a) number of workers in Calcutta, Bombay and Madras ports during last three years, category-wise, portwise,
- (b) number of strikes in .hese ports in the period and the number of workers involved in them, and

(c) number of workers' unions recognised and unrecognised during the said period, port-wise?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE) (a) to (c). A titement is attached As there is no statutory provisions for recognition of Unions the information given ret tes to number of unions

Statement

| | | | | Ν | Worke | ers | No | of Str | ı ke s | No of Workers' |
|------|---|---|----------|--|-------|-----------------------|----|------------------------------|---------------|----------------|
| Ycar | | | (1 egor | ` | No | No | | No of workers involved | Unions | |
| 1 | | | | 2 | | 3 | | 4 | 5 | 6 |
| | | | A | curt | ITA P | OR I | | | | |
| 1971 | | | | Class III Class IV (include casual | , | 16010 25° 5° | | 57 | 1800 | 4 |
| 1972 | | | | Class III Class IV (includes casual | | 15757 25371 | | 89 | 15- | 5 |
| 1973 | | | • | Class III Class IV (meludes c isula | | 15577 23933 | | 90 | 774 | 5 |
| | | | | (B) BO | MBA | PORT | | | | |
| 1971 | • | • | | Class III Class IV | | 11105 17201 | | 24 | , 8821 | 11 |
| 1972 | • | • | | Clas III | | 11204 17914 | | 25 | 12700 | 10 |
| 1973 | • | • | | Class III Class IV | | 11216 17689 | , | 52 | 47563 • | 10 |
| - | | | | | | | | | | |

casual)

APRIL 29, 1974

Concession to Bind Relief Association in Plastic Cane

Written Answers

103

8504 SHRI M S PURTY Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether unprecedented price hike in plastic cane has affected considerably the income of blind inmates of Blind Relief Associations who earn their bread by canning chairs in Government offices and semi-Government offices; and
- (b) if so, whether Government propose to give some concessions to the Blind Relief Associations in this regard and if so, the nature thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI ARVIND NETAM): (a) No, Sir

(b) Does not arise

Scrapping of Sugar Quots to America and Britain

8505. SHRI RAJDEO SINGH: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether under the Commonwealth and U.S. quotes, India has to

supply about 1.25 lakh tonnes of sugar to America and Britain; and

Written Answers

104

(b) if so, whether this quota to these two countries can be conveniently scrapped and instead India can enter the open market for sugar to derive the maximum benefits?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B P. MAURYA) (a) Under the Commonwealth Suga: Agreement and the U.S. Sugar Act, India has to supply about 25.000 tonnes and 75,000 tonnes of sugar to Britain and U.S.A. respectively

(b) No, Sir. There are inescapable commitments.

Ginger Price

8506 SHRI G. Y KRISHNAN: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state.

- (a) whether ginger prices have shot up to record levels in the new season;
 and
- (b) if so, the reasons for the sharp rise in prices?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). The wholesale prices of ginger are generally higher during the current year as compared to the previous year, but the prices are lower than the levels reached in 1970. The rise in prices seems to be due inter-alia to rise in world prices and the general rise in the price level in the country.

during 1971, 1972, and 1973, is as under:-

106

| | | 1 | Bombay Co | lcutta |
|------|---|----|-------------|--------|
| | | (R | upees in la | khs) |
| 1971 | • | | o·88 | 1.16 |
| 1972 | ٠ | | 2.48 | 1.13 |
| 1973 | | | 3.56 | 1.92 |

Directives of public sector undertaking to avoid using hired cars

8507. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state.

- (a) whether directives have been issued to public undertakings prohibiting regular use of hired cars for their officers, as this is a wasteful practice:
- (b) whether the Shipping Corporation of India hired a number of cars for daily use of its officers in Calcutta and Bombay; and
- (c) if so, the expenditure incurred on hiring charges during 1971, 1972 and 1973?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) No, Sir. This is a matter which comes within day-to-day administration of the enterprises.

- (b) The Shipping Corporation of India hires private cars from licensed hire car agencies, to meet its operational needs and exigencies of the work,
- (c) The expenditure incurred on hiring of cars by Shipping Corporation of India at Bombay and Calcutta

Import of Milk Powder

8508. SHRI M. S. PURTY: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Central Government have permitted some States to import Milk powder in their States;
- (b) if so, the names of such States where difficulty in getting it is being experienced; and
- (c) the quantity so far received along with the names of the country and the details regarding agreements in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) No, Sir.

(b) and (c). Do not arise.

Discharge of Indian Cargo at Dubai instead of at Karacki

8509. SHRI JAGANNATH MISHRA: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

(a) whether the Indo-Afganistan Merchants Chamber of Commerce has approached the Indian Government to investigate into the incident that led to the discharge of Indian cargo at Dubai instead of at Karachi by a toreign ship; and

(b) if so, facts thereof and action taken thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) Yes, Sir.

(b) An international liner vessel, named m.v. 'Thalia' was sub-chartered by M/s. SAMZ Shipping Company from M/s. Mohammed Yunus who in turn had chartered it from M/s. T.S. Kolilerich Co. of Switzerland, the owner. It sailed from Bombay with 1350 M. Tons of cargo intended for Afganistan via Karachi on 24th December, 1973. It was reported that the vessel called at Karachi but the cargo was not unloaded under instructions from the owner of the vessel in Switzerland because the Charterer M/s. Mohammed Yunus had not paid the charter hire. The vessel was diverted to Dubai where it arrived on 25-2-74. The cargo was unloaded there. The representatives of the Consignees, the shippers and the Secretary of Indo-Afghan Chamber of Commerce proceeded to Dubai for negotiating with the SAMZ Shipping Co. for reshipping the cargo from Dubai to Karachi. The matter wil be decided between the parties in the light of the rights of the parties under the terms of the contracts (charter parties).

Tiger Project in Sundarbans, West Bengal

and the state of

:

8510. SHRI SAKTI KUMAR SAR-KAR: Will the Minister of AGRICUL-TURE be pleased to state the progress of the development of Tiger Projects' in Sundarbans area, West Bengal?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): A detailed Management Plan of the Reserve has been prepared and approved by the Government of India. The scheme

has been sanctioned as a Central Sector scheme for a period of 6 years from 1973-74 to 1978-79 at an estimated copy of Rs. 30.92 lakhs. During 1973-74 a sum of Rs. 67,000 was sanctioned to the State Government to implement the scheme.

The State Government have appointed Field Director and Dy. Director of the Project with headquarters at Goshaba. Other staff is also being appointed.

Agreement for Import of Palm Oil

8511. SHRI GAJADHAR MAJHI: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government have made any agreement with foreign countries regarding the import of palm oil; and
- (b) if so, the names of the countries terms and conditions alongwith the quantities and the amount of foreign exchange going to be spent thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) and (b). There is no agreement as mentioned. However, recent purchases of edible oils from abroad include 5,000 tonnes of palm oil of Indonesian or Malasian origin, at \$510-525 per long ton, c.i.f., for shipment in July/August 1974. The total foreign exchange expenditure on this purchase was \$2.60 million.

Land Colonisation Project Programme

8512. SHRI SHASHI BHUSHAN. Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether Government have given consideration to the integrated land colonisation project programme; and

(b) if so, whether it is proposed to launch this programme in the form of pilot scheme in some areas?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) and (b). The Government of India have considered the question of taking up Pilot Projects, in the Central Sector, during the 5th Five Year Plan, for establishment of ultimately Self-supporting colonies on compact blocks of about 500 hectares each, capable of settling 200 families, in the following eight States, which have envinced interest so far:

- 1. Andhra Pradesh.
- 2. Bihar
- 3. Haryana
- 4. Maharashtra
- 5. Orissa
- 6. Rajasthan
- 7. Uttar Pradesh, and
- 8. West Bengal.

Central Assistance for improvement of transport system in various

8513. SHRI M SUDARSANAM: SHRI PRABODH CHANDRA:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No. 6757 regarding Rs. One crore to Calcutta State Transport Corporation on the 15th April, 1974 and state the quantum of Central assistance given for improving transport system in other cities?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): The entire

requirements of funds of Delhi Trans-

nort Corporation are already. being question of giving Central financial assistance to Transport Undertakings in Bombay and Madras will arise only after Road Transport Corporations have been set up in those cities under Road Transport Corporations Act, 1950, as recommended by Working Group on Metropolitan Transport Services.

Requests received from BEST Undertaking and Tamil Nadu Government for special financial assistance for implementation of short term proposals for improvement of public transport system in Bombay and Madras cities, which are expected to give quick benefits, are under examination.

Shortfall in Food output in Delhi

8514. SHRI S. A. MURUGANAN-THAM:
Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether there is likely shortfall of 20 per cent in food output in Delhi; and
- (b) if so, the reasons and action taken in that regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). Final Estimate of total production of foodgrains for the current year 1973-74 is not yet available. Delhi, however, is a Deficit territory and its requirements of foodgrains are generally met from open market supplemented by allocation from the central stocks.

कृषि मंत्रालय में हिन्दी के प्रयोग के लिए सलाहकार समिति की बैठक

8515. डा० लक्ष्मीनारायण पांडेय: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या उनके मंत्रालय के विभिन्न कार्यकलापों में हिन्दी के समुचित प्रयोग के लिए एक सलाहकार समिति गठितकी गई है; श्रीर
- (ख) यदि हां, तो लम्बे समय के बाद भी उसकी बैठकें न बुलायें जाने के कारण क्या हैं?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बी॰ पी॰ मीर्य): (क) जी हां।

' (ख) पहली बैठक 19 ग्रप्रैल, 1974 को हो चुकी है।

वर्ष 1972-73 भीर 1973-74 में मध्य प्रदेश के भारतीय खाद्य निगम के गोदामों में भ्रमाल का मानव उपयोग के लिए उप्यक्त न रहना

8516. डा॰ सक्सीनारायण पांडेय: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) भारतीय खाद्य निगम के इन्दौर स्तलाम, बेराबढ़, छार और मन्दसौर के गोदामों में वर्ष 1972-73 श्रीर 1973-74 में कितना अनाज सड़ा अथवा मानव उपभोग के लिए उपयुक्त नहीं रहा ; श्रीर
 - (ख) इसके क्या कारण हैं ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री प्राण्णासाहिब पी शिल्दे) : (क) नूचा इस प्रकार है :--

| स्थान का नाम | मात्रा | (विवटल में) |
|--------------------|---------|---------------------------|
| | 1972-73 | 1973-74 |
| इन्त्वौ र . | 0.60 | 18.47 |
| रतलाम | शून्य | शून्य |
| मेरागढ़ | | द्य निगम का ानहीं है । |
| धार | शून्य | भृन्य |
| मन्दसौर | 2.28 | शून्य |
| | | |

(ख) यह क्षति छत्त से वर्षा का पानी रिसने ग्रीर इन केन्द्रों पर भारतीय खाय निगम द्वारा किराय पर लिए गए गोदामों में सीलन होने के कारण हुई थी।

गत तीन वर्षों में वर्ष बार प्रनाब की मांग

8517. डा॰ सपनीनारायण पांडेयं: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि: गत तीन वर्षों में भारत के प्रत्येक राज्य में प्रनाज की प्रतिवर्ष भावश्यकता कितनी-कितनी रही?

कृषि मंद्रासय में राज्य मंत्री (औ प्रकासाहित पी० शिन्दे) विभिन्न राज्यों में खाद्यान्नों की ग्रावश्यकता बहुत से तथ्यों ग्रर्थात् खाद्य उत्पादन, उपलब्धता ग्रन्य वैकल्पिक खाद्य पदार्थों को स्तर, उन में तुलनात्मक मूल्य, ग्राय स्तर, जनसंख्या की वृद्धि ग्रीर शहरीकरण की रफ्तार ग्रादि पर निर्भर करती है ग्रीर इन जरूरतों की प्रत्येक राज्य में श्रौर प्रत्येक वर्ष भिन्न भिन्न होने की सम्भावना है। श्रतः विभिन्न राज्यों की खाद्यान्न सम्बन्धी जरूरतों का कोई ठीक ठींक मात्रात्मक श्रनुमान लगाना सम्भव नहीं है।

वर्ष 1974-75 के दौरान उत्तर प्रदेश में चीनी के उत्पादन में कमी

8518. डा० लक्मीनारायण पांडेय : श्री चन्द्रशेखर प्रसाद सिंह :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) क्या सरकार का ध्यान दिनांक 27 मार्च, 1974 के 'इकानामिक टाइम्स में प्रकाशित इस ग्राशय के समाचार की ग्रोर दिलाया गया है कि उत्तर प्रदेश में वर्ष 1974-75 के दौरान मोटी चीनी के अनुमानित लक्ष्य की प्राप्ति नहां होगी; ग्रौर
- (ख) यदि हां, तो क्या सरकार ने उन बाधाओं को दूर करने का कोई यत्न किया है जिनसे उत्पादन पर बुरा प्रभाव पड़ने की आशंका है?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (भीर श्री बी० पी मौर्य): (क) श्रीर (ख). इस सम्बन्ध में सरकार ने दिनांक 27 मार्च 1974 के 'इक्नामिक टाइम्स' में समाचार देखा है। उत्तर प्रदेश के चीनी कारखानों के लिए ग्रारक्षित किए गए गन्ना क्षेत्र में 17 प्रतिशत की वृद्धि के ग्राधार पर राज्य सरकार ने पहले चीनी वर्ष 1973–74 (ग्रक्तूबर, 1973 से सितम्बर, 1974) में चीनी का 16 लाख मी० टन उत्पादन होने का ग्रनुमान लगाया था। तथापि, ग्रग्रत्याशित सूखा पड़ने, लगातार वर्ष पड़ने तथा शीतकालीन वर्षा कम होने ग्रीर कीटाणुग्रों से महामारी फैलने

के परिणामस्वरूप, चीनी की वसूली की दर में गिरावट आयी है और उसके परिणाम-स्वरूप राज्य सरकार को श्रव आशा है कि केवल लगभग 14 लाख मी० टन का उत्पादन हो पाएगा। हाल ही में केन्द्रीय सरकार ने उत्पादन में वृद्धि करने के लिए उत्पादन शुक्क में छूट देने के रूप में श्रतिरिक्त प्रोत्साहन देने की मंजूरी दी है।

Intensive production of pulses and allocation therefor during 1974-75

8519. SHRI S. N. MISRA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) the names of States selected for the intensive production of pulses and the allocations proposed to be made for the purpose during 1974-75; and
- (b) to what extent these schemes are likely to help reduce the gap in demand and supply of pulses?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) The centrally sponsored scheme for Intensive production of pulses is proposed to be implemented in the states of Andhra Pradesh, Assam, Bihar, Gujarat, Haryana, Kerala, Madhya-Pradesh, Maharashtra, Kar-nataka, Orissa, Punjab, Rajasthan, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, West Bengal, Jammu and Kashmir, Himachal Pradesh, Tripura, Manhour and Union Territory of Delhi. A sum of Rs. 150 lakh has been provided for this purpose in B.E. 1974-75. The statewise allocation of funds will be made after finalisation of 5th Plan propo-

(b) It is expected that the above scheme will help increase production of pulses by about 5 lakh tonnes during 1974-75.

कीं खपत पर ਧੁਜਿਕ-ध

8520. श्रीफुल चन्द वर्भा कृष मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि

- (क) क्या सरकार चीनी की खपत पर प्रतिबन्ध लगाने के बारे में गम्भीरतापुर्वक विचार कर रही है
- (ख) यदि हां, तो इसके क्या कारण हैं; ग्रौर
- (ग) इस सम्बन्ध में विस्तृत जानकारी का ब्यौरा क्या है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बी । पी । मौर्य) : (क) से (ग) मौजदा तेल संकट में विश्व के बाजारों में चीती मुल्यों में अमूतपूर्व बढ़ोतरी और इस वर्ष भारत में चीनी के उत्पादन में अनुमानित बृद्धि का पूरा फायदा उठा कर अत्यावस्यक विदेशी मुद्रा कमाने के लिए इस वर्ष चीनी टा नियात बढ़ाने के लिए एक राष्ट्रीय आवश्यकता है। ऐसा करते समय यह सुनिश्चित करने के लिए प्रत्येक को शिश की जाएंगी कि चीनी की घरेल खपत की जरूरतों पर कोई अनुचित प्रशास्त्र न पड़े ।

Transformation into Atta of Wheat Seeds Procured by National Seeds Corporation for West Bengal

JYOTIRMOY BOSU: 3521. SHRI Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether Government are aware that out of nearly a thousand ton of wheat seed procured by the National Seeds Corporation for West Bengal, a major chunk of it has gone outside the State after transformation Aatta/Maida;

- (b) if so, the person responsible for this; and
- (c) disciplinary action Government have taken against him?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY \mathbf{OF} AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) to (c). Attention of the Government has drawn to reports in newspapers that out of nearly a thousand tonnes of wheat seed marketed by the Regional Office of the National Seeds Corporation at Calcutta, some has been converted into atta. Of the 921 tonnes handled by the Regional Office, allocation State-wise has been 15 tonnes to Assam, 8 tonnes to Nagaland, 218 tonnes to Manipur, 40 tonnes to Tripura and 640 tonnes to West Bengal. The National Seeds Corporation has decided to institute a departmental enquiry into the allegations made in respect of these transactions. The Corporation would take against the persons concerned, in the light of the results of the enquiry.

Salary of M.Ps. and M.L.A.s

8522. SHRI VAYALAR RAVI:

SHRI RAMACHANDRA: SHRI KADANNAPPALLI:

Will the Minister of PARLIAMEN-TARY AFFAIRS be pleased to state:

- (a) whether the salaries of Members of Parliament is lower than the salaries of M.L.A's of different States; and
- (b) if so, what is the difference compared to other States?

THE MINISTER OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): (a) and (b) Information is being collected from the Governments and will be laid on the Table of the House.

Change in syllabus of Secondary classes

8523. FHRI VAYALAR RAVI:

SHRI RAMACHANDRAN KADANNAPPALLI

Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether there is any proposal to change the syllabus of Secondary classes to improve the standard of education; and
- (b) if so, the salient features thereof and the action taken thereon?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) and (b). Central Advisory Board of Education has recommend that the 10+2+3 structure of education should be adopted in all States before the end of the Fifth Five Year Plan. New curricula and syllabi are being developed for classes I-XII by the National Council of Educational Research and Training for the guidance of State Education Departments. In dance with the proposals of the Education Commission, general education will be imparted in classes I-X. However, for about 20 per cent of the students there will be provision vocational courses. There is a proposal for providing transferability of credits obtained in general education imparted in the vocational stream to enable students to re-enter the general education stream on the basis of a pass in an examination conducted after a special course devised for the purpose.

Memorandum to P.M. Re. Deteriorating Food Situation

8524 SHRI RAMAVATAR SHAS TRI: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) wnether on behalf of the Indian Youth Congress NSUI, All India Youth Federation and All India Students Federation, a joint memorandum was submitted to the Prime Minister on 4th April, 1974 regarding the deteriorating food situation;
- (b) if so, what are the main points thereof; and
- (c) the reacion of the Government thereto?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) to (c). The Joint Memorandum was presented to Prime Minister on 3rd April 1974 demanding inter-alia steps to solve the problem of price rise, unemployment, to strengthen the public distribution system and to stop black marketing, hoarding and profiteering with the support of the people etc.

Keeping in view the overall availability of foodgrains in the Central pool, needs of other deficit States, maximum possible quantities of foodgrains are being allotted to the State Government. In order to improve the availability of foodgrains all restrictions on inter-State movement of coarse grains have been removed, and the new procurement and pricing policy of wheat for the 1974-75 rabi season has also been announced which is expected to ease the food situation.

राष्ट्रीय बीज निगम में भ्रष्टाचार

8525 श्री रामावतार शास्त्री : न्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि :

(क) क्या सरकार का ध्यान 5 ग्राग्रेल; के हिन्दी दैनिक में "राष्ट्रीय बीज निगम— भ्रष्टाचार का ग्राहु" शीर्षक से प्रकाशित समाचार की ग्रोर दिलाया गया है; ग्रीर (ख) इस पर सरकार की क्या प्रतिकिया है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री श्रण्णा-साहिब पी० शिन्दे): (क) जी हां।

(ख) राष्ट्रोय बीज निगम के ग्रधि-कारियों के खिलाफ़ समाचार पत्नों में उल्लिखित अधिकांश आरोप इस निगम के कर्मचारी युनियन द्वारा पेश किए गए एक ज्ञापन में भी लगाए गए था। भारत सरकार ने इन श्रारोपों की जांच करने के लिए श्री वी० एन० गाडगिल की ग्रध्यक्षता में एक समिति नियुक्त की थी। जहांतक बंगला देश को निर्यात किए गए ग्रालू के वीजों का सम्बन्ध है, कृषि मंत्रालय का एक वरिष्ठ ग्रधिकारी इस सौदे की जांच करने के लिए नियुष्त किया 💯 है ग्रीर जांच-पड़ताल की जा रही है। है। राष्ट्रीय बीज निगम ने गोहाटी के व्यापारियों द्वारा 300 मीटरी टन गेहं के बीजों का ग्राटा बना कर बिकी करने के कथित मामले की जांच । करने के लिए एक विभागीय जांच करने का फैसला किया है।

Physical Education Institutions in Maharashtra

8526. SHRI ANNASAHEB GOT-KHINDE: Will the Minister of EDU-CATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) the names and locations of the physical education institutions in Maharashtra State to which grants were given during the last three years; and
- (b) the amount of the grant and its purpose, institution-wise and year-wise?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) and (b). A statement is laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT-6855/74].

Result of Enquiry on sinking of ship "Narayan Prasad"

8527. SHRI R. N. BARMAN: SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether an enquiry ino the reasons of sinking of the ship "Nara-yan Prasad" has been instituted by Government; and
- (b) if so, the results of the enquiry?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR KUKHERJEE): (a) and (b). Yes, Sir. The Inquiry is in progress.

Setting up of Food and Essential Commodities Corporation

8528 SHRI R. S. PANDEY: SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government's attention has been drawn to the decision of the U.P. State to set up a Food and Essential Commodities Corporation to ensure equitable distribution of these items in the state; and
- (b) if so, the reaction of the Government thereto and reasons for not recommending similar corporation to other states?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) Yes, Sir.

(b) The State Governments have already been advised that the Central Government would have no objection to the States undertaking full responsibility for procurement and distribution of foodgrains and other essential commodities within the State and setting up their own Corporations for the purpose provided they agreed to supply to the Central Pool the contribution expected of them and absorb the employees of the Food Corporation of India that would be rendered surplus in the process.

Purchase of Ships by Shipping Companies

8529. SHRI LUTFAL HAQUE; SHRI A. K M. ISHAQUE:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) the number of ships purchased by the shipping companies during the last three years, both coastal and Overseas, their Tonnage and G.R.T. Type of vessels, year-wise, companywise;
- (b) the country from where these ships were purchased and the cost; and

(c) the number of ships built in the country during the said period?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANABKUMAR MUKHERJEE): (a) to (c). The required information is being collected.

Ship Building Firms in the Country

8530. SHRI LUTFAL HAQUE: SHRI SAKTI KUMAR SARKAR:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether there are thirteen ship building firms in the country; and
- (b) if so, the particulars of each firm?

THE DEPUTY MINISTER IN SHIPPING THE MINISTRY OF AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) and (b). Based on up-to-date information received from Director General of Shipping, a statement indicating particulars of ship-building firms in the country is attached.

Statement

Name of the Firm Brief Particulars (Type of vessels constructed) I. Hindustan Shipyard This is a public sector shipyard and is at present building ships upto a capacity of 21,500 DWT. Garden Reach Workshops Limited, Calcutta. This is a public sector shipyard which undertakes construction of crafts e.g. tugs, dredgers, launches etc. and fishing trawlers and also liner bulk carriers upto a capacity of 27,000 DWT. Mazagon Dock Limited, Bombay Tais is a public sector shipyard which undertakes building of barges, frigates etc. and passenger-cum-cargo ships upto a capacity of 15,000 DWT.

- 4. Rajabagan Dockyard, Calcutta.
- This Dockyard is a part of Central Inland Water Transport Corporation Ltd., which is a Govt. of India Underatking. Besides repairing inland water transport vessels, this Dockyard also undertakes construction of inland vessels and harbour crafts, such as ungs, launches, dredgers and fishing trawiers.

| | Name of the Firm | Brice Particulars (Type of vessels constructed) |
|----|--|--|
| 5 | Goa, Shipvard Limited Goa | This shippard is a subsidiary of Mazagon Dock Limited and undertakes construction of barges, tugs other river crafts and fishing trawlers |
| | PRIVAIL S | CCTORS SHIPLARDS |
| 6 | Andrew Yule & C. It 1. Calcutta | It constructs river harbour and scagoing crafts, cargo lighters, self propelled barges, pleasure, survey, rescue launches fi hing trawlers and garb dredgers |
| 7 | Alc ck Ashd wn C) Ltd Bombay | It constructs boats tugs, harges dredgers, fishing trawlers, pressure and chemical vessels etc. |
| 8 | Bombay Marin Engineering Works Bombay | I c nstructs medium size crafts of varied nature |
| 9 | Brunton & Co I ngineers Limited Gechin | It contracts all kinds of marine craits fishing trav- less, tugs, barges and dredgers etc |
| 10 | Ch avgule and Co Private I imited, Mormugao | It constructs vessels upto 1000 tons ore carrying barges of 1000 tons capacity |
| tI | Last Bengal I ngincering Works, Calcutta | It constructs tugs off propelled barges dre ages, etc within following dimension 1 Length maximum 200 ft 2 Maximum Beam 32 ft 3 Draft 10 ft |
| 12 | Gladstone Lyall and Co Ltd Calcutta | li emstructs fiberglas trawlers |
| 13 | Hooghly Docking and Engineering C. Ltd., Calcuita | It constructs tugs hopper barges trawlers at sca- going self-propelled coastal crafts upto 2000 ons. |
| τ4 | Pro Ericus, Wir II | I contral significants drolger and trawlers etc. |
| 15 | Scindia Work h p Iti Bombay | It constructs barges trawlers, point ins and lauches etc. |
| 16 | Shalimar Works Ltd Calcutta | It constructs tugs trawler and dredgers |
| 17 | Shaparia Deck and Steel Co Pet Ltd., Borobay | It constructs inland/seagoing vessels upto 1000 tons; launches, tug barge lifebours dredgers etc of length upto 150 ft and beam 31 ft |
| 18 | Vishal Engg Works Pvt Ltd , Panaji, Goa | It constructs barge with a capacity of 400 tons and above |
| 19 | River Steam Navigation C Ltd , Calcutta | It constructs all types (t shallow drafts vessels upto a length of 300 ft and upto a maximum loaded draft of 6 ft |
| 20 | Modern Mechanical Marine Works Private Limited, Bombay | It constructs water craft upto 1500 ton capacity |

Note —This statement does not include Cochin Shippard which is still under construction and is expected to be completed by the end of Sciptember, 1975. The first series of ships to be constructed in this shippard is Panamax. Pulk Carriers of 75000 DW1

Ship Transported Coal for Gujarat

8531 SHRI P. M. MEIITA; Will the Minister of SHIPPING AND TRANS-PORT be pleased to state

- (a) whether Gujarat has requested the Centre to arrange for the movement of coal to the State by sea in view of the present difficulties faced by the Railways; and
- (b) if so, the reaction of the Union Government?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) No rcquest was received in the recent past from Gujarat Government for movement of coal to the State by sea. However, requests from certain organisations in Gujarat State were received and then requirements for allotment or colliers were met by Director General of Shipping to the extent feasible.

(b) Does not arise.

Visit of Experts of F.A.O. on Forest Development Projects

8533. SHRI P. M. MEHTA:

SHRI DHAMANKAR:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether a team of forestry experts of the Food and Agriculture Organisation of the United Nations, which visited India last year, had identified a number of forest utilisation and development projects to be taken up Immediately and had suggested assistance from international donor agencies:
- . (b) if so, the other suggestions made;

- (c) how many suggestions have been accepted by the Government; and
 - (d) the steps taken in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI (a, Yes, ci B P MAURYA) Food and Agriculture Organisation/ International Development At thorsty Team visited India on 7th January to 16th March, 1973 and their Report on Forestry Project Identification Mission for India was received in July 1973. They have identified cert in projects to be taken up for implementation immediately and they have suggested assistance for inplementation of these projects from Donor Agencies. The Projects recommended for immediate implementation are as follows:

- (1) Hiring of consultants for developing plantation techniques of tropical pines and reclamation of areas with alkaline soils for raising forestry plantations:
- (ii) Purchasing seeds of suitable tropical pines for nursery trials;
- (iii) Hiring of heavy equipment for trials on selection of machinery for large scale plantations in West Bengal;
- (iv) Fellowships to Indian Officers to visit Australia to study mechanised plantations.
- (b) Other suggestions made by the Team are as follows:
- (1) The project for Industrial and Fuelwood Plantations in North East Assum and West Bengal Pulp Wood Project may be considered for National Financing of International Institutional Financing Agencies,
- (ii) The Plantation schemes, each of about 40,000 hec. in Maharashtra Andhra Pradesh, Madhya Pradesh and Kerala States may be considered for Institutional Financing Agencies through establishment of Forest Corporations in the light of the recommendations of National Commission on Agriculture.

- (iii) Donor assistance may be sought for following projects:
- (1) Conifers species trials is suitable areas in Maharashtra, Madhya Pradesh, Andhra Pradesh and Orissa.
- (2) Study of Eucalyptus fereticornis provenances in their native habitat and their behaviour as exotic plantation species.
- (3) Establishment of a Model Forest Fire Protection Service in Kerala State.
- (4) Establishment of business Administration Training Unit for Forest Corporation Personnel
- (5) Supply of heavy equipment, fertiliser and consulting services for establishment of Eucalyptus plantations in West Bengal.
- (6) Hiring of consultancy service for various forest Development Projects.
- (7) Organisation of an All India Seminar on Farm Forestry/Forestry Extension.
- (8) Preparation of a project for Farm Forestry in Haryana State and its implementation.
- (c) The recommendations of the Mission have been examined and accepted by the Government and priorities allocated.
- (d) The Projects recomemnded for immediate implementations are being considered for Donor assistance.

Defective Designing and Sub-Standard Materials used by D.D.A. in E.P.D.P. Colony, Bellii

8534. SHRI DHAMANKAR:

SHRI MOHINDER SINGH GILL:

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

(a) whether he is aware of the fact that DDA used defective designing

- and sub-standard materials in the construction of East Pakistan Displaced Person's Colony in South Delhi for which LIC agreed to advance Rs. 2 crores on the request of his Ministry;
- (b) if so, whether any inquiry has been instituted in this affair; and
- (c) if so, the results thereof and also the reasons for delay in the completion of the job?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MIN-ISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) to (c). Some complaints regarding use of substandard materials were received by the Delhi Development Authority. The materials used were not sub-standard. All the defects which were of minor nature were attended to promptly. Samples of cement mortar were taken jointly with the representatives of E.P.D.P. Society and sent for test to National Test House at Calcutta and the results were found to be satisfactory. With regard to designs of the houses, there were no serious defects and the Society's members had also themselves approved the drawings. The loan granted was for Rs. 1 crore

The delay in the completion of the houses is due to factors like the large number of different designs which had to be prepared to the satisfaction of the members, delay in getting water for construction and searcity of materials like cement and bricks.

National Souds Corporation Beard of Birectors

- 8585. SHRI DHAMANKAR: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:
- (a) whether the National Seeds Corporation is without a Board of Directors: and

(b) if so, since how long and the reasons for the same?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) No., Sir. The term of the Board of Directors of the National Seeds Corporation which was to expire on 15th February, 1974 has been extended by three months.

(b) Does not arise

Construction of Bridge over River Haldi at Norghat in Midnapur

8536. SHRI SAKTI KUMAR SARKAR:

SHRI S N. SINGH DEO:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether construction of Bridge over the river Haldi at Norghat in the district Midnapur has been started in 1967 and not yet completed; and
- (b) if so, the amount sanctioned for the bridge up to date and the reason for the delay in construction?

THE DEPUTY MINISTER IN THE OF MINISTRY SHIPPING AND PRANAB TRANSPORT (SHRI KUMAR MUKHERJEE): (a) and (b). The proposed bridge over the river Haldi is a State Project and is being financed by the Government of West Bengal. According to the information received from the State Government, the project was started in 1967 and a total amount of Rs. 41.50 lakhs has been allotted by them for it upto 1974-75. It has not been possible for them to complete the work so far due to difficult working condition and soil characteristies, financial stringency, lack of appropriate machinery and experience to handle the job on the part of the contractor.

655 LS-6.

Shipping Companies Running at Less

8538. SHRI SAKTI KUMAR SARKAR:

SHRI S N SINGH DEO:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether most of the shipping companies are running at a loss;
- (b) if so, the profit and loss of the shipping companies in the country during 1971-72 and 1972-73; and
- (c) action taken by the Government in this regard?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) No Sir

- (b) The profit and loss accounts of dipping companie, for the years 1971-72 and 1972 73 are not readily available.
 - (c) Does not arise.

Ships on Overseas Trade

8539. SHRI A K. M. ISHAQUE:

SHRI S. N. SINGH DEO:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) the number of ships on overseas trade in the country owned by the companies, company-wise; and
- (b) the type of vessels, their tonnage and G.R.T.?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) and (b). A statement giving the required information as on 31st December, 1973, is laid on the Table of House, [Placed in Library, Sies No. 1.27-5826/74].

Demand for Additional Wheat for Karnataka

8540 SHRI G Y KRISHNAN-SHRIK MALLANNA:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to refer to the reply given to Unstarred Question No 615 on 25th February, 1974 regarding quantity of wheat and coarse grains demanded by and supplied to Karnataka and state.

- (a) whether there has been some additional demand of wheat from the State: and
- (b) if so, the reaction of Central Government thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P SHINDE) (a) Yes, Sir

(b) It has not been possible to increase the allocation for Karnataka The State has been allotted 9,000 tonnes of wheat and 11,000 tonnes of milo for each of the months of March and April, 1974.

Direction for Construction of Building less than Three Storey

8641 SHRI K MALLANNA.

SHRI D B CHANDRA **GOWDA**

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state.

- (a) whether any directions have been issued by the Government India to restrict the construction of less than three storey buildings in view of the increased cement export to oil producing countries; and
- (b) M so, the policy of Government in extending the facilities to provide cement and steel?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MIN-ISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) No. Sir

(b) Does not arise

रकलो ग्रीर विश्वविद्यालयो में नैतिकता ग्रीर धनशासन की शिक्षा देना

8542. भी शकर दयाल सिंह शिक्षा. समाज कल्याण और संस्कृति मनी यह बताने की कृपा वरेगे वि

- (क) क्या स्कूला भीर विश्वविद्यालयो म नैतिकता और अनुशासन की शिक्षा दन ने मम्बन्ध म कोई याजना बनाई जा उड़ी है, भ्रीर
- (ख) यदि हा ना तत्सम्बन्धी मुख्य बाते क्या हैं?

शिक्षा भीर समाज कल्याण महालय तथा संस्कृति विभाग में उपमत्री (भी डी० वी वादव): (व) भीर (ख) सरकार का विचार है कि शिक्षा ने महान उद्देश्यों मे एक उद्देश्य विद्यार्थियो का चरित्र निर्माण होना चाहिए। पाठयचर्या भ्रौर पाठयंतर बार्यक्रमापो के परिम विद्यार्थियों को नैतिक श्रीर सामाजिक मृत्य अपनान के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए । शिक्षा पद्धति ऐसी होनी चाहिए जिससे चरित्रवान भौर योग्य नवयुवक तैयार हो जो राष्ट्रीय सेवा भीर विकास के लिए प्रतिबद्ध हो। इस उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए सरकार का विचार राज्य सरकारो तथा सम मासित भोद्गो से परामर्श करके शिक्षा सस्याधी के पाठयचर्या भीर पाठयेत्तर प्रोग्रामों को पुनर्गठित करने का है।

Cultivation of Sunflowers

8543. SHRI JAGANNATH MISHRA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government have proposed an ambitious programme to supplement the availability of oilseeds by extending the cultivation of non-traditional oil seeds. namely sunflower: and
- (b) if so, the main features of the plan in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) Yes, Sir.

- (b) It is proposed to extent the cultivation of sunflower over an area of 10,60,000 hectares by the end of the Fifth Five Year Plan under the Centrally Sponsored Scheme for Sunflower Development in the States of Andhra Pradesh, Madhya Pradesh, Gujarat, Karnataka, Maharashtra, Orissa, Tamil Nadu, Uttar Pradesh, West Bengal and The other main features of Pun'jab. the Programme are:-
- (i) Propagation of proper techniques of cultivation of the crop to obtain maximum yield per hactare.
- (ii) Supply of minikits free of cost to the cultivators containing seed along with seed dressers and literature on package of practices in the first year of the implementation of the programme followed by subsidy on quality seed in the subsequent years.
- (iii) Large scale demonstrations to educate the farmers on sunflower cultivation.
 - (iv) Strengthening of staff.

Allotment of Houses by DDA to Cooperative Societies in Delhi

8544 SHRI ISHWAR CHAUDHRY: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) the names of those cooperative or other societies, citizen councils such societies to which the Delhi Development Authority had over more than 100 houses in Delhi to allot to eligible persons;
- (b) the names of the office-bearers of these societies or councils;
- (c) whether certain complaints have been received in regard to allotment of these houses by these societies: and
- (d) if so, the facts thereof and the outcome of the enquiry conducted in the matter?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MIN-ISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) Delhi Development Authority has not handed over more than 100 flats to any Cooperative Society, Citizens' Council or other Societies for allotment to eligible persons.

(b) to (d). Do not arise.

Public Distribution System for Industrial Areas and Towns

8545. SHRI N. SHIVAPPA:

SHRI D. D. DESAI:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether Government are considering that the public distribution system should be confined to industrial areas and towns; and

(b) if so, whether other areas would be looked after by the normal flow of trade?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P SHINDE)

(a) and (b) With the improvement in the availability of foodgrains in the market the offtake from the public distribution system is expected to be on a reduced scale

Shipping Industry facing Crisis

8546 SHRI N SHIVAPPA SHRI RAGHUNANDAN LAL BHAITA

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state

- (a) whether the Shipping Industry 14 facing crisis and
 - (b) if so icasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE) (a) No. Su.

(b) Does not arise

Wheat Cultivation dependent upon availability of Chemical Fertiliser

8547 SHRI N SHIVAPPA SHRI P. GANGADER:

Will the Minister of AGRICUL/TURE be pleased to state

- (a) whether production potential of the wheat cultivation area entirely depends on availability of chemical Fertilisers; and
 - (b) if so, facts thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P SHINDE)

(a) Not entirely but only partly

(b) The production potential of wheat depends upon the availability of a number of inputs like, (1) good seed (2) availability of plant nutrients, of which the fertilisers are intended to supplement what is already present in the soil or what cannot be supplied through organic manure, (3) irrigation wat: (4) management skill and (5) the absence of diseases and climati hazards like hail-storm or very not spells during the grain filling stage or severe frost during flowering Anyone when not favourable can of these prevent the vield potential of wheat being ichieved fully Und r normai and favourable conditions of all the other factors the yield potential of wheat increases with the availability of chemical fertilisers However a shortfall in fertiliser availability can be made up within certain limits by a higher efficiency of fertiliser management by a greater mobilisation of organic manure and by taking steps to increase soil fertility by growing a legume crop with the appropriate rhizobial culture prior to the cultivation of wheat Irrigation also minimises yield reduction arising from inadequacy of fertilizer

Land given under Lease to YWCA, Delhi

8548 SHRI PILOO MODY Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state

- (a) whether the land given under lease to the Young Women's Christian Association, for social 'welfare purposes, ie, building a hostel for working women in Delhi (1921) is currently a hot bed of malpractice, nepotism and embezzlement; and
- (b) whether there is an unhygienic overcrowding of beds for purely monetary gain and new entrants are being made to pay exorbitant rates?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) and (b). The land was leased for Young Women's Christian Association Building and Hostel. This Ministry have no information on the alleyed malpractices etc.

Major Highway Routes through Sidhi, M.P.

3549. SHRI RANABAHADUR
SINGH. Will the Minister of SHIP-PING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) what are the major highway toutes that are proposed for the Fifth Five Year Plan that shall pass through the Sidhi District of M.P.; and
- (b) what will be the number of major towns that they shall link?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) and (b). The Government of India, under the Constitution, are primarily responsible for roads declared as National Highways. All roads other than National Highways in States fall within the sphere of State activities. The general question of providing major highway routes passing through the Sidhi District of Madhya Pradesh is, therefore, the concern of the Government of Madhya Pradesh.

As regards National Highways, the State Government have proposed the inclusion of road passing through major towns of Gwallor-Jhansi-Chattar-pur-Khajuraho-Panna-Satna-Rewa-Sidhi Baidhan-Pipri-Gaghwa-Ranchi Road in the National Highway System in the 5th Plan. This has been noted for consideration along with similar other

proposals while finalising the 5th Plan proposals keeping in view the available resources, inter se priority of individual schemes on as All-India basis and the extent to which each road satisfies the criterial laid down to declaring roads as National Highways Since, however, the 5th Five Year Plan is still in a preparatory stige, no final decisions have been taken in the matter.

Foodgrains for Assam

8550 SHRI NIHAR LASKAR: SHRI TARUN GOGOI:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether acute shortage of foodgrams is being experienced in the State of Assam,
 - (b) if so, the reasons for the same;
- (c) whether Union Government has been requested to supply more foodgrains to the State; and
- (d) if so, the reaction of Union Government and how much foodgrams were supplied to the State from 1st January 1974?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) to (d). Assam is normally surplus in rice. Owing to some milling difficulty in Assam, 2,000 tonnes of rice have been recently allotted to the State Government from the Central Pool on their request on replacement basis

The State Government have been asking for increased allotment of wheat from the Central Pool. The monthly allotment of wheat has been stepped up. The total quantity of wheat supplied to Assam during January—March, 1974 was 25.3 thousand tonnes. The allotment for April, 1974 is 12,060 tonnes.

130

Toxic effect of affluent from Harihar Polyfibre Plant in Karnataka on Agriculture and Vegetation

8551. SHRI B. V. NAIK: Will the Minister of AGR/CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the affluent from Harihar Polyfibre in Karnataka State has been tested for its toxic effect;
- (b) whether it has been found to be harmless to agriculture and vegetation; and
- (c) if so, why it is not used for irrigation purposes?

THE MENISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) to (c). The information is being collected from the concerned State Government and the same, when received, will be placed on the Table of the Sabha.

Cracks in Gol Gumbaj, Bijapur

8552. SHRI B. V. NAIK: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the high dome of Gol Gumbaj in Bijapur in Karnataka State has developed cracks; and
- (b) if so, what steps are being taken to preserve this archaeological monument intact?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) and (b). Yes, Sir. A few cracks were observed to have appeared in the plaster covering the extrados of the dome. These were treated and sealed liquid cement grout. However, the dome is being examined thoroughly with a view to finding out the measures that may be necessary for the preservation of the monument.

Project Report for Development of Karwa_r (Binaga)

8553. SHRI B. V. NAIK: Will the Minister of SHIPPING AND TRANS-PORT be pleased to state:

- (a) Whether G. rernment of Mysore (Kirnataka) has submitted a Rs. Five crore project report for development of Karwar (Binaga) into an intermediate port; and
- (b) if so, the stage at which the proposal rests with the Centre?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) Yes, Sir.

(b) The proposal is under consideration in Consultation with the Planning Commission.

Delay in Rabi Wheat Harvest by Punjah Farmers to Press for Remunerative Prices

8554. SHRI PRABODH CHANDRA: SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government's attention has been drawn to the move of Punjab farmers to delay the rabi wheat harvest for sometime to press for remunerative wheat prices; and
- (b) if so, the reaction of the Government thereto?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) and (b). The State Government are not aware of any such move on the part of the farmers.

Short duration and Dwarf varieties of Coconut Plantations in Kerala

8555, SHRI K. RAMKRISHNA REDDY: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether short duration and dwarf varieties of coconut plantations are evolved in Kerala;
- (b) if so, whether Government intends to raise a nursery or subsidise private nurseries in Kerala for its mass plantations: and
- (c) whether it has brought to the notice of the Andhra Pradesh Government for popularising the same?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) Yes, Sir.

(b) The hybrid coconuts, which are early and profuse bearers, are being multiplied-in cultivators' gardens under a Centrally Sponsored Scheme. For this work a premium of 15 per cent is allowed to the cultivators while collecting the seednuts in addition to the cost of the nuts at the prevailing market price. A premium of Rs. 5]-per palm is also given to the cultivators for the collection of pollen from the dwarf palm.

It is also proposed to organise this work at the Central State Farm, Aralam.

(c) These varieties of coconut are already in the knowledge of all the coconut growing States, including Andhra Pradesh.

Taking over of All Shipping Companies by S.C.I.

8556. SHRI PRIYA RANJAN DAS MUNSI: Will the Minister of SHIP-PING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether the India Steam Ship Co. has been granted permission to purchase more ships this year;
- (b) if so, what prevents this Ministry to take over all shipping companies under Shipping Corporation of India; and
- (c) the loss and profit of India steamships and Shipping Corporation in 1972-73?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) Yes, Sir. India Steamship Ltd. were permitted on 9-1-1974 to acquire three second-hand vessels of a total of 35,163 GRT at a cost of US \$ 26 million.

- (b) No decision to nationalise Indian Shipping has been taken.
- (c) The profit (before Tax and Depreciation) made by these two shipping companies during 1972-73 was as under:—

S.C I.-Rs. 1,791.36 lakhs.

Indian Steamships-Rs. 233 89 lakhs.

Sale of condemned seeds of National Seeds Corporation

8557. SHRI SAT PAT KAPUR: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether the National Seeds Corporation disposed of condemned seeds during 1970—1973;
- (b) if so, the quantity thus disposed of and the cust of the same; and
- (c) whether in the retail sale of these condemned seeds huge profits were made at the cost of the consumers?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE).

(a) and (b). The National Seeds Corporation condemened 2,808 tonnes of seeds valued at Rs. 105.49 lakhs in the period 1969-70 to 1972-73. The Corporation realised Rs 36.50 lakhs by disposal of the condemned seeds, rejected seeds and sweepings, during the period 1969-70 to 1972-73.

(c) The Government have no information of this point.

Diversification of activities of State Farms Corporation

8558. SHRI SAT PAL KAPUR: Will the Manister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether it has been decided to diversify the activities of the State Farms Corporation to cover food processing, and
- (b) if so, the proposals at hand in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) The Memorandum and Articles of Association of the State Farms Corporation of India provide that one of the objectives of the Corporation is to carry on all or any of the business of the farmers, producers, processors etc. of agricultural produce of all kinds including dairy, poultry, garden and horticulture produce.

(b) The Corporation has already set up a medium sized canning Plant at the Central State Farm, Mizoram The Corporation also proposes to set up additional agro-based industries at some of its other farms in the Fifth Five Year Plan, for which a provision of Rs 20 lakhs has been proposed Although some exploratory efforts have been made, no detailed feasibility report has ben prepared for the setting up of these processing units. The Corporation is yet to take decision on the location of the units and when such units shall be set up.

Procurement of Foodgrains by Government

8559 PROF. MADHU DANDAVATE: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) what is the quantum of foodgrains expected by the Government from the wholesale traders after the introduction of the new procurement and price policy for foodgrains, and
- (b) what steps are devised to ensure that the expected quantum of foodgrains is procured by Government?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b) It is not possible at this stage to make any precise estimate of the quantities of wheat that may be procured under the new policy. Levy Orders have been issued and other administrative arrangements finalised by the surplus States of Punjab, Haryana. Uttar Pradesh, Madhya Pradesh and Rajasthan for the realization of 50 per cent levy from what dealers and cooperative societies obtaining licences as dealers.

Implementation of modified Grades for University and College Teachers

8560 PROF. MADHU DANDAVATE: Will the Minister of EDUCATION SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether any time limit has been prescribed for the implementation of the modified grades for the University and College teachers; and
- (b) if so, what is the response of the authorities of Universities and constituent Colleges?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S NARUL HASAN): (a) and (b). The Government of India have recently approved the revision of

scales of pay for University and College teachers with effect from 1-1-1973. The detail, of implementation of the scheme are being worked out in consultation with the University Grants Commission and these are expected to be circulated to all the State Governments to implement the scheme and claim assistance from the Central Government.

Formation of Cooperatives by Farmers of Punjab and Haryana for Sale of Wheat

8561 PROF. MADHU DANDAVATE: SHRI MOHINDER SINGH GILL:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) whether the rich farmers in Punjah and Haryana are planning to form cooperatives to sell their wheat in deficit States at prices higher than those they are likely to get from local mandis; and
- (b) if so, the reaction of the Government thereto?

THE MINISTER OF STATE IN THE AGRICULTURE MINISTRY OF (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). No specific reports have come to the notice of the Government. However, such Co-operative Societies as wish to operate as dealers in wheat will have to obtain dealers' licences and deliver 50 per cent levy. After the levy obligation has ben discharged, like other licensed dealers, they will be permitted to sell the levy-free wheat within the State or outside the State on the basis of a permit.

Negotiated Price to Sugar Industry for Procurement of Sugar for Export

8562. PROF. MADHU DANDAVATE: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether a suggestion to offer a negotiated price to the sugar industry

for the quantum of sugar it wants to procure for export outside the preferential quota is being considered by Government; and

(b) if so, whether in the event of negotiated price being worked out, the procedure of floating tenders will be kept in abeyance at least for this year?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) and (b). For the present sugar required for export is being obtained from the levy quota at the notified prices. It is transported and delivered by the mills at the ports for loading into ships on payment of agreed charges. If and when it becomes necessary to utilize free sale sugar for exports, the purchase price therefore will be negotiated and settled.

Sugarcane Development Plan

8563. SHRI M. RAM GOPAL REDDY:

SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL:

Will the Minister of AGRICUL-TURE be pleased to state:

- (a) whether Government have chalked out any sugarcane development plan for enhancing sugarcane production: and
 - (b) if so, the main features thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) Yes, Sir.

(b) The programme envisaged coverage of a compact block of 2000 hectare around each sugar factory in Sub-Tropical belt and 1000 hectare in Tropical belt where emphasis will be laid on (i) Quality seed production and distribution for commercial cultivation; (ii) demonstrations on plant and ration cane; (iii) adoption of

plant protection measures; (iv) training of cane development workers at State level and (v) construction of link roads in sugar factory areas.

Collapse of Safdarjung Fly Over

8564 SHRI M RAM GOPAL RED-DY, Will the Minister of WORKS AND HOUSING to pleased to state:

- (a) whether the Enquiry Commission has blamed NBCC for the collapse of Safdarjung fly over columns in Delhi.
- (h) if so, the action taken against the Corporation; and
- (c) the names of the persons responsible for the negligence?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA) (a) to (c) The Report is under examination of the Government

Tribal Development Agencies and Allocation therefor

8565 SHR' GIRIDHAR GOMANGO Wi'l tne Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) the total number of Tiibal Development Agencies started so far in the country.
- (b) the allocation of money to each project and the number of tribal blocks covered in each project and the progress made so far; and
- (c) the total number of beneficiaries in each project?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA); (a) The total number of Tribal Development Agencies taken up so far is 8.

(b) and (c). The statement—one showing allocation of money, number of blocks covered and total number of beneficiaries in respect of each Project and the other showing progress made by each Project, are laid on the Table of the House [Placed in Library See No. LT—6857/74)].

Development of Higher Education in Educationally backward districts of Orissa

8566 SHRI GIRIDHAR GOMANGO: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state.

- (a) the policy and provisions adopted by the UGC. for the development of higher education, particularly for educationally backward districts of Orissa:
- (b) the allocation recommended by the UGC for the Berhampur, Sambalpur and Utkal Universities in Fourth Plan and for Fifth Plan; and
- (c) the allocation made in the Fourth Plan and Fifth Plan by the Ministry?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF S. NURUL HASAN) (a) to (c) Guidelines for preparation of proposals for the Fifth Five Year Plan, circulated by the University Grants Commission to the Universities, interalia provide that efforts should be made towards removal of regional imbalances, creating opportunities for higher education for under-privileged sections of society and also underdeveloped areas in each region These could be in the form of special supprogrammes/courses plementary help students from Scheduled Castes/ Tribes and other under-privileged communities, so that they may be enabled to overcome their initial handicaps The Universities may give special attention to the structure and contents of courses of colleges located in rural afters.

The following allocations were made by the Commission for the Fourth Five Year Plan to Universities in Orissa:-

> Berhampur Rs. 55 lakhs Sambalpur Rs. 57 lakhs Rs. 62 lakhs Utkal

In addition 108 proposals of 64 colleges in Orissa were accepted during Fourth Plan and total assistance given as Commission share was Rs. 45.31 lakhs; the total approved share being Rs. 1.34 crores. Another Rs. 22.92 lakhs were also sanctioned to 72 colleges under other schemes like basic grants for books and equipment and teachers' flats.

During the Fifth Five Year Plan period. Utkal University has been requested by the Commission to send proposals upto Rs. 1.5 crores and Berhampur and Sambalpur Universities upto Rs. 1 crore each, the proposals being arranged in three priorities as indicated in the guidelines.

The Ministry of Education and Social Welfare have no scheme for this purpose as all funds for development of higher education are channellised through the University Grants Commission.

Allocation to Tribal Development Agency for road development

8567. SHRI GIRIDHAR GOMANGO: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) the money allocated the to T.D A. Gunupur-Parlakhemundi under the road development;
- (b) the criteria and policy adopted for the road development in the T.D.As; and
- (c) whether there is any proposal to sanction special money to T.D.As. under the head of road development in Fifth Plan?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) Money allocated to the T.D.A. Gunupur (Konaput) and Parlakhemundi (Ganjam) for road development during the Project period is indicated below:-

| | | Link Roads | Arterial Ro a ds | | |
|----|----------------------------------|---------------|----------------------------|--|--|
| | | | Rs in lakhs | | |
| ı. | T.D.AGunupur (Koraput) | 20 | 50 | | |
| 2. | T.D.AParlakhe- mundi (Ganjam) | 25 | 50 | | |

- (b) The policy adopted for road development in the T.D.As. is that (i) the link roads should be of category of rural pucca roads linking markets, mandis, godowns etc. and also villages with the district highways, village basti roads etc., and (ii) the arterial roads should be all-weather pucca metalled roads of the standard of 'Major District Road' failing which of 'Other District Road' category, and should be complete from point to point including causeways, bridges, culverts etc and connect the Project area with the State and national highways, railheads etc. in order to open up the area.
- (c) No, Sir There is no proposal to sanction any other special money to the TDAs for road development in Fifth Plan.

Road Development in Tribal areas of Orissa during Fifth Year Plan

6568. SHRI GIRIDHAR GOMANGO: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

(a) what measures or special schemes are being taken up by the Ministry in Fifth Five Year Plan in road development in the tribal areas of the country with special reference to Orissa; and

(b) what are the allocations for tribal areas out of the total outlay proposed for road development (i) the Central Sector; and (ii) the State Sector?

THE DEPUTY MINISTER IN THE AND MINISTRY OF SHIPPING TRANSPORT (SHRI PRANAB KU-MAR MUKHEJEE); (a) and (b). The Government of India are primarily responsible for the development and maintenance of National Highways Roads other than National Highways in States are the concern of the respective State Governments

National Highways are planned as trunk roads linking the various parts of the country as a whole and not for any particular area or region as such. Some of these highways pass through areas with tribal concentration. In Orissa, a length of 516 Kms. of National Highways pass through tribal areas against a total National Highways length of 1649 Kms. in the State. The length of National Highways in tribal areas of Orissa is thus 31 per cent in the total length whereas the population of scheduled tribes is 23 per cent. In addition, some loan assistance is also given for selected State Roads of Inter-State or Economic Importance and due consideration is given for roads in tribal areas under this scheme also in case States come up with any such demand

As the proposals for the Fifth Five Year Plan are still in a preliminary stage, it is not possible to give an idea at this stage about the extent to which the requirements of tribal areas will be covered by the Central Sector Road Schemes.

The Ministry is not concerned with the State Sector. However, the requirements for tribal areas in the main would be covered by the Rural Roads under the Minimum Needs Programme proposed in the State Sector. According to the information available in the Ministry, a tentative outlay of Rs 35.00 crores has been

suggested for this purpose in the Fifth Five Year Plan for Orissa State which includes Rs. 500 crores for covering requirements of tribal areas.

Cattle breeding farm in Karnataka

8569 SHRT JYOTIRMOY BOSU: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) a list of Government run catile breeding farm in the State Karnataka:
- (b) the number and value of cattle (i) indegenously produced and imported from abroad for each farms year-wise during the last three years and how many sheep and cattle of each farm have died during this period:
- (c) factors responsible for these deaths; and
- (d) extent of losses to the state exchequer as a result of these deaths?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA); (a) Government of India have one Central Cattle Breeding Farm at Hessargatha in Karnataka.

(b) to (d). Information is being collected and the same will be laid on the Table of the Lok Sabha as soon as it becomes available.

Representation regarding Animal Husbandry Department

8570 SHRI JYOTIRMOY ROSII Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether some persons residing in Chandni Chowk, Delhi have recently brought to the notice of the Prime Minister a number of cases involving waste of public money in the Animal Husbandry Department of his

Ministry in the name of Cattle and Sheep Development schemes; and

(b) if so, action taken on the same?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B P. MAURYA): (a) and (b). An unsigned representation from 5 residents of Chandni Chowk (complete address not given) addressed to the Prime Minister was received in the Department of Agriculture. The representation made certain allegations regarding working of the Animal Husbandry Division of the Department The matter is being looked into.

Corruption in University Grants Commission

8571 SHRI JYOTIRMOY BOSU: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state.

- (a) whether any cases of corruption in the University Grants Commission in connection with the construction, renovation and maintenance of college buildings in various States have been reported to his Ministry in recent period, and
- (b) if so, the nature of case so reported and action taken on them?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) The Government is not aware of any case

or conjuption in the University Grants Commission in connection with construction, renovation and maintenance of college buildings in various States.

(b) Does not arise.

Staff in National Archives of India

8572 SHRI JYOTIRMOY BOSU: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state;

- (a) total staff of each category, officers as well as others separately, in the National Ar aves of India as in 1960, 1965 and 1973;
- (b) names of new Departments or Divisions opened during the last three years; how the recruitments in these new departments or Divisions have been made;
- (c) general methods of recruitment and promotion in the National Archives;
- (d) whether this method has been strictly adhered to in the past; and
- (e) whether Government consider it desirable to amend the rules and regulations guiding the recruitment and promotion in this institution; if not, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) The sanctioned cadre categorywise was as follows:—

| | | | | | | | Class I | Class II | Class III | Class IV |
|-----------------|---|---|---|---|---|---|---------|----------|-----------|----------|
| 1960 . | | • | • | • | | • | 8 | 48 | 189 | 182 |
| 1 96 5 . | | | • | | • | • | 8 | 51 | 190 | 175 |
| 1973 . | • | • | • | | • | | 12 | 53 | 213 | 165 |

- (b) During the last three years. schemes regarding Publication of Records on Partition and Independence (Towards Freedom), introduction of short-term training courses in Record Management and Repair of Records, clearing of arrears to the library, preparation of Archival Manual and reference media for Inayat Jung collection have been taken up. Work in connection with Record Management, National Register of Records and Preparation of Check Lists, with more staff, have been expedited. Repair and Reprographic services and the Administrative Division have been The posts have been strengthened. filled according to the Recruitment Rules in force.
- (c) As is the case in other Government Departments/Offices, the general method of recruitment to posts in the National archives of India is as follows:
 - (i) direct recruitment.
 - (11) partly by direct recruitment and partly by promotion.
 - (iii) by promotion (on the basis of selection as well as on the basis of seniority-cum-fitness).
 - (d) Yes. Sir.
- (e) The question of reviewing the staffing pattern and the recruitment rules is under consideration by the Government of India.

New Shipyards in the Country

8573. SHRI DEBENDRA NATH MAHATA: Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether any provision has been made for the establishment of new shipyards in the country; and
 - (b) if so, the provision made?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) and (b). A provision of Rs. 50.00 crores has been made in the draft Fifth Five Year Plan for setting up of two new shipyards in the country.

Demand, production and Import of Milk Powder

8574 SHRI D P JADEJA: SHRI ARVIND M. PATEL:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) the total demand of milk powder in the country;
- (b) the quality of milk powder produced during the last three years, year-wise: and
- (c) the quality imported during the said period?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) The current requirement for milk powder in view of shortage of milk in the country has been estimated at 40,000 tonnes.

- (b) The quality of whole and Skim Milk Powder produced during the last three years in the country confirmed to the standard laid down in the rules framed under the prevention of Food Adulteration Act, 1954.
- (c) The quality of imported Skim Milk Powder during the last three years confirmed to the I.S.I. standard.

Research Centre for improving production of Groundnut

8575. SHRI D. P. JADEJA: SHRI VEKARIA:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether there is no Research Centre for improving and increasing the production of groundnut in the country:

- (b) if so, whether Government are considering to set up such Centres; and
 - (c) if so, the sites selected?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) No. Sir.

(b) An All India Coordinated Research Project for the Improvement of Oilseeds has been implemented It is being continued from 1967. during the Fifth Five Year Plan. It had 19 Centres and 30 sub-centres, distributed all over the country, of which 22 Centres/sub-centres are concerned with research on groundnut. The total amount invested on oilseeds research during the Fourth Five Year Plan was of the order of Rs. 165 lakhs. During the Fifth Five Year Plan, this Project is being continued with additional strengthening. Since country's edible oil economy is mostly groundnut based, the major emphasis under oilseeds research is on groundnut.

The main features of the Co-ordinated Project are to improve the productivity of the groundnut crop through varietal upgrading, improved corp management practices, including plant protection schedules, stabilising the yields of crop against adverse climatic vagaries etc.

- (c) The different research Centres working on Groundnut are:
 - 1. Rajendranagar.
 - 2. Karim Nagar.
 - 3. Junagarh.
 - 4. Jalgaon,
 - 5. Dharwar.
 - 6. Chiplima.
 - 7. Ludhiana.
 - 8. Tindivanam.

- 9. Kadari.
- 10 Khargaon.
- 11 Raichur.
- 12. Coimbatore.
- 13. Pollachi.
- 14. Mainpuri,
- 15. Breeding Unit (RRS, Hyderabad).
- 16 Physiology Unit (Coimbatore).
- 17. Microbiology Unit (IARI, New Delhi).
- 13. Aflotoxin Unit (RRS, Hyderabad).
- 19. Aflotoxin Unit (Indian Institute of Nutrition, Hyderabad)
- 20. White-grub Unit (IARI, New Delhi).
- 21. Virus Unit (Coimbatore).
- 22. Bio-genesis of Oil (Dharwar).

Farmers urged by Farmers Federation of India to resist wheat procurement

8576. SHRI D. P. JADEJA: SHRI M. M. JOSEPH:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Farmers Federation of India has urged the farming community to resist wheat procurement:
- (b) if so, what are their conditions; and
- (c) the action taken by the Government thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) to (c). Government have seen some Press reports according to which the Farmer Federation of India has called upon wheat growers to resist procurement of wheat. They have demanded that the procurement price of wheat be fixed according to the principle of parity which sought to maintain a balance between the price received and the prices paid by farmers with reference to an agreed base

year Government has since announeed its procurement and price policy of wheat for Rabi 1974-75 taking all factors into account.

Demand of fertiliser from Dadra and Nagar Haveli

8577 SHRI D P. JADEJA: SHRI R R. PATEL:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) the demand of fertilizer from Dadra and Nagar Haveli for the year 1973-74, and
- (b) the quantity supplied against this requirement?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(1) and (b) Dadra and Nagar Havele Admin stration (ommunicated their requirements of fertilisers for 1973-74 (April 1973—March 1974), in terms of nutrients as 1112 tonnes of N and 126 tonnes of P2O5 Supply of 200 tonnes of N and 33 tonnes of P2O5 was made during the period.

दिल्ली विकास प्राधिकरण की भूमि पर जरन कब्जा

8578. श्री लालजी माई: वानिर्माण श्रीर शावास मत्री यह बताने की कृपा करें। कि

- (क) क्या कई राजनीतिक कार्यकर्ताको ने दिल्लो विकाम प्राधिकरण की भूमि पर जबरन कब्जा किया हुआ है, और
- (ख) यदि हा, तो तत्सम्बन्धी तथ्य क्या

संसदीय कार्य विचाय तथा निर्माण और धानास मंद्रालय में राज्य मंत्री (जी बॉम नेह्ना) : (क) और (ख) दिस्सी विकास प्रॉविकरण की कुछ भूमि दखल प्रतिष्ठक्त है। प्रतिष्ठक्त दखलकारों के राजनीतिक सम्बन्धों के बारे में कोई सर्वेक्षण नहीं किया गया है।

राजस्थान के सीमान्त क्षेत्रों में सड़कों घौर पुलों का निर्माण

8579. श्री लासजी माई: क्या नौयहन भीर परिवहन मती यह बनाने की कृपा करेगे कि

- (क) राजस्थान के किन किन स्थानो पर विजेबका में किन किन सीमान्त नगरो एव गावों के केन्द्रीय महायना के साथ सडको और पूला का निर्माण करन राविचार है, और
- (ख) दिहा तायोजना मः। व्योगः क्या है?

नौबहन ग्रीर परिवहन मंत्रालय में उपमंत्री (भी प्रणव कमार मखर्जी): (क) श्रीर(ख) सभवनया मानतीय सदस्य वा ग्राणय ग्रन्तरी-ज्यीय एव ग्राधिक महत्व की राज्य महकों के कार्यक्रम के ग्रधीन केन्द्रीय महायता से निर्माण किये जाने वाले राजस्थान के सीमान्त नगरो तथा ग्रामो मे प्रस्तावित सडक भीर पूल कार्यों में है। कोई भी मडक एवं पुल कार्य, जो मन्तरर्राज्यीय एवं म्राधिक महत्व की सडक कार्यक्रम का भाग है, राजस्थान के सीमान्त नगरो भीर प्रामों मे नही पडता परन्तु राजस्थान के सीमान्त नकरो धौर मार्की मे कुछ सडक और पुल कार्यों का विशेष कार्यक्रम के अन्तर्गत केन्द्रीय सहायदा से निर्माण किया जा रहा है। इस कार्बी का ब्यौरा देना जन हित में नहीं हींगां।

- 2007441

8580. भी लालजी भाई: क्या नोवहन भीर परिवहन मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) क्या दिल्ली परिवहन निगम के अन्तर्गत अधिकतर बस मार्गों पर बने बस स्टापों पर कोई ग्रैड की व्यवस्था नहीं है जिसके कारण बसों का इंतजार करने वाले सकड़ों यात्रियों को धूप, गर्मी, मदी और 'बरसात के कारण बहुत परेशानी उठानी पड़ती है;
- (ख) यदि हां, तो क्या सरकार का इस समस्या को सुलझाने का बिचार है ?

नौबहुन कीर परिकृत मंत्रालय में उपनंती (भी प्रणव कुमार मुखर्मी): (क) ग्रीर (ख). किल्लो परिवहन निगम ने दिल्ली के संब राज्य क्षेत्र में विभिन्न मुख्य मुख्य बस स्टापों पर श्रव तक 573 वस क्यू शेल्टरों की व्यवस्था की है। यात्रियों की मांग के शाधर पर लगभय 30 से 35 तक प्रति वर्ष वसक्यू शेल्टरों की व्यवस्था की जाती है। एक कम बद्ध कार्यक्रम के श्रधीन सभी मुख्य वस स्टापों पर बस क्यू शेल्टरों की व्यवस्था करने के लिए कदम उठाये जा रहे हैं।

नई दिल्ली नगर पालिका ने अपने क्षेतों में शल्टरों की व्यवस्था करने की जिम्मेदारी उठाई है। इसी प्रकार नव निर्मित कालो नियों में बम नयू शैल्टर दिल्ली विकास अधि-करण द्वारा बनाये जा रहे हैं। New strain of Maize

8581. SHRI D. B. CHANDRA GOWDA: Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state:

- (a) whether a new strain of maize (Puza High Lysine Maize) developed at Indian Agricultural Research Institute has been claimed as nutritious as milk and was experimented for its evaluation against milk on the children of Nangloi village in Union Territory of Delhi without the supervision of a qualified clinical nutritionist;
- (b) whether the yield of this newly developed maize is hardly 50 per cent of the normal yield and being a highly susceptible variety, there is poor response from the farmers; and
 - (c) if so, the facts thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE OF AGRICULTURE MINISTRY (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): Three composites of Yellow Opaque-2 maize rich in Lysine content have been developed under the All-India Coordinated Maize Improvement Project. The preliminary pilot feeding experiment supplementary conducted on two groups of pre-school children of low income group in Nangloi indicated that Opaque-2 fed children gained comparable weights to those of similar age group of children fed on skimmed milk. The study was supervised by a qualified nutritionist with the help of the Medical Officer at Nangloi.

(b) No. The Opaque-2 varities of maize have given more yield than the local varieties under cultivation and are comparable in their disease tolerance to varieties with similar endosperm types. The Opaque-2 varities have soft endosperm in contrast to the hard endosperm of normal maize varieties. Some farmers had grown these varities during 1973 and no information on their poor response or acceptibility has so far been reported.

655 LS-7.

164

composites, Opaque-2 (c) Three named Shak'ı, Rattan and Protina have been recommended for release by the Central Seed Sub-Committee of the Union Ministry of Agriculture

Ban on manufacture and sale of Milk products

8582 SHRI D B CHANDRA GOW-DA Will the Minister of AGRICUL-TURE be pleased to state

- (a) whether Government have prohibited the manufacture and sale of milk products in the Union Territory of Delhi and districts of Meerut and Bulandshahr of UP, and
 - (b) if so the facts thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B P MAURYA) (a) Yes, Sir

(b) In order to maintain and increase supplies of milk during ban period and secure its equitable distribution in the areas comprising the Union Territory of Delhi and the districts of Meerut and Bulandshahr in UP, the Milk and Milk **Products** Control Order was issued under Section 3 of the Essential commodities Act, 1955 (10 of 1955) The order came into force on the 1st April, 1974 and shall cease to operate on 1st April, 1974 The order prohibits use of milk of any kind for manufacture of cream, casein (excepting casein manufactured from sour milk for industrial purposes), skim milk, khoya rabri, paneer or any kind of sweet in the preparation of which milk or any of its products excepting ghee is an ingredient It also prohibits export of milk of any kind except sour butter oil. The sale, service, supply or export of cream, casein (excepting casein manufactured from sour mulk for industrial purposes), skim milk, khoya, rabri, paneer or any kmd of sweets in the preparation of which milk or any of its products (including dried milk or

milk powder or condensed milk) except ghee is ingredient has been prohibited Detailed information relating to other provisions of the order are available from the notification issued under SO 226 (E), copies of which laid on the table of the Lok Sabha on the 8th April, 1974.

Fruits and Vegetables declared as a basic minimum need of the people by I H.D C.

8583 SHRI D B CHANDRA **GOWDA**

SHRI GAJADHAR MAJHI. Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) whether any suggestion been made by the Indian Horticulture Development Council that fruits and vegetables should be declared the basic minimum need of the people and given nutrational plans; and
- (b) if so, its main recommendations and the reaction of Government thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P SHINDE) (a) Yes, Sir

(b) The recommendations of the Hosticulture Development Council are being finalised and wil be examined by the Government when received

Non-expansion of Public Distribution System

8584 SHRI D D DESAI-SHRI K LAKKAPPA:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state.

- (a) the factor responsible for not expanding the public distribution system of foodgrains, and
- (b) the quantum of foodgrains to distributed in 1974-75 by the bе Centre?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) and (b). The public distribution system is designed to supplement the open market availability of foodgrains to the consumers in the States. The quantum of foodgrains to be supplied to State Governments for public distribution by the Centre during 1974-75 will depend on:—

stocks with Central and State Governments; seasonal conditions; conditions of crops and other relevant factors.

New varieties of Wheat and Farming practices to step up food production

8585. SHRI D. D. DESAI:

SHRI PURUSHOTTAM KA-KODKAR:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether new wheat variety is going to replace Kalyan Sona;
- (b) whether farmers have been salvised by the experts of G. B. Pant University of Agriculture and Technology to take to new varieties and farming practices to step up food production; and
- (c) whether experts have found that triticake is like wheat but resistance to drought and is more nutritious than wheat?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) Some wheat varieties have been identified in 1973 with a view to replace Kalyansona. These strains are now under multiplication and testing.

(b) Wheat experts at G.B. Pant University of Agriculture and Technology are regularly advising the farmers to grow high yielding varieties of wheat with improved management techniques for higher returns per units area and time through organising Kisan Melas,

field demonstrations on the farmer's fields, distributing good quality foundation seeds, farm broadcastes and farm bulletins.

(c) Several triticale varieties have been developed which are similar to wheat in plant type. Most of these varieties in the preliminary experiments were found comparatively better in protein and lysine contents and resistance to drought than wheat. These strains are now being further tested under unirrigated and irrigated conditions all over India.

Nutrition policy as discussed in Seminar organised by F.A.O.

8586. SHRI D. D. DESAI:

SHRI P. GANGADEB:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether India participated in the 21 day Seminar organised by the F.A.O. in collaboration with UNICEF and WHO:
- (b) if so, whether nutrition policy was discussed in the Seminar;
- (c) what was India's contribution regarding nutrition policy; and
- (d) whether a high-level inter-disciplinary organization is to be set up at the Centre level to advise on the intergrated food nutrition policy?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) An FAO/NORAD (Norwegian Agency for International Development) Regional Seminar on Food & Nutrition Policy and Planning for Asia and the Far East was held during 7-27 February, 1974 in collaboration with Government of India in which UNICEF and WHO also participated.

- (b) Yes, Sir.
- (c) India had evolved a nutrition policy comprising a combination of inter-disciplinary approaches involving

elements of food supply, food demand, nutrition education, fortification of foodstuffs, supplementary feeding and health measures and requisite methodology for intergrating nutrition in plans for national development.

(d) The recommendations of the Seminar are awaited.

Letter from Bombay Oil-seeds and Oil Exchange Ltd., over shortage of edible oils and vanaspati

8587. SHRI D. D. DESAI: SHRI VASANT SATHE:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether a letter dated 14th September, 1972 addressed to the Prime Minister was received from the Bombay Oil-seeds & Oil Exchange Ltd. regarding likely shortage of edible oils and Vanaspati;
- (b) if so, the contents thereof and the action taken by Government;
- (c) whether another letter dated 7th December, 1973 from the same Oil Exchange regarding prospects for edible oils and Vanaspati supplies for 1974 was received by the Prime Minister; and
- (d) if so, the contents thereof and the action taken thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) to (d), The Government have received the two letters dated the 14th September. 1972 and the 7th December, 1973 of the Bombay Oil-seeds and Oil Exchange Ltd. The letters sought to convey the views of the Exchange on the likely shortfall of edible oils during the crop years 1972-73 and 1973-74 respectively, and its suggestion for importing 4 lakhs tonnes and 2 lakhs tonnes respectively, preferably in the form of oilseeds, in order to meet the anticipated shortfall in these years. The Government were already seized of the matter. and had taken requisite action in this

regard within the constraints of the foreign exchange available for the purpose and the difficult supply position of edible oils in world markets-during these years.

Extraction of edible grade oil from rice bran

8588. SHRI P. GANGADEB: SHRI D. D. DESAI,

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether extraction of edible grade oil from rice bran is estimated to relieve the tight edible oil situation in the country;
- (b) the total quantity of rice bran available in the country;
- (c) the actual production of bran oil at present, and
- (d) whether the Union Government is considering in consultation with F.C.I. to replace traditional paddy mills with modern mills using rulster balls?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) Yes, Sir.

- (b) On the basis of about 57 million tonnes of paddy produced in 1972-73, the bran available is estimated at 18 million tonnes.
- (c) The production in the organised sector during 1973 was reported to be about 25,000 tonnes. Although precise estimates of production in the unorganised sector are not available roughly this production is reported to be about 40,000 tonnes per annum.
- (d) Yes, Sir. The Government has a programme of modernisation of rice milling industry in the country, whereby rubber rolls will be used for achieving an increased out-turn and improvement in the quality of rice and better utilisation of the by-products.

Text books on History and Geography described in private schools in New Delhi

8589 SHRI MUKHTIAR SINGH MALIK. SHRI BIRENDER SINGH RAO

Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state

- (a) whether it has come to the notice of Government that the books on History and Geography which are prescribed by some private schools in New Delhi contain anti-national references, and
- (b) if so, whether Government have taken any steps to make necessary changes in these books?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D P. YADAV); (a) and (b). The books on History and Geography which are in use in private schools in New Delhi are being scrutinised. Appropriate action will be taken if they are found to contain anti-national references Under the provision of the Delhi School Education Rules, 1973. the Curriculum Committee shall advise the Administrator on syllabi and the specification or recommendation of books for the primary and middle stages of education in Delhi.

Acquisition of services of historian for writing history of Freedom Movement

8590. SHRI MUKHTIAR SINGH MALIK SHRI BIRENDER SINGH RAO:

Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

(a) whether Government have since acquired the services of a Historian

to write the history of India's Freedom to be taught in Indian Schools, and

(b) if so, the time by which this book will be ready to be introduced in the Schools?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION AND SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D P YADAV): (a) and (b) Government have not commissioned the services of a Historian to write the History of India's Freedom to be taught in the Indian Schools. However, the National Council of Education Research and Training published in January, 1970 a Supplementary Reader entitled 'Freedom Movement in India' for secondary school students NCE. R.T. has also taken up the project of providing text-books in History for VI-XL Its text-book ın modern Indian History for class XI adequately covers the subject of history of freedom movement.

The National Book Trust has also produced a book entitled 'Freedom Struggle' meant for higher secondary and pre-university classes, to be used as supplementary reading material. Three eminent historians were commissioned by the Trust to write the book The book written in English was released on 15th August, 1972 A children's version of the book, for the age group 11-14 (entitled 'How India Won Her Freedom' has also been published.

Central Scheme for environmental improvement of slum areas

8591 SHRI RAJDEO SINGH Will the Minister of WORKS AND HOUS-ING be pleased to state:

(a) whether a Central Scheme for environmental improvement of slum areas has been introduced in twenty. cities including Delhi;

- (b) whether work on the scheme has started; and
- (c) if so, the name of the slum areas in Delhi where work is on?

28. J.J. Cluster Behind Indian Express Building.

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENT-ARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) and (b). Yes. Sir.

(c) As per enclosed statement.

Statement

Slum Areas in Delhi where work under the Central Scheme for environmental improvement of slum areas is being undertaken

| | • | | |
|-------------|---|------|----------------|
| 1 | On Ridge behind Mandir Marg | • | Work completed |
| 2 | Behind Talkatore Garden | • | Do. |
| 3 | On Khushak Nallah, J.axmubai Nagar | | Do. |
| 4 | On Khushak Nallah, Laxmibai Nagar. (oppos ji West Kudwai Nagar | r). | Do. |
| 5 | On Khushak Nallah, West Kidwai Nagar | | Do. |
| 6. | Near X, Y, Z Blocks, Sarojini Nagar | • | Do. |
| 7 | . Near DI, DII Flats, Diplomatic Enclave | • | Do. |
| 8. | Near CPWD Stores (Ware house) Sarojini Nagar | | Do. |
| 9. | Near Multi-storeyed flats, R. K. Puram Sector XIII and Netaji Nag | gar. | Do. |
| 10. | Near Keventers Dairy on Khushak Nallah, Diplomatic Enclave. | | Do. |
| 11. | Near Shiv Mandir, Moti Bagh | • | Do. |
| 12. | Opposite Jesus & Mary College, Chanakyaputi | | Do. |
| 13. | Behind Jesus & Mary College, Chanakyapuri | • | Do. |
| 14. | J.J. Colony, Sunlight | | |
| .12. | J.J. Colony, Seelampur, Phase I & II. | | |
| 1 6. | J.J. Colony, Pandu Nagar. | | |
| 17. | J.J. Colony, Wazırpur. | | |
| 18. | J.J. Colony, Madangir. | | |
| 19. | J.J. Colony, Tigri. | | |
| 20. | J.J. Colony, Srinivaspuri. | | |
| 21. | J.J. Colony, Nangloi. | | |
| 22. | J.J. Colony, Naraina. | | |
| 23. | J.J. Colony, Najafgarh Road. | | |
| 24. | J.J. Colony, Seemapuri. | | |
| 25. | J.J. Colony, Seclampur Phase III. | | |
| 26. | J.J. Colony, Madipur. | | |
| 27. | J.J. Colony, Pankha Road & Hastral. | | |
| | | | |

- 29. J.J. Chaster Behind Irwin Hospital.
- 30. J.J. Cluster at the back of Andrews Ganj.
- 31. J.J. Cluster behind Patel Chest Hospital.
- 32. Shastri Market, R.K. Puram.
- 33. J.J. Cluster between Sectors 3 & 4 (R. K. Puram).
- 34. Jas Rani Bagh (East Mots Bagh).
- 35. Boulvaid Rd. J.J. Cluster.
- 36. R. Block, New Rajinder Nagar.
- 37. J.J. Cluster behind Sanatan Dharam Mandir, Tilak Nagar.
- 38. J J. Cluster West of Mathura Road, North of Jangpura (Madrasi Basti).
- 39. J.J Cluster Magzine Road Colony.
- 40. Subhadra Colony.
- 41. Azad Market (Tokriwalan).
- 42. Punjabi Bagh Road No 77.
- 43. Guiabi Bagh bounded by Circlur Rd. Western Jamna Canal & Nala.
- 44. Punjabi Bagh Road No. 41 (Near Depot on Rohtak Rd.).

Criteria for construction of warehouses by Central Warehousing Corporation

8592 SHRI RAJDEO SINGH Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Central Warehousing Corporation has constructed warehouses at 58 centres recently.
- (b) whether ordinary godowns unlike warehouses can be constructed anywhere i.e in any food regions, and
- (c) the criteria for the Centre for the construction of warehouses?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) The Central Warehousing Corporation has constructed warehouses at 86 centres during the years 1972-73 and 1973-74.

(b) and (c). In constructing ware-houses/godowns to provide scientific storages, the public agencies would have to take into consideration such factors as market potential, storable surplus, procurement and distribution needs, potentiality of custom from the viability point of view, etc.

Motor Accidents Claims Tribunel, Delhi

8593. SHRI RAJDEO SINGH; Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state.

- (a) whether 2500 cases are pending for decision on the files of Motor Accidents Claims Tribunal, Delhi and it takes usually 4-5 years for getting a case decided;
- (b) if so the reasons for accumulation of these cases;
- (c) whether Government propose to appoint any more additional Tribunals

to enable the sufferers to get their cases decided expeditiously; and

(d) whether there is any proposal to appoint all the District and Additional District Judges working in Delhi as ex-officio Motor Accidents Claims Tribunal, Delhi in order to solve the problem of over-crowding in one court as is the practice followed in adjoining States of U.P., Haryana, Punjab and Rajasthan, if not, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) 2416 cases were pending before the Motor Accidents Claims Tribunal, Delhi, as on 1-4-1974.

- (b) dnitially, there was only a part time Tribunal in Delhi. A whole-time Tribunal was appointed from 31-2-1969. However, because of increase in the number of motor vehicles on the road and a corresponding rise in the number of road accidents in Delhi, the number of claim applications filed before the said Tribunal has been much more than it has been possible for it to clear.
- (c) The Delhi Administration sent a proposal for creation of an additional Motor Accidents Claims Tribunal to expedite the disposal of claim applications but, in view of the need for economy in administrative expenditure, it has not been found possible for Government to agree to it.
- (d) There is no such proposal before the Delhi Administration, who are of the view that it will not be possible for the various Additional District Judges Court and Civil Court, which are already having a backlog of pending cases, to deal with applications for claims arising out of the use of motor vehicles in addition to other litigation cases

Air pollution due to burning of Tetra Pak after use

8594. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Tetra Pak milk cartons required for the proposed bulk vending scheme can only be destroyed by burning after use;
- (b) whether such burning of plastic material causes air pollution; and
- (c) if so, whether any precautions will be taken against such after-effects?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA); (a) Tetra Pak milk cartons are not required when milk is distributed through bulk vending machines as customers will be able to draw their requirements directly in their own containers.

(b) and (c). No decision has been taken regarding the proposal for introduction of tetra pak containers.

Machinery required for manufacture of Tetra Pak

8595. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) how many different types of machines will be required to prepare the raw materials and the cartons for the proposed Tetra Pak milk scheme;
- (b) whether such machines have got to be imported; and
- (c) if so, from where and at what cost per machine?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA); (a) The proposal of

Tetra Pak Milk Scheme is under conzideration.

(b) and (c). Do not arise.

Import of milk powder for optimum use of milk vending machine

8596. SHRI INDRAJIT GUPTA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether the proposed introduction of bulk vending machines for milk supply require additional quantities of imported milk powder and butter-oil to keep these machines in optimum use;
- (b) if so, whether the cost of milk per litre is likely to go up; and
- (c) whether a second milk-processing plant is going to be imported for Delhi at huge cost in foreign exchange?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) Bulk vending machines shall distribute milk processed out of fresh milk or out of prepared from recombined milk s.m.p. and butter-oil blended with fresh milk. A small beginning is proposed to be made consistent with the availability of milk and by recombining s.m.p. and butter-oil. Under Project 618 (Operation Flood) s.m.p. and butter-oil is being donated by the World Food Programme. The production and availability of indigenous milk is expected to increase in the near future with the Commissioning of feeder balancing dairies in the milk shed areas and no additional quantities of s.m.p. and butter-oil over and above the quantities earmarked in the Project (Operation Flood) may be required.

- (b) No, Sir.
- (c) The Milk processing plant for new dairy in Delhi has import components of approximately Rs. 39 lakh in fereign exchange.

Bulk milk vending machine and manufacture of Tetra Pak

8597. SHRI INDRAJIT GUPTA; Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether it has been decided to introduce bulk vending machines and plastic cartons (Tetra Pak) for milk supply in Delhi, Bombay, Calcutta and Madras:
- (b) if so, whether such measures would augment the production of milk:
- (c) whether the plastic cartons would be imported or would be manufactured in India; and
- (d) whether collaboration of any foreign firm has been sought for the scheme?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA'): (a) It has been decided to introduce bulk vending machines for distribution of milk in Delhi and other metropolitan cities. The proposal in regard to introduction of tetra pak single service disposal containers is under consideration.

- (b) Bulk vendig machines are being put up for facilitating distribution of milk.
 - (c) and (d). Questions do not arise.

Criteria for starting Rural Higher Educational Institutes

8598. SHRI B. R. SHUKLA: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

(a) what are the criteria for starting Rural Higher Educational Institutes in a particular place or region; and

(b) whether District of Bahreich (Uttar Pradesh) which occupies the lowest place in the matter of educational backwardness does not deserve the starting of such institution?

THE MINISTER OF EDUCATION. SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) and (b). Fourteen Rural Institutes Higher Education were established in different parts of the country during 1956 to 1963 under the auspices of National Council for Rural Higher Education. According to a decision taken by the Council, most of these Institutes have been affiliated to neighbouring Universities. There is no proposal to setup any new Rural Institute under the Scheme.

Target of procurement of foodgrains by States during 1974-75

8599. KUMARI KAMLA KUMARI: Will the Minister of AGRICULTURE pe pleased to state:

- (a) the foodgrains likely to be procured by all the States in 1974-75;
- (b) what is the target fixed by each State for grain procurement in this year; and
- (c) if the States and specially Bihar failed to procure the foodgrain as proposed, whether the Union Government would make special arrangements for the State like Bihar which is very poor to meet the food crisis?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) It is not possible at this stage to make any precise estimate of the quantities of foodgrains that may be procured during 1974-75.

(h) No targets for procurement of foodgrains during 1974-75 have been fixed;

(c) Allotment of foodgrains from the Central Pool are made keeping in view the availability of stocks in the Central Pool the needs of the deficit States, market availability, price position and other relevant factors.

Proposal to start LLB course in Delhi School of Correspondence Courses

8600. KUMARI KAMLA KUMARI: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Union Government are proposing to start the L.L.B. course in Delhi School of Correspondence Courses, Delhi University in the year 1974-75; and
- (b) if so, the broad outlines thereof?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S NURUL HASAN): (a) Government is not concerned with starting of courses in Universities. According to information furnished by the University of Delhi, there is no such proposal under their consideration.

(b) Does not arise.

Demand by Punjab Government for check on price of Fertifiser and Penticides

8601. SHRI RAGHUNANDAN LAL BHATIA: SHRI P. GANGADEB:

Will the Minister of AGRICUL
TURE be pleased to state:

- (a) whether Punjab Government had demanded effective check on the rise in the prices of fertilizer and pesticides; and
 - (b) Government's action thereon?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI (ANNASAHEB P. SHINDE): (a) As regards fertilisers, a communication has recently been received from the Government of Punjab requesting that maximum selling prices be fixed for all the fertilisers. As regards pesticides, no specific and formal request has been made by the Government of Punjab. However, the State Government have brought to the notice of the Government of India the need for check on rising prices of pesticides in recent meetings.

(b) The maximum selling prices of three major fertilisers, viz Urea, Calcium Ammonium Niterate and Ammonium Sulphate, are already statutorily fixed. The State Government's request for extention of such control on other fertilisers is under examination.

The prices of pesticides are controlled by market forces and in view of the shortage there has been an increase in prices. To meet this situation, the Government of India are trying to make available sufficient supplies of pesticides.

Setting up of an expert committee for reviewing the functioning of D.D.A.

8602. SHRI P. GANGADEB: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether his Ministry proposes to set up an expert committee for reviewing the over all functioning of D.D.A.; and
- (b) if so, whether the Committee has also to suggest measures for the development of Delhi and its suburbs?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTA-RY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA); (a) Yes, Sir.

(b) One of the proposed terms of reference of the Committee is to suggest further measures for the development of Delhi.

Permission to State agency to procure wheat at the price announced by Centre

8603, SRI P. GANGADEB: SHRI ANADI CHARAN DAS:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether State Governments had represented to the Centre that the State agency should be allowed to procure wheat exclusively on the same price pattern as announced by the Centre; and
- (b) if so, which are the State Governments?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). No such representations were received from any State Government except that during discussion the Chief Minister, Punjab, had expressed the view that the State Agency was competent to handle the entire trade in wheat at reasonable prices on the pattern announced by the Centre.

Allotment of plots to Adivasis for building houses

8604. SHRI R. R. PATEL: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether there is any scheme to allot plots to Adivasis for building houses;
- (b) whether that scheme is also extended to other landless labourers; and

(c) the number of Adivasis and non-Adivasis benefited by this scheme during the last three years, year-wise?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTAL-RY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) and (b). The Ministry of Works and Housing have no specific Scheme for providing plots exclusively to Adivasis for building houses. However, under the Scheme for provision of house-sites to landless workers in rural areas, house-sites are allotted, free of cost, to all eligible workers, including Adivasis.

(c) The number of house-sites approved for allotment to the eligible workers, since the inception of the Scheme in October 1971, is as under:—

| Year | | | No. of House-sites approved | | | | | |
|-----------|-----|----|-----------------------------|--|--|--|--|--|
| 1971-72 . | | | Nil | | | | | |
| 1972-73 . | • | • | 6,52,828 | | | | | |
| 1973-74 • | • | • | 2,32,674 | | | | | |
| | | • | | | | | | |
| | Tor | AL | 8,85,502 | | | | | |

No statistics are maintained showing the various categories of beneficiaries under the Scheme.

Demand and supply of vegetable shee to Dadra and Nagar Haveli

8605. SHRI R. R. PATEL: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) the total demand of vegetable ghee of Dadra and Nagar Haveli for the year 1973-74; and
- (b) the total quantity supplied during that period monthwise?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA); (a) The Dadra and Nagar Haveh Administration have estimated the demand at one tome per month.

(b) There is no Centralised control on the distribution of vanaspati.

Wheat procured by wholesalers and official agencies, State-wise

8606. SHRI BHOGENDRA JHA: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) what is the latest figure with regard to the wheat purchased by the wholesalers, State-wise and what quantity has been sold by them to the Government and what actual price they are paying to the peasants, State-wise; and
- (b) what is the latest figure; Statewise, about wheat procured through official agencies and at what price from the producers?

THE MINISTER QF STATE IN THE MNISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). A statement giving the required information is laid on the Table of the House. [Placed in Library. See No. LT 6859/74]

Increase in use of Narcotics and Liquor by students of Central Universities

8607. PROF. NARAIN CHAND PARASHAR: Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government are aware of the increasing use of Narcotics and liquor by the students in the Central Universities of the country; and
- (b) if so, whether Government, UGC and University authorities have taken any steps to combat this trend?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) and (b). Government do not have any information. Delhi University and Jawaharlal Nehru University have intimated that they are not aware of the increasing use of narcotics and liquor by their students. As regards other Central Universities, information is being collected and will be laid on the Table of the Sabha

Road from Juliundur to Mandi via Hoshiarpur-Nadaun-Hamirpur as National Highway

8608 PROF NARAIN CHAND PARASHAR. Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

- (a) whether there is a proposal to include the road from Juliundur to Mandi (HP.) via Hoshiarpur-Nadaun-Hamirpur as a National Highway in the 5th Five Year Plan, and
- (b) if so, the estimated cost of the proposed Highway and the likely date of its sanction?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND (SHRI TRANSPORT PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) and (b). Yes, Sir. According to the information furnished by the State Engineer, the total amount required for the improvement of this road (for the section falling in Himachal Pradesh territory) to National Highway standard works out to Rs. 1011 crores approximately including a lump sum provision of Rs 250 crores for construction/replacement or strengthening of existing weak bridges falling on The development of the this road. portion of this road within Punjab to National Highway standards double lane pavement is estimated to cost Rs. 46 lakhs. The proposal has been noted for consideration along

with a large number of similar other proposals received from various States. and other quarters while formulating proposals for new additions to the existing N.H. System in the 5th Plan keeping in view the funds available for the purpose, the inter-se priority of individual proposals on an all-India basis and the criteria laid down for declaring roads as National Highways. However, as the 5th Plan is still in a preparatory stage, it is not possible to indicate at this stage the extent to which a particular road will be included in the National Highway System in the 5th Five-Year Plan programme.

D.M.S. milk token for Military personnel in Delhi

8609. PROF. NARAIN CHAND PARASHAR: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether any preference is given to the serving military personnel stationed in Delhi for sanction of Milk tokens by D.M.S.;
- (b) if so, the number of military personnel who have been sanctioned the milk tokens in the financial years; 1971-72, 1972-73 and 1973-74, separately; and
- (c) the number of applications received from the Military personnel during these years separately?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) Application for the issue of milk tokens which are received from defence personnel stationed in Delhi are registered in the waiting list in a high priority category, and tokens are issued in their turn in this special waiting list as and when feasible.

(b) Tokens were last issued in bulk to 203 defence personnel in the waiting list in 1971-72. There after, applications from defence personnel, amongst others, have been sanctioned only in deserving cases including those on medical grounds for widows, separated defence families etc. etc.

(c) Number of applications received from the defence personnel stationed m Delhi during the vears 1971-72, 1972-73 and 1973-74 is indicated below:

| Year | | | appl | No. of applications received | | | | |
|-----------|---|---|------|------------------------------|--|--|--|--|
| | - | | | | | | | |
| 1971-72 . | ٠ | • | | 1042 | | | | |
| 1972-73 . | • | • | | 2803 | | | | |
| 1973-74 . | | • | | 1604 | | | | |

Shortage of Vanaspati in Delhi

8610. SHRI MOHINDER SINGH GILL Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state:

- (a) whether an acute shortage of tonaspati persists in Capital, and
- (b) if so, the reasons for this scarcity and when the supplies will be made available

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B P. MAURYA). (a) and (b). The shortage of vanaspati presently being felt in Delhi is largely due to the continued closure of the DCM. Chemical Works, Delhi since the 9th March, 1974, as a sequel to a labour dispute. Despite conclia ory efforts made by the Delhi Administration and the Central Government the closure continues. The supply position is likely to ease noticeably when this unit resumes production.

Report of Cow Protection Committee

8611. SHRI BIRENDER SINGH RAO: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Cow Protection Committee has since submitted its report to the Government;
- (b) if so, the recommendations made by the Committee in their report, and
- (c) whether a copy of the said report will be laid on the Table of the House and if not, the reasons thereof?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRIB. P. MAURYA); (a) No. Sir

- (b) Question does not arise.
- (c) A copy of the report after it is submitted to Government will be laid on the Table of the Lok Sabha.

Drinking water in Saurashtra Region

8612 SHRI VEKARIA.
SHRI ARVIND M. PATEL:

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether Government are aware that there is a great scarcity of drinking water in Saurashtra Region in Gujarat State;
- (b) if so, the help given by the Centre in this regard; and
- (c) the progress made in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTRY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) Yes.

۲

- (b) For supply of drinking water through bullock carts/tankers, digging, deepening and repairing of wells Central assistance to the extent of Rs. 35 lakhs was sanctioned during 1973-74.
- (c) 349 bores have already been drilled upto 15th April, 1974 covering 111 villages and cities of Rajkot, Gandal and Jamnagar. Further work is in progress. 175 tankers are being used to supply drinking water to 126 villages and other urban areas. 41 wells have been dug or deepened and 12 wells are being dug.

Plan for expansion of sugar plants in Gujarat

8613. SHRI VEKARIA: Will the MINISTER OF AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether Gujarat State has sent any plan for the expansion of sugar plants in the State; and
- (b) if so, the action taken by Government?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) No, Sir.

(b) Does not arise.

Allocation for Drought-prone area programme in Jhunjhunu, Rajasthan

8614. SHRI S. N. SINGH Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether a scheme under D.P.A.P. programme was sanctioned for Tehsil Chirama and Tehsil Jhunjhunu of District Jhunjhunu in Rajasthan and if so, why the work has not been started;
- (b) the total allocation of funds for this scheme and when the work is likely to start; and

(c) money allotted to Rajasthan and spent by the end of 1973-74 financial year and on what schemes?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYAI); (a) Drought Prone Areas Programme was extended to Chirawa and Jhunihunu tehsils of Jhunjhunu district, Rajasthan. state government did not propose any programme for Jhunjhunu Two irrigation schemes were proposed for Chirawa tehsil which were not sanctioned as the cost was not within the norms prescribed by the Ministry. The state government were, therefore, asked to formulate alternate schemes. No proposals were, however, received. No programme was, therefore, sanctioned in the two tehsils during the Fourth Plan.

- (b) Question does not arise.
- (c) A total allotment of Rs. 1381 crores was made to the state during 1970-71 to 1973-74 for schemes in the sectors of minor irrigation, soil conscrvation, afforestation, roads, drinking water, etc. The state was able to spend a cumulative expenditure of Rs. 1317 crores till December 1973. Expenditure figures for the whole year 1973-74 are yet to be received from the state.

Amount sanctioned for Rajasthan for construction of roads during Fourth Five Year Plan

8615 SHRI S N SINGH: Will the Minister of SHIPPING AND TRANS-PORT be pleased to state.

- (a) what amount has been sanctioned for Rajasthan for building roads during the Fourth Five Year Plan and on what projects, how much out of that money has been spent;
- (b) what was the total amount sanctioned for all the States in India;and

(c) whether, looking to the Geographical situation of Rajasthan and having a long border mileage with Pakistan, some more funds will be allotted to Rajasthan for border roads in Rajasthan in coming years?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) A statement giving the requisite information is laid on the Table of the House. (Pleased in Library See No. LT 6859) 741.

- (b) A_n amount of Rs. 2,74,04.26 lakhs was sanctioned during the 4th Plan for the schemes in question in whole of India.
- (c) Presumably, the Member wants to know the position regarding provision of funds during various years of the Fifth Plan. It will all depend upon the budgetary position from year to year. It is, therefore, difficult to give at this stage any firm indication of funds to be provided in the coming years except to say that the requirements of roads in border areas in Rajasthan will certainly be duly considered.

Demand for wider representation of students, teachers and employees of Delhi University in Academic Council, Executive Council and University Court

8616. SHRI CHANDRA SHEKHAR SINGH SHRIMATI SAVITRI SHYAM:

Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

(a) whether the demand has been made from some quarters for wider representation to the students, teachers and other employees in the composition of the Delhi University Academic Council, the Executive Council and the University Court;

- (b) if so, main demands and the names and particulars of such organisations who made such demands;
- (c) the steps taken to concede the demands;
- (d) whether Government will direct the other Universities of States to adopt the same principle and guidelines in the respective Councils and Courts; and
- (e) if so, the facts thereof and if not, the reasons therefor?

THE MINISTER OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE (PROF. S. NURUL HASAN): (a) The University of Delhi has received representations from Delhi University Teachers Association, Delhi University and College Karamchari Union, and Delhi University Appointed Teachers Association for wider representation of teachers and participation of the non-teaching employees and the students of the University, inter-alia, in the Academic Council, Executive Council and the Court.

- (b) Delhi University Teachers Association.
 - (i) Wider representation of teachers on Academic Council, Executive Council and Court;
 - (ii) Representation of Students on the Academic Council, Executive Council and Court; and
 - (iii) Representation of Karmcharis on the Executive Council and Court.

Delhi University Students Union

- (i) Representation of Students on Academic Council, Executive Council and Court; and
- (ii) Representation of Karamcharis on Executive Council and Court.

Delhi University and College Karamcharis Union

Representation of Karam hais on the Executive Council

Delhi University Appointed Teachers
Association

- Wider representation of teachers on the Academic Council, and
- (11) Representation of Students on the Academic Council
- (c) The demands are under consideration of the University authorities
- (d) and (e) The Gajendragadkar Committee in its report on Governance of Universities has inter alsa made certain recommendations with regard to teachers' and students' participation. Government of India and the University Giants Commission have at epter in principle, the recommendations of the Committee The report of the Committee has also been forwarded to State Governments for consideration while amending Acts of Universities.

Supply of Maize to Starch Manufacturers

8617 SHRI RANA BAHADUR SINGH Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state

- (a) whether a lack of rapport between the Centre and State Governments has come m the way of starch manufacturers in securing enough maize from producing States to keep their factories running;
- (b) whether the permits issued by the Centre have become meaningless as no worthwhile quantity of maize is secured by the consuming units;
- (c) if so, the outlines of the policy of Government in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHNDE) (a) No, Sir.

(b) and (c) Having regard to the representations received from the starch industry and keeping in view the fact that the Textiles Industry and the Antibiotics Industry are dependent on the products manufactured by the s arch industry, the States which are surplus in maize and where there were inter-State restrictions on the movement of maize were addressed to assist the starch factories through the All India Starch Manufacturers' Association for procuring certain quantities of maize Requisite assistance was given by some of the surplus The position has since changed in view of the removal of all restrictions on the inter-State movement of coarse grains

Housing Scheme by HU.DCO for Lower Middle Class

8618 SHR_I C K CHANDRAP-PAN SHRI C JANARDHANAN.

Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state

- (a) whether HUDCO has schemes for housing in the urban areas costing more than Rs 7000 per unit;
- (b) whether lower middle class cannot avail of this scheme.
- (c) if so, whether Government prepose to revise it and set up houses costing Rs 2000 in urban areas, and
- (d) what is Government's assistance to the State Governments for rural housing schemes in 1973-74 and 1974-75?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) to (c). The

195

HUDCO is only a financing agency It advances loans to State Governments, State Housing Boards, Improvement Trust, etc Excepting one housing scheme at Calcutta which is being executed by HUDCO directly, it is not executing any scheme of its own accord The borrowing agencies submit schemes taking into account the local The cost of houses conditions, etc flats is dependent on these local conditions However, the HUDCO has evolved a type design for a single storeyed house estimated to cost Rs 2500 excluding the cost of land

- (d) The following two schemes of the Ministry of Works and Housing are intended for housing programme in the rural areas of the country -
 - (1) Village Housing Projects Scheme, and
 - (11) Scheme for Provision of Housesites to Landless Workers in Rural Areas

2 The Village Housing Projects Sche_ me is in the State Sector Central Financial assistance for all the State Sector programmes including housing, is released by the Ministry of Finance to the State Governments in the shape of 'block loans' and block grants This block Central assistance is not relatable to any individual scheme, pronect or head of development State Governments are thus free to determine the programmes to be implemented and the funds to be allocated within the approved outlay for different State Sector Schemes according to their requirements and priorities

3 As regards the Scheme for Provision of House-sites to Landless Workers in Rural Aears, this Scheme has also been transferred to the State Sector from the commencement of the Fifth Five Year Plan During the year 1973-74 when this scheme was in the Central Sector, Central financial assistance of the order of Rs 290 99 lakhs was released to the various State Governments for execution of projects approved under the Scheme

Constitution of Sports Bodies

8620 SHRI C K CHANDRAPPAN Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE br pleased to state

- (a) whether certain persenalities dominate sport bodies in India,
- (b) if so, whether Government are considering to revise the constitution of all sports bodies.
- (c) whether Government have any measures to sciutinise the activities of the subsidiary organisations before dolling out funds to them, and
- (d) if so the broad outlines thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION SOC'AL WELFARE AND IN THE DEPART-MENT OF CULTURE (SHRI ARVIND NETAM) (a) to (d) There have been instances of the same individuals remaining office bearers in Sports Organisations for prolonged periods National sports federations/Associations are private registered Societies. Government and have no intention of interfering in their autofunctioning Nevertheless. nomous consistently with their own obligations and responsibilities, alone from the point of view of the public funds provided, but also of the results achieved and the country's image abroad in international meets and tournaments Government have laid down certain norms and guidelines with reference to which their assistance and instrumentality should, on occasion, be made available to the Indian Olympic Association National Sports Associations

The guidelines which the Government has laid down for itself in this

connection and which have been circularised to the concerned organisations on 9th April, 1974 are as follows:

- (i) that no person has been or can be an office bearer in the National Organisation consecutively for more than one term or 3 years, or at the most two terms or 6 years in the event of unanimous election for a second term.
- (ii) that no office bearer of the National Organisation is at the same time an office bearer of any other National Organisation.

Explanation: The term office bearer in clauses (i) and (ii) means—

- (a) President
- (b) Vice-President
- (c) Treasurer
- (d) Secretary Secretary General; or any corresponding office.
- (iii) that the annual accounts of the organisation have been properly maintained and regularly audited and that the various business meetings as required under its constitution have been duly held.
- (iv) that each National Federation Association, in ita particular field of specialisation, has been appointing or would appoint National Coaches with the prior approval of the All India Council of Sports.
- (v) that the National Federatons Associations, in their respective fields of specialisation, have been holding or would hold, where feasible not less than two competitions annually for specified age-groups at the junior and sub-junior levels; these competitions should be organized through

- Inter-Block and Inter-District competitions in each leading to the competion at the national level.
- (vi) that the membership of the National Federations Associations, within theu particular fields of specialisation, is confined to the corresponding State and other special units affiliated to the National Federations Association, and that where any of the Nation-Federations/Associations, al grants membership to individual clubs or individual persons, such membership does not confer on such members right to vote in any the of the Federations/Ascociation's meetings

The concerned Sports Organisations have been given time upto September 15, 1974, for determining their provisions and procedures for eligibility for Government assistance.

Scheme submitted by Orissa Government on Development of Minor Irrigation Scheme

8621 SHRI M. S. PURTY: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) the main fetures of the scheme, if any, submitted by the Government of Orissa for developing minor irrigation facilities in that State during the current year;
- (b) whether Central Assistance has also been sought for the same; and
- (c) if so, the Central Government's decision in this regard?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRIB. P. MAURYA): (a) No special scheme has been received from Govern-

ment of Orissa for developing Minor Irrigation facilities in that State during the current year.

(b) and (c). Do not arise

Starvation deaths in Hooghly, West Bengal

8622 SHRI YAMUNA PRASAD MANDAL: Will the Minister of AGRI-CULTURE be pleased to state

- (a) whether Government's attention has been drawn to the reports of starvation deaths in Hooghly, Bengal.
- (b) if so, whether any enquiry has been instituted; and
 - (c) the findings of the enquiry?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P SHINDE) (a) to (c). Information has been called for from the West Bengal Government will be laid on the Table of the Sabha as soon as it is received

सडक परिवहन की प्रमख समस्या

8623. श्री मुलबन्द हानाः क्या नीवहन भीर परिवहन मती यह बनाने की की कृपा करेगे कि

(क) क्या फैंडरेशन ग्राफ बाम्बे मोटर ट्रामपोर्ट भ्रापरेटर्म तथा इडियन फैडरेशन ब्राफ ट्रामपोर्ट ब्रापरेटर्स ने 12 ज्लाई, 1973 को सरकार का घ्यान सडक परिवहन की प्रमुख समस्याचा की छोर दिलाया था मौर इसके बारे में कोई ज्ञापन सरकार को दिया था. ग्रीर

(ख) यदि हां, तो उसकी मुख्य बातें क्या है भीर सरकार ने इन समस्याओं के ममाधान के लिए क्या कदम उठाये है ?

नीबहन भीर परिबहन मंत्रालय में उपमंत्री (श्री प्रणव कमार मुखर्जी): (क) भीर (ख). सरकार को दो में से किसी भी फेडरेशन से 12-7-73 का कोई पव अथवा ज्ञापन प्राप्त नही हमा है। परन्त दि इंडियन फेड-रेशन भ्राफ ट्रान्मपोर्ट भ्रापरेटर्ज, बम्बई ने 12-5-73 को बम्बई में हुए रोड टान्सपोर्ट ग्रापरेटजं के ग्रखिल भारत सम्मेलन मे पारित ग्राठ सकरपो का एक सट भेजा। इन सकल्यों का सार नीचे दिया गया है --

संकल्प म'० --- 1 :

भारी उद्याग मनालय वाणिज्यिक गाडी विनिर्माताओं विशेषकर मैसर्स टाटा इन्जी-नियारिय तथा लोकोमोटिव वम्पनी लिमिटेड को निर्देश दे कि टाटा ट्व भीर वस चेसिसो की कीमत में लगभग 4000 रुपये की हाल की वदि का कार्यन्वित न करे। सरकार विनिर्मातास्रो द्वारा 1967-68 से वार बार की गई कीमता में वृद्धि के नारणों की जान करवाथे । वर्गणि ज्यिक गार्डा चेमिस की ग्रीमता पर फिर धनौपचारिक नियतण रखने पर विचार करे। भारी उद्योग मता-लय गाडी विनिर्माताम्रो का यह भी निर्देश हे कि वे छोटे छोटे पिवहन आपरेटरो की महवारी ममितियो अथवा युनियनो । फेड-रेशन को अपने सदस्यों में बाटने के लिए. रियायती दरो पर चैमिस का कोटा नियमित क्रप से सप्लाई करे।

संबद्ध सं 0 --- 2 1

उपभोक्तामों के हित की रक्षा करने के लिए केन्द्र तथा राज्य दोनों स्तरो पर एक म्रालय म्रथवा विभाग का सृजन किया जाये।

संकल्प सं 3:

केन्द्रीय ग्रथवा राज्य सरकारो को ग्रावण्यक वस्तु ग्रधिनियम, 1955 के ग्रन्सगत ट्रक टायर ग्रीर टयूबो की विकी ग्रीर विसरण को नियमिन करने के लिए प्रभावी कदम उठाय । परिवहन परिचालको क सगठनो के प्रतिनिधियो को विसरण करने वाले के साथ सम्पर्क रखना चाहिए ।

संकत्प सं० -- 4 1

राज्य मरकार को छोटे परिवहन परि-चालको के शोषण को रोकने के लिए माल बुक करने वाली एजिन्मयो के कार्यों को नियमित करन के लिए नियम बनाने चाहिए।

संकल्प संख्या -- 5 :

सरकार को मोटर गाडी के ब्रावश्यक फालतू पुर्जों की कीमतो पर प्रभावी नियत्रण रखने तथा इन पुर्जों की चोर बाजारी रोकने के लिए उपयुक्त संस्था कायम करनी चाहिए।

संकल्प संख्या --- 6 :

परिमिट देने के लिए प्रार्थना पत्नों पर, जोनल स्कीम के झन्तर्गत गुणावमुण के झाझार पर, विचार किया जाना चाहिए। परन्तु उन प्ररिवालकों को तरजीह देनी बाहिए जिन का जोन में कुझल सेवा का रिकार्ड होता है। जोनल प्रिमट जारी करने की पढित को सरलीकृत किया जाये नाकि परिवहन व्यापार में नगे प्रधिक से प्रधिक व्यक्ति लाभ उठा सके।

संकल्प संख्या --7 :

राज्य मरकारो को, जैसा कि सडक परिवहन कराधान जाच मिनित ने निफारिश की है, चुगी और पथकर समाप्त कर दिया जाये।

सकल्प सक्या--- 8

सरकार अपने विभागो और उपक्रमो को निदण दें कि वे ढुलाई के ठें के सीधे यूनियनो, फंडरेशन, एसंसियेशनों अथवा छोट परिवहन परिचालको की सहकारी सोमाइटियो को दे ताकि विचीलियो को हटाया जा सके।

- 2 नौवहन ग्रीर परिवहन मत्रालय स⊤रूर संख्या 4,6 तथा 7 मे मुख्यन सम्बर है।
- 3. जहां तक सकत्य संख्या 4 का सम्बन्ध है । भग्कारी गाडियो द्वारा ढोये गये माल के एकतित करने, भंजने ध्रयवा वितरण के कारोबार में लगे एजप्टो के लाइसेन्सो के लिए मोटर गाडी प्रधिनियम, 1939 में पहले ही से व्यवस्था की गई है। इस विषय में नमूना नियम राज्य सरकारों के मार्ग दर्शन के लिए परि-चालित किये यथे है। दिल्ली प्रसासन द्वारा बनाये नये नियमों को सर्वोच्च न्याया-लय में चुनीती दी गई है। ध्रन्य राज्य

सरकारे सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की प्रतीका कर रही हु।

Written Answers

4. जहा तक संकल्प सं० 6 का सम्बन्ध है जोनल स्कीम के प्रान्तपंत माल गाडियों के लिए परिमट मोटर गाडी भिधिनियम के प्रन्तपंत राज्य सरकारो द्वारा नियुक्त परिवहन प्रधिकरणो द्वारा दिये जाते ह । ये अधिकरण ग्रद्धं न्यायिक ढग से कार्य करती है भौर परिमटो के लिए प्रार्थना पत्नो पर कार्यवाही करने हेतु जिस बात पर ध्यान देना होता है वं मोटर गाडी ग्रिधिनियम की धारा 55 में निहित हैं।

है, जुनी को समाप्त करना राज्यं सरकार के प्रिष्ठ के से है। केन्द्रीय सरकार राज्य सरकारों को इस बात के नित्त सहस्त कराने हेतु प्रयत्नशील है कि इस सम्बन्ध में सड़क परिवहन कराधान जाच समिति की सिफारिशों को कार्य रूप दे। चुनी को समाप्त करना स्वीकार्य वैकल्पिक करों का पता लगाने पर निर्भर करना है। यद्यपि समय समय पर कई वैकल्पों पर विचार किया गया है फिर भी किसी उपयुक्त प्रतिस्थानी करों पर अभी तक निर्णय लेना सभव नहीं हुआ है।

6. इंडियन फेडरेशन आफ ट्रान्सपोर्ट झापरेटर्ज का एक शिष्ट मंडल 5-11-73 को नौबहन और परिवहन मसी से मिला तब उन्हें उपरोक्त स्थिति से झवगत कराया गया । शिष्टमडल भारी उखोग मौर झोझींगिश विकास मती से भी मिला और टायरं, वैमिस झादि अस्त करने में परि-चासको धी कठिनाइयों उन के समझ रखी। कृषि फार्न तथा उनका **कार्य**

8624. श्री मूलकः हागा: क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

- (क) इस समय केन्द्रीय सरकार कहां कहा पर कौन-कौन में कृषि फार्म चना रही है तथा उन पर किनना वार्षिक व्यय होताः है;
- (ख) वर्ष 1972 तथा 1973 में इन फार्मों में कितना राजस्व प्राप्त हुआ; श्रीर
- (ग) सरकार ते इन फार्मों में से प्रस्येक पर किनना पूजी निवेश किया हुआ। है ?

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (धीर भाज्यासाहिय पी० शिन्वे): (क) सं (ग) केन्द्रीय राज्य फार्मी का प्रबन्ध भारत सरकार के प्रतिष्ठान भारतीय राज्य फार्म निगम द्वारा किया जाता है। मूरतगढ़, जेतमर, हिसार, झरसूगुडा ग्रीर रायचूर फार्मी की म्यापना, भारतीय राज्य फार्म निगम बन रे से पहले की गई थी और इन फार्मी का प्रशासिक नियन्त्रण 1 धगस्त, 1969 को निगम को हम्तांतरित किया गंया इसके बाद निगम न और फार्म भी खोले हैं। 1971-72 भीर 1972-73 की भवधि में इन फार्मों पर लगाई गई पूजी, व्यय की गई राशि धौर इन फार्मों से होन वाली श्राय की प्रदक्तित करने बासा एक विवरण सलमा है। दिखाई गई निवेश पूजी वह रकम है जो इन कामों पर स्थापना के समय से 1972-73 तक लगाई गई है।

विवरण

| | | <u>uugusa anjanikkii</u> | | | | | - | | | (54 | थे ना | जो म | ₹) | | | | |
|-----------------|---------------------------|--------------------------|----------|--|------------|---------|----|-----|----|-----------------------|-------|---------|------|--|--|--|--|
| | | | | | | 1971-72 | | | | | | 1972-73 | | | | | |
| कम सर | फार्मवानाम ग्रीर स्थान | ग्र ि | नन ।य | व्यवर्गी निश्चम गर्दगणिकी गर्ड स्वा | | • | | | | ाता की गरे हुना | | | | | | | |
| | क्तर्द्र∣य राज्य फर्म — | | | | | | | | | | | | | | | | |
| 1 | मूरतगइ (राजस्थान) | 107 | 08 | 88 | 47 | 192 | 56 | 160 | 36 | 10 | 3 57 | 193 | 3 96 | | | | |
| 2 | जेत्सर (राजस्थान) | 19 | 94 | 19 | 80 | 67 | 25 | 35 | 60 | 26 | 58 | 72 | 14 | | | | |
| 3 | हिभार (हरियाणा) | 31 | 51 | 25 | 22 | 57 | 09 | 38 | 85 | 29 | 11 | 65 | 33 | | | | |
| 4 | नायावाल (पजाब) | . 13 | 85 | 12 | 57 | 46 | 94 | 20 | 00 | 21 | 10 | 57 | 08 | | | | |
| 5 | रायच्चर (मैसूर) | 18 | 48 | 18 | 3 h | 57 | 45 | 28 | 85 | 27 | 30 | 66 | 47 | | | | |
| 6 | कन्नानार (केरल) | 6 | 0 4 | 7 | 50 | 30 | 90 | 12 | 27 | 12 | 31 | 3 1 | 51 | | | | |
| 7 | चेगम (तीमल नाड) | 3 | 38 | 3 | 94 | 1 1 | 02 | 13 | 86 | 13 | 86 | 36 | 80 | | | | |
| 8 | काक्तिवाडी (ग्रमम) | 0 | 69 | 2 | 09 | 10 | 28 | 2 | 08 | 5 | 81 | 15 | 04 | | | | |
| 9 | झारसूगडा (उडीमा) | 1 | 14 | 9 | 11 | 17 | 99 | ø | 71 | 3 | 03 | 9 | 47 | | | | |
| 10 | राय-बर्रला (उत्तर प्रदेश) | | - | | • | | - | σ | 93 | 0 | 97 | 3 | 56 | | | | |
| 11 | खम्माम (कान्ध्र प्रदेश) | atain dinns | | | | | | | 89 | 4 | 29 | 8 | 26 | | | | |
| | | | | | | | | | | | | | | | | | |

- टिप्पर्णः 1 उपर्यक्त सारणी में दी गई जानकारी में मिजोरम का फार्म वास्तिल नहीं है, क्यों क यह सरकार की भार में प्रारम्भ की गई किसासत्मक पौर्वे जिन्ह है भीर निवस का भूग की है।
 - 2 अभित आय में विक आय तथा कार्म की अन्य आय जामिल है।
 - अ किया गया व्यय राजस्व व्यय है जिसमें परिमम्पिलयों पर मूल्य-ह्नास भीर वहीं खाते में डाले गये श्रास्थागत व्यय शामिल है।
 - 4 पूजी निवंश ग्रंब तक की कुल परिसम्पत्ति है—यह राशि मूल्य ह्नास की व्यवस्था करने के पश्चात् निवाली गई है।
 - 5 निज्ञम का वित्तीय वर्ष जुलाई से जून तक चलता है, इर लिए मेर्ने सई जासकार जून 1972 से जून 1973 को समाप्त हुए प्रश्विवक से सम्बद्ध है।

भारतीय खाद्य निगम के कर्मचारियों की संख्या, उसका प्रशासनिक सर्च तथा उसे हुई हानि

8625. श्री मूल वन्द शाना : क्या कृष्य मली यह बताने की कृपा करेंगे कि :

- (क) भारतीय खाद्य निगम के वर्ष 1965 के गठन के समय तथा इस समय कर्मचारियों की संख्या तथा प्रशासनिक खर्च सम्बन्धी पृथक-पृथक ग्रांकडे क्या है; भीर
- (ख) ग्रब नक इस निगम को कुल कितनी हानि हुई ग्रीर इसके क्या कारण हैं?
- कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री भ्रम्णा साहित पी० शिन्ते): (क) 1965 में भ्रीर इस समय भातीय वाद्य निगम का कर्मचारियों भ्रीर प्रशासन पर खर्चा इस प्रकार है:—

कर्मचारियों की प्रशासन संबंधी खर्चा संख्या (करोड रुपयों में)

1965 31-3-73 市 1965-66 1972-73

2,150 50,522 1.17 25.02 (ग्रस्वायी)

(ख) निगम को 1965-66 से बाने वर्षों में कभी हानि नहीं हुई हैं।

राष्ट्रीय शैक्षणिक प्रमुसंघान तथा प्रशिक्षण परिचर के कियाकलाय

8626. थी मूल चन्द हाना : क्या शिक्षा, समाज कल्यान घौर संस्कृति मती यह बताने की छुपा करेंगे कि .

- (क) इस समय राष्ट्रीय शैक्षणिक अनुमधान तथा प्रशिक्षण परिपद के क्या कियाकलाप है तथा उन पर कुल कितना प्रशासनिक खर्च होता है और इसमें किन किन श्रेणियों के अधिकारी कार्य कर रहे हैं; और
- (ख) वर्ष 1973-74 में इस परिषद् ने किन किन क्षेत्रों में अनुसन्नान समबन्धी अध्ययन किये तथा उनके क्या परिणाम निकले?

शिक्षा और समाज कत्याण मंद्रालय तथा संस्कृति विभाग में उपमंत्री (श्री डी॰ पी॰ यादव): (क) राष्ट्रीय शिक्षा, ग्रनुमजान तथा प्रशिक्षण परिषद् के इस समय निम्निल-वित मध्य कार्यकलाप है —

- (1) स्कूलां में शिक्षा का कोटि में सम्बन्धित ग्रनुमधान तथा विकास करना जिसमें पाठ्यचर्या पाठ्य पुस्तके, शिक्षक-मार्गनिदे-शिकाए, शैक्षिक सामग्री, परीक्षा विषय, विज्ञान किट्स, दृश्य श्रव्य सहायता सामग्री विशेषकर सम्मिलत है।
- (2) माध्यमिक स्कूल अध्यापकों तथा गिक्षक अध्यापकों का पूर्व-सेवा तथा सेवारत अशिक्षण जैसे विज्ञान अध्यापकों के पूर्व-नेवा प्रशिक्षण के लिये विज्ञान में 4 वर्षीय पाठ्यक्रम शिक्षक अध्यापकों के लिये ग्रीष्म स्कूल प्रवाचार पाठ्यक्रम अल्प-कालिक सेवारत पाठ्य-कम ।
- (3) म्रखिल भारतीय तथा राज्य स्तरों पर प्राचमिक तथा माध्यमिक शिक्षक सर्वों के लिये विकासोम्मुख पाठ्यकम ।

- (4) क्षेत्रीय एककों के जरिए राज्य शिक्षा विभागों के साथ सम्पर्क ।
- (5) पाठ्यपुस्तकों अनुपूरक अध्ययन सामग्री, अनुसद्यान मोनोंग्राफों गैक्षिक पात्र-काओं का प्रकाशन ।

1973--74 में 3.24 करोड रूप्ये (योजनातथायोजनेत्तरदोनो) का सनुमानित खर्चा हुसा।

परिषद के अन्दर कार्य करने वाले आध-कारियों का मोटे तीर पर 3 वर्गे में बाटा जा मकताहै प्रयान गौक्षिक, गर गौक्षिक (लिपि-कीय तथा प्रणामनिक) तथा महायक शैक्षिक रंटाफ में प्रोफेंसर रीहर प्राध्यापक इत्यादि शामिल होते है, गैर शैक्षिक स्टाफ में अवर मचिव, महायक मचिव ,ग्रनभाग ग्रधिकारी ब्रधांक्षक, वैयाक्तिक महायक इत्यादि शामिल होते है ग्रीर महायक स्टाफ में परिषद के प्रकाणन विभाग में सम्पादक सहायक सम्पादक निर्माण अधिकारी, महायक निर्माण अधिकारी इत्यादि, एन० ग्राई० ई० पुस्तकालय में पुस्तकालय स्टाफ तथा प्रलेखन एकक भौर कार्य शाला विभाग में कार्य करने वाला तकनीकी स्टाफ जैसे तकनीकी अधिकारी फारमैन, तकनीशियन मैकेनिक्स इत्यादि ।

- (ख) राष्ट्रीय शिक्षा श्रनुमश्रान तथा श्रीशक्षण परिषद् ने 1973-74 के दौरान निम्नलिखित क्षेत्रों में श्रनुमश्रान श्रध्ययन कार्यों का मंचालन किया -
 - । विज्ञान तथा गणित में शिक्षा ।
 - 2. सामाजिक विज्ञानों नया मानव विज्ञानों में णिक्षा ।
 - शैक्षिक मनोविज्ञान तथा शिक्षा प्रतिष्ठान ।
 - 4. शिक्षक शिक्षा।
 - .5. पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक शिक्षा ।

पाठ्यचर्या. पाठ्यपुस्तकों, किटस, दृश्य श्रृव्य सहायता इत्यादि कार्यों में भन्-संधान तथा विकास कार्य बराबर जारी रहा है । कुछ भनुमधान भ्रध्ययन कार्यों के बारे में रिपोर्ट मिल गई है ग्रीर कर्यान्वयन हेत् अथवा अन्य कोई कार्यवाई करने लिये उनकी जाच की जा रही है कुछ मभी भी जारी है। उदाहरण के लिये स्कूल शिक्षा की नई 10 + 2 पद्धति में कक्षा 1 में 10 तक के लिये एक पाठयचर्या प्रारूप तैयार किया गया था । पाठयचर्या सबधी ग्रीर विकास का कार्य किया जा रहा है। उनको पाठ्यपुस्तकों का जा पहले ही प्रकाशित हा चकी थी मैशाधन किया जा रहा है ताकि उनका ग्रदयातन बनाया जा सके ग्रीर कुछ मामलों में नई पुस्तके भी लिखी जा सके । म्रादि प्रारुप (प्राटाटाइप)के रूप में विज्ञान किटो का निर्माण किया गया और इस क्षेत्र में परीक्षण किये गये थे।

Construction of Low Income Group Flats in Ashok Vihar

8627. SHRI M. C. DAGA; Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether the Central Vigilance Commission has held an enquiry into the construction of 188 low income group flats built in Ashok Vihar where sub-standard material was used by the contractor;
- (b) if so, what are the findings of the Commission;
- (c) what further action Government have taken on these findings; and
- (d) whether Government are proposing to refund any amount to the flat owners in the light of the Central Vigilance Commission Report?

passed.

of agricultural holdings has yet been

212

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN MINISTRY OF WORKS AND HOUS-ING (SHRI OM MEHTA): (a) Yes.

- (b) Certain defects had been pointed out by the Commission, Most of these defects were of a routine nature, except in the case of bricks in walls and flooring where substandard bricks seemed to have been used by the Contractor, but the extent of substandard bricks used in walls could not be ascertained. The test results in the case of flush door shutters and cement mortar were found to be satisfactory.
- (c) After considering the report of the Commission, the Delhi Development Authority has proposed to effect an appropriate recovery from the final bill of the Contractor.
 - (d) No. Sir.

Law for consolidation of Agricultural Holdings

8628. SHRI ARJUN SETHI: Will the Minister of AGRICULTURE pleased to state:

- (a) whether no law for effecting consolidation of agricultural holdings has yet been passed in some of the States in the country;
- (b) if so, the names of the States; and.
- (c) the steps taken by the Centre to pass laws immediately on consolidation of agricultural holdings in their respective States?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): (a) and (b). In the Andhra area of Andhra Pradesh, Kerala, Manipur, Beghalaya, Nagaland Tamil Nadu, and Tripura, no law for consolidation

(c) Promotion of consolidation land holdings has been one of the major planks of the land reforms policy of the Government of India. The States have been advised from time to time to take up consolidation of holdings which is a State subject under the Constitution. In the Fifth Five Year Plan document too emphasis has been laid on the need for taking up consolidation of holdings

Housing Problem of Rural Areas

all over the country.

BIBHUTI 8629. SHRI MISHRA: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) whether Government advised various State Governments to solve housing problems of the rural areas:
 - (b) the gist of the advice; and
- (c) to what extent follow-up action is contemplated?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUS-ING (SHRI OM MEHTA): (a) to (c). The Ministry of Works and Housing introduced the following two Housing Schemes in the year noted against each to improve the housing condition of the people Riving in rural areas:--

- Housing **Projects** (i) Villages Scheme 1957.
- (ii) Scheme for Provision House-sites to Landless Workers in Rural areas 1971.

The Scheme at (i) was transferred to the State Sector during the Third Five Year Plan. Central assistance to States for all the State Sector chemes, including Village Housing Projects Scheme and other Social Housing Schemes, is given in the shape of block loans and block grants without being tied to any particular scheme. Project or head of development. The State Governments are free to allocate and utilise the block assistance on various schemes according to the requirements and priorities to be determined by them

The Scheme mentioned at (ii) above was introduced in 1971 as one of the Minimum Needs Programme of the Government in the Central This Scheme has also been transferred to the State Sector from the commencement of the Fifth Five Year Plan i e. 1st April, 1974. However, keeping in view the importance of housing problem of the landless Workers in the rural areas of the country a substantial and distinct provision of Rs 10816 crores been made in the draft Fifth Five Year Plan for implementation of this Minimum Needs Programme.

Difficulties and bottle-necks, if any, experienced in the implementation of various Social Housing Schemes, including the rural housing programme, are discussed from time to time at the Conferences of State Housing Ministers and also during the annual plan discussions held with the Officers of the States every year in the Planning Commission.

छात्र-संघों के नेताओं से निस कर छात्रों की समस्याओं को दूर करना

8630- श्री विजूति मिश्राः क्या शिका, समाज कल्याज और संस्कृति मंत्री यह क्साने की कृषा करेंचे कि:

(क) क्या केन्द्रीय सरकार ने छात्रीं की समस्याओं को हल करने के लिये विभिन्न विश्वविद्यालयों के छात्र संबों के नेताओं को बुलाकर उनते बार्तालाय की कोई योजना-बनाई है; और (ख) यांद हां, तो तत्मंत्रंधी तथ्य स्था हैं ?

शिका, समाज कल्याण तथा संस्कृति मंती (प्रो० एस० मुक्त हसन) . (क) शौर (ख) . शिक्षा तथा समाज कल्याण मतालय के उप मंत्रियों ने निकट भविष्य में विभिन्न राज्यों की राजधानियों में झलग-झलग बैठकों में झल्य प्रतिनिधियों के माथ साथ छात युवक प्रतिनिधियों से मेंट करने का विचार रखा ।

छात्र समनाष पर शिक्षा मिर्मित के केन्द्रीय मलाहकार बोर्ड ने 18 स्प्रप्रैल, 1974 का नई दिल्ली में हुई बैठक में यह निर्णय किया कि 20-21 मई, 1974 को नई दिल्ली में होने वाली उनकी समली बैठक में सन्य प्रतिनिधियों के साथ-माथ विभिन्न विश्व निवालयों के छात्र सबी के प्रनिनिधियों में भी भेट की जायेगी।

Speeding up, Agricultural Production and Stress on Cereal Production

8631. SHRI BIBHUTI MISHRA. Will the Minister of AGR!CULTURE be pleased to state:

- (a) whether Prime Minister has written to the Chief Ministers of all the States to speed up agricultural production stressing cereals production in this work:
- (b) if so, reaction of the Chief Ministers; and
- (c) action so far taken by them tospeed up agricultural production?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):
(a) The Prime Minister has recently written a letter to Chief Ministers impressing on them inter alia the need to pool our energies to meet the challenge of agricultural production and inviting their personal

attention to the need for successful implementation of the programmes included in the draft Fifth Plan for increasing production.

(b) and (c). In the replies so far received the Chief Ministers have agreed to act in accordance with the suggestions in the Prime Minister's letter.

-Construction of Building and Erection of Statue of Shivaji at Raigad

8632. SHRI SHANKAR RAO SAV-ANT: Will the Minister of EDUCA-TION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether the Archaeological Survey of India has objected to the Maharashtra Government's attempt to construct buildings and errect a statute of Shivaji at Raigad:
- (b) if so, what are the reasons therefor;
- (c) what are the rights and duties of the State Government in respect of the Raigad Fort;
- (d) whether the Maharashtra Government has represented that the Raigad Fort should be handed over to them; and
- (e) if so, what are the reactions of the Central Government to their representation?

THE MINISTER OF EDUCATION.
SOCIAL WELFARE AND CULTURE
(PROF. S. NURUL HASAN): (a)
Yes, Sir.

(b) The proposed constructions and erection of a statute are not in keeping with the archaeological principles and practices. The policy of the Survey is to preserve protected monuments in the condition in which they exist without addition of any

modern structures, statutes etc. which affect their ancient nature. The sanctity of the Raigad Fort will be impaired if modern constructions take place within the fort and a statue made by a modern sculptor is placed in it.

- (c) Raigad Fort is a Centrally protected monument under the charge of the Archaeological Survey of India; consequently the State Government has no jurisdiction over the monument in respect of its preservation and maintenance. The State Government has the responsibility of providing approach roads to the monuments and is also responsible for such other matters like the law and order.
- (d) Yes. In the year 1962, Secretary, Education & Social Welfare Department, Government of Maharashtra, requested the Director General to delete the monument from the central list to enable the State Government to take it up as a protected monument under State jurisdiction.
- (e) The Central Government is unable to take the view that the Raigad Fort built by Chatrapati Sivaji is not a monument of national importance. According to the Constitution, monuments of national importance are the responsibility of the Central Government. The Central Government therefore divert itself of this responsibility.

Annual losses to the Mogul Line 8633 SHRI SHANKERRAO

TANVAR

PROF. MADHU DANDAVATE:

Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state:

(a) what are the likely annual losses to the Mogul Lines for passenger service on the Konkan coast:

- (b) will these losses be integrated with the profits on the Cargo service;
- (c) will these losses be treated on the same lines as the losses on the passenger service between Madras and Andamans: and
- (d) if answers to parts (b) and (c) above be in the negative, the reasons therefor?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): (a) The likely annual locses are estimated to be Rs 2350 lakhs

- (h) and (c) No Sir.
- (d) It has been decided that the Konkan Coastal Passenger Service is to be operated on "No profit No loss" basis

Subsidy and Loan for construction or maintenance of Roads in Maharashtra

8634 SHRI SHANKERRAO SAV-ANT Will the Minister of SHIPPING AND TRANSPORT be pleased to state

- (a) what financial help (subsidy and loan) the Central Government give to the State Government for the construction or maintenance of roads and roads of Economic importance,
- (b) which roads in Maharashtra came under this category; and
- (c) what help is proposed to be given to each of these roads in Maharashtra during the Fifth Five Year Plan period?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE) (a) to (c). Loan assistance is provided for the

development/construction of selected road/bridge works under the Centrally Aided Programme of State Roads of Inter-State or Economic Importance. In the Fourth Plan, the following new projects were agreed to be financed under this programme in Maharashtra with 100 per cent loan assistance:—

Estimated cost

- (1) Bridge across Revadande Creek on Alibag-Retadanda-Salar Murumd Road, District Kolaba. 60.00 lakhs
- (2) Bridge cross Savitri river at Mhapral on the Mandingad-Mhapia Amet-Kuda Road. 50:00 lakhs
- (3) Turapoic-Boisar road 29: 26 lakhs

A total amount of Rs. 51.99 lakhswas paid to the Government of Maharashtia during the Fourth Plan period.

Provision of funds for various schemes during each year of the Fifth Five Year Plan will depend upon the availability of the resources and requirements of various States including Maharashtra from year to year It is, therefore, not possible to indicate at this stage the funds which could be provided for each of the aforesaid schemes to Maharshtra during the Fifth Five Year Plan

Rural Drinking Water Supply Scheme in Maharashtra

8635. SHRI SHANKERRAO SAV-ANT: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state:

- (a) how much financial assistance was demanded by the Government of Maharashtra for rural drinking water supply schemes in 1972-73 and 1973-74 and how much was given: and
- (b) how much amount is proposed to be given for the same purpose during 1974-75 and for which projects?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUSING (SHRI OM MEHTA): (a) 136 rural water supply schemes estimated to cost Rs 520 03 lakhs were sent by the Government of Maharashtra, out of which 87 schemes estimated to cost Rs 323 53 lakhs were approved by the Central Government under the

Accelerated Rural Water Supply Programme. The State Government were advised to select and take up schemes out of the approved list of schemes. the cost of which could be met from within the available allocation. The assistance demanded and the funds released during 1972-73 and 1973-74 under the said programme were as under:—

| Year | Assistance demanded by S ate Government | Amount releas Central Government | |
|---------|---|-------------------------------------|--|
| 1972-73 | Rs. 135,17 lakhs | Rs. 106 00 lakhs | |
| 19~3-74 | Rs 223 23 lakhs | Rs. 79.00 lakhs | |

Due to financial constraints more tunds could not be made available to the State Government

(b) This Plogramme has been discontinued as a Central Scheme in the Vih Plan During the Vth Plan, rural water supply schemes have been included in the Minimum Needs Programme and will be implemented by the State Governments

Incentive for Crushing Sugarcane early in spite of Low Recovery

8636 SHRI E V VIKHE PATIL' Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

- (a) whether due to concession in excise duty on sugar produced early in October-November season, there is considerable loss in recovery of sugar ad therefore loss in total production of sugar in the country, and
- (b) the reasons for giving incentive for crushing sugarcane early?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): (a) and (b).

The recovery of sugar is generally lower during October and early November than the year's average Nevertheless incentives for early crushing of cane by factories during these two months are given to reduce the diversion of cane to manufacture of gur and also to ensure adequate availability of sugar early in the season, particularly when the carry-over stocks from the previous year are low This by itself does not appear to lead to loss in total production of sugar For example, during the last three seasons, the production in October and November 1970 was the highest being 5 08 lakh tonnes and the total production was also the highest being 38.73 lakh tonnes

Drinking Water Facilities to Towns

8637 SHRI VIKRAM MAHAJAN: Will the Minister of WORKS AND HOUSING be pleased to state.

(a) the total number of town; in the country, State-wise, which have no drinking water facilities;

- (b) the total number of towns in the country. State-wise, which have no proper drainage system; and
- (c) the number of towns State-wise, proposed to be provided with drinking water and proper drainage during the vear 1974-75 and during the Fifth Five Year Plan?

THE MINISTER OF STATE IN THE DEPARTMENT OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS AND IN THE MINISTRY OF WORKS AND HOUS-ING (SHRI OM MEHTA): (a) and (b). The available information is given in the Statement laid on the Table of the House [Placed in Library See No. LT-6860/741

(c) The information about physical targets to be covered during the Fifth Five Year Plan are not available. The information about the targetted coverage during 1974-75 available from a few States has also been indicated in the annexure.

पिछडे हए राज्य, जिनका खाद्याओं की दलाई तथा रख रखाव का व्यय के न्द्रीय सरकार बहन करती

8638. श्री श्रटल जिहारी वाजपेयी: श्री जगन्नाथ राव जोशी क्या कृषि मती यह बताने की कृपा करेगे कि :

- (क) ऐसे पिछड़े राज्यों के नाम क्या है. जिन्के खदानों के ढोने तथा रख रखाव पर श्राने वाले व्यय को केन्द्रीय सरकार बहन करती है और गत तीन बर्गे में प्रति विवंदल वाधिक स्ययं दिलन्। रहा है .
- (ख) इस सब्ध में भारतीय खाद्य निगम की प्रति क्विटल व्यय की दर कितनी रही हे . ग्रीन
- (ग) क्या इन गज्यों के खाद्यानों की इलाई तथा रखरखाच का प्रवध भी भारतीय खाद्य भिगम को दिया जा रहा है ?

क्षाय मंत्र लय में राज्य मंत्री (औं शण्या-साहित पी० किन्त्रे): (क) से (ग). मीजदा प्रवर्ध के अधीन केन्द्रीय स्टाक से राज्यो मरकारों को खद्य स भ रतीय दिगम के डिपों पर या गनव्य स्थान तक रेल पर निज-भार के समान निगम मन्यों पर दिये जाने है। क्योंकि भारतीय खद्य निगम केन्द्रीय मरकार के खाते में खदान्न सप्लाई करने के लिये जिम्मेदार है, इसलिये केन्द्रीय पूल से दिए गर जाने वाले खाद्य नों की ढलाई सीर उनके भण्डारन का खर्व केन्द्रीय गरकार की श्रोर से भारतीय खाद्य निराम द्वारा बदन विया जाता है। भाष्य संस्कारे राज्य के ग्रन्दर खदानों का वितरण करने के लिए जिम्मेदार है और इसलिये राज्य मनकारी या उत्की एजेसियों को भारतीय खन्द विगम के हिया या रेल छोर गतव्य स्थ नी में स्टाक के प्राप्त होने के बाद भ डा ण और उनाई पर अतिरक्त खर्व और अन्य प्रमान खर्व बरना पड़ना है।

भारतीय खाद्य निगम दारा 1970-71 से 1972-73 के तीन व्यक्ति दीनन केर्न्द्राय सरकार के खाते में खाद्य नीं की दानाई ग्रीर भण्डारण पर किया गरा ग्रीमन खर्ब डम प्रकार

| वर्ष | ढ्ल≀ई वर्ष | (ह० प्रति क्विटल) भण्डारण खर्वे |
|----------|------------|--|
| 1970-71 | 3 47 | 1.01 |
| 1971-72 | 3 96 | 1 32 |
| 1972-73 | 3 48 | 1.15 |

223

काइतकारी कान्तो में समानता 8639 भी भटल बिहारी वाजपेयी भी जगन्नाय राव जोशी क्या कृषि मर्जा यह बताने की प्रपा करेगे कि :

- (क) क्या सभी राज्यों के काश्तकारी काननो में समानता लाने तथा बटाईदारी के हित सरक्षण के लिये केन्द्रीय मरकार ने क्या ठोम मझाव दिये हे ,
- (ख) उन पर राज्य मरवारो की क्या प्रति कियाए ह , ग्रीर
- (ग) सझ वी के । ऋयान्वयन के सबध में क्या कडम उठाये गये है ?

कृषि संत्रालय में राज्य संत्री (श्री प्रण्णा-साहिब वी० शिन्बे) (क) से (ग) प्रषि जानों की ग्राधिकतम मीमा सबधी काननों मे मोटे तौर पर समानता जाने की इप्टि मे भारत मरकार ने जलाई 1972 में ह्ये मध्य मित्रयों के मामेलन की सिफारिशों के ग्राप्तार पर सभी राज्यो ग्रीर मध राज्य क्षेत्रों को का राष्ट्रीय मार्गदर्शी मिद्धान्त जारी क्यि गये थे। इन मार्गदशी सिद्धान्तो के स्राधार पर इन राज्यां न अधिकतम सीमा सर्वा अपन वान नो म पहले ही संशोधन कर लिए है-आध्र प्रदेग विहार गजरात हरियाणा, हिमाचल प्रदेण जम्म भ्रौर वर्ण्मार, वर्नाटक मध्य प्रदेश, उडामा प्रजाय राजस्थान ग्रीर उत्तर प्रदेश । असम वेरल तमितनाइ और पश्चिम बगाल में अधिततम सीमा सबधी कानुनी में राष्ट्रीय मार्गंदर्शी सिद्धान्त जारी वरने से पहले ही सशोधन वर लिए गर्य। य वानुन भ्राम तौर पर में राष्ट्रीय मार्गदर्शी मिद्धान्तों में मेल खाते है। महाराष्ट्र और विपुरा के विधायको की राष्ट्रपति की स्वीवृति से पहले जाच की जा रही है। मणिपुर ने कानून का मसीदा नैयार किया जा रहा है। नागालैंड भीर मधालय का ग्राधिकतम मीमा सबधी

कानून बनाने का विचार नहीं है क्योंकि इन राज्यो में भूमि श्राधकतर मामुदायिक स्वा-मिन्व में हैं।

पट्टेदारी के काननों सबबी मार्गदर्शी सिद्धान्त पचवर्षीय योजना के ममीटे में टिये गए है। उनमें से अग्रत्यन्त महत्वपूर्ण सिद्धान्त

(1) लगान कुल उत्पाद के पाचवे भाग में ले वर एवं चौथाई भाग से अधिक नही होना चाहिए , (2)कुछ विशिष्ट पार्रास्थातयाँ का छाडकर सभी पट्टे पूनर्पहण न किये जा मकने वाले और स्थायी घोषित कर दिये जाने चाहिये, भीर (3) पूनग्रहण न की जा सकते वाली भिम के बारे में ताश्तकारों को भीम के स्वामित्व वा अधिकार देकर जमीदार ग्रीर बाइनेवार का सबध ममाप्त वर दिया जाता चाहिसे ।

म्राध्न प्रदेश के स्नाज्य क्षत्र हारयाणा. पजाब और नीमननाइ का फोडकर सभी राज्यों में लगान की ग्रांत्रिक से ग्रांधिक दरें जा नि मार्गदर्शी सिद्धान्तां में सुझाई गई दरों से अधिक नहीं है। निधारित कर दी गई है। काण्तकारा का पद्भारा संबंधी सुरक्षादने के लिय लगभग मभी राज्यों ने कातन बनाये है।

पट्टेदारों की मुरक्षा के वार म चौथी पचवर्षीय याजना मे निम्नलिखित उपाय करने की ग्रावेक्षा की गई थी। -

- (1) पट्टेदारी को पूनर्पहण न की जा सकते वाली भीर स्थायी घोषित करना (भ-स्वामियों के उन मामलां का छोड कर णे कि रक्षा सनाम्रो में मेवा कर रहे है ग्रथवा जिनमें कार्ट निदिष्ट ग्रममर्थता
- (2) जहा पुनर्षहण की अनुमति दी गई है और जहा सम्यावेदन पहले ही दिये जा चके हैं वहा ऐसे ग्रम्यावेदनी पर गीघ्र कार्यवाई

करने की व्यवस्था; जहां पुनग्रंहण का फल-स्वरूप बहुत बड़ी संख्या में बेदखली की संभावना हो बहा पुनग्रंहण के मामले रोकने की वृष्टि से इमे ग्रीर ग्रागे रोकने की व्यवस्था करना;

- (3) इस समय पट्टे पर दी गई भूमि पर कठजा करने में भू-स्वामियों को रोकने के लिये "स्वच्छिक समपणं" श्रवषयक नियम बनाना और उस पर ग्रन्थ काश्नकारों को बमाने के लिए सरकार घीर स्थानीय प्राधिकारियों को ग्राधिकार देना ,
- (4) झावास-स्थल की पट्टेवारी की पूर्ण सुरक्षा की व्यवस्था जिस पर किसानों बस्तकारों और कृषि श्रामकों ने अपने रिहा— इशी मकान बनाये हैं ;
- (5) शिकनी काश्तकारों को पट्टेदारी की सुरक्षा में मर्बाधन कानून का कियान्वयन और यह सुनिश्चित करना कि जमीदार इन कानूनों की ब्यवस्थाओं का छल से उल्लंघन न करने पाये, और
- (6) मलत हांग से बेदखती के लिये इड की व्यवस्था।

पाचवी पंचवर्षीय योजना के मसीदे में "निजी खेती' पद की तकेंसंगत परिभाषा पर इस प्रकार विशेष बल देते हुये उल्लेख किया क्या है कि नाकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि स्वयं भू-स्वामी प्रवचा उसके परिवार का कोई सदस्य भूमि की देख रेख करें जिमसे अपूनि का अनुपस्थिति स्वामित्व कम किया जा सके । केवल निविष्ट ग्रमतक्ता प्रथका रक्षा सेनामों जैसे मामलों में ही भविष्य में 655 LS-9

मागे भीर पट्टेदारी के मृजन को सीमित रखन। इसका उद्देश्य है।

हालांकि राज्यों के कानूनों में पट्टेदारों की सुरक्षा की विभिन्न माना में व्यवस्था है और वे विभिन्न माना में उपर्युक्त उल्लिखित मार्गदर्शी सिद्धाल्तों से मेल खाते हैं, तथापि यह सुनिश्चित करने के लिये नार मिरे से प्रयाम किये जा रहे हैं कि देश के मभी पट्टेदारी कानून धाम नीर से इन मार्गदर्शी सिद्धाल्तों से मेल खाये। हाल में जम्मू और काश्मीर, गुजरात, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक और उन्हें राष्ट्रीय मार्गदर्शी सिद्धाल्तों के धानुस्य बनाया गया है। जम्म् और कश्मीर जैम कुछ मामलां में भूमि का स्वामित्व सीधे काश्नकारों को दे दिया गया है।

इण्डिया झाफिस लाइबेरी को झविकार में सेना

8640. भी भटल विहारी वाजपेवी:

वी व्यवस्थाय बोली : क्या शिका, समाव कल्याच और संस्कृति मनी यह बदाने की कृपा करेंगे कि :

- (क) लन्दन स्थित इंडिया भ्राफिस लाइब्रेरी को सरकारी भ्रधिकार में लेने का प्रस्ताव प्रथम बार सरकार के विचारार्थ कब भ्राया था ;
- (ख) झब तक इस संबंध में क्या कदम उठाये गये हैं ;
- (न) ब्रिटेन से प्राप्त समझौते के नसीदें
 की खारायें भौर प्रत्वेक के बारे में सरकार
 की प्रतिकिया क्या है; भौर

(भ) कव तक यह लाइबेरी भारत को प्राप्त हो जायेगी ?

शिक्षा धीर समाज कल्याच मंत्रालय तका संस्कृति विभाग में उपमंत्री/की दी० **पी॰ यादव):** (क) से (घ) 1947 से इस मामले पर ब्रिटेन की सरकार से बात चीत चल रही है। पुस्तकालय सहित, इडिया माफिस लन्दन भौर उसकी वस्तुमो के स्वामित्व के प्रश्न से सबधित विभिन्न जिम्मेदारियो की सबधित सरकारों द्वारा जाच की जा रही है। ब्रिटेन की सरकार से 1968 मे मध्यस्य करार का एक प्रारुप प्राप्त हम्रा था परन्तु उस पर भभी तक विचार विमर्भ किया जा रहा है। भारत सरकार का यह इष्टिकोण रहा है कि यह लाभश्रद होगा यदि उक्त मध्यस्य करार के सबध में उपमहाद्वीप के देशो द्वारा एक सामान्य द्वष्टिकोण भवनाया जाए।

Present Stock of Mice and Paddy

8641. SHRI P. R. SHENOY. Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state

- (a) what is the present stock position of rice and paddy; and
- (b) whether the present stock of rice and paddy will meet the requirement of the public distribution system?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE):

(a) The tentative physical stocks of rice including paddy in terms of rice

with the Central and State Governments as on 1st April, 1974 were 20.21 lakh tonnes.

(b) With the internal procurement of rice/paddy still in progress the reasonable requirements of the public distribution system will be met.

Price of Different Coars Grains

8642 SHRI P. R. SHENOY: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state the price of different varieties of coarse grains after the restriction of their movement was removed?

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE). A statement giving the required information is laid on the Table of the House (Placed m Library See No. LT-6861/74)

Introduction of 15-Year Degree Course

8643. SHRI SHRIKISHAN MODI. Will the Minister of EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND CULTURE be pleased to state:

- (a) whether Government are contemplating to introduce 15-years Degree Course from the next year; and
- (b) if so, the reasons and main features thereof?

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF EDUCATION, SOCIAL WELFARE AND IN THE DEPARTMENT OF CULTURE (SHRI D. P. YADAV): (a) and (b) The Central Advisory Board of Education has recommended that the 10+2+3 structure of education should be adopted in all States before the end of the Fifth Five Year Plan.

The main reasons for introducing the new system are (i) to have a broadly uniform structure of education in all parts of the country as envisaged in the National Policy of Education; and (ii) to postpone the time for deciding choice of vocational subjects by students by two years so that the student is more mature to take such a decision, and also to reduce the time interval between such a decision and actual entry into jobs.

While most students in secondary schools will be given general education about 20 per cent will be given pre-vocational education. At the higher secondary classes XI and XII separate vocational and general courses will be available. Facility will however be available for transfer from vocational courses to general courses.

For the guidance of State Education Departments in this regard. new curricula and syllabi for classes I to XII are being developed by the National Council of Educational Research and Training.

Education being a State subject introduction of new pattern will depend on State Governments and Union Territory Administrations Some are contemplating such an introduction from the academic year 1975 -(e.g., Union Territory Lelhi) and some others, later. The State Governments of Andhra Pradesh, Karnataka and Kerala have already introduced the new pattern. It is expected that all the remaining States/Union Territories would be in a position to adopt this new pattern in the Fifth Five Year Plan period. Some States are also, considering instituting a 2 year pass course and 3 year Honours course at first degree level.

कालपात में उस्लिखित विवरण 8644. श्री शब्बेश^हं नया शिक्षा, सभाज कस्थाण श्रीर संस्कृति मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि ;

- (क) क्या यह सच है कि ऐतिहासिक रिकार्ड स्कालरों को 30 वर्ष गुजरने से पहले उपलब्ध नहीं होते हैं ;
- (ख) यदि हां, तो क्या उक्त भ्रवधि में परिवर्तन नहीं किया जा सकता ; भौर
- (ग) काल पाल में उल्लिखित विवरण को कितने समय मे मभा पटल पर रख दिया जायेगा ?

शिक्षा, समाज कल्याण, और संस्कृति मंत्री (प्रो० एस० नक्स हसन): (क) केन्द्रीय सरकार के अभिलेखों के बारे में 11 दिसम्बर, 1972 को जारी किये गये नीति संकल्य के अनुसार "राष्ट्रीय अभिलेखागार को स्वानान्तरित किये गये 31 दिसम्बर, 1945 से पहले की अविधि के सभी अगोपनीय सार्वजनिक अभिलेख और भिष्य की बृष्टि से 30 वर्ष से अधिक समय के सभी पुराने अभिलेख वास्तिवक अनुसंधान अध्येताओं के लिए खुले रहेंगे, जो कि ऐसे अपवादों और प्रतिबन्धों की शर्त पर होगा कि जो संबंधित विभाग, अभिलेखागार निदेशक, भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार ने परामर्श से आवश्यक समझे "।

- (ख) उपरोक्त संकल्प में प्रतिपादित नीति में परिवर्तन करने का कोई प्रस्ताव नहीं है।
- (ग) 15 अगस्त, 1973 को लाख किले में गाड़े गये काल पात की विषय सूची के ब्यौरे संलग्न सूची में दिए गए हैं।

15 सगस्त. 1973 की गाउँ गये काल पास ्की विषय सुची

- चर्म पत्नों पर सलेखित 15-8-47 से लेकर 15-8-1972 तक भारत के इति-हास की प्रमुख पहलुकों का दोनों श्रंगेजी श्रीर हिन्दी में 10,000 शब्दों में वर्णन ।
- 2. ताम्रपत्र पर स्वतंत्रता से लेकर प्रमख घटनाथ्रों का सचित्र कैलेन्डर ।
- 3. 14-15 ग्रगस्त, 1947 की ग्राधी रात को संविधान सभा में किये गये निम्न-लिखित भाषाओं का ताम्बे पर अकित ध्वनि रिकार्ड:--
- (क) भाग्य की घडी श्री जवाहरलाल नेहरू का हिन्दी ग्रीर ग्रंगेजी बोनों भाषण 11 मिनटों की ग्रवधि का।
- (ख) बन्दे मातरम पंडित श्रोंकार नाथ ठाकुर द्वारा गाया हुमा ।
- (ग) संविधान सभा डा०राजेन्द्र प्रसाद द्वारा के सदस्यों द्वारा हिन्दी में दिलायी गई प्रवधि । 3 मिनट । शपथ ग्रहण
- (घ) डा० एस० 14-8-1947 राधाकृष्णन का सैंट्रल हाल (केन-द्रीय कका) में भाषण-प्रवधि 13 मिनट ।
- 4. 10 रुपये और 50 पैसे के सिक्के भीर स्वतंत्रता की रजत जयंती के भ्रवसर पर जारी की गई डाक टिकटें।
- भारत के संविधान की माइकोफिल्म भौर साथ में सभी राष्ट्रीय भाषाओं में प्रस्तावभा ।

- 6. भाखडा नंगल बांध की परियोजना रिपौर्ट की माइकोफिल्म।
- 7. संसद के केन्द्रीय हाल के रूपचित्रों पर श्राधारित, ताम्रपन्नं पर बिन्द चित्र (हाफटोन) में खोदे गये प्रमुख राष्ट्रीय नेतास्त्रें 13 चित्र ।
- 8. विजयंत टैंक, इशापुर राइफल और भारत भू-परिवाहक के छोटे मंडल 1

Corruption charges against officials of National Seeds Corporation

8645, SHRI N. K. SANGHI: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state the number of corruption charges which are now under investigation against the officials of the National Seeds Corporation and at what stage they rest?.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): The National Seeds Corporation Employees Union had in their Memorandum submitted in May, 1971, listed a number of allegations involving the officials of the Corporation in corrupt practices. A Committee under Chairmanship of Shri V. N. Gadgil, Member. Rajya Sabha, was appointed to enquire into these allegations, as well as grievances of the employees The Committee's report is awaited. Shri V. N. Gadgil had submitted his letter of resignation from the Chairmanship of the Committee but he is being persuaded to continue and complete the enquiry.

In respect of the sale of potato seeds by the Corporation to the Bangladesh Agricultural Development Corporation last year, some allegations were made that the transportation contract was awarded to favoured transportation firm. A senior officer of the Ministry of Agriculture has been appointed to enquire into the entire transaction. His report is awaited.

Correction of Answers to Unstarred Questions Nos. 4333 and 4411 dated 25-3-74 regarding (i) Demand and Supply of Sugar to West Bengal and Sugar demanded and supplied to Karnataka.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P. SHINDE): Two Unstarred Questions bearing Nos. 4332 and 4411 tabled by Shri Hukam Chand Kachwai and Shri A. K. M. Ishaque, M.Ps. relating to demand and supply of sugar to Karnataka and West Bengal respectively were replied in the Lok Sabha on 25-3-74 Both the Questions were of identical nature. Unfortunately, the information furniched in the replies had got interchanged The error is regretted. The correct information in respect of ths Qustions is as follows:-

Correct reply to Unstarred Question No. 4332.

(a) The following quantities of levy sugar were allotted by the Central Government to Karnataka State during the last five months—

| | | | Tonnes |
|----------------|---|---|--------|
| October, 1973 | • | • | 10391 |
| November, 1973 | | • | 9401 |
| December, 1973 | ٠ | | 9401 |
| January, 1974 | • | | 9907 |
| February, 1974 | | | 9907 |

(b) and (c). No communication for increasing the monthly quota has been received from the Government Karnataka during this period. In any case, the basic monthly quotas of levy sugar for various States/Union Territories, including Karnataka, have been fixed on a rational basis, taking into account the population figures as recorded in 1971 census, and the past consumption. Actual pattern of are, however, monthly allotments adjusted marginally in relation to the total release of levy sugar for each month.

II. Correct reply to Unstarred Question No. 4411.

(a) The following quantities of levy sugar were allotted to West Bengal State during the last six months:—

| | | | tonnes |
|-----------------|---|--|--------|
| September, 1973 | • | | 19793 |
| October, 1973 | | | 21876 |
| November, 1973 | | | 19793 |
| December, 1973 | | | 19793 |
| January, 1974 | | | 20857 |
| February, 1974 | | | 20857 |

- (b) The State Government had requested in December, '73 for increasing monthly quota of levy sugar to 38.000 tonnes.
- (c) The basic quotas of levy sugar for various States/Union Territories have been fixed on a rational basis taking into account the population figures as recorded in 1971 census and the past pattern of consumption. Actual monthly allotments are, however, adjusted marginally in relation to the total release of levy sugar for each month. Due to limited availability of sugar stocks, it has not been possible to increase their monthly quota of levy sugar as requested by them The position was suitably explained to the State Government.

12 00 hrs.

RE. ADJOURNMENT MOTION

MR. SPEAKER: Now, Papers to be laid on the Table.

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Before that I want to raise a matter. This is an issue regarding thousands of passengers who are stranded everywhere and also the refusal by the postal people to accept parcels for despatch This is a very serious situation. Why cannot we discuss that first?

MR. SPEAKER: The Minister already made a statement on it the other day.

'SHRI JYOTIRMOY BOSU: This has caused hardships to the people.

MR. SPEAKER: As I said already, he has made a statement the other day on the floor of this House.

श्री मधु लिमधे (बाका) : साढ़े तीन लाख रुपये के तारपोलिन खरीदे जा रहें हैं (अयवधान) पूरे देश में डेढ़ करोड़ रुपये तारपोलिन पर खर्च किए जा रहें हैं। टेरीटोरियल झामीं झौर मेना को बुलाने की बात की जा रही है। एक झौर बातचीत चल रही है झौर दूसरी झोर रेल मजदूरों को बुलाने का प्रयास किया जा रहा है। ये दोहरी बातें मत करो। इबल फेसेडनेस छोड़ो।

श्री झटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर) : अध्यक्ष महोदय, मेरा निवेदन है कि जो भी ऐडजनेंमेंट मोशन या काल झटेंशन अथवा 377 के झन्तर्गत नोटिसेज आये हैं आप उन्हें कल तक के लिए स्वगित रिविए। आज हम होम मिनिस्ट्री की डिमांड्स को डिमकस कर ले।

श्राध्यक्ष महोदय ऐडजर्नमेट मोशन तो कभी स्थिगित नहीं होता । वह तो येस आर नो होता है । वह एडजर्नमेट योशन कहां रह गया जब स्थिगित हो गया ? आप चाहते हैं तो मैं अभी कर देता हूं ।

श्री सटल विहारी वाजपेयीः नहीं तो कल हम लोग फिर नोटिस दे देंगे।

MR. SPEAKER: I am allowing it if you want. You can move your adjournment motion You get the leave of the House and then move it.

SHPI S. M. BANERJEE (Kanpur): Then, we will not have it.

MR. SPEAKER; Mr. Banerjee, whenever I have come to your rescue you do not appreciate it and you put the Speaker in the wrong. Now. I am allowing it. You move the adjournment motion.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: I have not given any notice of adjournment.

MR. SPEAKER: The notice of adjournment has been given by Shri Samar Guha and Shri Jyotirmoy Bosu. Mr. Bosu, you move your adjournment motion,

SHRI S. M. BANERJEE: Kindly allow me a minute. You allow the Calling Attention to stand as it is.

MR SPEAKER. You never appreciate this.

SHRI S. M. BANERJEE: Many Unions have served their strike notice in the Railways.

MR. SPEAKER: Mr. Banerjee. the question is: this is an adjournment motion, the notice of which is given by Shri Samar Guha, Shri Bosu and Shri Madhuryya Haldar. I allow this, You ask for the leave of the House to move it.

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): There is no opposition to it.

MR SPEAKER: How will they oppose it unless you move it? You move it.

SHRI S. M. BANERJEE Sir, I rise on a point of order.

MR. SPEAKER: Is your point of order on why I admit it?

SHRI S. M. BANERJEE: On this particular adjournment or motion, I am on a point of order. We are not moving the adjournment motion.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Then, I sak for leave of the House to move my adjournment motion. Sir, I go by your utterances. You want me to move it.

MR. SPEAKER; When I made the observations, they were to help you. You do not appreciate. The other or the negative side is, I allow it.

You have enough opportunities. The Appropriation Bill will be coming. Today the Home Ministry demands are there. You can take advantage of that also. But if you still insist. I do not come in.

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: As the House is going to discuss the demands of the Ministry of Home Affairs and we do not have enough time, I will request my friend, Mr. Jyotirmoy Bosu, not to press for it.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I am guided by the desires of the House.

भी मधु लिमये : प्रध्यक्ष महोदय, एक मेरी प्रार्थना है ग्राप सुनिए । प्रिविलेज का मेंने जो नोटिस दिया है मुझे पता चला है कि भ्रापने ग्रभी उसे पढ़ा नहीं है...

ग्राप्यक्ष महोदय : मैंने देखा है।

श्री मधु लिमये: मैं दूसरी बात कह रहा हूं। ग्राप उसे पढ़ लीजिये। कल उसको मैं उठा सकता हूं। लेकिन मेरी प्रार्थना केवल यह है कि जिस ग्रफसर के खिलाफ मैंने यह बिलेज प्रमोशन दिसा है वह कल से ग्राई० ग्रो० सी० का चैयरमेन बनने जा रहा है तो जब तक प्रविलेज के मामले का निर्णय नहीं हो जाता तब तक क्या श्रीप पैट्रोलियम मंत्रालय से कहेंगे कि उस समय तक उसे नये पद पर न बैठाए ? यह सदन की गरिमा धीर सदन के अधिकारों की बात मैं कर रहा हूं। मैं कल उठाने के लिए तैयार हू लेकिन यह कौन सी बात है कि जो अधिकारी सदन के अधिकारों धीर उसकी मर्यादाओं का उल्लंधन करें उसे पदीनिन्त दी जायें ? क्या यह मामला एक सप्ताह तक रोका नहीं जा सकता जब तक कि आपका फैसला न हो जायें ?

भ्रष्टमक्ष महोदय: बात यह हैं कि जो प्रिविलेज मोमन भ्राप ने दिया है वह यह है है कि एक पम्लिक भ्रडरटेकिंग...

भी मधु सिमये: ग्रव ग्राप सवस्टैस में जायेंगे तो मुझे उसके बारे मे कुछ कहना पड़ेगा।

श्राच्यक्ष सहोद्यय: वह जो रिपोत्तर्ट है उस ववत की वह जरा मैं देखना चाहता हू। क्यों रिपोर्ट का पार्ट ग्रापने कोट किया है।

भी सधु लिसके : नहीं, नहीं, साप उसे पूरा देखियें। मैं तो खुद नहीं चाहता कि प्रघूरी बात सदन के सामने ग्राए । लेकिन मेरी प्रार्थना है कि जब तक ग्राप उस पर निर्णय न कर लें तब तक किसी ग्रीर पद पर जाकर बैठे यह कि बात नहीं है ।

MR. SPEAKER: It was also on the thin line. So, I wanted to have time.

12.08 hrs.

PAPERS LAID ON THE TABLE

Annual Administration Report of DDA for 1972-73

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): On behalf of Shri Bhola Paswan Shastri; I beg to lay on the Table a copy of the Annual Administration Report (Hindi and English versions) of the Delhi Development Authority, for the year 1972-73, under section 26 of the Delhi Development Act, 1957. [Placed in Library. See No. LT-6847/74].

240

NOTIFICATIONS UNDER ESSENTIAL COM-MODITIES ACT, 1955 AND BOMMAY TENANCY AND AGRICULTURAL LANDS RULES

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI ANNASAHEB P SHINDE). 1-beg to lay on the Teble—

- (1) A copy of each the following Notifications (Hindi and English versions) under sub-section (6) of section 3 of the Essential Commodities Act, 1955—
 - (1) The Roller Mills Wheat
 Products (Ex-mill) Price
 Control (Amendment)
 Order, 1974, published in
 Notification NO GSR 176
 (E) in Gazette of India
 dated the 13th April, 1974
 - (11) The Delhi Roller Mills
 Wheat Products (Ex-mill
 and Retail) Price Control
 (Amendment) Order, 1974
 published in Notification
 No GSR 177(E) in Gazette
 of India dated the 13th
 April 1974 [Placed in
 Library See No LT-6848/
 74]
- (2) A copy of the Bombay Tenancy and Agricultural Lands (Gujarat Amendment) Rules, 1973 (Hindi and English versions) published in Notification GHM-73-195 - M-TNC - 1073-J (LR) in Gujarat Government Gazette dated the 9th August, 1973 and the corrigendum there... to dated the 26th November, 1973, under sub-section (4) of section 82 of the Bombay Tenancy and Agricultural Lands Act, 1948 read with clause (c) (iii) of the Proclamation dated the 9th February 1974 issued by the President in relation to the State of Gujarat, together with an explanatory note Placed in Labrary See No LT-6849/741

REVIEW AND ANNUAL REPORTS OF MOGHUL LINE LTD., AND SHIPPING CORPORATION OF INDIA FOR 1972-73 AND MERCHANT SHIPPING RULES

THE DEPUTY MINISTER IN THE MINISTRY OF INDUSTRIAL DEVELOPMENT (SHRI PRANAB KUMAR MUKHERJEE): I beg to lay on the Table—

- (1) A copy each of the following papers (Hindi and English versions) under sub-section (1) of section 619A of the Companies Act, 1956.—
 - (i) (a) Review by the Government on the working of the Mogul Line Limited, Bombay, for the year 1972-73
 - (b) Annual Report of the Mogul Line Limited Bombay, for the year 1972-73 along with the Audited Accounts and the comments of the Comptroller and Auditor General thereon [Placed in Library See No LT-6850/74]
 - (11) (a) Review by the Government on the working of the Shipping Corporation of India Limited Bombay for the year 1972-73
 - (b) Annual Report of the Shipipng Corporation of India Limited, Bombay, for the year 1972-73 along with the Auditer Accounts and the comments of the Comptroller and Auditor General thereon, [Placed in Library See No LT-8851/74]
 - (2) A copy of the Merchant Shipping (Cargo Ship Construction and Survey) Rules, 1974 (Hindi and English versions) published in Notification No GSR 295 in Gazette of India dated the 23rd March, 1974 under sub-section

(3) of section 458 of the Merchant Shipping Act, 1958. [Placed in Library. See No. LT-6852/74].

2 m

12.061 hrs.

ASSENT TO BILLS

SECRETARY-GENERAL: Sir. I lay on the Table copies duly authenticated by the Secretary-General of Rajya. Sabha, of the following five Bills passed by the Houses of Parliament and assented to since a report was last made to the House on the 5th April, 1954:—

- (1) The National Co-operative Development Corporation (Amendment) Bill, 1974.
- (2) The Esso (Acquisition of Undertakings in India) Bill, 1974
- (3) The Presidential and Vice-Presidential Elections (Amendment) Bill 1974.
- (4) The Water (Prevention and Control of Pollution) Bill, 1974.
- (5) The Public Wakfs (Extension of Limitation) (Delhi Amendment) Bill, 1974.

12.09 hrs.

ESTIMATES COMMITTEE

59TH, 61ST, 65TH AND 54TH REPORTS AND MINUTES

SHRI R. K. SINHA (Faizabad): I beg to present the following Reports and Minutes of the Estimates Committee:—

- (i) Fifty-ninth Report on the Ministry of Information and Broadcasting Films, Part II.
 - (ii) Minutes of the sitting of the Committee relating to the Fifty-eighth and Fifty-ninth Reports.

- (2) (i) Sixty-first Report on the Ministry of Commerce (Department of Internal Trade)—Civil Supplies Organisation.
 - (ii) Minutes of the sitting of the Committee relating to the above Report.
- (3) (1) Sixty-fifth Report on the Ministry of Agriculture (Department of Agriculture)— Forestry.
 - (ii) Minutes of the sittings of the Committee relating to the above Report.
- (4) Fitty-fourth Report on action taken by Government on the recommendations contained in their Fourteenth Report on the erstwhile Ministry of Foreign Trade—Export Promtion Measures, Commercial Publicity and Trade Fairs.

12 09 hrs.

PUBLIC ACCOUNTS COMMITTEE

1111H, 115TH, 127TH, 128TH AND 131ST REPORTS

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): I beg to present the following Reports of the Public Accounts Committee:—

- (1) Hundred and eleventh Report on action taken by Government on the recommendations contained in their Eighty-sixth Report on Audit Report (Civil), 1970 and Reports of the Comptroller and Auditor General of India for the years 1969-70 and 1970-71, Central Government (Civil) relating to Ministry of Education and Social Welfare.
- (2) Hundred and Fifteenth Report on action taken by Government on the recommendations contained in their Eighty-seventh Report on Chapter IV of the Report of the Comptroller and

243 Committee on Public Undertakings Reports and Reports

[Shri Jyotirmoy Bosu]

Auditor General of India for the year 1970-71 Union Government (Civil)—Revenue Receipts relating to Income-tax

- (3) Hundred and twenty seventh Report on paragraphs 42 and 43 relating to Installation of Computers on Railways included in the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1971-72—Union Government (Railways).
- (4) Hundred and twenty-eighth
 Report on Chapter II of the
 Report of the Comptroller and
 Auditor General of India for
 the year 1971-72, Union Government (Civil), Revenue Receipts,
 Volume II, Direct Taxes—
 relating to Corporation-tax
- (5) Hundred and thirty-first Report on paragraphs 28—31 relating to the Ministry of Foreign Trade included in the Report of the Comptroller and Auditor General of India for the year 1971-72. Union Government (Civil)

12 10 hrs

COMMITTEE ON PUBLIC UNDER-TAKINGS

51st, 52nd 54th Reports and Minutes

SHRI NAWAL KISHORE SHARMA (Dausa) I beg to present the following Reports and Minutes of the Committee on Public Undertakings—

- (1) (i) Fifty-first Report on India Tourism Development Corporation Limited
 - (ii) Minutes of the sittings of the Committee relating to the above Report

- (2) (i) Fifty-second Report on Indian Oil Corporation Limited (Refineries Division excluding Pipelines Section)
- (11) Minutes of the sitting of the Committee relating to the above report
- (3) (1) Fifty-fourth Report on State Farms Corporation of India Limited
- (ii) Minutes of the sitting of the Committee relating to the above Report

12 11 hrs

DIRECT TAXES (AMENDMENT BILL.

(1) REPORTS OF SELECT COMMITTEE

SHRI N K. P. SALVE (Betul): 1 beg to present the Report of the Select Committee on the Bill further to amend the Income-tax Act, 1961, the Wealth-tax Act, 1957, the Gift-tax Act, 1958 and the Companies (Profits) Surtax Act, 1964 and to provide for certain related matters.

(11) EVIDENCE

SHRI N K P SALVE. I beg to lay on the Table the record of evidence tendered before the Select Committee on the Bill further to amend the Income-tax Act, 1961, the Wealth-tax, 1957, the Gift-tax Act, 1958 and the Companies (Profits) Surtax Act, 1964 and to provide for certain related matters

12 12 hrs

BUSINESS ADVISORY COMMITTEE FORTY-SECOND REPORT

THE MINISTER OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI K . RAGHU RAMAIAH) I beg to move

"That this House do agree with the Forty-second Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 26th April, 1974"

246

भी मध् लिमये (बाका): धड्यक महोदय...

MR. SPEAKER: I have not received any names. The practice is that the names should have been sent earlier.

भी मधु लिमये: इस सदन में उस दिन तय हुमा था कि रेलवे हड़ताल के सबध में जो स्थिति है भौर टायर टयूब्स का जो मामला है उस पर समय निकालने के लिए बिजनेस एडवाइजरी कमेटी में चर्चा होगी लेकिन उस का कोई उल्लेख में इसमें नहीं देख रहा हं।

श्रव्यक्त महोदय: 2 मई को आयेगा।

The question is:

"That this House do agree with the Forty-second Report of the Business Advisory Committee presented to the House on the 26th April, 1974."

The motion was adopted.

12.13 hrs.

MATTER UNDER RULE 377

REPORTED DETECTION OF SECRET MOBILE
RADIO STATION IN MEGHALAYA

MR SPEAKER: Regarding matters to be raised under rule 377, I have received notices from different Members on the same matter. The notices are from Shri Vasant Sathe, Shri S. M. Banerjee, Shri Samar Guha, Prof. Madhu Dandavate and Shri Tarun Gogoi. The matter relates to the reported detection by the police of two powerful wireless transmitters—cumreceiving sets in Meghalaya which were being used as secret mobile radio stations.

I think the first Member who had given the notice can speak on behalf of all of them.

SHRI S. M. BANERJEE: (Kanpur): The usual practice is that two are allowed. So, I request that two Members may be allowed.

SHRI B. K. DASCHOWDHARY (Cooch-Behar): We have submitted a calling-attention-notice on this. It is a very serious matter. If you would ask the hon, Minister to make a statement on the calling-attention it would be better.

MR SPEAKER: I shall allow one from the Congress side and from the side of the Opposition.

SHRI S. M. BANERJEE: That is enough for the day.

MR SPEAKER: But this will not be a precedent.

SHRI S. M. BANERJEE: Always you have allowed two Members.

SHRI DINESH CHANDRA GOSWA-MI (Gauhati). If you allow the matter to be raised under rule 377, then the call-attention may become barred.

MR SPEAKER: The demands of the Home Minister are coming up and the hon. Member can speak on those Demands.

SHRI VASANT SATHE (Akola): I want to invite the attention of the Government to a very serious matter has been reported in today's newspapers about a secret mobile radio station in Meghalaya. The report says that the police are reported to have detected two powerful wireless transmitter cum receiving sets last week. The two seized sets were presumably used in a secret mobile radio station based somewhere on the inter-national boundary in Meghalaya, The sets have been technically examined and found capable of intercepting various broadcasting stations of the world. It further says that the police sources said here today that the intercepting capacity of the broadcasts of sets with high frequency was unlimited. The sets which bear markings of foreign manufacturers have a long range and are believed to have been used in clandestine activities by certain foreign powers in collusion with some anti-national elements in the [Shri Vasant Sathe]

sensitive north-eastern region. The Meghalaya police have arrested a number of persons under the Defence of India Rules and are making investigations.

Sir, you may recall that a few days back, during a debate in this House we had also said that there is a great deal of anti-national activity going on in this part of the country both by agents who masquerade under the garb of MRA and other organisations—

AN HON. MEMBER Anand Marg.

SHRI VASANT SATHE: I do not know. He may be knowing better. It may be Anand Marg or BBC or Vajpayee Broadcasting Station or anything else for that matter-China, or any other country. I do not know.

AN HON. MEMBER CIA

VASANT SATHE: And CIA SHRI as well. Now, I would like to know from the Government one thing. I would in fact request for a full statement as to what steps the Government are taking to see that these activities are checked in good time, because now, to have such powerful stationswe have only found two and there may be many more—and if the entire border is thus infested by large radio intercepting stations and sets, it is definitely a very serious matter from the security point of view. Therefore, I would like the Government to make a statement and allay the apprehensions in the mind of the people of this country.

स्री एस० एस० क्लार्जी: अध्यक्ष महोदय, सबसे पहले जब मैं ने वह खबर पढी तो मेरा ध्यान फीरन गया जब सदन में यह कहा गया था कि जनसब भी कोई पावरफुल रेडियो स्टेमन, मोबाइल स्टेणन बना रहा है लेकिन फिर भने ख्याल किया यह हो नहीं सकता है क्यों कि वे गुरू भी करना चाहें तो मेघालय ने क्यों करेंगे।

की घटन {बहारी वाजवेकी (श्वासियर) : हम तो कानपुर से शुरू करेगे ।

भी एस० एम० बनर्जी: इसको पढकर एक चीज साफ हो चकी है कि इसमें बिदेशी हाथ जरूर है। मारल रिम्नाममिंट का नाम मेरे मित्र साठे जी ने माभी लिया है। यह सी माई ए की एक्टिविटीज छा चुकी हैं, माने या न माने, मली जी को जानकारी हो या न हो या शायद वे सदन को बताना न चाह वह दूसरी बात है लेकिन यह है जरूर। में समझौता हु भ्राज एक तरफ तो यह रेडियो स्टेशन जिसके मेट्सन मेघालय मे पकडे गए और दूसरी तरफ इ डियन क्रोणन में क्या हो रहा है ? ग्रमेरिकन प्लेन्स दौडते हैं हमारे जहाजो के साथ, हमारे इडियन शिप्स के ऊपर घुम रहे है श्रीर मालुम नहीं वहां क्या होने वाला है। मैं कहगा कि इस चीज की जानकारी करे कि ग्राया यह वाकई में मामुली घटना है या इसके पीछे कोई विदेशी साजिश है। मैं कहना चाहता ह कि भ्राजभी जो एमोसिएशन्स वत्त्वरल भ्रीर दूसरे नाम से काम रहे है वह उनकी सरपरस्ती मे है भ्रोर काफी पैसा उन पर बहाया जा रहा है। इस मौके पर जब कि देश में तमाम ऐसी शक्तिया है जो अमेरिका की मदद करना चाहती है तो इस सबध में कोई जानकारी हो वह स्टेटमेंट मदन में सरकार दे। भाज हम होम मिनिस्ट्री डिस्कस करने जा रहे है, वह तफसील के साथ बतायें कि इसमें सी भाई ए का हाथ है या नही भीर सी बी आई से इनकी इक्वायरी जरूर करे ताकि उचित कार्यवाही हो मके ।

MR SPEAKER: Has the Minister to say anything?

THE MINISTER OF HOME AF-FAIRS (SHRI UMA SHANKER DIK-SHIT): I am not in a position immediately to say anything at this stage.

MR SPEAKER: Later on?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I shall examine it.

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): I have sent a note to you. On 25 April I raised, with your permission, under rule 377, a matter concerning a grave lapse on the part of the Government is not passing the Pondicherry budget At that time I pointed out in time. that these things should have been passed by 31st March. It was a lapse on the part of the Government. They have not fulfilled their responsibilty. You were kind enough to remark on that day. 'The Minister will examine this matter and come out with a statement either just now or later on." This happened on 23 April. It did not happen 'just now'; it has not happened so far. How long would they take on this? Is it not contempt of the House to remain silent like this? If they say that because the Finance Minister is not here and therefore the entire work of the Finance Ministry has come to a standstill, it is a poor reflection on their working.

SHRI K. RAGHU RAMAIAH: The Finance Minister is very much here to-day and he has told me that he will make a statement on the 2nd 1st is a holiday.

SHRI SEZHIYAN: If he is going to make a prepared statement, will it be possible to give us a statement beforehand?

MR SPEAKER: I am not aware of that; you have given the suggestion.

SHRI DINESH CHANDRA GOSWA-MI: Today the demands are going to be guillotined and we have no opportunity of discussing the working of the External Affairs Ministry. Many important events have taken place such as the Tripartite agreement. Some discussion should be there either under rule 193 or some other rule.

MR. SPEAKER: You may talk to them, not to me.

बी प्रदश विहारी वाजवेंबी : प्रध्यक्ष जी, माननीय गोस्वामी जी में जो सुन्नाव दिया है कि इटरनेशनल सिचुएशन पर झलग से डिस्कणन कर सकते है, यह उचित ही है।

सन्यक्ष महोदय . हम ने नो रखा था, लेकिन और बातो में सारा वक्त चला गया। भीर जब चला जाता है तो भाप खड़े हो जाने हं कि भाया क्यों नहीं। दंनों तरफ़ दिस न रखा करे। वक्त के पावन्ध रहा करें नाकि वह चीज भा सके।

श्री बंसत साठे किमी दूसरे फ़ीमं में आस्वता है। अभी तो दस दिन और पालियामेंट चलेगी।

श्रम्यक्ष सहोदय यह नो विजनेस एडवाइ जरी कमेटी जाने।

भी पटल विहारी वाक्येयी: प्रध्यक्ष महोदय जी उम दिन प्राप कुर्मी पर नही थे जब माननीय मधु लिमये जी ने ग्रीर मैं ने गुजरात का मामला उठाया था कि प्रगर गुजरात की ग्रीर पाडिचेरी की विश्वान सभागों का मुनाव नहीं होता तो राष्ट्रपति के चुनाव के लिये एनेक्टोरल कार्लेज कमप्लीट नहीं होगा। ग्रीर हमने वहा था कि विश्विमती इस बारे मे ब्यान दे, मुप्रीम कोर्ट की राय ली जाये।

श्राध्यक्ष महोष्य : वह जल्दी देने वाले है उन्होंने मुझे एक्योरेस दिया है कि वह स्टेटमें देने वाले है।

श्री मधु लिमवे : (बाका प्रध्यक्ष महोदय ग्रीर भी कान्न मवालय के मामने दो मामले ग्रमों मे पडे है। गुजरात विधान मभा को बिना राष्ट्रपनि से पूछे किया जो बर्खास्त किया गया है....

श्राध्यक्ष महोदय . मैं आप में यही कहने वाला था कि जितनी पुरानी चीजें हैं यह सब उन से में पूछ रहा हूं कितनी देर है, क्या है सब देख कर आप की बताऊनां। भी मधु सिनये: धव तक में ने 10 पत्न ्रिचेहोंगे।

प्रस्थक्त महोतयः पत्र तो बहुत म्राते ःहैं, **मैं क्या** बताऊं।

भी मधु लिमये : कानून मंत्रालय ग्रालस्य में डूब गया है। बातों का जवाब नहीं खेरहा है।

प्राच्यक्त महोक्य । भाप जोग में न भाइये भाप कम उम्म के हैं इसलिये भाप को ज्यादा जोश भाता है । मुझे जोश न दिनाइये ।

12.24 hrs.

DEMANDS FOR GRANTS, 1974-75— Contd.

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

MR. SPEAKER: The House will now take up discussion and voting on Demand Nos. 45 to 58 relating to the Ministry of Home Affairs which can be discussed till 6 P.M. when guillotine will take place.

Hon. Members present in the House who desire to move their cut motions may send slips to the Table within 15 minutes indicating the serial numbers of the cut motions they would like to move. They will be treated as moved.

DEMAND No. 45-Ministry of Home
Affairs

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 1.72,96,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Ministry of Home Affairs'."

DEMAND No. 46-Cabinet

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 88,47,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Cabinet'."

DEMAND No. 47—Department of Personnel and Administrative Reforms

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 4,63,44,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Department of Personnel and Administrative Reforms.'"

DEMAND No. 48-Police

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 133, 45,27,000 on Revenue Account and not exceeding Rs, 2,29,27,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Police'."

DEMAND No. 49-Census

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 1,72,96,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Census'."

DEMAND No. 50— Other Expenditure of the Ministry of Home Affairs

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 64,91,87,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 14,16,34,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Other Expenditure of the Ministry of Home Affairs'."

DEMAND No. 51-Delhi

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 72,04,38,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 28,30,60,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Delhi'."

DEMAND No. 52-Chandigarh

MR. SPEAKER: Motion moved:

w

"That a sum not exceeding Rs. 8,93,78,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 3,69,65,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Chandigarh'."

MAND No. 53—Andaman and Nicobar Island

WR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 13,98,82,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 5,95,60,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Andaman and Nicobar Islands'."

DEMAND No. 54-Arunachal Pradesh

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 16,50,97,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 7,03,28,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Arunachal Pradesh'."

DEMAND No. 55—Dadra and Nagar Haveli

MR SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 82,40,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 1,07,88,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Dadra and Nagar Haveli'."

DEMAND No. 56-Lakshadweep

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That a sum not exceeding Rs. 2,15,60,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 66,55,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Lakshadweep'."

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): I beg to move:

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1."

[Bugging of the offices and residences of the leaders of Congress-opposed political parties.(7)]

[Shri Jyotirmoy Bosu]

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1."

[Purchases of electronic gadgets from Japan, U.S.A. and West Germany for bugging operation. (8)].

"That the demand under the Head Ministry of Home Affairs' be reduced to Re 1."

[Government's drive for the establishment of one-party dictatorship and a state of semi-fascistic character (9)]

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1."

[Converting India into a gestapo State. (10)].

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be refuced to Re. 1."

[Misuse of Maintenance of Internal Security Act by the ruling Party to curb and suppress its political opponents.(11)]

"That the demand under the Head Ministry of Home Affairs' be reduced to Re 1."

[Failure to honour the judgment delivered by the Gujarat High Court declaring as "illegal any notification passed under Section 144 of Cr. PC announcing that persons committing breach of such order shall be liable to be shot".(12)].

"That the demand under the Head Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1."

[Failure of lift the state of emergency and scrap the D.I.R. promulgated in December, 1971 in spite of the prevalence of normal conditions in the country.(13)]

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1."

[Reported secret directive of the Central Government not to recruit members of C.P.I. (M) and some other parties in Government services. (14)]

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1."

[Murderous attempt on office bearers of Hindustan Steel Employees Union, Durgapur by some unknown persons by tossing a handgrenade, bearing marks of Pakistan Ordnance Factory, resulting in serious injury to one and minor injuries to others. (15)].

"That the demand under the Head Police be reduced by Rs. 100,00,00,000."

[It is not necessary to spend 162 crores of rupees on Central Police; police is a State subject and law and order is the exclusive jurisdiction of the States, the Central Government has responsibility towards Union territories in this regard. (27).

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 25,22,73,000."

[Expenditure under the head Central Reserve Police has risen from about Rs 1.5 crores furing 1950 to more than Rs. 39 crores during 1974-75. Police is a State subject and hence it is not at all necessary to maintain such a huge Central Police force. (28)

"That the Demand under the Head 'Police be reduced by Rs. 100."

[Central and State Reserve Police stationed in Dohad to avert trouble, incited it, by their brutal behaviour, including molestation of women. (30)]

"That the demand under the Head Police' be reduced by Rs. 100."

[Repression let loose by the Central Police forces in Nagaland and Manipur.(31)]

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Working of each Central Police force since 1967.(32)]

"That the demand under the Head Police' be reduced by Rs. 100."

[Failure and unwillingness to pay compensation to the families of the wictims of Central Police atrocities in Guiarat and Bihar.(33)]

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Failure to ensure security to the citizens of Delhi, which has earned notoriety as a "crime city".(34]

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Incidence of crime in Delhi is on the increase along with the fantastic rise in the expenditure on Central police with every passing year, (35).

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Reign of terror let loose by the Central paramilitary forces in cooperation with the State Police force upon the people of Gurarat, Bihar, Marashtra and other States where the people have been agitating for food, against high prices and corruption and where at least one handred people have been killed by the police (36)]

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Rampant corruption, favoritism and nepotism in the Border Security Force organisation. (37)].

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Alleged lareg scale physical as sault by the Border Security Force personnel on the Nagar Women and girls in the State of Manipur.(38)]

"That the demand under the Head Police' be reduced by Rs. 100."

[Fantastic rise in the expenditure on Central police and proliferation of new Central paramilitary forces in spite of fact that law and order is a State subject. (39)]

655 LS-10.

"That the demand under the Head 'Police' be reduced by Rs. 100."

[Central police forces such as BSF CRF, CISF and other, have become weapons in the hunds of the Government to suppress the democratic movements of the toiling people for food, against high prices and corruption. (40)]

"That the demand under the Head 'Other Expenditure of the Ministry of Home Affairs' be reduced by R_S . 8.87.52.00."

[No details have been furnished under the head "Intelligence Bureau," the bulk of this amount, it is suspected, is likely to be appropriated to suppress the Congress-opposed political parties and to keep watch on the persons of the leaders of leftist parties and hence this expenditure is infructuous (41)]

"That the demand under the Head 'Other Expenditure of the Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Refusal to order judicial probe into the cases of Police firing in connection with the food agitation in Gujarat, Bihar and other States. (45)]

"That the demand under the Head 'Other Expenditure of the Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Failure to protect the Harijans from atrocities by the Police, goondas and landlords in the country. (46)]

"That the demand under the Head 'Other Expenditure of the Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 160."

[Cases of atrocities on the Harijans including physical assault on the Harijan women and girls by the Police have registered a sharp rise in recent period.(47)]

260

SHRI FRANK ANTHONY (Nominated—Anglo-Indians): I beg to move:

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100".

[Erosion of minority rights and the rule of law. (26)]

SHRI DASARATHA DEB (Tripura-East): I beg to move;

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Failure to protect the interest of tribals on land.(48)]

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Need to declare the tribal belts of Tripura where there is a preponderance of tribal population as scheduled areas and to constitute autonomous district or region therein.(49)]

"That the demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Immediate need for constitution of a Regional Committee for the tribal compact belts in Tripura with the representatives of tribals elected on the basis of adult franchise.(50)]

"That the demand under the head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Lack of protection of tribals in Tripura resulting in a large number of tribals deserting Tripura as their lands were taken away by a powerful section belonging to non-tribal Bengali community.(51)]

"That the demand under the head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Need for allocation of special funds for removing backwardness of Tripura, particularly its tribal areas (52)] "That the demand under the head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Declaration of the tribal belts of Tripura as scheduled area and the constitution of the Regional Council for such area with the representatives of tribal people elected on the basies of adult franchise on the pattern of Sixth Schedule of the Constitution with powers to undertake all development works of the Scheduled area. (53)]

"That the demand under the head 'Department of Personnel and Administrative Reforms' be reduced by Rs. 100."

[Need to constitute a committee to find out the causes as well as acreage of transfer of land from tribals to non-tribals in Tripura since its integration with Indian Union.(54)]

"That the demand under the head 'Department of Personnel and Administrative Reforms' be reduced by Rs. 100."

[Need to enact legislation for the restoration of all lands to tribal original land holders that were illegally transferred from tribals to non-tribals on or after the 1st day of January, 1962.(55)]

SHRI R. V. BADE (Khargone): 1 beg to move:

"That the demand under the head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100.

[Utilisation of C.R.P., B.S.F. and Territorial Army for political purposes.(69)]

"That the demand under the head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Failure to check atrocities on Harijans. (70)]

"That the demand under the head 'Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Failure to conduct judicial irquiry into the firing incidents in Bihar and Gujarat (71)]

"That the demand under the head Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Failure to maintain law and order in the country (72)]

"That the demand under the head Ministry of Home Affairs' be reduced by Rs. 100."

[Deplorable acts of suppressing the democratic and just agitations by the opposition parties by the use of brute force (73)]

MR. SPEAKER: The Demands for Grants and the Cut motions are now before the House.

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harhour) Sir, the role of Home Ministry or the Police Ministry in a so-called democracy as we have today in this country, the Police and its performance and their expenditure have revealed that this is nothing short of a Police Raj On the one hand, they are talking about economy, cut in unproductive expenditure etc. On the other hand, we see the phenomenal growth of policing and its administrative expenditure

Sir, the Central Police in 1950-51 cost this poor country Rs. 3 crores. In 1964-65 it came to Rs. 25 crores, a little over that. In 1968-69, it jumped to Rs. 72 crores and for the year 1974-75, the budget estimate is Rs. 169-39 crores, a little over that.

Sir, I will then refer to CRP. I call it Central Raksha Pitha. It has now 60 battalions. In 1960-61, the expenditure on CRP was Rs. 1.97 crores. In 1973-74, it jumped to Rs. 39.44 crores. On the one hand, this is the picture

here On the other hand, what is the expenditure on the State Police Forces In 1946-47 when the country was ruled by foreigners,—that was a year of turmoil and rioting—the budget did not exceed Rs. 13,08,00,000. Today, in the year 1973-74, the same Forces have consumed Rs. 312,93,00,000. This is the increase in expenditure in the State sector. In the Central sector, I have already given you the figures

The Border Security I'orce is another queer organisation which has come up. This is really mysterious. They have now near about 80 battalions They were keeping it a closely guarded secret I caught hold of a BSF gentleman about a month ago to tell me about this. In 1968 69, the expenditure on BSF was Rs. 26 24 crores For 1974-75, the budget estimate is Rs. 57.41 crores. On the top of this, they have got 17,500 Central Industries. Security Forces Sir. what did the Government say at the time of passing of this BSF Bill?

"The purpose of this force is, as I have said, to ensure the security of the borders of India, secondly, to secure or instil a sense of confidence in the people living on the borders and, at the same time, to take precautions to see that smuggling and all the types of crimes that take place on the borders do, not take place."

This is what Mr. Chavan has said, when the Bill was passed by this House. What did we say? We said this I said at that time:

"Mr. Deputy-Speaker, Sir, if we look at the Financial Memorandum attached to the Bill, the penultimate paragraph says: "The recurring expenditure on the administration of the Force during 1967-68 was of the order of Rs 18.21 crores, it is likely to go up by about Rs. 2 crores because of some addition to the existing strength of the Force."

[Shri Jyotirmoy Bosu]

Then, I also said, at that that time:

"The Border Security Force is being created to become a parallel Central Police force and the purpose of that is nothing short of repression."

Sir, it is there in the eastern area, where we had a long border. Now, there is no longer a Pakistan border. We have the friendly Government, Bangladesh So, his assurance in this House was nothing short of a bunkum. Instead, they have utilised the BSF for internal security duty, as revealed by the Ministry in their Annual Report. It clearly states:

"The BSF. completed eight year of its existence in 1973-74 It continued to be deployed along the borders both in Eastern and the Western sectors and also rendered assistance to the States of Uttar Pradesh."

very near the border-

"Andhra Pradesh, Assam".

also on the border-

"Orissa, Tripura, Punjab, Madhya Pradesh, Rajasthan, Bihar, Gujarat, West Bengal, Meghayala, Manipur and Union Territories of Chandigarh and Delhi in maintenance of internal security."

So, the cat is out of the bag. It is a force for presenting the people with lathis. The truth is that the Government are organising a parallel force so that, should there be an uprising in the defence services, they have another force ready. This is evident from the fact that the pay and ailowarces of the Border Security Service Personnel are much higher than those of the personnel of the armed services. That shows that skeleton in the cupboard. If there is any uprising, there is a parallel armed forces exactly on the lines of the light infantry battalion. There is a lot of dissatisfaction in the armed forces today. That is why you are going in a big way to organise the

Border Security Force Is it or is it not correct that in the Border Security Force the salary is much higher than that of the army?

Then look at the misdeeds The chief of the CRP, Shri B, B Mishra, says at Bhubaneswar:

"Every State Governmen' prefer the CRP as they use the minimum force compared with the BSF and the army in tackling the situation

I may tell you that they are no less cruel than the other forces. In Ahmedabad they went to the extent of using poisonous shells, which were fired indiscriminately. In one place which I visited, an old man died as soon as a shell exploded within his countryard, because of sufficiation. And that shell was an imported one, made in America. I know this is bound to happen in a police State such as this

These are the Indian addition of the stoim troopers I want to know why the declaredpolicy has been violated in this manner. These are criminal forces under the command of our great friend, Shri Dikshit, and the Prime Minister, and they are both socialists! Of course, the past association of Shri Dikshit does not show any socialism anywher? You are stationing these forces in Manipur, Nagaland and Mizo Hills under the garb of sensitive areas an I you are very cleverly keeping them out of the sight of the people of this country.

They are committing mass murders, mass rape, mass looting and arson in those areas. Otherwise, can you imagine a Commandant, a Deputy Commandant and others raping a girl. The girl was profusely bleeding and out of shame she had to commit suicide the next day. They commit such heinous crimes and parade women in the nude in the open in the village of Rihand by one Major Dharam Prakash of BSF. They are lynching them. Why should we not lynch these criminal beasts who act like this on these helpless villagers? Yet, we

are paying them higher salaries and allowances.

What is happening to the top man of the Border Security Force, Shri Rustomji, the keeper of law and order and the high priest? He is involved in this dirty land grab case. If there is some Minister worth the salt, he would have suspended this man the first day this news came out. much is the consideration? The benefit comes to about Rs. 75,000. If this is the work of the Director-General oi BSF, God help this country. Corruption in the BSF is sky high.

MR SPEAKER: You should be very careful when you make such references.

SHRI JYOTIRMOY BOSU. Sir. I have given you notice. I am not a new member I am quite aware of the responsibility and the importance of this House.

SPEAKER: Why don't you listen to me? This case is sub-judice.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: What is sub judice?

SPEAKER: Everything is MR sub judice?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Land was given to Shrimati Sakuntala Masani, wife of Shri Masani, because she wrote a book about Shrimati Indira Gandhi.

Then, there is Brig Pandey, the Inspector-General of the Border Security Force. Do you know that during the Bangladesh operations many Treasuries were looted and crores of rupees were pocketed and brought into this country? All the facts Field Marshal known to Maneckshaw and the Director-General here and many others. But the inquiry was hushed up. On the contrary, instead of punishing them, they were appreciated. There was an eye-wash. A fraction of the looted money from

Bangladesh Treasuries was recovered from junior officers. For example, one Kedar Singh, the Inspector of B.S.F. Academy, who brought Rs. 80,000 was promoted as Dy. S.P. I am making a specific charge on the floor of the House. He should reply to that. I have got evidence and all information in my hands.

They spare nothing. There another misappropriation. They had an exhibition near the Exhibition Ground building at Mathura Road. They followed suit of the Director-General and they removed all the materials and things from there their own purpose. In Gujarat, over 2000 camels, etc. were looted by these people at Nagarparkar and Bhuj area. They were sold in open auction by Brig. Irani, a relation of Rustomji-I should be contradicted if I am wrongfor several lakhs of rupees. What happened to this money? We want a clear and categorical reply. Is it not a fact that the money was distributed amongst the officers? I have received representations from the senior officers of the B.S.F. Many of them have seen me. They say that there is a reign of loot going on in the B.S.F.—the worst scandal.

There is the B.S.F. Academy at Takenpur. There was land procurement by officers, like Brig. Pandey, Rampal Singh and Lt.-Col. Lt.-Col Nair. They bought land in the name of somebody else and then they sold it to the Government at a profit of 800 per cent. You were short of resources. This should be verified

THE MINISTER OF HOME AF-FAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIK-SHIT): The hon. Member should have either made the allegations outside or written to the should have of India in helping Government us to investigate into these cases and tell the House where the matter stands. Now, he brings forward this kind of wild allegations. It is not fair. We cannot find out the facts in such a short time and give a reply.

267

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Tomorrow. If the hon, Minister was worth his salt, he would have come out with a statement on the issue of rape of Naga women suo motu on the floor of the House. His party does not have the guts to come forward. What is he talking about? We have tolerated enough of this Tommy-rot here.

The B.S.F. Training Institute requires a thorough probe as to how much money has been pocketed by Brig Pandey & Co. I want to know about the case where they cheated a widow and made her sign a document for Rs. 5000 while the price was 8 times more. A thorough probe into the assets of all these officers is absolutely necessary.

Now, I would like to tell you what the international press writes about the performance of Mr. Dikshit's Forces. This is published from London. It has gone to the international press. It says:

"On February 25, 1973, the C Coy. 4th Kumaon Regt. of the Indian Army commanded by one Capt. Jasbir Singh came to Hebolini The Indian Army went straight to Church and committed sacrilege inside the Church. They also used the Church as their overnight camp. During the night, the Indians started their savage attack on women who were by that time in bed. They raped Mrs. Pukhalu, after knocking down her husband unconscious. In another house, they ordered Mr. Yetovi to get them alcohol. While he was away from his house, they raped his helpless wife. Similarly, Indians attacked Mrs. Mıyeli and Mrs. Hosheli."

Then, there was another case on May 9, 1973. But the most serious case is of may 12, 1973. It says:

"On May 12, 1973, the Dogra Regt. of the Indian Army issued an ultimatum to Yonshei village, threatening dire consequences unless they produce the following members of the Women society..."

"The girls are, namely; 1. Miss Wangnoi, aged 20: 2. Miss Bauuh. aged 19; 3. Miss Wanja, aged 20; 4. Miss Longngoi, aged 18. They were forced to 'surrender' after taking into account the consequences pecially on the children and old The Indian Army compeople. mander in charge of the occupation post refused Miss Wengngoi leave after their 'surrender'. She was later savagely raped by two Indian Army Captains. Miss Wengngon is a tall and beautiful girl with a strong moral character. She is still being held by the Indians."

We want a clear and categorical answer to this. We are not going to tolerate the non-sense any more."

About Border Security Force, we do not want to say much because we have already said a lot about it.

I now come to the Gestapo organisation. A Press note issued recently says that an IAS officer has been given the President's award—an officer belonging to the Research and Analysis Wing. a mysterious organisation. We see that the I.B. Budget has jumped up in the last three years to Rs. 6,67,52,000. We also see from the budget papers that there is discretionary expenditure to the extent of Rs. 13,47,84,000....

Shri PILOO MODY (Godhra). Discretion for?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Discretion for torpedoing the people opposing the Congress and Mrs. Indira Gandhi and her coterie. Under what head the Research and Analysis Wing has been booked in the Budget, we want a clear and categorical answer to this. The sole job of this Research and Analysis Wing is to keep the coterie in power led by Mrs. Indira Gandhi; they are wanting to bring in fascism, mass murder of democracy, secret murders, defections, blackmailing and political murders. We know in Nagarwala's case how it was done. Even the Cabinet Ministers are not spared....

MR. SPEAKER: The hon, Member may try to conclude.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I have been told that my party's time in 29 minutes. They have already taken five minutes; Mr. Dikshit also took some of my time.

MR SPEAKER: The time allowed is 15 minutes. You have doubled it.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I am entitled to 29 minutes, Sir.

भी जगन्नामराच जोशी (जाशापुर): वहले इसके लिए 11 घटे रखे गये थे। उसके हिसाब से समय मिलना काहिए

MR. SPEAKER: We have to be fair.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I would beg of you, Sir, to provide us with a metal detector to each member because I knew my house, my office, everywhere it is bugged; otherwise, I have to ask for an import licence from the Minister of Commerce for importation of a metal detector since performance will be difficult otherwise. It is very interesting. You must know, Sir, because your telephone is also tapped. I cantell you some conversation that you had on a certain date. The method they adopt is.

MR. SPEAKER: I did not know that you do this to me also!

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Through Mr. Dikshit.

You should know what are the methods that are adopted. One method is by connecting a cable with the distribution box. But this is not done very often. The second method is, in the exchange they join a pair of cables with the unisilector and then they connect the cable with one of their own numbers to which they usually fix a taperecorder. Another method is by connecting cables where a victim's

telephone cables have terminated. This is very inexpensive and the symptoms are, the volume goes down and the telephone set goes out of order very frequently. One would often hear unusual tinkling sound at certain hours of day and night. This is the time when they fit and refit these connections. This is what they are doing. This is how democracy is functioning in this country!

MR. SPEAKER: Mr. Bosu, you were telling me that you were told that you would have 29 minutes. Previously it was 11 hours but now the time has been revised. So, please conclude. If you want, you may have two or three more minutes.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I now want to refer to electronic gadgets imported from abroad, from UK, USA, Germany etc. There are 35 Japan. items of 68 K.G. each. They landed in Bombay in January, 1974. Certain officers left Delhi on 8-1-74 and returned with these gadgets on 22-1-74. The names of the officers are: Babulal Parsai and Balram Sahu from M.P. (I.B.). It is not difficult to prove this. They used to bug telephones planted in offices of political parties. CPWD is doing it with the help of deputationists I want to ask the Home Minister a few questions in this connection. How many officers have been sent abroad for training regarding use of electronic devices for bugging, use of computers and matters related to security? For all these nefarious activities, the mode of selection and recruitment and promotion been taken away from the purview of the Union Public Service Commission This comes exclusively under Intelligence Bureau. The excuses which they give are, urgency and verification time. What we find in this regard is that the posts have been doubled in recent years It is very significant to note that these posts have been doubled in recent years. That is why they wanted section officers to go before their own Departmental Committees and not before the Mome Ministry.

[Shri Jyotirmoy Bosu]

I want to quote from a letter No. 8|12|74 Poll. (D-I) dated 7-4-74. This is from Mr. C. V. Narasimhan to Chief Secretaries. This says what is to be done in case of the Railway strike. This is a wonderful piece of document. I wish to quote what it says. It says:

'One of the important ingredients of effective preventive action will be the arrest and removal from the scene of their activities of persons who otherwise would either contribute to the success of the strike or create serious law and order problems.'

Then about Railway strike it says:

'The provisions of the MISA could be profitably invoked while undertaking preventive action....'

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur); Sir, I rise on a point of order. I am thankful to my hon. friend Shri Jyotirmoy Bosu that he read out a portion of this secret letter. Since a portion has been read and it is in connection with the Railway strike, I would like him to place the letter on the Table of the House; it is allowed under the rules.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall do that. Let me read out:

"Section (1)(a)(xiii) specifically enables detention of any person with a view of preventing him from acting in any manner.....

"It may also be noted that whereas the grounds of detention will ordinarily require to be furnished to the detenue within five days of the date of detention, section 8(1) permits the authority making the order of detention to furnish such grounds within 15 days of the date of detention in exceptional circumstances and for reasons to be recorded in writing. The corresponding extension of dates for approval of orders

by State Government, etc., may also be noted in this connection."

Then it says:--

"....under the normal laws, there need not be any healtation to resort to the provisions of the MISA."

What wonderful democracy it is in this country!

MR. SPEAKER: Mr. Bosu, you will please conclude since your time is now up.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: What is happening to the general intelligence? The other day, our Prime Minister said in the other House that "there is no doubt that anybody can always function better, but I would like to assure the hon. Member that this Committee has given us a very thorough evaluation and assessment of the situation."

For the U.P. election, Orissa election, for torpedoing DMK Government in Madras, for the money they spent, what is the dividend that they are getting?

In the press two I.P.S. Officers' names are mentioned who are going on bullying the press. I have got a card with me. One name is Shri B. B. Nandy and the other name is Shri Paritosh Sen.

MR. SPEAKER: Mr. Bosu, you are going on mentioning the names of persons without taking my permission.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I have taken permision from you for everything. These people are going on bullying the press in Calcutta. Those who are writing articles are taking discretionary funds of the Union from Government. They have got 3½ croces of such funds.

MR. SPEAKER: Mr. Bosu, you have exceeded the time. Please sit down. I am not going to allow you any more. Please conclude.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall now take two minutes more.

MR. SPEAKER: Please wind up.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I shall wind up.

Sir, the London paper writes as follows:

"Mrs Gandhi has a sub-continent on her mind, we know, but that is no reason for her to keep on closing her eyes to the treatment of political prisoners in West Bengal....Thousands of youngmen and women remain in Fail. The allegations of torture are serious. In spite of the timid doubts of the judiciary, they are not being brought to trial. Rumours of deaths in jail are growing and more convincing. It is hard to believe that the Indian Government wishes to line up with States like South Africa....in its treatment of the interned."

My last point is this. Shri Dikshit, an old politician, is a very successful Treasurer. He gave the shoot-at-sight order in Bihar. I threw a challenge on the floor of the House that in Bihar, that erder was given. I am challenging the Home Minister. If he is truthful, if he is true to himself, he should accept that challenge and have a probe. He should resign. The Home Minister is a replica of what Hitler did in Germany. If we do not do this, the Parliament will go; democracy will be ruined.

Therefore, I oppose the demands of the Home Ministry lock, stock and barrel.

SHRI S. M. BANERJEE: What about your ruling about the document?

MR SPEAKER: He has quoted.

SHRI S. M. BANERJEE: Sir, we have decided to publish it in the journal.

MR. SPEAKER: I shall examine it.

SHRI S. M. BANERJEE: It was said on the Table of the House.

MR. SPEAKER: I shall see the rule about that. Now. Mr. Bhagat

SHRI H. K. L. BHAGAT (East Delhi): Mr. Speaker, Sir, I am not surprised at the speech that Mr. Jyotirmoy Bosu has made because nothing better was expected of him. Perhaps, he could have said something worse. Sir, it is amazing that Jyotirmoy Bosu stands in this House, brings about individual cases and makes allegations without bringing them to the notice of the Government. These are the cases in which no enquiry has been conducted. These are cases about people who are not present in the House and who cannot defend themselves. It is amazing he brings such individual cases in this House.

(Interruptions)

I want to tell him one thing Bosu has tried to show that there is no democracy in this country and that there is something like a fascist Government functioning in this country and that it is a Police Raj. I want to tell Mr. Bosu-if he does not mind and I do not wish to intimidate him—that democracy exists in this country. What you are saying today actually is what certain forces and certain parties in this country are trying to bring about, that is, the end of democracy. God forbid if there is end of democracy in this country—if you do not mind my telling you-I can tell you, Mr. Bosu, you will be the first man, take it from me, to be hanged with the first lamp post. Why Because the end of democracy or the fascist rule will not tolerate you, (Interruptions)

It is not an individual question. I am mentioning the situation symbolically. We know what is happening in this country today. Mr. Dikshit is a gentle and a noble soul and has a non-violent personality. He has a

[Shri H. K. L. Bhagat]

balanced perspective. I am sure he is not getting provoked by what is being done by various forces.

What are you doing? You are trying to bring about an end of democracy in this country. Today many campaigns are being carried on-they may be by any nomenclature. There is campaign to paralyse the Government in Ribar. Sometimes it called revolution; sometimes it is called 1942 movement; sometimes it called civil dis-obedience movement; sometimes it called a movement for citizens democracy and sometimes it is called the rise of student power. Now. what is being done in the name of this movement Railway stations are being attacked and looted. Post-offices have been attacked and looted. There is absolutely no campaign against the blackmarketeers or the hoarders. There is no gherao of black-marketeers or the hoarders who spread corruption in the country. What is happening is there is intimidation and coercion of MLAs and MPs irrespective of the fact whether there are any allegations or not. Coercion and intimidation is being resorted to.

My friend said that it is a Police Raj. What are you doing? You create a situation for the police. Stones are thrown at the police. With due respect I would say a situation is created where police has to act. If police acts it is blamed, if it does not act it is blamed; if it under-acts it is blamed and if it over-acts it is blamed. It is a pity-I do not want to use strong language-that Mr. Bosu by mentioning a few instances of individual officers of the BS.F., which may be correct according to him, or may not be correct, has used bad expression about BSF, Everyone in this country is proud of the role of B.S.F., particularly in regard to Bangladesh struggle It is a pity that this friend of ours sitting in this House makes all kind of baseless, false and even concocted allegations and goes on giving bad name to everyone in season and out season.

13.00 hrs.

There is no butchery of democracy by us. Butchery of democracy is done by you and the people like you inside and outside this House are responsible for making attempts to bring about an end to democracy in this country. We see what is being done in Bihar or what was done in Gujarat.

Those who are thinking that demoracy dies they have a chance to get into the elections I might tell them that they are grossly mistaken. Now, elections become relevant or irrelevant in a strange way. If Jana Sangh wins an election in Amritsar it is relevant election and the resignation of the Congress Ministry is demanded. If Mr. Vajpayee, who wanted to be the Chief Minister of Uttar Pradesh, rejected by the people of Uttar Pradesh the elections become irrelevant. If we lose in Maharashtra a few seats they say people are against us and the results are relevant and when we win the election become rigged and all that. The fact is there is a conspiracy in this country-a very clear and concerted conspiracy-to bring an end of demoratic institutions in this country. This is the situation which Mr. Dikshit has to face and this is the situation which the State Governments have to It is a very extra-ordinary situation. It has been an extra-ordinary situation for the last one year and the responsibility is becoming heavier In this context can anyeyeryday. body with conscience or with any sense of 'justification could say that the Government has used excessive powers to meet the situation. Individual cases, here and there apart there is a criticism in certain quarters that Government has not faced the situation with that strength and courage with which it should have faced.

I do not subscribe to that point of criticism at all. I feel that the Home Ministry has taken a balanced view of the situation and a balanced view of the incidents and has acted with a democratic sense and a democratic

conscience. So, the position of the Home Ministry has to be seen in this context, and I would only say that the allegations made by Shri Jyotirmoy Bosu are imaginary. false and calculated to give a bad name to the democratic institutions and to the Home Ministry. In particular, I strongly resent his allegation and innuendoes and other things which he always makes it a point to make personally against the Home Minister.

Now, how is this situation to be met? I feel that it is not fair that the present situation which is not an ordinary law and order situation in the country should be left to the police to deal with. It is a situation which is an attack on the citizens' right to vote: it is an attack on the citizens' democratic institution, and it is fair that the citizens themselves should defend democracy and defend their democratic institutions. A citizens' squad should be formed by all those who believe in democracy and the Government should not feel shy of encouraging the formation of such squads and taking their cooperation.

It is amazing that people sitting in the legislatures and in Parliament go on advocating the use of extra-consti-, tutional force to change the Government When we come to this House, we swear by the Constitution and we say that we are going to maintain it, but when we go outside we see people who are justifying the use of extraconstitutional force. Have such people any moral, constitutional or legal justification for sitting in the legislatures and in Parliament? I would request the Home Minister to scrutinise the statements of various people. which have been made during the last six months or so and find out who are the people who are advocating the use of extra-constitutional force, and they should be disqualified from being Members of Parliament or of State Legislatures. I demand that the Representation of the People Act must be changed or amended. Today, we cannot proceed against them in a court of law for making such statements for their removal on that ground. So, I very forcefully demand that there must be a standing commission which must go into all these cases and decide that those who advocate the use of extra-constitutional means have no right to be in the constitutional forums

I would like to ask the Home Ministry and the Home Minister for how long they will go on quibbling at the serious proposal made by a large number of Members of Parliament to ban the RSS and other para-military organisations when it is becoming too obvious that these forces are forces which are attacking our fundamentals. An attack on the borders is dangerous but an attack on fundamentals is no less dangerous. Therefore, I suggest that we the people and the Government combined together should meet this menace which is trying to destroy the very fundamentals of this country.

Students are being deceived today to serve the ends of certain political parties. The matter may relate to the Education Ministry, but the Home Ministry has to face all the cummulative results and the effects of the acts of omission and commission by all concerned including all of us. Therefore, I demand that a national commission should be appointed to radically change the educational system into a job-oriented system, and the report should be submitted within six months and implemented. That is one way in which we can look at the background of the students' and youth unrest in the country and solve it.

It is true that there is a lot of talk about corruption. It is true that there is corruption in the country. It is true that there is corruption in public life also. But is the movement being carried on against corruption really a movement against a corruption? Black money is being obtained and black money is being taken to finance and start the agitations. A campaign against corruption should be carried on, and that can be done only through

[Shri H. K. L. Bhagat]

democratic institutions in a democratic way and not by the end of democracy. I very strongly demand that the time has come when death penalty should be provided for corruption, adulteration, black-marketeering and hoarding. That is what is necessary at least in serious cases. (Interruptions).

A stage has come in this country today when democracy is attacked in the name of democracy. Constitution is subverted in the name of the Constitution. Jaws are broken in the name of the rule of law. On the one hand, judicial enquiries are demanded; what is happening on the other hand is, it is said that judicial enquiries will not serve any purpose. It is a very strange anarchism, a very strange kind of duplicity with which the Opposition parties, particularly the RSS and the Jan Sangh, are carrying on a campaign to destroy democracy in the country. This is the situation which must be seen by the Government in its correct perspective and face it as a serious threat to the fundamentals for which we stand in this country.

Now, I would like to say one or two things about Delhi. I strongly feel that the affairs relating to the New Friends Co-operative Society including 'the allotments made recently must be very thoroughly and promptly examined and those who are guilty.-whatever their station in life,-of any sub-standard conduct should be firmly dealt with regarding this allotment matter of the New Friends Co-opera-'tive Society. But, since the Home Ministry is responsible for the administration of the Union Territory of Delhi, with great humility and respect, I would bring it to the Shri Dikshit's notice, and request him that the land and housing policy which is being followed in Delhi must be drastically revised. I agree that the DDA has done some good work, but it is not commensurate with the requirements of time. Develop at least 50,000 plots a year and make the allotment on

cheap prices to poor people—rickshaw-pullers, scooter and taxi-drivers, cobblers, sweepers. washermen, etc. If you do not do it, they are going in anyway to find places and more unauthorised colonies or slums are going to develop. Lakhs of people are today remaining in unauthorised colonies; they must be approved, and the colonies improved. All these things have got to be done.

I would like to bring to his notice one more thing. He has made best efforts, but his efforts have not so far succeeded. That is about the DCM Chemicals. There is a virtual shortage of vanaspati in Delhi today. It is high time that the mills were opened with or without take-over. I believe in take-over; but with full satisfaction to the workers the mill should be opened.

Then there is no justification for the Ganesh Flour Mill to work much below the capacity when the people are suffering from such a serious shortage.

I would like to bring another case to his notice. It is about a lady aged about 20 years, who was married five months ago—Harvinder Kaur. She died in the Shahdara General Hospital. The allegations are that she died as a result of negligence; as a result of wrong use of medicine; as a result of some alleged, defective use of glucose. The matter requires a very thorough and prompt enquiry. All those who are guilty must be brought to book.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Say something about the Lt.-Governor.

SHRI M. K. L. BHAGAT: I have said it already; you were away. Now, Delhi's employment comes from trade. Delhi is an important trading and distributing centre. Its character as an important distributing and trading centre must he maintained and the salestax structure must be kept at a proper level.

We have been asking for a dry port for long time. We must get a dry port at Delhi. I request the Home Minister to see to it. As I said, the undeveloped areas of Delhi and the unauthorised areas deserve prior treatment and the disparity which exists today between the developed areas of Delhi and the undeveloped areas of Delhi must be brought to an end.

The conditions at the Yamuna bridge are chaotic A bridge was officially promised long ago but the construction work has not yet started. I request him to look into the matter. I am saying this because the Home Ministry is responsible for the administration of the Union territory of Delhi, as I said.

I would finally request him to have a fresh look at the administrative setup, the political set-up. whatever it is, of Delhi today, with the multiplicity of authorities and agencies both at the Central level and the local level, including the Central Ministry. I have to tell him all these things because there are so many Ministries dealing with it The administrative set-up of Delhi looks like a hydra-headed monster today. It has so many heads but there is no effective co-ordinating head between them. Therefore, he must try to bring about a set up which is uniform and which reconciles the necessity for central control or supervision over Delhi which will also be in tune with the popular aspirations of the people. That is very necessary. It is high time that we did that. There are a number of other problems. We must have a look again at our transport policy. The present situation has somewhat improved but it is hopelessly inadequate. The transport services have to be improved. There are a number of problems in regard to water supply and drainage and these are pending consultations with neighbouring States. I should say that the hon. Minister has been kind and considerate to Delhi and I am sure he will look afresh into these problems and help us in the solution as he has done before.

Finally the question of questions is: do we believe in democracy and do we care for it and defend it or should we let it be killed; whether we should labour and die for it or we should kill it. This House has made history, is making history and it will also make history in future. Everyone of us should introspect and think whether what we do will hamper production and start confusion, whether it will lead to greater price rise and inflation or whether it will do good to the country. If we do things which have the effect of hampering democracy and harming our country, will not our country go back by centuries? In such case, millions of people with tears in their eyes will never excuse us for what we have done to them.

श्री जगनाय राव जोशी (शाकाव्र) : श्रध्यक्ष महोदय गृह मवालय की मागो पर सरन में विवाद हो रहा है श्र हर मेरे पूर्व के वक्ताशों ने लोकतव पर बहुत जोर दिया है कि ोकतव को इस देश के श्रंदर खतरा है श्रीर वह कैसे खतरा है यह भी उन्होंने बताया है। किन्तु मैं थोड़े बूनियादी सवाल करना चाहता हूं श्रीर दीक्षित जी जरा ध्यान दे तो श्रच्छा होगा।

यह जो वहा पट्ट लगा है "न धर्मनक पर्वतचाय" यह हम सब को कुछ नियमों से बाधना है वह चाहे गृह मंत्रीं हो या कोई विरोध के सदस्य हीं जब हम ने मदन में इसे लगाया है तो इस का मतलब यही है कि राजा का भी एक धर्म है, शासको का भी शासन चलाने वालों का भी एक धर्म है भीर वह धर्म रेलीजन नहीं है। बह धर्म ह कर्तव्य । भारतीय सस्धात में धर्म का मतलब रेलोजन नहीं होता है रेलीजन का धर्म है सम्प्रदाय भीर धर्म का धर्म है कर्तव्य । धाज का जो शासन है उस के लोकतांत्रिक पद्धति से होने की वजह में जिनको लोक-मान्यता से यह शासन । हैं जिस लोकतद्व

श्री जगन्नाथ राव जोशी

भ्रभी हमारे साथी भगत जी ने की मैं उस के बारे में पूछ सवाल करना चाहता ह कि पिछने सत्ताइम में लोकतंत्र की नीव उस की जड़े मजबूत करने की कोणिश इस शामन ने की है, लोकनत्र का ब्नियादी ब्राधार है हर एक को विचार प्रकट करने की स्वाधीनना स्वनत्रता खनी छट उस विचार में कौन कितन। सहमत है, कौन कितना विरोधी है यह सवाल नही क्या यहां यह खनी छट है, भीर इस खुनी छुट में मैं जनसब भीर कांग्रेस की बात भी नही करता 1969 में काग्रेस दो घड़ों में बट गई। किस भ्राधार पर बट गई इस का मवाल नहीं है, र्गकन्त बंट गृही। काग्रेस के बटने के बाद जो भी घटनाए हुई क्या वह लोकतान्निक ढंग्र से हई ग्रपने स्वय के ग्रध्यक्ष का कूला फाडना यह लोकतव है अपने ही प्राने आफिस पर जबरदस्ती कब्जा जमाना ग्रीर बाद में कोर्ट में थप्पड खा कर दूर हट जाना यह लोक तत्र है?

एक माननीय सदस्य ग्रंथने मस्थापक सभापीत को निवाल देना कीन सा लोकनत है ? बलराज मधोक को निकाल देना लोकतव में बैठना है!

भी श्रटल बिहारी बाजपेयी (ग्वालियर): श्रब इन को मधोक जी की बड़ी चिन्ता हो गई है?

श्री जगन्नाय राव जोशी: लोकतव के ऊपर ग्राप बहुत बोल रहे थे इसलिये मैं ग्राप की बात बता रहा हु, अपनी नहीं (व्यवधान)

हो हल्ला करने में मेरी भावाज बन्द नहीं होगी , मैं भ्राप से बहुत पुराना सदस्य ह राजनीति में कोई नया ब्रादमी नहीं हं, 1930 से इसी क्षेत्र में काम कर रहा हूं।

मैं बतला रहा था कि गुजरात में प्राप का शासन था, उम के नेता का चुनाव होना था, उस की गिनती दिल्ली के विदेश मतालय होती है यह लोकतन है इस तरह में तो कल कोई गरीब मत्री कहेगा कि मेरा कमरा छोटा है, मेरी पत्नी की प्रश्रांत भी विदेश मदालय के कमरे मे हों क्या यह शिष्टाचार है? इस लिये मैंने कहा है कि यह जो पट्ट लगाया है We are all governed by that duty. उस के अनुसार लेकिन आप अनि। पार्टी को कैसे चलाते हैं यह चित्र बतला यहा है?

D.G., 1974-75

MR. DEPUTY-SPEAKER: Are we discussing their party or the Home Ministry?

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: They are discussing our party.

SHRI JAGANNATHRAO JOSHI I am discussing democracy in the context of democracy. I am citing certain instances wherein the roots of democracy have not been strengthened in this country during the last 27 years, have been destroyed by them.

AN HON. MEMBER: You have destroyed it.

JAGANNATHRAO You have destroyed it. You have destroyed democracy in this country History will have to record that. History will not go down in the Time Capsule. It will be written on the hearts of the people of this country. If not today, tomorrow, people will come out and tear your faces. I warn you.

इस लिये मैं बतता रहा ह

We are all government by certain principles.

लेकिन यह डेमोकेपी को स्टेशन करने वाली बात नहीं है, स्योकि म्राज भी मार०एस०एस० के बारे में जो मत मुनता बा रहा हु यह कोई नई बात नहीं है भाज से नहीं 1925 से इस देश में भार० एस० एस० का संगठन चलना भाया है धीर 50 सालो के बाद भी हमारी यह होम

मिनिस्टी सामने बैठी है-मैंने ग्रनेकों बार इस से इन्फर्मेशन मागी-में 1967 से इस हाऊन का सदस्य है, बार बार पछता भ्राया है-पदि श्रार० एम० एस० वायोनेंस में इन्हल्ज करता है तो बताइये य बिल होंब ट सक्सटेन्शियेट योर चाजिज। दनिया के सामने इस तरह से झूठ बोलने से काम नहीं चलेगा। मैं तो श्राप को झूठा समझ ही रहा हूं नगीक बेम रैस च जिंज करना प्राप का धन्धा हो गया। जब काग्रम विकंग कमेटी प्रथना प्रस्ताव स्वीकार करती है।

RSS indulges in violence

तां इसका क्या मतलब है?

पिछले 25 सालों से लेकर भ्रावेजों के जमाने से जो सगठन इसदेश में चलता भ्राया है वह आप की कृषा से नहीं चन रहा है। जो सगठन इस देश मैं ग्राज भी मजबनी में खड़ा है, वह तुम्हारे लोगों के बलबुते पर नहीं खड़ा है। कहते हैं कि पाबन्दी लगायां. आप ने तो पावन्दी भी लगाई थी लेकिन क्या गरणाम निकला। यहा मैंने पूछा था कि ऐस कितने केसेज हैं, कीन पकड़े गये और क्या परिणाम निकला। मैंने यह भी पूछा था।

"Cases wherein Courts including High Courts and Supreme Court have held RSS guilty of believing in violence, fascism or not believing in parliamentary democracy."

होम मिनिस्ट्री जबाब देनी है -

"The required information is not available with this Ministry nor are they aware of any published document containing this information."

लेकिन मैं ग्रापकी जानकारी के लिये कहता हं---

There is a book RSS and Court verdicts'. There is a book. I will cite that.

ग्राप के डिपार्टमेंट को इतना भी मालम नहीं है, ग्राप का डिपार्टमेंट क्या करता है, उमको क्यों मालुम नही है-यह छपी हुई किताब है, जहां जहां कोर्ट वर्डिक्ट भ्राया है, इस किताब में उसका उल्लेख है-शान्ध्र में 1955 में, पटना में 1961 में, बम्बई में 1962 में, इलाहाबाद में 1963 में, जोधपूर में 1964 में, दिल्ली में 1965 में, बंगलीर में 1966 में. चण्डीगढ़ में 1967 में. महमदाबाद मे 1970 में, इलाहाबाद में 1971 में, डिस्टिक्ट ग्राफ देहराइन में 1967 में कोर्ट वर्डिक्टस ग्राये, लेकिन ग्रापकी होम मिनिस्टी कहनी है कि हमको मालम नहीं है

एक माननीय सबस्य : कोर्ट में क्यों जाना पडा ?

श्री जगन्नाथराव जोशी: ग्राप जैसे लोग कोर्ट में जाते है भीर थप्पड खाकर भाने है, जिस तरह से 7 जन्तर-मन्तर रोड के मामले में हथा उसी तरह से यहां भी हथा हिन्द्रम्यान में अभी भी न्याय बाकी है. लोगों को न्याय मिलने की श्राशा है, इसीलिये मैं यहा पर खड़ा होकर बोल रहा हू, भ्राज लोग चीराहो पर आ रहे है और आपकी करनूतों को देख रहे हैं (व्यवधान) भारतीय संस्कृति कहती है कि महिलामो के साथ झगड़ा नही करना चाहिये, यह पूरुष वर्ग है। यहां काफी है, श्राप इनको सम्भालने की चिन्ता क्यो करती है ।

यदि ग्राप लोकतन्त्रात्मक पद्धति से कार्य करना चाहते है तो मैं आपसे माग करता हं--Let there be a white paper.

इस तरह से भार० एस० एस० को. ग्रानन्द मार्गियो को साथ जोडने का क्या मनलब है। किसी को कुछ पता नहीं है कि बार० एस० एस० क्या है, ब्रानन्द मार्ग क्या है. यहां तक कि कोर्ट बर्डिक्ट्स का भी पता नहीं है।

श्चिं जगन्नाच राव जोर्शः]

287

श्री ए० जी० खेर जो उत्तर प्रदेश में मिनिस्टर रहे हैं भीर बाद में ग्रसेम्बली में स्पीकर बने, उन्होंने उन्हीं दिनों बतलाया था. कपुर कमीशन ने भी यह कहा

"Having made a searching enquiry into the conspiracy to murder Mahatma Gandhi, the Kapur Commission categorically declared:

· An experienced administrator like Mr. R. N. Banerjee has stated that the RSS as such were not responsible for murder of Mahatma Gandhi, meaning thereby that one could not name the organisation as such as being responsible for that most diabolical crime, the murder of the apostle of peace...."

इस मदन में जब श्री चन्द्रजीत यादव ने इस प्रकार का ग्रारोप लगाया तो मैंने उठ कर कहा था कि ऐमे नहीं चलेगा, इस की साबिन करो । यदि भाप ऐसे कहने जानेने तो हम बिल्कुल नहीं मानेगे। श्री ए० जी० खेर ने जिनका मैने अभी उल्नख किया था---

"A. G. Kher, Minister of Local Self-Government in Uttar Pradesh and a staunch follower of Patel, responded to the criticism by asking why certain Congressmen opposed the RSS when members of Arya Samaj or the Jamat-ul-Ulema were eligible."

ग्रागे वह कहते हैं--

"It cannot be that they were involved in Gandhi's murder for they were exonerated of that charge in a court of law. He continued by saying 'calling them Fascists, abusing and insulting them, and again repeating old charges and again does not serve any purpose, nor is it a Gandhian method "

यह ए० जी० खेर जी का कहना है। क्या भ्राप कोई ऐसा उदाहरण दे सकते हैं ? भ्रार० एस० एस० कोई छिपा नही है, उसके बारे में किताब-पर-किताब हैं। मवाल यह है कि इस देश के अन्दर किसी को संगठन बनाने का अधिकार है या नहीं है ? आर॰ एस० एस० हिन्दुमो का संगठन है, क्या सरकार हिन्द्रश्रों का विचार नहीं करती, क्या सरकार ने ब्राटिकल 25 में हिन्दुओं का डिस्क्रिप्शन नहीं दिया है, सिंख उसमें झाते है, जैन उस में म्राते है, क्या हिन्द्र कोड म्रापने नही बनाया ? हर एक को संगठन बनाने का इस देश में ग्रधिकार है, देशभक्ति के ग्राधार पर चरित्र निर्माण करने का हर एक को प्रधिकार है। लेकिन इस तरह में लगातार गलत सलत बोलते रहना--

D.G., 1974-75

This is the worst form of fascism in this world.

क्योकि हम इतने विदेशी बन गये है कि अगर हमको गाली भी देनी हो तो स्वदेशी में देनी नहीं शाती। कोई कहना है ये नाजी है, कोई कहना है फासिस्ट है, कोई कहता है-कम्युनिस्ट हैं, कोई कहता है--फलाने है और जो गाधी जी का नाम लेते है, वे कहते है कि हम यगटक है। कोई ग्रन्छी बात कहते हैं तो वह भी बाहर की भौर बुरी बात कहते हैं तो वह भी बाहर की, हिन्दुस्तान में कोई विकास करना चाहेतो वह भी नहीं कर सकते।

Do you know what is fascism 1967 से लेकर ग्राज तक स्वाल करता भ्राया ह, लेकिन उत्तर नहीं भाता। फिर भी बार बार यहां ऋारोप लगाते जाना—यह फामिज्म है भीर इसलिये है कि भापके पास अधिकार है। आप चाहें तो मेरी आवाज बन्द कर सकते हैं, आप चाहे तो मुझको पकड़ कर जेल में बन्द कर सकते है, झूठे भारीफ लगा सकते है।

नागरवाला मर गये, लेकिन उन्हों ने बेरे पास एक निट्ठो लिख कर श्रेणी बी, उस विट्ठी को नैंने सदन में पढ कर सुनाया था। उस ने कहा था--

"Why do you catch the tail of the bull and not its horn?"

मैंने चाव्हग जो से पूछा
"Mr. Nagarwala considers himself to
be tail in the drams. Who is the
horn?"

क्या हुमा, कोई जवाब म्राया— This is fascism

इस सदन में बैठने के बाद भी 60 लाख रुपये का घपला होता है, घुटाल। होता है, गड़बड़ होती है, लेकिन पता नही चलता-- This is fascism श्रधिकार के मद में. श्रधिका की मस्ती में दूसरी का मृह दबाना, बन्द करना--This is the worst type of fascism. ले ित मैं बन नान। चाहता हु--यह भारत की भूमि रै-न हिटलर की न मुसोलिनी की ।. इस भूमि ने पावित्य, पराऋम और पुरुषार्थ भरा है। कि यहा दसन वा रावण हुमा, लेकिन उसको भी समाप्त करने वाचे राम इसी भूमि में पैदा हुए। दूनिया को दानवता को प्रोर ले जाने वाला कंस इसी भूमि में पैदा हमा, नेकिन उसको भी सीधा करने वाला कृष्ण इसी भूमि में पैदा हुए । यह भूमि पूर्वार्य, पराक्रम और चारिक्य से भरी पड़ी है। इसी लिये गांधी जी की हत्या के भारोप में 80 हजार लोगों को बन्द करने के बाद भी माप उनका कुछ न जिगाइ सके, उस घटना के 27 साल बाद भी भाप इस तरह की बातें कर एहे हैं-- भाप को शम भानी चाहिये। (अवद्यान) ग्राप हुंस हे हैं। जो जेल में जाते हैं, जिनको हिन करना पड़ता है, वे उसको जानते हैं, 80 हजार लोगों को पकड़ कर भी भ्राप भ्रारोप साबित नहीं कर पाँथे, लेकिन उसके बाद भी यहा पर बोलते जाये—यह फासिज्म नहीं है तो क्या है? जो भ्राज हम रहे हैं उन को कल रोना पड़ेगा, मैं यह ज्योतिष के नाने भविष्यवाणी नहीं कर रहा हूं, लेकिन जनता भ्रापको गन्ने पर बैठा कर हजामत करके साबरमती में ले जाकर हुवो देगो। यह दिन मत भूने (व्यव्यान)

भी बृटा सिंह (रो ड) जाध्यक्ष महोदय, मेरा व्यवस्था या प्रश्न है। इन्होंने कहा है थि सबकी हजामत करेंगे, मैं इस पर शाबजेक्शन यारता हूं।

श्री अगसाय राव के शी: सबसे जादा गुरु गोविन्द सिंह जी वा नाम समग्र भारत-बर्ष में यदि िसी ने पहनाया है तो संघ ने पहुंचाया है। मैं जब व बाब में घुमा, तब मैंने बत्तलाया ि जब नै सघ में गया तो मैंने राणा प्रताप का नाम मुना, मैं ने गृह गोविंद सिंह जी नाम सूना, मैंने बीर बन्दा बैरागी का नाम सूना तो जितना मेरे मन में प्यार हैं. जितना मेरे मन में पादर गृह गोविन्द सिंह जीं के लिए उतना मैं समझता हं शायद िसी में हो। जिन्होंने देश के लिए कुर्बानी दो ऐसे वीरवर के उदाहरण सामने रखे जाते हैं तो मैं उस ढंग से नही बोला हु, घाप मुझे गलत न समझे। मैं यह कह रहा का कि लोकतन्त्र का मतलब यह हैं कि भाप विरोध कर सकते हैं, भाप प्रसहमति प्रकट कर सकते हैं किन्तू लगातार मुठे मारोप भीर वह भारोप भी प्रस्ताव में पास करके रखना भीर भारे एस॰ एस॰

[बी जगजान राव जोगी]

तथा भ्रानन्दमार्ग को एक साथ जोड दिया इसका मतलब क्या है? इसका मतलब यह है कि गृह मतालय का कारबार चलाने की क्षमता भ्राप में रही नहीं।

जहा तक सीमा विवाद का प्रश्न है उसके सम्बन्ध में दीक्षित जी से मेरी बात हुई, मेरी और प्रो॰ दण्डवते जी की दोक्षित जो से बात हुई लेकिन उसका इसमें उल्लेख तक नहीं है। हमने माग की थी कि 26 जनवरी के पहले सीमा विवाद हल हो जाये नेकिन उसका इसमें उल्नेख तक नहीं है। कितने एजिटेशन्य हुए, मकान जरे, दुकाने जली, कितनी जाने गई, क्या वह एजिटेशन नहीं थे नेकिन इसमे उल्लेख तक नहीं है। इमलिए क्या यह कप्लीट डाकूमेट हैं? महाराष्ट्र मे एजिटेशन हुए, मैसूर मे एजिस्टेशन हु लेकिन में मा विवाद हल न करने दाला सरकार उसको भून गई। हम तो माग कर रहे थे कि 26 जनवरी के पहले इस विवाद को हल किया अये। सभी ा समाधान होगा, ऐसा हल निकलेगा नहीं लेकिन जो भी इल हो वह जल्दी निकले। किसी न किसी को उससे ग्रसन्तोष जरूर होगा किन्तु वह असन्तोष एक बार हो होगा , बार बार नही होगा । इसलिए जहा तक सीमा-विवाद का सवाल है, जितनी मंन्दी यह हो उतना ही अच्छा है।

फारेनसं के बारे में जिक किया गया। मेरी समझ में नहीं आता फादर फेरर को, महाराष्ट्र में उनकी गतिविधिया ठीक नहीं है

यह बता कर जब माध्र भेजा गया ती माध्र मे भी उनको घरेस्ट किया है। उसी समय मैंने हाउस मे पूछा था क्या केन्द्र शानित कोई नीति है या नहीं विदेशों के बारे में ? पहले महाराष्ट्र सरकार उनको भेजती है यह कहकर कि उनकी गतिविधियां ठीक नहीं है तो माध सरकार ले लेती है। तो प्रापकी कोई नीति नहीं है। कोई तो एक नोति होनी चाहिए। देश का कोई चित्र , कोई लक्ष्य ग्रापके सामने है या नहीं ? या एसे हो चलेगा। ग्रभः मिजोरम की कुछ बात ग्राई, कभी नागलिंड को बात श्राती है भीर कभी मेचालय की बात श्राती है। मेरो समझ में नहीं ग्राता ग्राप राज्य शासन क्या चलाते है। यूनियन टेरिटरी में दादरा नागर हवेली का उन्लेख है, वहा से जन-प्रतिनिधि भी ग्राकर बैठता है। 1954 में गोवा का एए हिस्सा दादारा नागर हवेली म् तुत हुग्रा लेकिन न बह गोवा मे है, न गुजर।त मे है ग्रौर न महाराष्ट्र मे है। केन्द्र गामित हो गया । म्राखिर कौन सा तरीका है राज्य चलाने का? राज्य शासन चाने के लिए 1955 मे भ्रापने कमीशन क्यो बिठाया जब बडे राज्य ग्राये, ए वो सी डो को ए क्यो किया? वह क्यो चल रहा है? कोई तो रामने । होना चाहिए। दादारा नागर हवेली धनग तयो रहे[?] बाकी छोट-छोटे हिस्से भ्रलग त्यो रहे? हत राष्ट्रीय एकात्मता की बात करते हैं लेकिन जो हमारे पूर्वोत्तर प्रदेश है उन हो हमने पिछले 27 वर्षी एकात्मता कं 'य जोड़ने की कौन सो कोशिश की। माज मेरे मित्र ने बलात्कार के उदाहरण दिए, न कवल यह सदत बहिक पूरा देश एजिटेटे है है। एक छोटे से हिस्से में गुंसा होता जाये, जैसा

कि माननीय उपाध्यक्ष महोदय ने विचार दीये के , एसी भावना यहां पर होती जाये और उस पर शाधन विचार न करे, यह धण्छा नहीं है। राष्ट्रीय एकात्मता वा मतलब होता है कि देश देह है और राष्ट्र धात्मा होती है। सांस्कृतिक विचारधारा एक होती है। धलग भलग भांखे होने के बाद भी हम एक ही देखते हैं। तो समग्र भारतवर्ष में एक विचारवारा के भाषार पर सभी को खडा करने में हम भ्रमफल रहे हैं। केन्द्रीय गृह मन्त्रालय के ग्रधीन कितनी बातें आती है, शशि भूषण जी चले गए। वं हमेशा प्रफसरों के खिलाफ बहुत बोलते हैं।जब दिल्ली का सवाल झाता है, जो म्युनिसिपल कमिश्नर है जनता के चुरे हुए प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्ताव पास किया जाना है लेकिन वह रही की टो हरे। दे फे हन के लायक हो जाता है तो श्राखिर प्राप :हा पर बैठ कर करते वया है, यह मेरी समझ मे नही आता। जो ब्यूरोईंटस है उनको ग्राप मजबूत करने की कोशिश करे क्योंकि वहा भारतीय जन संघ के हाथ में है, यह कहातक उचित है ? नौकरशाही की धगर कहीं गलती है तो उभको ग्राप ठीक हरें। इयलिए मैं कड्ना चाहना हूं विचहंटिंग, विन्ति फिकेशन और मेलाइनिंग, यह जो शब चलता है इसका नाम लोकतन्त्र नही है। एक बार भ्रापने पाबन्दी लगाई, फिर धाप लगा सकते ह क्योंकि माप फासिस्ट गवर्नमेंट हैं लेकिन भारत माता ने जिसको जन्म दिया है वह ऐसी गलत धारणा और ऐसे कूर दमन से हटेगां नही बिका भारतीय जनता के विचार कार मायेगे।

इन झब्दों के साथ मैं आपको धन्यवाद वैते हुए प्रपनी बात समाप्त करता हूं। MR. DEPUTY-SPEAKER: I have been requested to convey to the Congress members that they should not take more than ten minutes each.

Shri R. S. Pandey.

भी राम सहाय पांडे (राजनंदगांव) : उपाध्यक्ष महोदय, गृह मंन्त्रालय के अनुदान का मैं समर्थन करता हूं। ग्रांतरिक शांति भीर सुरक्षा का निर्वाह बीक्षित जी के नेतृत्व में मंत्रालय जिस कुशलता, ग्रीचित्य ग्रीर योग्यता के साथ कर रहा है उसके लिए मैं बधाई देता हूं। मुझे यह कहने में गर्व भी होता है कि बीक्षित जी के साथ मुझे उनके नेतृत्व में काम करने का ग्रवसर मिला पिछले तीस वर्षों में भौर मैं उनकी सादगी, चरित्र, कर्म-निष्ठा तथा सपस्या को जानता हुं। नेतृत्व की पावता जितनी उनमे है उसको भी मैं जानता हूं। ग्राज जिन परिस्थितियों के साथ उन्हें गृह मन्त्रालय का संचालन करना पड़ रहा है, मुझे घहसास है कि कितनी कठि-नाइयों से वे गु।र रहे होंगे।

जोशी जी ने सभी सार एस एस की सफाई बी और कहा कि गांघी जी के मर्डर के सन्दर्भ में 80 हजार लोगों को जेल में बन्द कर दिया गया भीर सन्त में सिद्ध नहीं हुमा कि गांघी जी के मर्डर में सार एस एस का हाथ था। एक संस्था 80 हजार ही नहीं, 1-2 लाख सदस्य भी हो सकते हैं लेकिन जो कुक्त्य, कुकमें और हत्या जिस किसी एक मादमी ने की वह एक मादमी नहीं था, वह एक विचार-धारा थी जिसमें सखण्ड भारत की परिकल्पना थी, जिसमें मुसलमानों के प्रति एक चृणा का भाव का, जिसमें सम्प्रदायवाद की भावना थी-सीर इस विचारचारा के समन्वय का जो

[श्री राम सहाय पांडे[प्रतीक या उसने रिवाल्वर उठाया भीर भावि के पुजारी बापू को गोली मार दी। (व्यवधान) हम 80 हजार लोगो को बोच नही देते, ग्रगर भार एस एस भदानत से बच गई तो बच गई, यह दूसरी बात है लेकिन भाज जो सर फूट रहा है जनसब का मौर जैसा कि वाजपेबी जी ने कहा कि एकस्ट्रा कास्टीट्यू-शनल मीन्स के भाष्यम से हम कान्ति करेगे भीर भगर हमारी बात नहीं सुनी आयेर्गः तो एक पैरलल माल इंडिया रेडियो जैसा साधन हम तैयार करेगे अनता तक पहुचने के लिए-यह सब क्या है? मैं फासिज्म के अर्थ मे नहीजाना चाहता, मैं यह भी नही कहना चाहता ने कितने गम्भीर है इस बात को कहने मे, लेकिन एक बात उन्होने कही है। मैं जानना चाहता हू क्या यह स्वर लोकतन्त्रवादी है और क्या इसमे शांति निहित है? क्या एकता और समता इसमे है? क्या लोक-तन्त्र की पूजा, उपासना भीर साधाना है इसमे ? कदाचित नही है। इस मे विद्रोह के स्वर हैं, भाव हैं। और इसी तरह हमारे दक्षिण का एक प्रदेश जिस ने व्हाइट पेपर फीर ग्रेटर ग्रटोनामी की डिमान्ड की है भीर कहा है कि सिर्फ ऐक्सटनेल मैटर और डिफेन्स में केन्द्र के साथ सम्बद्ध रहना चाहते हैं, बाकी के बारे से हम स्वत्रता चाहते हैं। यह स्वर क्या है ? यह एक सेरोशन का स्वर है। इस का एक इतिहास ग्रमरीका से लिकन के समय हुआ था, उस को मौत के बाट उतार दिया गया था। यह स्वर क्या है?

माज लोकतन्त्र में बो सब से बड़ी बातें हैं। एक तो यह है कि लोकतन्त्र में विरोधी

वस को हम सता का उत्तराधिकरी भानते है। सता किसी के पास मास्वत नहीं रह सकती प्रगर लोकतन्त्र है तो। भीर लोकतन्त्र है। दुनिया के सब लोगों ने एक स्वर से इस बात को सराहा है कि हम गरीब होते हुए भी, हमारे कास्टीट्र्ऐंस, जनता पढ़ी लिखी न होते दूर भी इस भाव को इस व्यवस्था भौर परिभाषा के परिवेश में भा कर यह जानती है कि वोट किस को जाना है। जिस समय श्रीमती इन्दिरा गाधी ने यह कहा कि हम को स्टेबिल सरकार की भावण्यकता है क्योंकि हम को बाहर से खतरा है, हम को कुशल प्रशासन भीर बहुमत की भावश्यकता है तो जनता ने उन को बहुमत दिया भीर 5, 6 इलेक्शन्स मे परिचय दिया कि लोकतन्त्रव की भाचरण में कितने हम सफल है।

दूसरे यहा जोकतत की छाया के भन्तर्गत उत्तर। विकार का मधिकार विरोधी दल को है वहा मैं यह भी कहता हू कि मतभेद का भी भादर है। बटंन्ड रसल ने एक जगह कहा है कि लोकतन्त्र की यब से बड़ी देन यह है कि हम भतमेद का मादर करते हैं, भगर रचनात्मक हो । भगर विद्रोह के स्वर है, लोकतन्त्र की मर्थादा को बिगडने की प्रवृत्ति है तो हम हैसे उस मत मेर का बादर करेगे बाज इस देश में जिन परिस्थितियों से देश को गुजरना पड रहा है, गृह मत्री जी को गुजरना पड रहा है वह हम सभी जानते हैं। भूब, मनाव कीमतो का बढ़ना, बेकारी, धशान्ति, प्रसतोव, घान्दीलन, घेराव, हड़वाने, भारत बद , म गर्नी , विरोधियों का मनौक-न क्र प्राचरण, विदायियों को भड़काना और ऐ स्ट्रा कास्टीट्यूशनल मीन्स के माञ्चम

से काइम करना । यह सब स्वर लोकतंत्रवाद के विरोध में जाते हैं।

हम तो झाप को यह झवसर देने को तैयार हैं कि जनता झगर झाप के पक्ष में हो झाप इत्रर बैठिये। महजनता के ऊरर छोड़ बीजिये। लेकिन भनी जिस को जनता ने दायित्व दिया है उस हे काम में प्रंडगा न डालिये, भीर डालिये तो रचनात्म ह डालिये। विद्रोह का माचरण ठीक भ्राचरण नही है।

एक बात् उपाध्यक्ष जी, मैं कह बू कि हमारा एक भूगोल है सा भर में उस भूगोल के उस घोर, देश की सीमा के उस घोर घगर कोई विद्रोह करता है हम उस को क्या कहते हैं? तो देश के उस तरफ करने वाले विद्रोईं। को जब हम गद्दार कहते हैं तो बातरिक सुरक्षा भीर शान्ति भग करने वाले को हम क्या कहेंगे? मैं गद्दार नहीं कहना चाहता नवीकि वडा सक्त शब्द है। लेकिन मैं कहता हूं कि किस समय भूख हो, जिस समय चीओं का भ्रमाव हो. कुछ प्राकृतिक कारण हां, जहा वनैक मार्केट हो, जहा भ्रष्टाचार हो रहा हो, जहा मिलावट हो रही हो, ग्राज विरोधी दल ग्रगर कहते कि हम साथ देगे भीर हम मिल कर इस देश की समस्या के समाधान के लिये न्हें से कथा मिला कर इस ग्रावरिक व्यवस्था में भांतरिक शासन की कुशलता में मागे बढ़ने में मगर वह हम त साब देते तो हम इत का स्वागत करते। लेकिन ऐला नहीं हो रहा है। मैं भाप से कहता हू कि बहुत पो त्रदीय बात है। यह जो गुजरात में हुआ, एक बनी बनावी बसेम्बली का, एक समिति का निर्मीण हुचा चौर एल० एल० ज० की इंटिंफिटेट करना, उन की धमकाना उन का मुंडन करना सधे पर बिडा कर जनूस निकालना, यह सब के सब म गोकतंत्रीव प्रकिश छि छोड़ापन है। यह शोमा नही देता।

सब मे पहनी बात यह है कि सा बीजों का ग्रमाव है, लेकिन यह कीन लोग ये जो बम्बई की गोबी में सरे हुए धनाज के जहाज जो भ्रास्ट्रेलिया से भ्राये थे हड़ताल किस ने करायी बी? चिनी भैंने कान्ति की कल्पना के नीचे बह सब हो रहा था। कौन थे लोकांमैन को प्रोवोक करने वाले लोग कि हडताल कर बो जब कि गेहुसहाराष्ट्रको जा रहा था। यह क्या बात है ? यह कौन सी बात है। में समज्ञता हूं कि मांतरिक सुरक्षा के लिए यह सब में बड़ी घातक बात है। जब अनाज की कभी हो और अनाज बाहर से मंगा रहे, हो, अनाज आ गया हो, उस की अनजोडिंग के बिए हडताल करे, यह ठीक नही है। आज हमें प्रजान मंत्री के कल के शब्द याद घाते हैं जब उन्होने कहा :

"I am going out of India with a heavy heart. There are many problems. I should be here."

लेकिन दुनिया के अन्तर्राष्ट्रीय यामलों से कुछ ऐसे सम्बन्ध हैं कि हम हो जाना पड़ रहा है। प्रधान मंत्री का बाहर चार दिन के लिए जाना भरे हुए हुइय से यह संकेत करता है कि कितनी चिता उन को होगी।

इस लिए हन कहते हैं कि चाहे करप्शन हों, जो कि है कोई इस से इन्कार नहीं करता, चाहे मिलावट हो, ब्रेक मार्केट हो, धन का संखय हो रहा है, गरीब और गरीब होता जा रहा है, चमीर भीर भगीर होता जा रहा है, इन राष्ट्रीय समस्यामों के लिए सारेग मिखी

श्री राम महाय पान्डे]

कर इस सबन में काम करे। ग्राप बैठे या हम बैठे इम से फर्क नहीं पड़ेगा किना में ग्राप का भी श्र दर है, जनता जिस को चाने वह शासन करे। लेकिन ग्राज जो मार्नानय ज्योतिर्मय बसु ने कुछ इडिविजेश्वल कैसेज ले कर जो गईमेट के कैर क्टर ग्रमेसिनेशन की बात की कि बो कैप्टेन ने किस को रेप कर दिया। इस का क्या पूफ है। लेकिन माल्म होता है कि बडा गारी श्रत्याचार होता जा रहा है, जब कि कोई पूफ नहीं है। एक चिट्ठी लिंब बो किन रेफ़रेस पर, वह बात सदन के लिए शोमा की बात नहीं है।

सन्त में मैं कुछ सुझाव देना चाहता हूं। इस नाजुक मीने पर जब कि चीजों की कभी है, उपभोक्ता लाहि-लाहि क रहा है, 20, 25 झादमी रनुकों जो सडलट्रेशन की बजह से मर गये हमारी गर्बन समें में झुक जाती है, उन बेचारों ने या कहर किया था जो मरे। ऐसे जोग जो सडल्ट्रेशन में इनवाल्ब्ड है उन को कम से कम के पिटल पनिशमेट हाना चाहिए।

हरिकन सैन के बारे में कहा था कि उनकी सुरक्षा के लिए प्रधान मन्नी ने मुख्य मनीयों के नीचे एक सैन बनायी है। उस को अधिक संग्रीधक कड़ाई के साथ कार्य करने के लिए आग्रह किया जाये।

साम्प्रदायिक पार्टियो पर कड़ी निवाह रखी जाये। चाहे के टंम वह बच जाय, लेकिन दामन पर खून के छीटे लगे हुए हैं। यह बात में कह सकता हू आर०एस०एस० के लिए, शिव सेना ने लिए, मुस्लिम लीग के लिए,। जितनी भी साम्प्रदायिक सस्थाय हैं इन सब के दामन खून मे रगे हुए हैं।

विद्यायियों को अभिक सुविधाये मिलनी चाहिये। यह एक ऐसा समुदाय है जो अधिक सुविधामा की पासता रखता है। शिक्षण व्यवस्था में परिवर्तन की मानव्यकता है। सैयेशन ने ऊपर माप को चेतना भीर जागवकता के माथ ख्याल करना चाहिए, भीर स्वतन्न माकाशवाणी तथा एवस्ट्रा कास्टीट्रयूशनल मीत्म वे जो स्वर उभर रहे हैं जहा इन भी तरफमच्छे प्रहरी की तरह माप को देखना चाहिए भीर लोकतत्र की क्षा करनी चाहिए।

इन शब्दों के साय में गृह मजालय की अनुदानों का समर्थन करता हूं।

श्री इसहाक सम्मली (अमरोग) डिप्टी स्पीकर साहब , होन मिनिस्ट्री का यह साल नाकामियो का साल कहा जा सकता है। इस साल मे होम मिनिस्ट्री को जितनी नाकामी का मह देखना पड़ा, शायद किसी भीर को उतनी नाकामी नहीं हुई है। प्रापने मुलायजा फरम या होगा कि यह नाकामियाँ बहुत कुछ इन के अपने हाथों की पैदा की हुई है। क्या यह हकीकत नहीं है कि गुजरात के अन्दर जो कुछ हुआ, बिहार के प्रन्दर जो कुछ हो रहा है, जहा लोगों को, नव-यवको को, विद्यार्थियों को एक्सप्लायट करने का मीका मिलता है, वहा यह सरकार भीर यह काग्रेम खुद यह माका देती है। क्यो नहीं होम मिनिस्टि। कह देती है उन मिनिस्टरो से , जिन के खिलाफ कपशन के चार्जेज लगे हुए हैं, कि हट जाओं भीर वे नहीं हटते हैं तो होम मिनिस्टी का यह फर्ज है कि वह उन पर एक्शन ले, उन को हटाए, लेकिन इसके बजाय उन को प्रोटेब्ट किया जाता है भीर उस प्रोटेस्ट के कारण रिएक्शनरिज को मौका मिसता है सिधी साधी पब्लिक को साथ लेकर, नौजवानों को साब ले कर ऋष्ट एडमिस्ट्रिशन पर हमसा करे। इस से यह बैमोकेसी की वडों की भी खोदते हैं। अफ़सोस है कि दीक्षित जी यहां मौज्द नहीं हैं भीर पांडे जी की जवान से प्रपनी तारीफ सुनकर वे असे गये। मुझे तो ताज्जुब है कि इस होन निनिस्ट्री की पांचीं के नीचे जो कुछ हुया है, उन की चन्य विकासें भी क्वालात को समझानि को बहुत काफी हैं।

पिछले दौ तीन वर्षी गे हम ने महसूस किया था कि हरिजनों पर जो हम र ही रहे हैं, उन से सबक लैकर होम मिनिस्ट्री कुछ ऐसे कदम उठाएगी कि ग्रायन्दा हरिजनों पर श्रत्याचार न ह सकें, लेकिन डिप्टी स्पीकर साहब, हरिजनों पर ग्रत्याचारों का एक सिल-सिला जारी है। जिस स्टेट के दीक्षित जी भाते हैं, उत्तर प्रदेश से, वहा क्या नही हो रहा है। जब हम इन सवाल को उठाते हैं, तो जवाब मिल जाता है कि क्या किया जाए। कहीं पर मजिस्ट्रेट इंक्वारी करा दी ग्रीर ग्रगर बडी भारी महरवानी हो गई, तो जुडिश । त इन्द्रवारी करा दी ? क्या इस तरह से इन च जों से निपटा जा सकता है ? आप को माल्म है कि पिछले दिनों जिला बोदा के एक गांव पर, हरिजनी क पर गांव ५२ हमला किया गया था आर उनकी कितना नकसान पहुंचाया गया था। सरकार ने हरिजनों की जिम्मेवारी मपने जपर ली है, हरिजनों भौर माइनोरिटीज की हिफाजत की जिस्मेशरी ग्रंपने जिस्मे रखी है भीर इस के लिए बड़े बड़े एलान किए जाते हैं, लेकिन मैं अर्ज करना चाहता ह कि बांदां मे जो कुछ हमा, भक्तांस है कि पाण्डे जी दीक्षित जी की तारीफ करके चले गये. में जाना चाहुंगा ।

श्री राम सहाय पाण्डे : मैं प्रहा पर हूं।

भी इसहाक सकली: शुकिया। मैं जानना बाह्गा कि होम मिनिस्ट्री ने इस के लिए क्या कदम उठाए हैं ? झाज दीक्षित जी कमेटी मे बैठ कर कह देते हैं कि इस से ज्यादा क्या किया जा सकता है।

विष्टी स्पीकर साहब, मैं बांदां के बारे में कह रहां हूं कि वहां के एक सांब में हिस्जिनों पर भरवाचार हुए, तो दीक्षत जी से बर्त जूनियर उत्तर प्रदेश के चीफ मिनिस्टर, श्री हेमवती बहुबुजा ने काबले सारीफ कदम उठाया। उन्होंने सारे बाने का बहां से तबावसा कर दिया। एक जूनियर मिनिस्टर यह कर सकता है लेकिन वीक्षित जी कहते हैं कि क्या किया जाए।

भी राम सहाय पांडे : दीकित जी ने कहा था करने के लिए।

भी इसहाक सम्भली : गलत कहते हैं। ब्राप जरा इस पर गोर फरमाऐ, खाली एक जगह क बात नहीं है। कानपूर में यह हुआ, देवरिया में हम्रा भीर कई दूसरी जगहों पर हुआ। भ्राप एडिमिनिस्ट्रेशन की बात कह रहे हैं भौर उसकी तारीफ कर रहे हैं। भाप जरा एडमिनिस्ट्रेशन कं। देखें। इसी दिल्ली के अन्दर डिप्टी स्पीकर साहब, दिन रात इन्सानों के जठाने के वाकयात होते है। क्या घाप को याद नही है कि राकेश खन्ना, एक नौजवान को जुन, 1973 मेगायब कर दिया था। मैं चाहगा कि मिर्धा जी, जोकि बहुत समझ-दार , शरीफ भीर दर्दमन्द इन्सान हैं, जरा नोट करे कि राहेश खन्ता की, जिसके बाप इसी लोक सभा मे काम करते हैं, गायब कर दिया जाता है जुन 1973 को और जुन 1974 ध्र_ाने वाला है। उस का गता नही पुलिस इतनी निकम्मी हो गई हैं कि बह पता नहीं चला सकती। ग्रगर पुलिस निकम्मी है, तो मैं कहगा कि सी० बी० माई० स्पूर्व इस केस को किया जाये, सी॰ बी॰ धाई॰ से माप इंक्वायरी कराइये। उसके लिए कहा जाएं कि सी० बी० बाई० तो बडे बडे मामलात की इक्ब यरी करनी है, वह तो 50 करोड़ 60 करोंड वाले मामलो की जाच मैं कहगा कि इन्सानो की जिन्दगी, इमन लाइफ की कीमत तो उससे ज्यादा हो सकती है । क्यों नही माप ने इस बारे में कदम उठाना हैं?

सी॰ बी॰ धाई॰ की बात धाई तो एक बत धीर धर्ज कर दूं। यह रिपोर्ट मेरे हाथ मे है। इस में कहा गया है कि सी॰ बी॰ धाई॰ जिस के ऊपर नडी धहम जिम्मेदारी डाली बाती है धीर वंकाम भी करते हैं, वेकिन उन

र्श्वः इसहाक सभनी

लोगों की भाज हालत क्या है। होम मिनि-स्ट्री ने उन लोगों के रहने के लिए क्वार्टर तक का इन्तजाम नहीं किया है। क्या काम लेगे भाप एसे लोगों से जो इस तरह के कट एलीमेटम के खिलाफ इक्वायरी करते है, इन्तजाम न हो कि वह रात को सिर छिपा कर कही सो सके। मैं भ्राप की इस तरफ तवज्जा दिलान। चाहगा कि खाली यह कह कर काम नहीं चल सकता है कि सूबों की सरकारे इस सबजेक्ट की मालिक हैं भीर व इस पर भीर गौर करेगी। जैसा मैंने भभी भर्ज किया कि मरकार की यह जिम्मेदारी है कि जन्होंने हरिज में भीर माइनोरिटीज के बारे में जिस्मे-दारी ली है। माज क्या हालत है। इस साल मे, डिप्टी स्पीकर साहब, जितने फसाद हये, जितने कम्युनल रायटम हुरू, करीब करीब वहीं टेक्नीक है जो कि प्रारव्यसव एसव की टानीक होती है. दकानों पर निशान लगाने की और फिर उन को जलाना, मकानों को लुटना मोर फिर पुलिस के अरिये उन्ही लट' हुये. घर जले हुए लांगो को गिरफ्तार करना ग्रीर ग्राप सुन कर ताज्जुब करेगे, ग्रभी हाल ही मे गुजरात मे वहा पर तो श्रभी प्रेसीडेंट कल है गुजरात में कई जगह फमाद हवे। बोरमद एक छोटा मा कस्बा है, बहा पर तो यह किया गया कि बड़े बड़े व्यापारियों के मकानों पर चढ़ कर के छोट गरीब मलमानी के घरो मे गोली चलाकर लागों को मारा गया. जरूमी किया गया, लेकिन हालत यह है कि चाहे कितना करलेग्राम हो जाए गारति दी हो जाए चाहे कितनी तबाही हो जाए, हमारी हाम मिनिस्ट्री वहा के किसी वडे अफसर, वहा विमी पुलिस धफसर भीर बहा जिले के जिम्मेदार अविकारियों के खिलाफ कोई एक्णन नहीं लेती है।

नेशनल इंटेग्रेशन क'सिल के फैसलों का कितनी बार यहां इस सदन मे हवाना विधा जा चुका है। हमारे साथी सरजू पांडे जी,

एस॰ एम॰ बनर्जी साहब भौर दूसरे साथियों ने कई मर्तवा याद विलाया है कि नेशनल इटेग्रेशन कान्फेन्स ने भपने फैसलां मे- यह डेकलेयर किया था, एलान किया था कि जहां कही फसादात होंगे, वहां के जिलों के झिछ-कारियों को उनके लिए रेस्पोसिक्स करार दिया जायगा। मै मालूम करना चाहता हु बड़े भदब के साथ, मिर्धा स हब भी इस की नोट करें भीर जरा मेहरवानी करके बतलाएं कि जहां फनादात हुये है बहुर कितनी जगह जिला भविकारियों के एगेन्स्ट एक्शन लिया गया। जवाब मिलेगा,एक नही,। हा, भगर कही कही किसी पर लिया भी होगा, यकीनी नहीं, तो किसी कास्टबिनां का ट्रासफर हो गया होगा । इससं ज्यादा नही । जो जिला ग्रधिकारी हैं, उस को हाथ नहीं लगा सकते है । हाथ ल तये कैंम, काश दीक्षित जी यहा मौजूद होते, दीक्षित जीने मुझासे फरमायाचा, अफसोस के साथ मुझे कोट करना पड़ता है, मुझ से उन्होंने फरमाया था कि नेशनल इटेग्रेशन कौसिल के फैमला मे यह खामी है कि को कसूरवार हो जिला अधिकारी भीर भी कसूरवार न हो, बोनो को एक ही लाठ: से हाक दिया गया. बोनों के खिलाफ एक्शन लेने के लिए कहा गया है । मैं कहुगा उन्होंने नेशनल इटेग्रेशन कान्फेन्स में बिल्कुल सही किया । उन्होने एक ही लाठी से नही हाका । दीक्षत जी, सारे ऋष्ट अफमरो को बचाना चाहते हैं । इसिंए उन्होने प्रपनी चिकिंग यह बनाई है। जरा गौर फरमाइए कि जहां फसाव होता है, दो हाल में से एक हाल तो होगा ही । या तो वहा के अफसर इतने निकम्मे हैं कि वहां पर फसाद हो गये। क्या कर रही थी उनकी इंटैलीजेंस, क्या कर रही थी उनकी गीं० बाई० डी॰ ? बहां ५ए फसाद हो गए तब या तो वह मुकरिमाना बामोशी शबत्यार किए हुए थी या इस ५र **उनकी साजिश की और तब फसाद हुए व**

नौकरियों में नहीं लिया जाता है, मुसलमान

306

उनके निकम्मेपन की वजह से या खामोशी भीर शिरकत जो उनकी उस मे थी उसकी बजह से हए। इनके सिवा तीसरी कोई वजह नहीं हो सकती है। जो भी वजह है यकीनन उस ग्रफसरों के खिलाफ एक्शन लिया जाना बाहिए जो इसके लिए जिम्मेवार लेकिन भफ्सोस के माथ मुझे कहना पडता है कि हमारा तर्ज्बा यह बताता है कि जहा कही फसादात हुए, जहा कही गोलिया चली और लोगो का खुन किया गया, मजदूरों की मारा गया , वहा के पुलिस ग्रफसरो को कुछ तर्राक्रिया बी गई है। बजाय इसके कि उनको सजाए दी जाती, उनके खिलाफ एक्शन लिया जाता उनको भीर तरिक्क्या दी गई। यू०पी० की कितनी मिसालं मैं भापकी खिदमत में पेश कर सकता ह। इस तरह के कुरप्ट ग्राफसरो को जो पहले ही डी०एस०पी० थे उनको एम० पी बनाया गया, ओ एस० पी० थे उनको एम० एस॰ पी॰ बनया गया भीर जो एस॰ एस॰ पी० थे उन को डी० ग्राई० जी० बनाया वया। मैं नाम लेना नहीं च हता ह। नामों की एक लम्बी लिस्ट मेरे पास है। मिर्चा जी जब हक्म इसे तब मै उनको पेश कर दूरा।

14.00 हावर्स

यहा पर एलान किया गया था कि माई-नोरिटी की हिफाजत के लिए कदम उठाए जाऐंगे । उनको मुलाजिमतो मे प्रापर रिष्टिजेटेशन दिया जाएगा, उनके साथ नाइसाफी हो सके इसके लिए खुद प्राइम मिनिस्टर न वादा यहा किया थ। लेकिन मेराखयाल है कि जा से प्राइम मिनिस्टर ने होम डिपार्टमैन्ट छोडा उन वादो को भूला दिया गया है। जो कुछ लिखा हुझा भी था उसको भी मिटा दिया गया है। मैं मानता ह कि हर तरफ बेरोजगारी है, लोगो मे बेचैनी है। लेकिन मैं पूछना चाहता हं कि क्या यह हकीकत नही है कि मेरे हिन्द बोस्त चाते सिफारिश करते हैं भीर कोंशिश करते है कि मुसलमान नौजवानों को नौकरिया मिलै लेकिन यह हकीकत है कि उनको मुसलमान होने

आता है ? म्राप तबज्जह वे मेरी इस बात पर। उर्बु के बारे में कितने ही वादे किए नए बाज तक लेकिन ग्राच के वादे कहा पर है ? यहा पर भी वादे किए गए है लेकिन उनको पूरानहीं कियागया है। मैंने खुद लिख कर भेजा था कि मुझे मेरी तकरीरों का हिन्दी के माथ साथ ऊर्द में भी, उर्द के रस्मृलखन में भी मझे विया जाए। लेकिन मैं देखता ह कि उर्दू रम्मुलखत गायब रहता है। मालुम नहीं कि लोक सभा पर भी कुछ इसका ग्रमर पड़ा है। उर्दु के बारे में कितती ही कमेटीया बनाई गई है। एक कमेटी बनाई गई थी जिस के चेयरमैन ग्राई० के० गजराल थे। में पृक्षना चाहता हूं कि कहा है उनकी रिपोर्ट ? उर्द के बारे में प्राप चाहे दम हजार रियायते दे बीस हजार मर्क्यलर जारी करे कुछ नहीं होगा भीर तब तक नहीं होगा जब तक कि उर्द को उसका कानृती हक नहीं मिनेगा। जब तक भ्राप ऐसा नहीं करने है उर्दृकों बचाने का कोई दूसरा

होने के नाते उन के साथ डिसक्रि:मनेशन किया

माज हर तरफ चारबाजारी, रिश्वतखोरी श्रीर मिलावट का बाजार गर्न हैं। म सरकार में मालूम करना चाहता हू वि सरकार कितने मिलावट करने वाली को, कितने चोर-बाजारी करने वालो को, कितने जखीराबाजी को डी ब्याई ब्यार के मातहत गिरफ्तार किया है में हरवानी करके आप इसको नोट करे और बताए कि इस तरह के जुमें करने वाले कितने लागो को आपने गिरफ्तार किया है। मोदी साहब वाली शिरफ्तारी की बात मैं नहीं करता जिन की गिरफ्तारी के बारेन्ट रात को जारी हुए घौर थाने में भी बुलाया या नहीं बुलाया पता नहीं, नहीं बही बेल ले ली गई। डी॰ आई॰ भार० में कितनी गिरफ्ता[ि] भापने की इस तरह के लेगों की यह मैं ग्राप मे जानना चाहता हु।

हल नदी हे।गा।

[श्री इस्हाक सम्मली]

चारो तरफ माज गोलियां बरसाई जा रही है, गुजरात में, बिहार में तथा दूसरी जगहो पर भीर मैं चाहता हूं कि गोली चलाने की नौवत क्यों भाई इस के लिए एक जयुडिशल इनक्वारी कायम की जाए।

एक बात पर श्री बसु ने बहुत जोर दिया है। मझे अफ़मोस है कि पाडे जी जस शरीफ धादमी ने उस चीज को हलका करने की कोशिश की । नागलैंड की जिन लडकियों कारेप किया गया और अगर किसी पब्लिक मैन के हाथो किया गया होता तो समझ में ग्रा सकता था. वह भी गलत बात थी तकलीफ देह बात थी लेकिन नहीं वहा के मरकारी ग्रफमरों, बोर्डर सिक्योरिटी फोर्स के अफमरों के हाथी उनको रेप किया गया है और क्या श्राप इसको एक माम्ली चीज कहेगे ? इसको एक निहायत शर्मनाक ग्रीर दर्दनाक चीज कहा जाएगा । मैं चाहत हुं सरकार इस के बारे भे सक्त कदम उठाये फौरी भीर ऐसे भफ्नरों को इबरतनाक मजा दे नाकि ग्राइदा के लिये दमरीं को कान हो जाए।

धाखिर में मैं दरखास्त करना हू कि ये जो संगीनें हैं, ये जो गोलियों की बौछारे है इनको भ्राप पब्लिक की तरफ से हटा कर के सक्ती से काम में लाएं करष्ट भ्रफसरों के खिलाफ, करष्ट व्यापारिय के खिलाफ कुरप्ट मिनिस्टर के खिलाफ जो हिन्दुस्तान के भन्दर बदधम्नी फैलाने भीर बरबादी का सबब बने हुए हैं माथ ही मेहरबानी करके माइनोरिटीज, हरिजन, भीर दीगर सैक्कम्ब के साय आप इंसाफ करे। ऐसा आपने नहीं किया तो ये जो विकास के कांज हैं अगर ये सब मिल कर खड़े हो गए तो शायद बड़ी बड़ी ताकतों को भस्म कर देगे और इनक्षे आपको अपने की बचाना मुश्किल हो जाएगा।

[شرى استعاق سمههلي (امروهه): قیلی سهیکر صاحب هوم ملستن کا هه سال ناکامیون کا سال کهذا جا سکا **ھے۔ ا**س سال ھوم مان ملسوي كو جتلى نا كامي كا ملهه دیکهما ہوا شاید دسی اُور امتدکیے کر اتلی ناکامی نہیں ہوئی ہے۔ أب نے ملاحظه فرمایا هوکا که یہ ناکامی بہت کچو ایے سانھیوں کی پیدا کی موثی هیں - کیا حقیقت نہیں ہے کہ گجرات کے اندر جو کچھ موا بہار کے اندر جو کچے هؤ وما <u>هے</u>۔ نگويهاي وديارتههون وواهكسهالات كرني کا موقد ملتا ہے وہاں یہ سرکار ارز یہ کانگویس خود یہ موقعہ دیتی ہے ک<mark>موں نہ</mark>اں مو م<mark>نسٹری کی</mark>ھ دیتی ھے کہ ملسٹروں سے جن کے خلاف کرپشن کے چارجو لکے عہم میں ۔ که هت جاو اور وه بهین مثلے میں۔ اور هم منستاری کا یه فرض هے - که وہ اس پر ایکش نے - ان کو مثالے-ليكن أس كي بجائے ان كو يروتهكت کیا جاتا ہے اور اس پر رتبکشن کے کارن ری کشدر کو موقعه ملتا هے سیدھی سلدی پہلک کو ساتھ لے کر نوجوانوں کو ساتھ لے کا

. ارپولے لی ہے ۔ ہری جلوں اور مائهور ونهز کی حفاظت کی ذمے داری ایلے ذمے رکھی ہے ء اور اس کے لئے ہوے ہوے اعلان " دئے جاتے ههو . يكن مهن عرض كرتا جاهتا هن که بانده میں جو کجھ هر رها هے - افسوس هے که پانڈے جے دکشت جى كى تعريف كرنے چلے لئے ۔

شرى رأم سهائے يانقے - مهل يهال پر هور

غرى استعاق سلبهلى - څکريه -میں جاننا چاہوں کا که هرممنسٹری نے اسکے لئے کیا قدم اتھائے ھیں ء آبے دكشت جي كيهاتي مين بهاته كركهم دیتے میں - که اس سے نیادہ اور کیا کیا ہا سکتا ہے ۔

دَيْم سهيكر صاحب مهي بانده کے بارے میں کہت رہا تھا کہ وہار کے ایک گاوں میں مریجترس پر اتھاجار هولے۔ تو دکشت جی ہے بہت جونگیر ہو ، پی کے چیف جلسٹر شن میم وتر بہو گلا ہے قابل تعریف قدم الهایا- انہوں نے سارے تھانے کا تبادلہ کو دیا۔ ایک جونگیر منسٹر یہ کو سکتا ہے۔ لیکن دکشت ہی کہتے هیں که کیا کیا جائے۔

ھوی رام سوائے ہاندے: داھت جی نے کہا تھا کرنے کے لئے۔

که ایدستستریشی پر حمله کرے ب اس سے وہ تیموکریسی کی جورں کو الله الله المال المالي جي يهان موجود نهين هين – اور پانڈے جی کی زبان سے اپنی تعریف سن کر وہ چلے گئے ویے میں- مجھےتہ تعجب هے کہ اس سال هوممنستری کی آنکھوں کے نیجے جو کچھ ھوا هے ان کی چدد مثالیں بھی حالات كو سمجهلے كے للهے يہت كافي اليس -

بحجهل دو تهن بوسوس مهن هم نے منصسوس کیا کیا تھا کہ ھریجلوں پر جو حملے هوئے هو اسے میں ان سے سبق ليكر هوم ملسترى كتهه أيس قدم اللهائي كي كه أنهده هن جلور بر هاهیاچار نه هو سکے - لیکن آئیگے سهیکر صاحب هرن جنون په مرهدهاچارون کا ایک سلسله جاری هے - جس ستیت سے دعشت آئے میں یو پی -سے ۔ وهاں کیا نہیں هو رها رهے۔ جب إم اهي سرال كو اتهاته دبين-تو جواب دیا جانا ہے - که کیا کیا جائے نہ کہوں پر مجستاریت انکوائری كفوا دى - اور الكو يوى بهارى مهوياتى عو كنى يو جوتخوتيشول الكوائري وكوا دي-کیا اس طرح سے ان چھروں سے نھٹا جا سکتا ہے۔ آپ کو معلوم ہے که پچیلے در دنوں فلع باندہ کے ایک كاول برحمله كيا كيا - أور أن كو كتنا نقصان يبنجاء كيا تها -سرکار نے هرينجائوں کے قامے دار اپائے

نہاں آپ نے اس بارے میں قدم ا اٹھایا ہے۔

سی - ہی - آئی کے بات تو ایک بار اور مرض کر دوں۔ یہ رپورٹ مہرے هاته، میں ہے۔ ا۔ میں کیا گیا ہے که سی - ہی - 'ئی جس کے ارپر ہوی اهم فصداری قالی جاتی ہے۔ اور ولا کام بھی کرتی ہے۔ لیکن ان لرگوں کی آئے حالت کیا ہے۔ ہوم ملستن نے ان لوگوں کے رہلے کے لئے کوارٹر تک كا أنتظام نهين كواهي- كيا كام لا للكيد أب ایسے لوگوں سے جو اس طرح کے کویٹ ایلے ملکس کے خلاف انکواٹمری کوتے هيں- جانم اور ان للے یه بهی اناطام نه هو که به رات کو سر دهها کر کههای به سکیل میل أب كى أس طرف توبه دلانا جاعتا وں حالی یہ کہہ کو کام نہیں چل سکتا ہے کہ صوبوں کی سرکریں اس شهجهکت کے مالک هیں۔ اور وہ اس پر فور کریگی- جیسا میں نے ابھی عرض کیا - که سرکار کی یه ذامیداری ھے۔ کہ انہوں نے مریجلوں کے سانہوراڈز کے بارے میں ذمےداری لی ھے۔ آبے كها حالت هـ- اس سال مين ةيلى سههکر ماحب جتلے فسد هوئے۔ جتلے کیمونل رائھٹس ھوئے قویب قریب وهی هکفک در جو که آر-ایس-ایس کی ٹیکلک موٹی ہے۔ دکانیں ہر تھاں لکانے کی اور پھر ان کو جاتا-مکانوں کو لوٹلا اور پھر بولیس کے

شری است ای سلبهای : فلط کهتے هين- آپ ڏوا اس پر غور فرماڻين- -خالی ایک جگه کی بات نہیں ہے۔ کانهور میں یہ ہوا - خیوریہ میں یہ هوا - اور کثی دوسری جگهول پر هوا - ایدمنستویشی کی بات به رهے مهری- آپ ذرا ایدمنستریشن کو دیکھئے۔ اس دلی کے اندر ڈیٹی سھیکر صاحب دس رت انسانوں کے اتبانے کے واقعات عرتے ھیں۔ کیا آپ کو یاد نہیں ہے۔ که راکبش کہتم ایک کو ۱۹۷۳ میں فائب کر دیا تھا۔ مهن الجاهون کا که مردها چی جو انه بهت سمجهدار شریف اور دردمند ا سان ههي - زرا نوڪ کرين - که راکهش کھتھ کو جس نے پاپ اس لوک سبھا مهن ۲م کرتے ههن - غائب کو دبیا جانا هے۔ جون ۱۹۷۳ کو اور جون ۱۹۷۳ آنے الا مے۔ اس کا پتم نہیں۔ کا پوایس انظی نکمی هو گدی هے۔ که وہ پنه پهن ۱۶ سکتی- اگر پولیس نکمی ہے تو میں کہوں کا کتا سی-ہی - آئی کے سہرد اس کیس کو کر دیا جائے۔ سی - بی - آئی سے آپ انکوائری کروائھے۔ اس کے لئے کہا جانکا که وہ تو ہوے ہوے معاملات کی انكوائيري كرتى هي-رة تو+٥ كرور +١ كرور والے معاملوں کی جاچ کوتی ہے۔ لبكن ميں پہلی بار كهونكا كه انسانوں کی زندگی ههوس لائیف کی تهمت

تو اُس سے زیادہ ہو سکتی ہے۔ کیوں

دریعے انہی لوٹے عوثے گھر جلے عوثے لرگوں کو گرفتار کور ـ اور آپ سن کو تعصب كرينكي- انهى حال هي مهن کھرا*ت م*ھن وھا*ن* پر تو ابھے پويه يڌيد هن رول هي- کجوات سهر كأى جكاء فسادات هوئي- بوسف ايك چهورتا سا تصدی هے۔ وهان دو تو یه نھا گھا کہ ہوے ہوے بدویاریوں کے مکانوں پر چوھ کر چھوٹے فریب مسلمانوں کے گھروں میں گولی چلا کو لوگوں کو ساوا گھا۔ زخمی کھا گھا۔ لهكن حالت يه ه كه چاه كتا قبل عام هر جائر- فارت گهری هو جائے-چاهے کائی باهی اور جائے۔ اهماری ھوم ماسٹاری وھاں کے کسی ہوے افسو وهان کےکسی پولیس افسر اور وهان کے ضلع کے ذمےدار ادھیکاریوں کے خلاف کوئے۔ ایکشن نہیں نہتی ہے۔

نیشال انگیکریشن کرنسل کے فيصلون كالجمائي بارا يهان أس سلان میں حوالا دیا گیا ہے۔ همارے ساتھی سرجو پاتے جی، ایس ایم- بیار جی صاحب اور دوسرے ساتھوں نے کنے موتبہ یاد دلایا که تبشلل القيكريشن كالقريلس ير ايلي فيصلون میں یہ ڈیکلیگر کیا تھا اعلان کیا تھا الم جهان كهين فسادات هونگيد وهان کے ضلعوں کے ادھنکاریوں کو ان کے لگے ريسهرسيبل قرار ديا جائے كا- مهن معلوم کرنا چاھتا 'ھور ہونے ادب کے ساتهه مودها صالب بهي أس ك

نواق كريل أور مهوياني كوكي بالأليس که جنیان فسادات هوئے هیں وهان کندے جگه ضلع ادمهکاریوں کے خلاف يكشن ليا كيا هـ - جواب ملهكا ايك ريني- هان اگر کهين کهين کسي کسی پر لیا بھی ہوگا۔ یقین نہیں۔ تو كسى كانستهيل كا قرانسفر هو كيا هوكا-اس سے زیادہ بہیں۔ جو ضلع ادعیکاری ههی- ان کو هاته نهین لگا سکنے هیں۔ ماثبہ لکائیں کے کیسے۔ اکس دکشت پیان موجود هوئے۔ دکشت جے ہے مجهد سے فرمایا تھا -نہایت افسوس کے ساتھ مجھے کوٹ کرنا پولا ہے مجھ سے آبہوں نے فرمایا تھا که نیشلل انگیگریشن کرنسل کے فيصاون مين يه خاص هـ - يه جو جو قسوروا ر هر - ضام اد وکاری اور جو قصوروار نه هو دونرن کر ایک هی لاتھی ہے ھانک دیا گیا - دونوں کے خلف - ایکشن لولے کے لئے کہا گھا ھے ۔ میں کہوں کا انہوں نے نیشلز انٹیگریشن کانفرنس نے بالکل صحیم کیا ۔ انہوں نے ایک ھی اللہی ہے نهیں ها. ا - داشت چی سارے کریث اقسرون کو بنجال جاهتے هئے - اس لئے اُنہوں نے اپنی ٹملکنگه بنائی ہے ۔ ذرا قار قرمایا تھے - که جہاں فساد ھوئے ھیں۔ دو حال میں ایک حال ۔ تو عولا ھی ۔ یا تو وھاں کے افسر ابدے تکیے هیں که وهاں پر فساد هوتاے ۔ کها در رهی تهی ان کی-انگلهچنس کها

مهربے یاس ہے۔ مودھا جی جب چکم دینگے نب میں اس کو پیش کروں کا ۔

يهان پو اعلان كهرگيا تها -مانیورٹیو کی حفاظت کے لئے قدم الهائي جائهنگے - ان کو ملازمتوں میں ہروپر رپھریزیلٹھشن دیا جاینکا۔ ان کے ساته نا انصافی نه هو اس کے لگی يرائم منستر نے وعدہ كيا تها - ليكن میرا خیال ف که جب سے پرائم منستر نے هوم قيهارتهيلت جهورا هے-ان وعدون کو بھلا دیا گھا ھے - جو كجه لكها هوا بهي تها الس كو يهي مثا دیا گیا ہے - میں مانتا ہوں که ھر طرف ہے روزگاری ھے – لوگوں میں به المحلق في المحل مين پوچهاد چاهتا هون که کیا یه هتیتت نہیں ہے کہ میرے مندو دوست جاہے شفارش کرتے میں اور کوشش کرتے ههی که مسلمان نوجوانون کو نوکریان ملهر - ليكن كها يد حقيقت نهيل ھے کہ ان کو مسلمان ھونے کے ناطے نوکریوں میں نہیں لیا جاتا ہے۔ مسلمان ہونے کے ناطبے ان کے ساتھ دَسكريمينيت كيا جانا هـ-

آپ نووه دين ميري اس يات پر اردو کے ہارہ میں کالے وعدے کئے گئے۔ آج تک لیکن آج وہ وعدے کہاں پر ھیں۔ یہاں پر ببی وعدے کئے گئے ههر- لهکن این کو پورا نهین کیا گها ھے۔ میں نے خود لکھے کو دنیا تھا کہ

[شری استعاق سمههلی] کر دھی تھی اس کھے سے آئی دی ۔ کب وهال پر فسادرت هو کئے تب یا ولا معومانه خاموشي اختهار ﴿ كُوْمِ هُونُهِ تھے یا اس میں انکی سازش تھی۔ اور تب فساد ہوتے۔ ان کے لکھے پی کی وجه سے یا خاموشی اور شرکت جو ان کی اس میں تھی اس کی وجه سے یہ ہوتے - ان کے تیسری کوئی وجه نہیں۔ هو سکعی هے - جو بھی وجه هے يقيلاً أن افسروں كے خلاف أيكش ليا جانا جاهدًے - جو اِس کے لیے ذمے واد تھے - لھکن ،فسوس کے ساتھ مجھے کہنا ہوتا ھے۔ که همارا تجربه یه بتلابا هے - دم کران کویں فساد ہوئے اور جہاں کہیں گولهان چلهن اوو اوگون کا خون کها گیا - مؤدروں کو مارا گیا - وهاں کے پولس افسروں کر کنچه تروقان دیلگی۔ بجائے اسکے که ان کو سزائهن دى جامهن- أنكم خلاف ايكش لها جارا - ان کو اور ترقهان دى گئيں - - يو يى كى كتلى مثالیں هیں ۔ آپ کی خدمت میں پیش ر سکتا ہوں ۔ اس طرح کے کرپٹ افسروں کو جو جو پہلے قبی اوس ہی تھے ان کو ایس ۔ پی بغایا گھا ۔ جو ایس پی سے ان کو ایس ایس پی بتابا کا - اور جو ایس ایس پی تھے ان کو تی ائی جی بغايا كوا - مين نام لعدا نهين جاهتا هون - نامون في ايك لمهي لست

او جاری هوئے اور تھنے میں بھے بالیا کیا پد لین دین بیل لے لی کی-ذى - أئى - أر مهن التلى كرفتاريان آپ ہے کیں۔ کس طرح کے لوگوں کی۔ میں یہ آپ سے جابلا چاہدا ہوں۔

چاروں طرف آج گولھاں درسائی جا رهی عین- کندرات مین بیار عین ارد دوسري جگهون پرسيسي چاهدا هون گولی چللے کی نوبت کیوں آئی۔ اس کے لئے ایک عهوت وشل انکائیوی قائم کی جائے۔

ایک بات پر شای نوسو نے بہت زور دیا هے مجھے افسوس هے که پاتے جر جیسے شریف آدمی نے اس چیز کو هلکا کرنے گی توشش کی ہے۔ بالاليلق كي جي لوكهون لا ريب كيا گیا۔ اور کسی پبلک میں کے هاتھوں كها كها وما تو سمنجهم مهن أسكتا تهام ولا بهى غلط بات تهى كليفده بات تبی- لیکن نہیں، رھاں کے سرکاری افسروں ، ہارتر سیکیورٹی فورس کے اقساوں کے ھانہوں ان کا ریپ کیا گیا اور کیا آپ اس کو ایک حمولی چیز کیھلگے۔ اس کو ایک نہایت شوملاک اور دردناک چیز کیلگے۔ میں چاعثا هوں که سرار اس کے بارے میں فرری قدم الهائي- اور إيسے افسروں كو همرتناك سور دیے۔ قاکم آئیلدہ کے لگے ادوسروں کو کارے هو جائيں۔

معهد میری تقریروں کو هندی کے ساده ساتهه اردر میں بھی محصے دیا جائے۔ لیکن میں دیکھتا میں که اردو سكريهت فائب رهدا هے- معلوم نهين که لوک سهها پر بهی کنهه اسکا اثر پوا ہے۔ اردو کے بارے میں کننی كمباثيان بنائى كأثين هين ايك کمیٹی بدائی گئی تھی جس کے چهدُمهن أنه -خ- گھرال صاحب تھے-

مين پوچها چاعتا هون که کهان ھھں ان کو رپورٹ اردو کے بارے مھں۔ آپ چاهدو دس هؤار رماتیتین دین-ببس عزار سركلر جارى كرين المهمة نهیں موکا۔ اور تب یک بھی ہوگا۔ جب تک که اردو او اس کا قانونی حق نهدن مليكا- جب تك أب ايسا نہیں کرتے میں۔ اردو کو بچےنے کا کوی فوسر*ا* عمل بھیں **ھوگا ۔**

آج عر طرف چور بازاری ھے -رشوت خوری اور ملاوت کا بازار کرم ہے۔ میں سرکار سے معلوم کرنا چاھتا ھوں که سرکار نے کنلے ملاوٹ کرنے رالوں کو کتابے ہے ور ہاراروں ہازاری کر بے والوں کو کنیے زخیرہ بازوں کو تی۔ ائی۔ او کے ماتصت گرفدار کیا دے مہربانی درکے آپ اس کو نوش کریں۔ اور بتلائیں که اس طرم نے جوم کونے والے کتابے لوگوں کو آپ نے گرفتار کیا ہے۔ سودی صاحب والي فرقداري كي يات مين نههن ارتا۔ جوں کی گوفریاوی کے وارندی وابعد

[شرى استعاق سنبهلي]

آخر میں میں درخواست کرتا هول که په جو سنگيندن هين- په جو گولهوں کی ہو جهارین هیں اُن کو یدک کی طرف سے مثا در سختی سے کام میں لائی ۔ کریت افسروں کے خلاف کریت بیویاریوں کے خلاف کریت ملسٹروں کے خلاف جو علدوستان کے اندر بدامنی پهبلانے اوو بوہادی کا سبب دلمے مولے هيں۔ سانهه هي مهربان کوکے مانهورٹھؤ - هريجن اور دیگر سهکشنا کے ساتھ آپ انداف کریں- ایسا آپ بے نہیں کیا- تو یہ جو ورکنگ سیکھن هیں اگر په سب مل کر کھڑے ہو جائیں تر شاید بچی ہوی طاقوں کو بہسم کو دیلکیے۔ ان سے آپ کو ایے آپ سے بعیانا مشکل ہو جاٹیکا-]

भी भागनत शा भाजाद (भागनपुर): गृह मलालय की मागों पर बाद विवाद हमे अपने देश के इहत से अन्तरिक महत्वपूर्ण प्रक्तों पर समालीचनात्मक विचार प्रकट करने का अवसर देता है। लेकिन दुर्भाग्य से इस वाद विवाद को प्रारम्भ करते हए हमारे मित्र श्री ज्योतिमं य बसु भौर जन सध के वक्ता ने इस वाद विवाद को जो दिशा दी है उस मे यह कहना सम्भव नही है कि हम ने इन प्रश्नों को उस धरातल पर रख कर देखा है भीर उन पर विचार किया है जोकि देश की दृष्टि से भावश्यक, था। श्री ज्योतिर्मय बसुने कहा कि इस दण में ग ।तम्ब है ही नहीं, यहां तो फासिज्म का बोलबा । है। उन्होने यहा तक कह दिया ि ब एस एफ बर स और रिपी लूट, अत्नंत भीर रेप की फोर्स है। उन्होंने कहा कि भाज इस देश में इस के सिवा भीर कुछ

है ही नहीं। अगर इस देश में गणतन्त्र नहीं है और फासिज्म का बोल बाला है तो इस का सब से बड़ा उदाहरण यह है कि इस देश में और यहां की ससद में ज्योतिमय बसु जैसे सदस्य आ कर बिना नोटिस दिए हुए जो चाहे बोल सकते हैं। अगर यह बात सही है तो में उन से पूछना चाहता हू कि इससे बड़ा गणनन्त्र का नमूना और क्या हो सकता है

SHRI JYOTIRMOY BOSU: On a point of order. The hon. Member does not know that I gave proper notice

श्री भागवत सा साजाव: मैं मानता हू कि उन्होंने कुछ बातों के लिए नोटिस दिया है लेकिन सब के लिए नहीं दिया है। मैं यह नहीं कहता कि नोटिस नहीं दिया लेकिन कुछ के लिये दिया था, सब के लिए नहीं दिया था।

उन्होंने कहा कि बीं एस० एफ० भीर र्नाः ग्रारः पी । जुट ग्रासंन गौर रेप की फोसं है। मैं श्री इसहाक सम्बली से पूर्णतवा सहमत ह कि इस गणतन्त्र मे जिन व्यक्तियों ने ऐसा दर्व्यवहार भीर ग्रत्याचार किया है उनके। सजादी जाये। लेकिन में इसका चोर विरोध करता ह जो श्री बसू ने कहा है कि हिद्स्तान में सारी बी॰ एस॰ एफ॰ और सी भार॰ पी॰ फोर्स जो है यह लुट, झार्सन झीर रेप की फोर्न है। फासिज्म की श्रावाज उन्होंने उठाई है। इस देश के जो संरक्षक हैं, हिन्दुस्तान के वे वेटे जो हिमालय पहाड की चोटियों के साए में, बफीली बाटियों में देश की रक्षा कर रहे हैं उन तमाम के लिए यह कहना कि ये रेप की फोर्स है में ठीक नहीं समझता हु भीर इसका में घोर विरोध करता है।

जन सघ के प्रवक्ता श्री जगन्नायराव जोशी जब भाषण कर रहे थे तो मुझे ऐसा सगा कि ससद सदस्य नहीं बल्कि एक प्रचारक श्रीर पडा कार्य तमाज की मीटिंग में बर्ग के नाम पर कर्तव्य यहां बता रहा है लेकिन बाहर धर्म के नाम पर बेतरणी पार करवाने के डर से को देश में धर्म का बीभत्स रूप सामने रखते. हैं और जो हिन्दू भीर मुसलमान के नाम पर देश को बांटते हैं। यह उनका धाज का रूप था। इस बाद विवाद में इस तरह के प्रक्तों को लाना मैं गलत समझता हं।

धार० एस० एस० के बारे मे उन्होंने बार बार कहा कि डाक् मेंट्म पेश करो। मैं उस व्यक्ति की भर्स्तना नही करता जिस वे महात्मा गांधी की हत्या की। मैं उस विचारधारा की भर्म्तना करता हं जिस विचार-बारा ने देश में हिन्दू मुसलमान को बांटा । मैं हिन्दू हूं भीर हिन्दू होने पर मुझे गर्व है। शेकिन में वह हिन्दू ह जिस हिन्दू का धर्म कहता है वस्धैव कुटुम्बकम्, जो यह नहीं कहता कि मुसलमान बाहर से भाया, उसे सजा दी जाये । इसलिए माज में मार॰ एस० एस० के खिलाफ भौर क्या उदाहरण हुं। क्या सुबृत दिया जाए ? उस का सुबत तो यह है कि झाज आर॰ एस॰ एस॰ काएक गुरुजी अपने हैडक्बार्ट में एक फ़रमान विकालता है, भीर उस के सभी सदस्य उस को देख कर जमीन को चूमते हैं। इस से बड़ा फ़ाशिज्म क्या हो सकता है ? हम को, भीर भीमती इन्दिरा गांधी को, फ़ाशिस्ट कहा जाता है, जबकि भागवत झा भाजाद भीर कांग्रेस के भ्रत्य सदस्य खुके रूप से अपनी पार्टी की मालोचना करते हैं। श्री बलराज मधोक को निकासने वाली पार्टी- जनसंघ- ग्रीर श्री ज्योतिमर्य बसु की पार्टी में ऐसा नहीं हो सकता है। भीर जहां तक श्री मोदी की पार्टी का प्रश्न है, वह तो एक व्यक्ति की पार्टी है; बहां कीन किस की आलोचना करेगा?

सब से बड़ा गणतंत्र इस देश में चाज भी है। हमारी समस्यायें भीर हमारी कठिनाइयां 655 LS-12

एक नहीं, भनेक हैं। जहां में यह कहता हूं कि बी॰ एस॰ एफ॰ भीर सी॰ ग्रार॰ पी॰ इस देश की झानदार फोसिंग हैं, और हिन्दू-स्तान के किसी भी राज्य को यह प्रधिकार है कि वह ला एंड मार्डर कायम करने के लिए उन फोसिज को बुलाये, वहां मैं यह भी कहता हं कि हिन्दस्तान का हर एक प्रश्न ला एंड झाईर का प्रश्न नहीं है। हिन्दुस्तान का हर प्रश्न शान्ति भौर व्यवस्था के नाम पर गोली भौर बन्दूक से हल नहीं किया जा सकता है। हिन्दुमतान मे भूखका भी प्रश्न है। इस लिए यह सरकार शान्ति भीर व्यवस्था के नाम पर भुखे लोगों को गोली न वे। हमारी दूषित वितरण प्रणाली के कारण समाज के बीकर सैक्शन्ज को मन्न नहीं मिलता है। इस लिए भगर वे विद्रोह करते हैं, तो वह शान्ति भौर व्यवस्था का प्रश्न नहीं हो सकता है। वह भुख का प्रश्न है। उस को हल करने के लिए बी० एस० एफ्र० और सी० ग्रार० पी० को न बुलाया जाये । उस प्रश्न का समाधान देश के कोने कोने में भन्न पहुंचा कर किया जाये ।

सगर बिहार में विद्यार्थियों ने सपती कुछ मांगे रखी हैं, तो किसी दल के द्वारा सपती स्वाथ-पूर्ति के लिए विद्यार्थियों का सनुवित उपयोग नहीं किया जाना चाहिये। विद्यार्थियों की मांगे क्या हैं? वे कहते हैं कि हमें ऐसी शिक्षा प्रणाली दो, जिस में हम काठ के पुतले न रहे; विश्वविद्यालय से बाहर जा कर वहा के संझावातों में हम सपने साप को ससहाय पाते हैं; हम चाहते हैं कि हमारी शिक्षा हमें रोज्यगर के लायक बनाये, ताकि हम क्यों

सरकार ने कहा है कि हम ने इस दिशा में प्रयत्न किया है। क्या प्रयत्न किया है? कोठारी कमिशन की रिपोर्ट में कहा गया बा कि दसवीं क्लास और धाई० ए० की प्रवस

श्री भागवत ज्ञा भाषाद]

क्लास में शिक्षां को वोकेशनलाइख किया जावे। आज तक ऐसा क्यों नहीं किया गया है? इस के अलावा राधाकुरण कमीशन और अन्य कमीशन्ख ग्रादि की रिपोर्ट्म सरकार के सामने हैं। कोठारी कमीशन की रिपोर्ट में यह भी कहा गया था कि यदि देश में मूल और सृजनात्मक साहित्य—आरिजनल एंड कीएटिब लिट्टेचर-का निर्माण करना है, तो इस देश के बेटो को उन की भाषा में शिक्षा बी जाये। क्या ग्राज तक ऐसा किया गया है?

बाज भी गह मवालय में अग्रेजी का बोलवाला है। जिस जनता ने नाम पर यह सरकार योजनाए बनानी है और शासन करती है. वे सारी योजनाये और सब शासन-कार्य उस जनता की भाषाओं में नहीं, बल्कि भग्नेजी में किया जाता है। इस देश से कुछ माई० ए० एस॰ भीर आई॰ पी॰ एस॰ भीर कुछ समद सदस्य भ्रादि मिला कर कुल हो परमेट नोग अग्रेजी समझते हैं। नो फिर क्यो नहीं इस देश की जनना की उस की अवनी भाषाओं में तामिल, तेल्गु, मलवालम और क्लाइ भादि मे--- जानिंग को समझावा जाय ? माज नौकरणाही इस देश का सब से बडा बोझ है। जब मैं नीकरशाही की बात कहता ह, तो मर्जर महोदय प्रसन्न न हो, क्योंकि नौकरकाही मतियां ग्रीर राजनैतिक नेतृत्व से प्रारम्भ होती है।

श्राज इस देश की नौकरशाही ने इस देश को नवाह कर दिया है। सरकार की श्रोर में कहा जाता है कि यह बिटिश राल का हैग-श्रोवर है। यह हैंग-श्रोवर पच्चीस वर्ष के बाद और कब तक चलेगा ? क्यों नहीं यह मझालय इस बात की व्यक्स्था करता है कि सरकारी नॉकरियों के लिए परीक्षाये हिन्दुस्तान की भाषाश्रों में ली जाये ? कहा जाता है वि हम ने सिद्धान्तत. इस बात की मान जिया है। यह कत सुनले-सुकते हमारे कान का गये है। वह कीन पूर्व की एसर सी कास्तीय अपना है कि सभी कास्तीय अपना है कि हिन्दुकाण के ऐसे लोग हैं— बाई ० ए० एसर और धाई विश्व लोग हैं— बाई ० ए० एसर और धाई विश्व लोग हैं— की पारतीय भाषाओं में इन परीकाओं की व्यवस्था कर सकते हैं। मती यहोदय उन को इस काम के लिये रखें, लेकिन वह ऐसा नही कर पा रहे हैं।

मैं समझता हू कि मली महोदय उस सोने की करूम के नुलाम हैं, — भीर उस कलम के साथ सोने की जजीर लगी हुई है —, जो केवल मारे जी कि खती है। वह उस मको-वृत्ति द्वारा तम्रे हुए हैं जो केवन सम्बेजी सभ्यता को जानती है, जो केवल वालक्ष्य डार्मिय को जानती है।

क्या हो रहा है बिहार में विहार मे तीन ग्रफसरों,-- डेवेन्पमेंट कमिश्नर, डिपटी चेयरमैन, प्लानिंग बोर्ड ग्रीर चेगरनैन, इचैक्टिसिटी बोर्ड--ने मग्कारी नौकर होते हुए भी गौड़डा समग्र विकास समिति नाम की एक सोमायटी बना कर उस की र्राजस्टर्ड करा लिया. क्योंकि उन को बहा दर्द हम्रा कि संयाल परगना का गौड्डा सब-डिविजन एक बड़ा गरीब इलाका है और उमका विकास करना चाहिए । वहां पर सारा काम ये तीन अफसर करेंगे । इस बारे मे वहा के प्रतिनिधियों, श्री जगदीश नारायण मंडप भीर श्री योगेश चन्द्र मुरूम, को नहीं पूछा गया है, मी० पी० झाई०, सी० पी० आई० (एम०), कांग्रेस (ग्रो) ग्रीर कांग्रेस (श्रार) श्रादि किसी भी पोलीटिकल पार्टी की नहीं पूछा गया है। एक सोमायटी बना कर गौड्डा सर्वाडविजन के विकास के नाम पर ये तीनों श्रफसर सब पैसा खर्च करते हैं। भीर भाश्य चं ता यह है कि उस सोमायदी के वेयरसैन जमंत्रकाश बाबू हैं, जो डीसैट्रलाइजेंशन की बात करते हैं। उस सोसायटी में कोई एम० पी॰ या एम॰ एस॰ ए॰ नहीं है—मिर्फ एक जानदार एम॰ एस॰ ए॰ हैं, श्रीहेमन्त कुमार झा, जिन को झभी मंत्रि-मडल में हटा दिया गया है।

श्री मिर्धा कहेगे कि यह प्रान्त की बात है। लेकिन मैं कहना चाहता हू कि हिन्दुरतान की नौकरशाही और उस के प्रफसरों के लिए एक कोड थाफ कान्डक्ट निश्चित करने और उसका पानन कराने की किस्मेदारी गृह मत्नालय की है और अगर गृह मत्नालय उस जिस्मेदारी को उतार फकता है, तो फिर व्युरोकेंमी क्या नही पागल हो उठगी। श्राज बिहार प्रणासन के अधिकारी, आई० ए० एस० और आई० पी० एस०, श्रगर सब नही तो अधिकाश, श्रगर अधिकाश नही, तो कुछ चुनीन्दा खुल्लम-खुल्ला तमाम कानूनो को ताव पर रख कर शासन कर रहे हैं। फिर मती महोदय कैसे यह उस्मीद करते है कि वहा के विद्यार्थी उन की बात को सुनेगे ?

भगर बिहार के विद्यार्थी भपने लिए छालावास मागते है, पढे-निखे वाइस-चामलर की--व्यूरोकेट की नही-माग तो व क्या जुल्म करते है ? ग्रगर वहा के विद्यार्थी मिनेट ग्रीर मिन्डीकेट मे प्रति-निधित्व मागते है, ता इसमे क्या अनुचित है ? मली महोदय इन बालो को नहीं देखते है मीर कहते है कि विद्यार्थी बिद्रोह कर रहे है, लाम्रा बन्द्रक भीर गोली । मैं मत्नी महोदय से कहना चाहता ह कि बन्द्रक ग्रीर गोली का इस्तेमाल तभी सफल हो सकता है, जब उन्हें जनता के बहुमत का समंद्यन प्राप्त हो। भगर डाकू, चोर और लुटेरे पर गोली चलती है, तो वह कामयाब होती है। लेकिन जब जनता के ममर्थन के बिना विद्याधियो या भूखे लोगो पर गोली चलढी है, तो वह काम नहीं करती है।

दिल्ली का उदाहरण हमारे मामने है । यह कितने भाष्ट्यं की बात है कि लेफिटनेंद-गवर्नर, गृह सचिव धीर ग्रन्य बडे बडे खोग जमीन लूट ले, लैंड ग्रैंव कर ले भीर ऊपर से रोब झाडे। उन लेफिटनेट-गवर्नर को तुरन्त ससपेड करना चाहिए। ऐसे श्रफसरों को निकाल बाहर करना चाहिए, जिन्होंने जनता की सरकार का अपमान किया है। इस देश मे नौकरणाही इस तरह का व्यवहार करे भौर यहा पर विद्रोह न हो ? — विद्रोह होगा। प्रगर इस देश की नौकरशाही इतनी भ्रष्ट हो कि सरकारी अधिकारी बिद्वार मे गौडडा समग्र विकास समिति बना ले, दिल्ली में लैंड ग्रेंब कर ले. एक बिदेशी भाषा को जनता पर इस लिए थोपे कि उन के बेटे धाई०ए०एम० ग्रीर ग्राई० पी० एम० मे जा सके और हिन्दस्तान के गरीब किसान के बेटे प्रपने गाव की मिट्टी में चिपके रह जाये तो फिर इस देश में विद्रोह होगा।

जो लोग अग्रेजी पढ़ना चाहते हैं, वे उस को पढ़े। मुझे उस पर कोई एतराज नही है। लेकिन उदाहरण के लिए तामिलनाड़ के पढ़े हुए कितने विद्यार्थी बाहर जाते हैं ? केवल दो परसेट—जो आई० ए० एस० या आई० पी० एम० आदि बनते है। लेकिन तामिल-नाड़ के— और इसी नरह कर्नाटक,आन्ध्र और केरल के—98 परसेट विद्यार्थी अपने अपने यहा खेत-खिलहानों मे, स्कूल-कालेजों मे और फैक्टरियों मे रह कर किस भाषा मे बाम करते है ? —अपनी भाषा मे।

धगर यह सरकार देश को वास्तव में विकास और उन्नति के पथ पर ले जाना चाहती है, तो उस को नौकरशाही पर प्रकुश रखना होगा। बिहार के विद्यार्थियों का बिद्रोह वहा के श्वासन के खिलाफ है, वहा के श्वष्टाचार के खिलाफ है। श्वष्टाचार सिर्फ पैसा लेना ही नहीं है, बिल्क वहा के विद्यार्थियों को उचित शिक्षा न देना, उन के लिए छात्रावाम की व्यवस्था न करना धौर उन को एडिमशन

328

[की भागवत का भाजाद]

न देना भी भ्रष्टाचार है। मैं चण्हना हूं कि मंत्री महोदय इन प्रक्नों पर गम्भीरता से विचार करें।

तामिलनाडू में डी० एम० के० पार्टी ने पहले वह कहा था कि हम भाटानोमी के प्रश्न को छोड़ देते हैं। लेकिन भ्राज जब कि वह टूट रही है भौर भ्रष्टाचार के बोझ से दब कर मिट रही है, तो उस ने फिर भ्राटानोमी की बात करनी शुरू कर दी है। इस लिए मैं मंत्री महोदय से कहूंगा कि भ्राप इस का जम कर मुकाबला करें। देश भ्राप का माथ देगा। लेंकन भ्रगर भ्रापक कदम अगम गा तो जायं हमारे समर्थन में क्या होगा?

एक छोटी सी बात भीर कहना चाहंगा जो एक बडी दर्द भरी भ्रावाज इस पार्लियामेंट में बाई थी बोहरा कम्युनिटी के नाम पर-उदयपुर की बोहरा कम्युनिटी के नौजवान लडके भीर लड वियां भाई थीं, प्रधान मंत्री में भी मिली और आप से भी मिलीं। कमाल है इस कम्युनिटी की बात कहते हैं कि हम ममलमान हैं भीर करान के नाम पर विवाह णादी सब उन का वन्द कर दिया । यह झुंट बात है। कुरान कमी ऐमा नही कहना। लेकिन बोहरा कम्य्निटी का जो गुरू है वस्दई मैं बैठा हमा वह मरी हुई लाशों को उदयपुर में महीनो महीनों तब दफनाने की रजा, नहीं देता । 200 लड किया विवाह करने के लिए है, रजा नहीं (मलती । क्यों नहीं मिलती ? क्योंकि उस का अधिकार है यह कि वह रजा दे। ग्राप को इस के ऊपर विचार करना चाहिए। यह उस सम्प्रदाय वे गुरू का जुल्म है जो हर बात मैं उन मे पैसे लेता है। जन्म पर पैसे, मरण पर पैसे, हर बात मैं पैसे लेता है। इसलिए मेरा निवेदन कि इस बात को गंभीरतापुर्वक ध्याप देखे।

श्रंत . मैं मैं यह रिवेदर करना चाहता हं कि इस ग्रवमर पर यह वड़ा ग्रावस्थक है कि जब देश में शांति भीर व्यवस्था के नाम पर इस तरह की बातें हो रही हैं तो भाप प्रकन के दो पहलू को देखिए । एक तो जो बास्तव में ग्रशांति ग्रीर ग्रव्यवस्था वह ग्रीर दूसरे जो भृष के नाम पर श्रशानि ग्रव्यवस्था है । भ्राप की गोलिया संगीते जन बय्बितयों पर चलाई जायं जो ग्रशानि भीर ग्रव्यवस्था पैदा करते -हैं। लेकिन ग्राप की गोलिया ग्रीर मगीने भागलपूर में ब्राज्य मिश्र के हाथ तोडने के लिए न चलाई जाय जो बी एम एफ के नाम पर वहां की पुलिस ने किया । आप की बन्द्रक शाह मशुर खा के धर में न चनाई जाय जहा कि भ्राप ने विदाउट वारन्ट खर्न कर दिया और कह दिया कि हम शानि व्यवस्था के लिए प्राए हैं । इन बातों के माय हम आप से उम्मीद करते हैं कि हम इन प्रश्नी का स्पष्ट इन पृष्ठभूमि मे आ। देखेंगे शांति व्यवस्था ग्रनग ग्रीर भव की व्यवस्था ग्रलगा ग्राप की तीर त्याई! जो हड़दंग मचा रही है, जो जुल्म कर रही है गोडडा विकास समिति के नाम पर या लैड ग्रेव के नाम पर उन पर प्राप्त की जंबी लगे। प्रगर नहीं तो प्रापं इस पानियामैंट में लाइए वह कानन जिस के अंदर इन की यह प्रधिकार दिया गया है कि इस के खिलाफ ग्राप कछ नहीं कर सकते। उस ग्राटिकल को अमेड कर दीजिए। इन गव्दो के साथ हम ज्ञापकी मार्गों का ममर्थन करते हैं। इस ग्रगर भीर मगर के साथ कि ग्रगर ग्राप यह कर मकें तो।

MR. DEPUTY-SPEAKER: Before I call the next speaker, I want to convey $a_{\rm II}$ important message to the House.

A few days ago, some Members raised a question about the legality and constitutionality of helding the 320

Presidential Election and the Minister of Law had agreed to make a statement. Now, he has volunteered to come and make a statement in the House at 6 P.M. or soon after the guillotine of the rest of the Demands.

This is the information I am giving to the Members so that they may not say that they have been caught by surprise.

Shri Chavda.

थी के एस वाबका (पाटन) : उपाध्यक्ष महोदय, झाज में भ्रपना भाषण हिन्दी में करूगा। गजरात में राष्ट्रपति शासन है । 31 मार्च से ताल्लका पचायतें, जिला पचायते श्रीर म्युनिसिपल कारपोरेशन म जनता के चुने हुए प्रतिनिधि नही है। सब म्यनिसिपल कारपोरेशन सूपरसीड किए गए है ग्रीर सरकार कानून नही बना सकती इमलिए 31 मार्च से इन पचायतो के सदस्य खत्म हो गये हैं। तो मै उम्मीद करता हं कि गृह मलालय के मंत्री महोदय इस बारे मे स्पष्ट कहेंगे कि इन पचायतो और म्यनिसिपल कारपोरेशन का चुनाव कब है। गा क्योंकि में अपनी कास्टीट्यू ऐसी मे हो कर आया ह भीर जनता चाहती है कि वे चुनाव जल्दी होने वाहिए। ग्रगर ग्राप यह भी बताये कि लेजिस्लेटिव ग्रसेम्बली का चुनाव कब होगा तो बहुत भक्छी बात होगी।

गृह मंत्राल्य को हरिजन और आदिवा— सियों के उत्कर्ष का काम भी फरवरी 1973 से सींपा गया है। अब बिहार में, अपने हाउस में जो बहस हुई थी, हरिजन महिलाओं पर जो अत्याचार हुए थे उस बारे में चर्चा हुई मगर जो पुलिस झाफिसरों और पुलिस बे अत्याचार किए थे, भीरतों पर रेप किया था, उस बारे में अभी तक कुछ नहीं हुआ है। अगर सरकार कुछ नहीं करती है तो इस सरकार को क्या अधिकार है दूसरे को कहने का कि दूसरे ऐसा करें। इसलिए सरक अच्छा उदाहरण पहले पेश करे और जुड़ा जहां

सरकारी नौकरों या भ्रफसरों के द्वारा हरिजनों पर घत्याचार किया जाता है उस बारे में त्रन्त कदम उठाए, उस हरिजन भीर भादि-बासी को सुरक्षित करे। गुजरात में गांधी नगर में जो गुजरात का कैपिटल है वहां सैक्टर न० 29 मे जो सरकारी लोग रहते थे उनमें से एक हरिजन भी रहता था, वह भी सरकारी नौकर था। उसकी भौरत हरिजन नही थी, सवर्ण थी। इसलिए जो गर्भा चल रहा था वहां उसको इजाजत नहीं दी, झगडा हम्रा, पुलिस केस हम्रा। ये सारे लोग सरकारी कर्मचारी हैं। यह केस में हैं। लेकिन कोर्ट से भगर बेनिफिट भाफ डाउबट पर छट जाते हैं तो सरकार का फर्ज है कि डिपार्टमेंटल ऐक्शन लेकर भपना एक ग्रन्छ। उदाहरण जनता के सामने पेश करे। ऐसा ही एक दूसरा इसीडेट भी गुजरात में बना है। इस में भी एक हरिजन ने सवर्ण खड़की के साथ शादी की। उसको मारने के लिये लोग आये। मगर उस समय कोई सवर्ण दूसरे से मिलने के लिये प्राए थे। यह धाधका की बात मैं कर रहा है। वह बेचारा उसके लिए कुछ दूध लेने के लिए बाहर गया हुआ था। इसी बीच सवर्ण लोगों ने ग्रा कर उसको पहचाना नही, समझा यही वह हरिजन है भीर उसको मार दिया। उसका गुना सिर्फ इतना था कि उसने सवर्ण लड़ की से शादी की थी। तो जहां जहां सरकारी लोग हरिजनों पर ग्रत्याचार करते है वहा वहां सरकार को बराबर ठोस कदम उठाना चाहिये । इससे जनता पर भी ग्रसर पड़ेगा। मगर भारत सरकार भी कुछ करती नहीं है। उसकी कथनी धौर करनी में बहत फर्क है। यह इस ह उस में जिस तरह से बात चलती है उससे हमें लगता है हरिजनो पर भत्याचार होते हैं, हाउस में बहस चलती है भौर फिर वहा पूर्ण विराम हो जाता है।

भारत सरकार के हाथ में यूनियन टेरीटरीज हैं और उसका उदाहरण झाप देखें, यह दिल्ली है, इसमें हरिजनों की क्या स्थिति है ? स्लम्स मे रहते है, 33I

सरकारी नौकरी मे रिजवेंशन है मगर फिर भी वे बेचारे पड़े हुए है। यह अच्छी बात है कि आप रिजवेंशन का परसेटज बढ़ाते है कि काप रिजवेंशन का परसेटज बढ़ाते है कि काप होता है नोर बढ़ा देते है तो उसका रिएक्शन क्या होता है? में अभी राजकोट गया था, डाक्टर अम्बेडकर जयन्ती थी, उसमे मुझे बुलाया था। वहा मुझे एक पंम्फनैट मिला जिसमे गवनेंमेंट एम्प्लाइज को लिखा था कि हरिजन आदिवासियों को सविसेज मे रिजवेंशन नही लेना चाहिए क्यो कि उससे एफिश्येसी मेन्टेन नही होती है। रिजवेंशन के बारे मे भी में हाउस को बताना चाहता हू कि जो मेरिट पर आते है उनको रिजवेंशन मे गिनते है।

फिर ती जो जैनरल में आते, हैं उनके यदि अच्छे मार्कस भी है तो उनको जैनरल में नहीं लेते हैं लेकिन इस सब के बाबजूद भी रिजर्वेशन पूरा नहीं होता, कोटा पूरा नहीं होता, जिससे हरिजनों के अन्दर अन्सतोष फैलता है, एजी— टेशन होते हैं और दिलत पैथर जैसी घटनाये होती हैं। ये लोग महसूस करने हैं कि सरकार एक तरफ कुछ कहती है लेकिन दूसरी तरफ उसको पूरा नहीं ५ रती । दूसरी तरफ जो नान—आदिवासी है, नान-हरिजन है, बें समझते हैं कि इन लोगों के लिये उतनी सुवि— धाये है, वे लोग उनको नफरत की निगाह से देखते हैं। आपको रिपोर्ट में एसी बहुत मी बात बतलाई गई है जिनको पूरा नहीं क्या गया है।

में एक और उदाहरण देना चाहता हू —
1944 में गवर्नमेट श्राफ इण्डिया पोस्ट—
मैट्टिन-स्मानर-शिप्स आई है जो हरिजनो भीर आदि-वासियों को मिलता था, लेकिन 1969 में उसको स्टेट्स पर टाल दिया । क्यों इसलिय कि जो पहले ही अधमरा श्रादमी है, वह दुखों को सह कर चुप बैठ जायगा। लेकिन में श्रापको बतलाना चाहना हू कि लोग अब चुप नहीं बैठी—जैसा बस्बर्ट में दिलन पन्थर बना है, ऐसा ही दूसरा जगह पर भी बनेगा।

मैं भापसे निवेदन करना चाहता है कि पोस्ट मैंदिक स्कालर शिप्से जैसे सरकार पहले देती थी, उसी तरह से देना चाहिये। इसरी पथ-वर्षीय योजना में प्री-मैट्कि-स्कालर शिप्स के भन्तर्गत स्टेट्स ने 52 लाख रुपया दिया था, लेकिन तीसरी योजना में वह कम हो गया भीर केवल 17 लाख ही दिया गया। इस लिये भारत सरकार जानती है कि यदि पोस्ट मैट्कि-स्कालर शिस का नाम भी स्टेट गवर्नमेट पर छोड दिया जायगा तो वह अपने ग्राप ग्राहिस्ता ग्राहिस्ता कम हो आयगा । में भापसे विनती करना चाहता हु कि भापकी पोस्ट-मैदिक-स्कालर शिप्स की स्कीम काफी सक्सेसफुल रही है, लेकिन श्रव श्राप उसको बिगाउने की कोशिश कर रहें है-इस की फिर सं श्रपने हाथ में लीजिये।

हरिजनों की हालत में पहले भीर भाज मे कोई फर्क नही पड़ा है। स्राज भी हरिजन गांवो में कुए से पानी नहीं भर सकता है, घोबी उसके कपड़े नहीं धोता है, नाई उसकी शैव नहीं करता है। ब्राज हम हमोत्रेसी की बात करते हैं, लेकिन इस तरह से कैसे चलेका । यह राष्ट्रीय प्रावलम है, किमी पार्टी की प्रावलम नही है। यदि हम को भ्रपने देश का सिर ऊचा करना है नव इस मामले में सबको मिलकर काम करना चाहिये, लेकिन दुख यह है कि जब गवनंमेट ही कुछ नही करती, जहां वह कुछ कर सकती है, वहां करना नही बाहती, तो इसका क्या ग्रसर पडेगा। इमलिये में गृह मत्री में विननी करना चाहता हु कम से कम जहां जहा ग्राप की यूनियन टैरिटरीज हैं, जहां जहा ग्राप का लेख है, उसमे कुछ कर दिखलाइये । गुजरात में प्रैसिडेंट रूल है-इस पीरीयड में वहां जितना रिजर्वेशन है-सविसेज का उसी को भर कर दिखला दीजिये। लाखी बी० ए० पास भीर पढ़े लिखे लोग बेकार हैं, मान प्रैजूएटस बेकार हैं, इनके सिये कुछ कीजिये-तब स्टेट पर कुछ धसर पडेगा भीर लोग समझेंगे कि सरकार कुछ करना चाहती

है, बरना सीन समझने हैं कि संस्कार कहती कुछ है जेकिन वैसा करना नहीं चाहती।

श्वाप ने जो समय दिया है, उसके लिये धन्यवाद देता हूं।

भी शक्ति भूषण (दक्षिण दिल्ली) उपाध्यक्ष महोदय, माननीय सदस्य चावडा जी ने जो कुछ नहा है-नह सही है। इस ने कोई शक नही कि भ्राजार्वः के बाद देश मे हरिश्रनों के प्रति काफी कुछ किया गया, लेकिन दो हजार सालों में हमारे देण में कुछ ऐसी परिपाटी बनी हुई है, जिस की वजह से वर्ण-व्यवस्था से जॉटत यह समाज क्यार उठ कर नही श्रासका। मैं तो कभी कभी सोचताह कि खुग्रा-छृत इन्सानियत का जहर है । एक व्यक्ति जिसे समान ग्रधिकार प्राप्त है उस के साथ दूसरा भेद-भाव करे, खुग्रा-छूत करे ती ऐसे व्यक्ति को तो इस देश का नागरिक होने का भी मधिकार नहीं होना चाहिए, उस के लिए ग्राजीवन कारावास की सजा भी कम है। ग्राप दूर न जाइये --- दिल्ली से 20-25 मील की दूरी पर ही हरिजनो को कूंए से पानी नहीं भर ने दिया जाता, चरण सिह जैसे नेना बहा मौजूद है, जो बोट डालना तो दूर रहा कुम्रो पर पानी भी नहीं भरने देते। जैसा चावडा जी ने ग्रभी कहा---यह पार्टीज का सवाज नही है, यह राष्ट्र के लिए कलक है और ब्राप ब्रीर हम सब की इस के खिलाफ मिल कर लडन। चाहिए। जब हम समाज मे खुग्ना-छूत की बात करते है तो सामाजिक ऊच-नीच, राजनीतिक ऊच-नीच भीर भ्राधिक ऊंच-नीच का भी इस से गहरा सम्बन्ध है, भीर जब तक देश में सामाजिक कान्ति नही प्रायगी कोई भी समाज धागे नही बढ़ सकता।

एक माननीय सदस्य . जनसम क्या कहना है ?

श्री शशि भूषण : जनसंघ के श्री गोल-बल्कर जी ने कहा है कि हरिजन, ब्राहण-ये सब तो ईश्वर के बनाये हुए है। यह उन के सोचने की बात है, हम इस मे विश्वास नहीं करते। लेकिन मै एक बात मती महोदय मे खास तौर से कहना चाहना हू- इस देश में जहातक लाएण्ड ग्रार्डर का प्रश्न है चाहे वह किसी भी तरफ से हो-वाहे लेक्ट-. रिएक्शन की तरफ ने हो या राइट-रिएक्शन की तरफ से हो—हमें इन दोनों को एक दृष्टि से देखना चाहिए। लेकिन ऐसा होता है कि जब कभी लेफ्ट-रिएक्शन उभरता है तो हजारों नक्सलाइट्म पक्षड कर बन्द कर दिये गये सैंकडो को मार दिया गया-मैं नक्सलाइट्स के पक्ष मे नहीं हू-लेकिन ऐसा उन के साथ हुम्रा है। जब राइट-रिएक्शन उभरते है तो उन को मारना तो दूर रहा, एग्रर-कण्डीशड कार में बैठा कर दिल्ली लाया जाता है, उन को भाखडा दिखाया जाना है, कहा जाता है कि हरिद्वार देख माइये। बडे-वडे मालिको के बच्चे, प्रीफसरो के बच्चे उन एजीटेशन्ज मे हिस्मा लेते है, उन को हीरो कहा जाता है भीर हमारे मोरारजी भाई भी उन के लिए मृख हडताल करते हैं झौर कहते है कि ये ठीक काम कर रहे है, इन की बात के मानना चाहिए ..

श्री के **एसः चावड़ा** कहा कहा है कि राइट रिएक्शन ठीक नाम कर रहे हैं।

भी शशि भूषण फिर भ्ख हडतास का स्या मतलब है ? जयप्रकाण जी भी कलकतें मे जो कुछ हुआ उस की भनंस्ना करने हे लेकिन दूसरी तरफ जो हिंसा होती है उस का समर्थन करते है । आर॰एस॰एस॰ की रैली मे जाते हैं, कहते हैं कि आनन्द मार्गी ठ है मैं आप मे कहना चाहता ह कि ला एण्ड आर-इंट के मामने मे जो लोग कानून तोड़ते हैं,

[श्री शशि मूचण] बसेंच को जलाते हैं, वह कोई भी हो---राइट रिएक्शन हो या लेफ्ट रिएक्शन हो, उन को एक तरह से डील करना चाहिए। जिस तरह से नाक्सलाइट्स का दमन किया गया, भगर उसी तरह मे 1 परसेंन्ट भी इन के साथ गुजरात , बिहार किया जाता तो ये ऊपर नहीं उठ सकते थे। इन घपर-क्लास के लोगों को, राइट रिएक्शनरीज को तिलक लगाया जाता है, मालाये पहनाई जाती हैं, ये सत्याप्रह नहीं करते, सत्याग्रह लीला करते हैं। हम जेल बच्चें के लिए जाते थे नो हम ये कोई बात भी नही करता था, ग्रगर 6 महीने भी इन को बन्द कर दिया तो फिर कोई धनमे नही जायगा । जिस तरह से रामलीला होती है उसी तरह से इन की सत्याग्रह लीला मैं चाहता हूं कि इन को मजबूत हायों से दबाया जाय, चाहे राइट रिएक्शनरी हो या लेफ्ट रिएक्शनरी, हो, दोनों के साथ बराबर का व्यवहार होना चाहिए ।

जहा तक पुलिस का सवाल है, सेना का सवाल है आज हमारा गरीब देश 2 हजार करोड़ हत्या सेना पर खर्च करता है और एक हजार करोड़ सेना का लिक बिल्ड करने मे खर्च करता है। इसी प्रकार आन्तरिक मुरका के लिए काफी हपया खर्च करना पडता है। यह सब हपा इस लिए खर्च करना पडता है। यह सब हपा इस लिए खर्च करना पडता है कि इनदिस्त में से बाहरी दुश्मन आज बहुत नेजी के साथ हमारा रास्ना रोक रहे हैं। ऐसी स्थित मे मैं जाना चाहता हू और अपने मिलों से अपील भी करना चाहता हू

कि देस की स्वाधीनता, देश की प्रगति धीर प्रजातन्त्र की देश की गरीबी और देश की मंहगाई के साथ नहीं तीला जा सकता है । एक तरक जब हम करोडों रूपए बर्च करेंने तो महंगाई बढ़ेगी, उसको हम रोक नहीं सकते हैं दूसरी तरफ मंहगाई रोकने का जो तरीका है उसमें क्लैक मार्केटीयर्स के पास जो दस हजार करोड रुपया है उनके साथ भी हमदर्दी बरती जा रही है। पाज ग्रगर कोई व्यक्ति चार रूपए की चोरी कर ले तो उसको हथकडी पहना दी जाती है लेकिन बड़े बड़े लोग जिनको पदमश्री देते हैं, वह श्री गुजरमल मोदी हों या दूसरे, उनके प्रपराधों, प्राधिक प्रपराधो को हम रेसपेक्टफुल समझते हैं, उनके हम हथकड़ी नहीं लगाते है। जो लोग इस प्रकार से आर्थिक श्रपराध करते है उनके खिलाफ भी सब्ती करनी चाहिए। पिछले दिनों सी बी बाई ने प्रच्छा काम किया है। इस तरह से जो मार्थिक भपराध है उनको भी वह भण्ने हाथ मे ले लेना भी चाहते है और साथ साथ राज्यों को हम मद्द देना चाहते है लेकिन सी बी माई के पास ताकत ही कितनी है और न उनके पास उतना धन है। उनके घच्छे घच्छे प्राफिसर यहा दिल्ली में भाते हैं तो उनको रहने के लिए जगह नहीं है। सरकार की घोर से मकान का केटा भी मुकरेंर नहीं है। सी भी भाई में प्रकसरों भीर कर्मचारियों के लिए मकानो की कोई व्यवस्था नही है। इसकी व्यवस्था होनी चाहिए भीर भाज भाषिक भपराध तथा मन्तर्राष्ट्रीय भाषिक भगराध इतने बढ गए हैं मैं समझता हू वह अधिक से अधिक सी बी ब्राई के हाथ में देने चाहिए। विडला भगरीका

मोटर्स में बनामी मयतें हैं, उसी में से कभी तो उसार लेते हैं भौर कभी कहते हैं कि कोलाबोरेट लेने दो । यहा के बड़े बड़े ब्यादरी जो हैं बह भनरीका में यहदियों के माथ मिलकर बेनामी धन से बैंक चलाते हैं। इसके लिए धाप सी बी धाई भौर फारेन के लिजेन्स के लोगों को धाधक माधन दीजिए। यह गहरे सवाल हैं। इसके लिए यदि उनको धाधक साधन दिये जायेगे तो मेरा विश्वास हैं कि ऐसे लोगों को पकड़ कर हम रिपोर्ट किताब में दर्ज कर मकते हैं।

की रामाच राव जोशी जी या गए है, जब धार० एस० एस० के बैन की बात हम करते हैं तो उनको बड़ी तक नीफ होती है लेकिन यह बान मही है कि गाधी जी के मरने के बाद कुछ लोगों ने मिटाई जरूर बाटी थी। किसने वाटी थी, मै ग्रापमे पूछना नहीं चाहता है। कुछ घर जना दिये गए, कुछ पकड़े गए, एक बड़े नेना जेल से माफी मांग कर आगाए। तो जो एक दाग लग गया है उसको धाप साफ नहीं कर सकते है। ग्रन्छ कार्यों से ही उसको माफ कर सक है हैं। पैरा मिलिट्री ग्रार्गनाई जैगन्म की अथा जरूरत है ? क्या हमारी मेना और पुलिस काफी नहीं है ? एक प्राइवट श्रामी बौद्ध बना ले, एक किश्चियन बना ले, एक हरिजन बना लें, उसकी क्या जरूरत है ? जो हमारी सेना है उसके लिए ग्राम करोडों रुपए का बजट पास करते हैं फिर उसके बाद प्राइबेट सेना की क्या जरूरत है ? प्राइबेट मेना कई बार ऐसे काम करती है जैसे प्रभी पिछले दिनों उसने बिहार में किया बीर कभी दूसरी जगहों पर किया। यह धानन्दमार्थी धीर सधी मिलकर धराजकता पैदा करते हैं। बैसे तो बड़े धर्म छोर कर्म की बात करेंगे, दान पुष्य की बात करेगे लेकिन अमल हम देखते है कि किसी एक नता को मामने खड़ा कर लेते हैं और उसके पीछ सारा कुछ कुक में करते हैं जिन लोगी की यह नीति रही है, जो कूटनीति को अपना सबसे बड़ा धर्म मानते है उनका यह धर्मचक हैं भीर उसको इस देश की जनता प्रच्छी तरह जानती है । जहां तक प्रजातन्त्र का मवाल है, इस देश की जनता हमेशा उमको हराती है । जहां तक दूसरा मवाल है उसके लिए सरकार को सख्त कदम उठाने चाहिए लेकिन यह सरकार राइट रिएक्शन के प्रति हमदर्दी रखती है । धर्मर मरकार थोड़ी सी भी सख्ती बरने तो देश में धर्मन चैन हो सकती हैं ।

जहां तक ब्लैक मार्केटिंग भीर एडल्ट्रेशन का मवाल हैं, उपाध्यक्ष महोदय, मैं आपसे सवाल पूछना चाहता हूं कि असेम्बलीख से बड़ी मुश्किल से जो प्रोग्रसिव एक्ट पास होते हैं बह केन्द्रीय सरकार के पास आते हैं तो केन्द्रीय सरकार उनको कुर्सी के नीचे दवा कर बैठ जाती हैं। बंगाल सरकार ने एक बिल पास किया था कि एडल्ट्रेशन करने वालों को आजन्म कारावास होना चाहिए, वह बिल जहा पर राष्ट्रपति के दम्त्रखन के लिए आया, बह यहां पर मीजूद है चेकिन यहां में निकल नहीं रहा हैं।

ग्राप लैंड ग्रंब की बात करते है लेकिन देश में करोड़ो ग्ररबो रुपए की सम्पत्ति लैंड र्नम लेबरमं की लेण्ड ग्रंब होती है उनकी लैंड रोज ग्रैब हीती है लेकिन कोई शोर नहीं होता। वहा पर दिल्ली में थोडा सा जरा मा कुछ हुआ तो सारी दुनिया में शोर हो रहा है। इनको जरूर सवा होनी च।हिए जिन्होंने लैंड ग्रेंब की है लेकिन ग्रेंब को भपराध मानकर सारे देश में कार्यवाही होनी चाहिए। बम्बई, कलकत्ता, मद्रास में भीर गावो ने रोज लैण्ड प्रैव होती है। पजाब में भीर दूसरी जगह का भाषको पता है । इसलिए वह लैंड पैव का जो सवाल शाया है इस पर भी मरकार एक बिल लागै। मध्य प्रदेश की सरकार ने सोलिंग के सम्बन्ध में एक बिल भेजा है उसको तीन साल के बाद वापिस भेत्र दिया। जो हमारा वित मनालय सोता रहता है भीर गृह मंत्रालय की थीड़ो 389

[श्री शसि गुषण] सी मजीं होती है उसक बाद वह बिल बापिस जाता है तो भगर उससे सहमत न हों या ग्रगर सहमत हो तो उसको पास करके मेजे भीर मैं चाहंगा उसके लिए समय की कोई सीमा होनी चाहिए कि कोई बिल आयेग तो नीन महीने मे भेज दिया जायेगा । राष्ट्रपति जी इस बात का आश्वासन दे। लैंड ग्रब का जहा तक सवाल है, दिल्ली मे न्यू फ्रांन्ड्स कालोनी का जो प्रक्त भाषा है सत्मने उसमे श्री कंवरलाल गुप्त की जमीन, श्री महाबीर त्यागी की जमीन है जबकि दिल्ली का रहने वाला होना चाहिए, 1200 प्लाट्म में 4 सी प्लाट्स ऐसे है जो लुसाना जाम्बिया, कलकत्ता, मद्रास सारे देण के लोगो के है भीर कुछ लोग ऐसे हैं जिनके 15 15 प्लाट उसी जगह पर है। मैं चाहता ह पूरी सोसायटी को खत्म करना चाहिए श्रीर दोबारा उसका बटवारा होना चाहिए। में समझता हूं उनके खिलाफ जाच होनी चाहिये ग्रीर ग्रगर निर्दोष है तो माना चाहिए। इसके पीछे वह व्यति है जिसने अपने लडके के लिए जो कि बैंक डकैती केम मे गिरपतार हम्रा है. उसके लिए चार जजेज को फीन किया है और उनमें उहा कि अगर आप यह केस लोगे तो तुम्हे जान से मार देगे। एक जज ने केस ट्रान्सफर किया, दूसरे जज ने ट्रान्सफर किया, तीसरे ने भी ट्रान्सफर विया ग्रीर जीधे को ग्रदालत मे जाकर धमकी दी, वकीलों ने मिलवर धमकी दी श्रीर वह रिटायर होकर छैठ गए । फिर उन्हान एग्जिन्यृटिव से दरख्वास्त की ग्रीर जेल के अन्दर गवाह को पहुंचा दिया गया गवाही के लिये ऐसे लोग जो डकत है जो लैंड ग्रंव नो क्या जो अदालत को धमकिया देते हैं (रखवधान) मैं चाहंगा जरूर मी (बी 0ग्राई 0की इंक्वायरी होनी बाहिए ताकि कंवरलाल मुप्त हो, महाबीर त्यागी हों भीर चाहे कोई भी हो (ध्यवधान) मैंने तो फैसला किया है कोई मकान बनाऊगा नहीं क्योंकि मैं समाजवाद पर विश्वास करता हं, जब सबके पास मकान होगा तो मेरे पास भी होगा। (अववधान)

माननीय कछवाय जी जरा अवनी शक्त आहने में देखे कैसी सगती है। उपाध्यक महोदय मैं आपसे प्राचेंना कक्ष्मा कि एक शीशा लाकर इन्हे दें वीजिए ताकि अपनी शक्त देख लिया करें कि जब ये जिस्टबै करते हैं तो कैसे सगते हैं।

MR. DEPUTY SPEAKER: I may tell him that he has a very beautiful moustache.

भी शिश भूषण फीडम फाइटसं के सम्बन्ध में मैं कहना चाहता हूं कि बहुत अच्छा कदम उठाया है, बहुन में लोगों को मदद दी गई है। लेकिन इसके माथ-साथ इममें कोई शक नहीं कि कुछ एम० पीज० हैं जो कभी जेल नहीं गए, एक सुन्तानी गवाह रहा है, उन्होंने अपते भाई, रिफ्तेदार और दोस्तों को मर्टिफिकेट दिए है तथा उनको भो पेशन मिली है। इसको भी मन्त्री जी देखे जाव करे।

ग्राखिरी बात यह है कि देश में राइट रिएक्णन ने जो फिजा बनाई, श्री जयप्रकाश नारायण जी के हाथ म झडा थमा दिया उसमे बहुत नुकसान हो रहा है। मैं चाहुगा श्री जयप्रकाश जी में कि उनका श्राखिरी समय है वे ब्रानन्द मार्गी बौर बार् । एस । एस। का साथ छोडे ग्रीर सही काम मे लगे। उन्होंने देश के निर्माण का ब्रत लिया है उमगे लगकर वे तमाम देश का भला कर सकेंगे बरना देश के इतिह!स ने उनको क्या समझा जायेगा इस बात को नही समझते है। हमारी पार्टी श्रीर हमारे नेता उनमे लडाई नहीं करना चाहते लेकिन उन्होंने माईडड मिक्लि बार श्रूक जैसे इसका घेराव, उसका यहा ग्रीर वहां ग्रान्दोलन ,35 दिन मे बिहार साफ, इसी प्रकार प्रभी माननीय घटल जी गये मध्य प्रदेश घसम्बली समाप्त करनं चले गये। चुनाव में हारते हैं भीर बाद में इस

्डंन की बातें करते हैं। मैं चाहता हूं कि प्रजातन्त्र कि रक्षा के लिए और बहुत से तरीके हैं जिन के द्वारा आप अन्तः भावनामों को रोंच को प्रविशत कर सकते हैं।

ग्रांखिर में यही कहता हूं कि राइटर्रा एक्शन जो पैरा मिलिटरी आर्गेनाइजेशन्स है उन पर बैन लगाया जाय। माननीय दीक्षित जी, ग्रापकी ताकत स्वर्गीय सरदार पटेल से ज्यादा है, ग्राप के पास रिसोंसज ज्यादा है और ग्राप बाहें तो ग्रार० एस० एस बैन कर सकते हैं। इसनें क्या समझने की है, सारे प्रमाण ग्रापके पास मौजूद हैं।

इन शब्दों के साथ में इस अनुदान का समर्थन करता हूं।

SHRI FRANK ANTHONY (Nominated—Anglo-Indians): Mr. Deputy-Speaker, I have given notice of a cut motion to draw attention to the erosion of minority rights and the rule of law.

First of all I want to deal with the increasingly desperate position, especially of the smaller minorities. I am aware of the nauseatingly repetitive professions of solicitude for the minorities. We get them day in and day out. But if they are analysed. you will see-good luck to them-that they are directed to the Muslims and to the Scheduled Castes. Good luck to them for these professions of solicitude. The reason is obvious, because today the sole consideration in politics is just politicking, vote-catching. The Muslims and the Scheduled Castes being numerically fairly sizeable, can be decisive with regard to certain of the seats. So these professions are reeled off day in and day out.

So far as the smaller minorities are concerned, may I say this with great respect and without qualification that the Government could not care a tinker's damn. except perhaps for the Sikhs, because although they are comparatively small. fortunately for them they have got the capacity and they have the inclination, to go out into the streets, which is what Government responds to.

I only want to refer to two or three measures taken by Government—contemplated by Government—and calculated to strangle the minorities. That is the shame of it.

SHRI DARBARA SINGH (Hoshiarpur): At the cost of the minorities, you are pleading your case.

SHRI FRANK ANTHONY: On 29th of May 1973, I had written to my friend Y. B. Chavan, the Finance Minister, and had drawn his attention. to cl. 6 of the Taxation Laws (Amendment) Bill 1973. It is an utterly criminal, iniquitous provision. In 1962, Government brought in a provision. I think it was Morarji Desai who did it. I took him to Jawaharlal Nehru and Jawaharlal tried to make him seea little sense. He did see a little sense. In 1962 when the amendment was brought, it was prospective, effective from 1st April, 1962. It was to the effect that minority trusts and charitable institutions would after that date not get the protection of sec. 11, that is exemption from income tax of the monies they could find. It meant that after 1962 no religious minorities—no-Muslims, no Sikhs, no Christians, no Anglo-Indians-could found charitable institutions unless they were to be taxed out of existence. But I got Jawaharlal to persuade Morarji not to make it protrospective, so that at least the trusts formed before 1962 were not affected. They would still be treated as public charitable institutions and we got exemption from income tax.

But what do you do now? You bring in this evil provision: it is not only prospective, but it is retrospective. So

[Shri Frank Anthony]

343

all our trusts, whether founded 100 years or 200 years ago, come within the net and the monies that we are giving to our people, poor destitude ladies and young people-you are going to expropriate, it into the coffers the bottomless coffers of the Government. Don't you realise and feel the shame of it? Cou single only the minorities out.

I was a member of the Constituent Assembly. I had the privilege being there. One of the fundamental rights the framers of the Constitution gave was art. 26. What is article 26? It gave religious minorities the right to found charitable and religious trusts. That is what the framer, gave. But today with all your mouthing of secular, democratic professions, you want to destroy only the religious minorities.

In 1962, when the amendment was on the anvil. Minoo Masani and I attacked Government We said why are you doing it? Even to make it prospective is iniquitous. Now you make it retrospective. All our trusts are going to be destroyed and you will do nothing about it .because you want meney, as I said, for the bottomless pits of the Government coffers.

Then, another inquitous provision is this. Government will deny it, but I am not that kind of small-time lawyer who does not understand the implications. What is the effect of this? Government singles out only the religious minorities for the destruction of their charitable trusts and institutions. That means only the Hindus—that is what it means—only the Hindus will be able to have charitable and religious trusts, public trusts, free from income-tax because the Hindus constitute 85 per cent of the population The Scheduled Castes are already exempted. So, they can have Scheduled Castes trusts which

do not pay income-tax. The Hindus will have these trusts because they form 85 per cent and they will say that these are for the poor, and they will keep them for the Hindus. But how can a microscopic minority say it is a public trust for everybody? We have to say that it is for themselves. But as soon as they say this you garrotte them and you destroy them.

You talk about secular democracy and a pluralistic society; this is a country of religious minorities. But I do not know who has thought of this; some moron in the Finance Ministry. In the name of secular democracy you want to destroy us.

Then, look at the other inquitous provision. It is already there, knows, some of us do work outside. We build things worth ciores of supees for poor people. I had built up a few lakhs for my poor old ladies; a central relief fund, and you bring in this evil provision of income-tax on charities I was getting contributions, from my people, small contributions, so that I could help my destitute old ladies What do you do? You bring in the income-tax provision manage to save Rs. 5,000, you grab the whole thing away. So, I had to scrap my central relief fund for my old ladies. Are you not ashamed of yourselves and of your professions secular democracy? Instead of encouraging us. a small minority, in our self help, you seek to destroy us because Government do not care a tinker's damn. Government does not give one pice to my poor old ladies. Government does not give one pice to my poor, Anglo-Indian orphans. I do all that. I do not ask you.

AN HON MEMBER: It is not true.

SHRI FRANK ANTHONY: It is very true. We do not take one pice because if we take one pice immediately garrotte our institutions. I had to close down our Central Relief Fund because as I said, you want everything for the hungry maws of the Government, you want to tax everything; you want to destroy the minorities, and you will not even allow us to help our poor.

Let me say a word about the increasingly desperate unemployment position. It is hopeless so far as minorities are concerned. We have the Annual General Meetings of my Association. I have an MLA in each State. Everyone of them, without exception, tells me, "The employment exchanges are cess-pools of corruption." They are riddled with corruption from top to bottom. And what happens to a small minority? You do not care, and our numbers are too small for you to care. An Anglo-Indian cannot be registered without paying Rs. 500 to be registered, and to get an appropriate place he has to pay Rs. 1,000. So, they do not go to them: employment exchanges are so riddled with corruption that they do not go to them.

Then, what have Government done? Government has compounded scourge of unemployment by this criminal hostage of the sons of the soil movement. I accuse the Government not only of encouraging but of sanctifying the sons of the soil movement, the greatest scourge which could have been inflicted on this country. What have you done? In the public sector. you have said that 80 per cent of the jobs should go to the sons of the soil. The railways have sent out a circular. You had entered into collusion with the Shiv Sena to give it to the Maharashtrians, and who are the Maharashtrians? Not the people who were born and bred there but those whose mother-tongue is Marathi. You have entered into an alliance with these people and your greatest criminal hostage is this.

What about your six-point formula in regard to Andhra Pradesh? I know what has happened so far. People from Bangalore and other places come

to me. Apart from the fact that their children cannot get jobs, can blame them for finding cattle-boats and getting out of this country? Brilhant boys and girls go there, and they are asked; "Has your father been resident in Bangalore, Mysore, for 15 years?" The boys says, "No, Sir. He is a Central Government servant; liable to transfer." Then the reply is. "I am very serry." The father has got his property in the State, his father had property in the State. They say we are sorry; your father was not resident for 15 years; you cannot get admission in the College. Now you compound it with this criminal hostage of the Andhra Pradesh formula. I used to sit alongside Dr. Shyamaprasad Mookerjee in those days, and I alone opposed Governments giving this criminal when Government was Andhra Pradesh. It was Pandora's box. Government are going to split the country into watertight compartments cultural and linguistic enclaves. Now with the Andhra formula, you are going to atomice the country districtwise. Then at the same time you talk in a mealy-mouthed way: common citizenship, national integration. It is bad enough when you had residential qualifications; now you going to have residential qualifications. districtwise.

15.06 hrs.

Finally, as a lawyer who everyday has to deal with these matters, I want to refer only to one particular aspect. There is this sinister, steady erosion of the rule of law by the Government. I am talking about the cynical continuance of this fictitious gency. In 1971 the war was over. You still continue the emergncy? Article 352 contemplates a grave emergency affecting the security of the country. threat of war, external aggression. etc. Is there a grave emergency now? You are facing a little trouble with the Nagas, a few of them there and some Mizos there. It is the confession of the inept and utterly impotent

[Shri Frank Anthony]

character if you say: because the Nagas give you a little trouble, the Mizos give you a little trouble, therefore, there is an emergency. Under article 353. during emergency, have superseded the federal character of the Constitution. You can give executive directions to any State; you can legislate on any subject in List All our precious fundamental freedoms are contained in article 19. freedom of speech freedom of expression and freedom of association freeof jobs. All are guspended. Tomorrow if somebody wants to indulge in some political gimmickry and today it is Government by gimmickry and you take a swipe at the press, what can the press do. They will come to me and say; Mr. Antony, you argue the cases very well, please take up this case. I will not be able to get it admitted. The Courts will say: what can we do: Article 19 is suspended. There is no freedom left in this country except the freedom of the Indian citizen to rot in jail without trial. I do these cases under the Maintenance of Internal Security Act and the D.I.R. almost every day. The DIR is a draconian and unprincipled. It provides for the "subjective satisfaction" of whom? of pettifogging district Magistrate. I use the word 'nettifogging' advisedly because your district Magistrates are at back and call of Sub-Inspectors of Police, they are at the back and call of every M L A and every Minister. It is the District Magistrate's subjective satisfaction. When we go to Supreme Court, they use a catch-all phrase, security of the State public order. The Supreme Court savs we are helpless, we cannot just do anything, however malafide or however bassless it may be Under the Defence of India Rules one does have to give any ground. The preventive detention is bad enough in all conscience. but you have to give the grounds. If one ground is bad or irrelevant the Court strikes it down. But under the Defence of India Act and Rules it is

the lot of the Indian citizen, without any ground being given, to rot in jail and to rot in jail without trial.

When the Government talks about rule or law and constitutional methods it is like Satan quoting scriptures. How can the Government talk about this? You have crucified the rule of law; you have crucified and suspended every fundamental right of this country. The violence that is happening is because you have lost all credibility, all democratic credibility, all credibility as maintainers of the rule of law. Because you have crucified the rule of law and you continue to do so, it is an invitation to the people at large to follow extra-constitutional methods, to go into the streets.

श्री वरकारा सिंह (होणियारपुर)

किटी स्पीकर माहव मैं ने भी कुछ दोस्तों में
मुना है डेपके मी के नाम पर उन्होंने डेमोकेसी के खिलाफ बहुत मी बाते कही। मैं मबसे
पीछे बोलने वाले बहुत इटेलीजेट और जो माहिर
वकील भी है, में कहना चाहना हू कि डेमोकेमी का यह करिण्मा है कि साप जो श्रमें जा क

SHRI FRANK ANTHONY: Sir, on a point of clarification. This is deliberately false. My friend is speaking out of ignorance. I was not a GSO. I used to sit in the opposition.

SHRI DARBARA SINGH. You are privileged to say anything, any false thing you can say. We are not GSOs.

SHRI FRANK ANTHONY: You read my speeches made before independence.

15.07 hrs.

[SHRI JAGANNATE RAO JOSHI in the Chair]

की दरवारा बिहु : यान जरा सून नी जए। सब से ज्यादा ग्राम की इगनोरेंग है। ग्राम एक कमरे में बैठ कर तैयारी कर के आ गये। ज्ञाप मैसेज में नहीं हैं, भाप इस बात को समझ ले कि हम लोगों की नब्ज को जानते है, उन मे रहते हैं, उन में काम करते हैं। ग्राप एक सोसायटी बना कर यह कहते हैं कि रिलीजन पर बहा भारी ठेस लगाई जा रही है। माप जरा तहम्मुल से सुनिये। मैं भापको कहना चाहता हं कि ब्रिटिश पीरियड मे जब कि डेमो-कमी कतई नही थी, एक बाहर से मुल्क का राज्य था, उस वक्त यहां कोई डेवलपमेंट नहीं थी। सिर्फ सडके भी मंग्रजों के जाने के नित् ही थी और यहा के लोगों पर रिप्रेशन करने के लिए ही बनाई गई थीं, कम्युनिकेशन्म का कोई विश्रेष प्रबन्ध नही थी, कोई इन्नजाम नही था। पयुडल सिस्टम था भीर एजकेशन भी कही नही थी, एप्रीकल्चर को बिल्कुल इगनोर किया हमा था हर लिहाज से। उस वक्त पापुलेशन भी बहुत कम थी। यह सब कुछ होते हुए भी मैं कहना चाहता हूं कि आज इस के उलट चीज है। अंप्रजों के चले जाने के बाद श्राजादी के बाद डेमोक्रेसी बाई है। इस से कौन इंकार कर सकता है कि हरेक की जवान पहले से बोलने के लिए बढ़ी है सीर वह जो पहले बिल्कुल चुप रहते थे, जिनकी जबान पर ना रा था, जो चल फिर नहीं सकते थे भीर जिन पर अंग्रजों का रिप्रशन होता था, उन की जबान थाज बहुत लम्बी हुई है। धाज वह नह सकते हैं भीर जो उन के मन में भाता है, उस को वह कह सकते है। यह डेमोकेसी नही है. तो श्रीर क्या है जो इस हाउस में इतनी बाते कही गई हैं जाती तौर पर भी कही गई है सौर जमायत के तौर पर भी कही गई है। मौर वह डेमोकेली सड़ी है जिस में साप बोल सकते हैं, कुछ कह सकते हैं, विद्या मकते है, पढ़.सकते है, सारी चीज तो है। सौर किस

चीज का नाम है डेमोक्क्सी, जिस के सिए इम जोर से भ्राप भावाज बुलन्द कर रहे हैं।

तो मैं यह कहता हूं कि झाज सोमाइटी एक्सनेड हुई भीर एक्सनेड साथ-याथ हमारी मुश्किलात भी बढ़ी श्रीर उन मुश्किलात के साथ-पाथ रिफार्मस भी हए और डाइमेंशन जो काइम का है, वह भी वढा है। हम समझते है कि काइम्स के मैं यह पिछले 10 माल में हिन्दुस्तान की जो पापू-लेशन बढी है, वह 27.4 परसेन्ट बढ़: है और ज्यो-ज्यों पापूलेशन बढ़नी नाती है त्यों-त्यों यह प्राब्लम जो काइम्स की है यह भी बढ़ती जाती है। मैं श्राप को उस बात में नहीं ले जाना चाहता कि काइम्स की स्टे-टिटिक्स क्या है। आज उस में मैं धाद को नहीं ले जाना चाहता लेकिन इंक्रीज क्यों होनी है. उम के बारे में मैं कुछ मर्ज करना चाहता है।

एक बात तो यह है कि हमारे मुल्क मे जो देहात के लाग हैं, वे कस्वों में बा रहे है भीर ग्रवीं नाइजेशन हो रहा है। ग्राबीनाइजेशन होते के कारण नये-नये फैक्टर्स मा रहै। इस तरह से एक तो श्रवेनाइजेशन हथा, इंडस्ट्रियेलाइजशन श्रीर तीसरा है पापूलेशन ग्रोथ जो कि बहुत तेज हो गया है। इनटरनज माइग्रेशन भी है। इस के साथ-साथ टेक्नोलाजी म भी चेन्ज हम्रा है। इस वजह स एडमिनिस्ट्रेक्न ग्राफ जस्टिम मे बहुत बड़ी मुश्किलात का भारती आज हमें वरना पड रहा है। आज ये सब बाने जो है ये भ्राज में 20, 25 माल पहले नहीं थी। माने वाले पेटर्न में हमें सोचना होगा और इस साइंटीफिक ऐज मे इस को हल करना है। अबेंनाइजेशन के वारे में, चेयरमैन साहब, मैं भ्रजं करूं,यह जो रेम्पोसीबिलिटी सरकार की कही जाती है। देहातों के लोग नौकरी की ताश में शहरों में या कस्त्रों में जाने है, उनको बहा मूर्शकलात पेश आती है। देस में बेरोजगारी है इस में कोई दो राय नहीं हैं। इसको दूर करना सरकार का काम है। इस काम मे लोगों की उसकी कोफोप्रेशन भी मिलनी

श्री दरबाग मिह)

35I

चाहिए। इंडस्टी दढ़ी है। इसके साथ-साथ काइम भी बढा है। आप इंडस्टियलाइजेशन के पैटर्न को देखें। औरतें भी काम के लिये घरों से बाहर जाने लग गई हैं। बच्चे पछे रह जाते हैं। उनका क्या हाल होता होगा। वे इगनोर होते हैं। ये सब चीज काइम बढाने में मददगार साबित हुई है।

पापुलेशन ग्रोध हमारा तेजी से हुआ है। सरकार ने कुछ इतजाम इसके लिए किए हैं। दवा दारू की सहिलयते मुहैया की है। उम्र सोगों की पहले से ज्यादा हो गई है। मैडीकल एड की सहलियत बडाने की वजह से ऐसा हथा है। ज्यादा माउथ खाने के लिए बागे बाए। इन सब कारणों से तरह-तरह खराबिया हमारे सामने या रही हैं।

जो वैजेंट हैं, कार्मर है, जो छोटा काश्तकार है उसकी मध्कलात बढ़ी है। बह कहीं न कहीं नौकरी की तलाश में जाने के मिए मजबूर हुआ है। वह शहर में जाता है तो उसको मुक्किलात का सामना करना पड़ता है। वह इगनोंरेंट होता है। टैक्नालाजी हमारी बड़ी है। झाटोमोबाइल्स, एयरोप्लेनज, कम्प्यू-टर्ज , टैलीफोनइलैक्ट्रिसटी तथा दूसरी ऐसी चीजें जो बेलपमेंट की ग्राई है उनके साथ साथ नए-नए काम भी वढे हैं लेकिन साथ-माथ काइम भी बढ़े है।

माप देखें कि इलेक्ट्रिसटी बोर्ड बने हुए हैं। जब कभी उन मे काम करने वाले सोग स्ट्राइक पर बाते हैं तो किस तरह से सैबोटाज करते हैं। वे चेन डालकर विजली फेल कर देते हैं। नई टेक्निकल, नए-नए ढंग के काइम के केसिस होने लग गए हैं। अब इसको नोट करने के लिए हमारे पास कोई फोर्स तो होनी नाहिए। इमारे बस् साहब कह रहे थे कि इसनी ज्यादा बी ० एस ० एफ ० म्रापने क्यों खडी

कर दी है। स्ट्राइक, हड़ताल, सैबोटेज तथा बुसरी ऐसी की की के रही है जनके मुकाबले मे कोई फोर्स तो होनी ही चाहिए। कुछ इसका इतजाम तो करना ही होगा या तो कुछ इंतजाम कर सकते हैं। लेकिन खुद भाप सैबोटेज को प्रोबोक करने वाले है जाहिर है कि उसका इतजाम तो सरकार को ही करना होगा, उसी पर इसकी जिम्मेदारी जाती है।

एडमिनिस्टेशन में, जस्टिस मे श्रोवर लौडिंग है। पहले का बैकलाग चला था रहा है। उसको निपटाने के लिए हमको तेजी से काम करना हो गा। लोग कई कई सालों तक जैलों में रहे इसको देखना होगा। जेलों का इंतजाम भी ठीक करना होगा। जैली में रिफार्म करने होंगे। एडमिनिस्टेशन रिफार्म्ज को कोई इन्क्वायरी इसके बारे में आई है। श्राप मोच कि जो लोग जैलों मे पडे हैं उनको हम डीह युमनाइज न करें, बल्कि उनकी हयू-नाइज करने की हम को के शिश करनी चाहिए। पुलिस झफसरों के बारे में में कुछ कहना चाहना हं । पे कमिशन ने उनके लिए सीनियर स्केल रिकामेंड किया था। उससे प्रधिक प्रापने उनको दिया है। 1100-1600 रिकोमेंड हमा या भीर भापने 1200-1700 दिया है। उनकी मांग है कि उनकी 1800 मिलना चाहिय। ये कमिशन ने लिखा है:

"Most of these officials are in States"

चीवाई हिस्सा ही इनका घापके जिम्पे धाता है। माथ-साथ उसने यह भी कहा है:

"The career prospects of IPS officers should be better than those of other services."

इसके बारे में ब्राप जरूर ध्यान दें। ये ब्रापकी सविसिस को कंट्रोल करने हैं, डिसिप्लिन को कट़ोल करने वाले यही लोग हैं, यही एक बाढ़ी है और मिलिट्री के बाद, अगर इस काम में कोई मदद करता है तो यही करते हैं।

जहां तक वैकवर्ड क्लासिस भीर शेड्युल्ड कास्ट्रस तथा दाइब्ज का माबन्ध है उनके लिए आपको किसी को जिम्मेदार ठहराना होगा। बहुत सी घटनाए हाती है। वे स्नापके नोटिस मे भी बाई है। ब्राप लोगो ने यहा मजैस्टिव बाते नहीं की हैं। उन्होंने यही करा है कि फला. फला जगह पर यह हम्रा है। जहा-जहाँ ये घटनाए हुई है वहा तहकीकात करके आप को जो इनके लिए जिम्मेदार हैं उनको सजा देनी चाहिये श्रीर लोगो को वहा मैटिसफाई करना चाहिये। माग की गई है कि हाम मिनिस्टर उस्त फा दे। लेकिन आप तो मारी मिनिस्ट्री का है। इस्तीफा भागते है। ग्राप तो चाहते है कि सब कुछ गडबड मे पड ज ए। ग्रगर इस देश कहा रात को दूरस्त करना है ता समाजवाद के खिलाफ जो ताकते खड़ी हो रही है, राइट रिएक्शन खडाही रहा है और स्टाइक सैबोटेज उगैर जो हो रह है उन सब को हम सब को मिल कर मीट करना होगा। हमारे लिमये जी ने चण्डीगढ मे पिछा दिनो ब्यान दिया था कि सैबोटेज वर्गरह जो है इनका हम सब लोगों की मिल कर सामना करन होगा। इसको रोक्ना हागा श्रीर भी बाने उन्होंने कही थी लेकिन यह भी एक बात कही थी। हमे चाहिए कि हम इस पर गम्भीरता में विचार करे।

पचायतों को जो अधिकार दिए गा है वे अधिकार उनके बने रहने चाहिये। किसी के नावे उनकों न किया जाए। लोगों को मौका दिया जाना चाहिये कि वे उनको चलाने की कोशिश करे। ने वे ने और आपका सिस्टम दुक्स्त होगा और लोगों को बहां तथा उपर से भी जस्टिस मिले तो लोग इसमे उत्साह लेगे 655 LS—13.

्क्रीर उत्साह से काम करेंगे। लोगो को सैटिस-फैक्शन होगा कि श्रापने ताकत का डिस्ट्र-लाटजशन किया है।

SHRI PILOO MODY (Godhra). Mr. Chairman, Sir, having listened to the debate so Tar I have found that speakers from the Congress Benches, one after the other. have got up to defend the cause of democracy m that country. When I listened to the speeches, I began to wonder whether they are referring to India or to some other country that they see in their dicams

Each one of them has said that democracy has survived and flourished in this country. I must admit that this is not my reading of the situation at all. If I may take you back somewhat, for the first 18 years of our Independence, democracy survived in this country purely as a result of the charity of Jawaharlal Nehru. Jawaharlal Nehru, for his many faults, had a certain kink about democracy and that kink was that he wanted the whole world to realise and know that he was a great democrat. This is what Jawaharlal Nehru's attitude towards himself India and the whole world was. And that is why democracy survived during the first 18 years of our Independence.

Unfortunately, for Jawaharlal Nehru and for India the democracy that was there for the first 18 years of his life was not democracy which was intrinsically strong-built around the institutions that make democracy a meaningful thing But it was there for the great Mughal to dispense as and when he thought it was in jeopardy.

The Institutions of democracy. starting with the Presidency, the Parliament itself, the Cabinet system. Opposition parties, a fearless press, an independent judiciary, public opinion in the country, are the institutions on

[Shri Piloo Mody]

which democracy survives and thrives. These institutions are built in such a fashion that no temporary aborration. no temporary popularity of an individual, such as, the "Indira wave", no no tycoon, nothing can hurricane. shake the foundations of such a democracv. That democracy continues irrespective of a massive mandate and is handed over when the mandate ceases to be a mandate such as the situation is today. Democracy survives and something else takes the place of the mandate that was originally given. This, to me is the survival of democracy.

When I heard Mr. Bhagwat Jha Azad saying that you can still scream, you can shout and you can still say whatever you like and, therefore, he is satisfied that he has given sufficient proof of the fact that democracy exists in this country, to me it is a meaningless exercise. We have come to a state in our lives when, no matter what we say and how hoarse we cry. there is nobody who can report us: there is no way by which we can project our ideas because the independent means of mass communication has also been neatly bundled into the governmental sector.

There people for the last so many years, have been shouting in the name of socialism. But I cannot understand how they intend to bring about socialism in this country. They gay that socialism implies a fair deal for every one which implies that there should be a distribution of wealth. But the distribution of wealth without distribution of power is a meaningless exercise; it is an exercise in futility. This brand of socialists in particular, depends on concentrating all power into their own hands. With the concentration of power that is going on by the Congress on the one side, how is the distribution of wealth ever to take place on the other? Therefore, I

that this basic hypocrise of saying that they want to distribute wealth can only be brought about if they are prepared to distribute power. And how should they distribute power? I am not asking any one of them to give up their power. All that I am saying is, give up doing things that you cannot do; give up this business of centralised planning. Let there be a plan for every district of this country; let the plans be implemented by the district administration. Let there be a total decentralisation. After all so much money is allotted year after year for development of the districts; whether it is done through a Five Year Plan or whether it is done through an Annual Plan or whether it is done through the budgetary provisions of the Central Government or whether it is done through the budgetary provision of the State Governments, it is that much money filters down to the village. Unluckily, the money is going through Irakiest pipe or pipeline that has ever heen devised, and by the time the water finally reaches the districts. there is nothing left at the other end of the pipe; it has all been taken Money is being spent, India is a fabulously rich country: there is no shortage of anything in this country: the only thing that we lack is good intentions and good men to run our offairs. Therefore, even development becomes meaningless in this country And we hear the hoarse cries such as we heard at the Congress Working Committee meeting recently that they do not get the participation of the people in the process of plann-How is it nossible? Somebody sitting in Delhi, some nunk kids prepare a position paper that position paper becomes the philosophy of the ruling party and thereafter the man in the village is expected to have an appreciation of and rapport with, this position paper that has been prepared by half-educated, half-illiterate, halfhaked individuals who masquerade in the name of leaders of the Congress Party

Therefore, if there is to be any reversal of policies, it must start witr the outflow of power. If only the money earmarked for each district is handed over to the district and it is said 'You do what you like; you do what, you think, is best for the district', then at least half of it will be properly utilised and you will see the of their development, the results tangible results, from day to day, from week to week, from month to month and from year to year. And you will associate the people with the process of development. Instead of that you have plans and a thousand along the lines to interpret, to alter, to sanction, to re-sanction and thereafter the whole series of files that are created to be dealt with on any particular subject. The whole exercise of the Government has become meaningless The reason why Indian democracy has become totally meaningless is because we have a sort of facade here where debates are supposed to take place, but I do not know how much of what I have said is ever absorbed by the Minister, I do not know how much of it is ever consi-Does anybody meet and say, "So and so has made a good suggestion; why don't we implement it?"

Is something ever discussed in the Cabinet except rubber-stamping what has already been decided somewhere-€lse? As long as we continue with this process to hear these gentlemen talking in terms of how safe is democracy in this country is something that frightens me. I tell you quite truthfully. I do not think that this structure of democracy will outside this Parliament. I do not think that this structure of democracy may even turvice the next six, eight or ten months because their is no strength left in this structure and there is no resilience left in this structure.

SHRI B. V. NAIK (Kanara): Are you serious?

SHRI PILOO MODY: Yes, quite serious. Is your question a serious question?

SHRI B. V. NAIK: Yes. Quite a serious question.

D.G., 1974-75

SHRI PILOO MODY: Because there is no intrinsic strength left in them, the institutions of demoracy have been eroded. People no longer have faith in the Congress. Read your papers, it is not worth the time you spend on it. Come to Parliament. As I said, an isolated activity goes on divorced from the needs, requirements or the aspirations of the people. Take the radio. People listen to it only for what Lata Mangeshkar sings, not for what Indira Gandhi has to say.

Then go to the other institution, the bureaucracy. We have to-day ployed 20 lakhs of people. Sardar Saheb just now said that they were over-worked and therefore, there is a backlog We have employed 20 lakhs of people. Their only job from morning till night between 6 cups of tea is to say 'No'--'No' to the citizens whenever he comes to them. You want a bottle of milk-'No'. Want a ration card? No. Want to build a house? No. Want to build a factory? Want to go abroad? No. Besides saying 'No', they do not know what to

MR. CHAIRMAN: Now, there is no time.

SHRI PILOO MODY: I think it is quite wrong that you should be setting a bad example, because, if any one wants to speak, you say, 'No'. You also are a victim of the same manua that has spread in this country, that is, to say 'No', whereas in the rest of the country it is easy to turn a 'No' into an 'Yes'; only it costs you a little money.

Therefore, the entire system....

SHRI DINESH CHANDRA GOS-WAMI (Gauhati): The hon, Member may now say 'Yes' and sit down.

SHRI PILOO MODY: This is the concern of these people for democracy.

[Shri Piloo Modey]

359

Therefore, the entire system is built on obstructions, obstructing the citizen from doing what he wants to do, and as long as you do not remove these obstructions and you do not start making saner laws, we are doomed. Because the origin of these difficulties starts with the so-called policy planning of the Congress Party which somewhere in 1955-56 took the country along the wrong path to progress and has resulted in a plethora of laws, some contradictory to each other, laws which this Home Ministry was expected to administer, a plethora of laws which are contradictory to each other, with the result that nobody to-day knows whether he is within the law or outside the law or where he is. I think the time has come when the laws of the jungle would be preferable to the laws made by these junglees.

SHRI DINESH CHANDRA GOS-WAMI (Gauhati): I start my speech with a small anecdote. One day a new and junior preacher who was to deliver his maiden sermon went to the senior preacher and asked him. 'Look here. I am going to deliver my maiden sermon. Will you kindly give me some hints and training?' The senior preacher asked, 'All right. Which passages of the Bible or the religious books are you going to preach? He gave him that passage. The senior preacher made certain side notes and told the younger one, 'Go and follow my side notes. You will be having a very successful speech' He came and found in the side note comments like, Here, the arguments are very strong. Speak emotionally.', 'Here arguments are emotional, therefore, strive to bring home your point by raising your finger' Then, lastly, it was sidemarked, 'Here, arguments are very So yell like hell, and that is precisely what Shri Frank Anthony did this afternoon. I can tell Shri Frank Anthony that he cannot protect the interests of the minorities in this country by creating a cleavage between one section and one religious commu-

nity in this country and another religious community. I want to sound & note of warning to the Home Ministry. It seems that this type of speeches coming from people like Shri Frank Anthony, particularly, in the sensitive areas of this country, are creating not only difficulties in the sensitive regions but are to-day creating a grave danger to the security and integrity of this country and I hope that the hon. Home Minister will take note of Shri Anthony spoke on many things. I will come to them later on.

The country is faced with many problems. Whatever Mr. Poloo Mody may say, the fact remains that the structure which we have cherished. the democratic foundation of country, has deep roots but it is tacing attacks from many quarters, from the right extremists and the left adventurists. I will not go into the details of all the strategies of these parties as my time is short. But it is time that we, sitting on this side of the House and the Government, have to seriously ponder over this question, as to why it is that in this particular moment the right extremists and the left adventurists have become so alert and active. How is it that these force (who have no popular backing) have been able to create a sort of situation in which the democratic foundation itself has been threatened. How is it that the youth, the students, the younger generation of the country, are not approaching the problems of our country with a constructive approach? My own reading is this. If you look to the entire situation of the country, you find that it is the vulnerable section of society, it is the down-trodden section of society,-the section which has benefited the least from independence for the last 25 years,—has stood by this system. The aspirations of the vulnerable sections are very limited. They have felt that because to a certain extent their conditions have improved, this system will one day be able to fulfil their limited aspirations which they possess. Because of the development of science and technology. education, communication, etc. the world has become today a very smaller place to live in. The younger generation in their heart of hearts want to achieve what their compatriots of the other countries have achieved. They want to achieve the standard of living and a way of life obtaining in other western countries. But they have a feeling that the scope of fulfilment of their aspirations is very limited. Because of the dichotomy between aspirations and fulfilment in this country we see signs of instability. Today if you look to the younger generation you find two types of students and youths.

One section of the younger generation feels that the democratic system, the parliamentary system, is not going to deliver the goods. So they wanted to attack the system.

Another section of the youth feel indifferent about the whole thing. They are utterly indifferent to the whole system. They feel, whatever may be the system, that is not going to an prove matters.

So, they accept facts as they are and remain indifferent to the whole thing.

I feel, Sir, both these are extremely dangerous to the democratic foundations which we cherish. Those who are indifferent are equally dangerous. One thing which we all know and the students also know is what we cannot fulfil all our aspirations at once. In spite of this why is it that they have become angry so much? My own approach is this. I do feel that they have a feeling in their heart of hearts that the system itself is so slow and defective that it is not able to deliver the goods.

There have been various attacks on bureaucracy saying that they do not want to do good to the country, etc. I will not make such a general sweeping statement at all. But it is a fact that the system of administration is

moving like a 'bullock-cart'. Our ideas and aspirations are growing at a faster rate but our achievements are growing at a slower rate

My own appeal to the hon. Home Minister is this: If you want to create a right structure in this country, you must re-structure the enitre administrative system, so that the administrative system may move at a faster rate Files moving at a slow-pace from one desk to another, from one officer to another, decision being delayed at all levels. cannot be continued for long We have to see that the whole system should be such that it can deliver the goods at a much faster rate.

I feel that the Home Ministry should do is this Looking at the report of the Ministry, I find that it gives a sorry reading. The two measures needed for the country—one against the rise in price and the other against the students' unrest—have been summarily dismissed at one page in this Report.

My appeal to the Home Ministry firstly is this that they must tackle these two volatile issues. I have no comments to make about any undividual officers. Unless you change the administrative structure how is it possible for you to move at a faster rate and create a sense of confidence in the minds of the younger generation and see that what they are aspiring for is achieved as early as possible? I think it is not that easy to move fast in this system. What is agitating the public mind to-day is this There is a great divergence between what we really preach and what we practise.

About price rise and scarcity also, I feel that the people are not so much agitated because of the price rise or because of scarcity of commodities a these people of our country have liver for long long years in conditions of scarcity and rising prices. After all, at no point of time, probably, the common men had enough in their pockets to purchase the essentials. Why is it

[Shri Dinesh Chandra Goswami] that suddenly to-day the people are agitating? My own feeling is that it is not because of scarcity or rise in prices but because they find that in spite of our talk about scarcity we can get everything in the market at the artificial price. This is something which is agitating the minds of the people.

The complaint is that we talk of scarcity. But, even though there is scarcity, everything is available in the market. While a section of the population who have enough money can get all the luxurious articles, the others do not get them. Therefore, I feel that if you want to do away with this feeling, then you must take steps to see that profiteers and hoarders and other persons are brought to book. I am not saying that nothing has been done. But, I have a feeling that the administrative structure has not sufficient inbuilt provisions to punish them. Why is it that in Kanpur when 22 people have died due to glucose injections, even now, we have not been able to bring before the House a legislation by which we can give the punishment equivalent to the punishment that we give to a murderer.

As you have rung the bell, I do not want to take much time. I shall pass on to some of the problems regarding the North-Eastern Region. You have seen a disturbing news in the papers. My colleague, Shri Sathe raised it I shall quote it from one paper. It reads as follows:—

"Sensational revelations about clandestine activities of certain foreign powers with the help of some anti-national elements in the sensitive North Eastern region are expected following the smart detection of two 'Very high frequency' transmitter cum receiver sets here with foreign markings on them. Acting on reliable information collected by the State Intelligence Depart ent, Meghalaya police arrested

a number of persons who are suspected to be linked up with these secret activities. The persons arrested under the Defence of India Rules were brought here for interrogation, Police expect that the interrogation will lead to more clues to secret activities of certain foreign powers in the N. E. region. Police believe that a number of local businessmen are also connected with such anti-national activities."

It has come for the first time in the paper. From the time that I have come to this House I have times without number, repeated to the Home Ministry that the North-Eastern region is a very sensitive region and it is the region in which you can create a sense of instability for all times to come because there are various castes, communities, linguistic differences, so on and so forth.

To-day we find that there are differences of various nature in the North-Eastern region I have no hesitation in saying that these alleged disputes have been engmeered by some interested parties. Already Assam was divided. It has been divided with clearly defined demarcated boundaries And, under no circumstances should at this present juncture anything bedone to see that Pandora's box is opened again in the name of so-called alleged boundary dispute. I feel that if you really want to create a sense of stability in that region, you should see that you activise the North-Eastern Council and see that it functions effectively to fulfil the purposes for which it was brought into existence to have comprehensive economic improvement on the whole hill region. I find on page 10 of this report that cursorily some reference has only been madea very short reference. Nothing has been said as to how you are going to achieve the objective.

Since you have rung the bell, I do not want to encroach upon the time of other members. I however hope

that the Home Minister will take note of all the points raised by me while replying to the same.

SHRI SAMAR GUHA (Contai): Sir, since I got the opportunity to enter into this House of the People, I pledged myself to a sacred mission to commit this Government to unearth the mystery about Netaji Subhas Chandra Bose With the cooperation of Members of all the parties of both the Houses the Netaji Enquiry Commission was set-up. I have not an iota of doubt that Netaji did not die in plane crash. The whole story is a myth. But I wanted to establish it through a judicial enquiry.

The Netaji Enquiry Commission has completed its proceedings but rather incompletely'. The Chairman is going to write the report. I will enumerate the reasons as to why I have used the word 'incompletely'.

Sir, I had written a letter to the Prime Minister saying that the Government is reluctant to cooperate with the Commission. In reply to that the Prime Minister wrote to me:

"I have your letter of the 3rd January.....I received your letter of 21st December also. But since it mainly concerned the Ministry of Home Affairs, I passed it on to my colleague. the Home Minister, with a request to send you a reply."

But, unfortunately, the request that was made by the Prime Minister herself remains unheeded. I have not got any reply from the Home Minister as yet. I want to keep on record how rejuctantly the Government cooperated with the Commission:

(1) The Government supplied a large number of documents to the Commission very late, only after it completed its inquiry work in South East Asia and Japan, except Formesa. These documents contained many vital informations, but the Commission could not undertake follow-up actions due to late delivery of such documents:

For example, the Commission could not examine Col. Tada who was entrusted by General Terauchi, Head of the Japanese South East Command, to draw out the secret plan for Netali's escape, when the Commission visited Japan. The Commission also could not examine Mr. Kishi of Tokyo, who wrote to Shah Nawaz Committee that he definitely knew till 1948 that Netaji was alive. The Commission also could not examine a Japanese who claimed to know that Gen. Sidei, who was entrusted to escort Netaji, was alive after the alleged plane crash in which Gen. Sidei was reported to have died with Netaji.

- (2) The Government did not make any worthwhile attempt to persuade the Government of Japan to hand over war-time documents about Nets'i. The Government of Japan supplied only a book written by Gen. Kawabe of Burma Command on Netaji, which centained only his recollections about 'Chander Bose'.
- (3) The Government did not inform the Commission whether efforts were made by them to find war-time documents about Netaji from the Governments of U.K., U.S.A., Russia and China. The Governments of U.K and U.S.A. did make inquiries soon after the reported plane crash to verify whether the news of Netaji's death was a camouflage to cover his escape. No effort was made to trace Mac Arthur's reported telegram to Mountbatten in which he informed the latter that "Bose has again escaped." Netali had a lot of correspondence with the Government of Russia as his last plan was to go to Russia. But the Government did not make any request to so-friendly a Government, like that of Russia, to furnish all war-time documents and other informations about Netaji, although many reports were published that Netaji was kept as a war-prisoner inside a Siberian concentration camp.
- (4) The personal file of late Pandit Nehru, which was reported to contain

APRIL 29, 1974

[Shri Samar Guha]

367

many informations about Netaji, like Chiang Kai-shek's inquiry report about Netaji, report of Indian Mission from Nanking regarding Netaji, a reported letter written by Netaji himself to Pandit Nehru from Manchuria. report of an American correspondent of 'Chicago Tribune', Mr. Alfred Wagg etc, has not been supplied to this Commision. Why?

(5) Government have supplied only copies of some original documents, without affidavit. Many pages of such documents are either missing, or destroyed or have been withheld from the Commission. There are many gaps in serialising the pages of these documents. I give you a few examples. First, about the secret file No. F. 23 (156)/51-PM in an attached note, it has been stated that these papers have been "destroyed".

These files are as follows:

- S. Nos. 1-A, 2-A, 3-A, 4-A, 6-A, 8-A.
 - S. Nos.-16A.UO note No.D|S-8666 dated 24th August, 1953 from PM's Sectt. to Shri Mohd. Yunus, MEA.
 - S. No. 17A,-UO note No. D.3788-8EA/53 Shri Mohd. Yunus, MEA (SEA, BR) to PM's Sectt.
 - S. No. 27-A-Memo No. 2|53|19713| 601 (151) dated 13th October, 1953, form Shri Mohd, Yunus, US, MEA to PM's Secretariat; and

Notes Nos 11, 12, 13, 14, 15, 18, 11 29 24 25 26 and 29 (destroyed). As for the PM's Secretariate Files, the No. of the file is 12(226) 56-PM regarding "Investigation into circumstances leading to the death of Shri Subash Chandra Bose (since destroyed)".

More lists of files and notes missing or destroyed can be added, but these instances of destruction of vital documents are enough to show that the Government did not want to disclose all the documents to the Commission.

- (6) The Government did not make any serious effort either to send the Commission to Pakistan to examine Col. Habibur Rehman or bring him to India. The statement made by Col. Habibur Rehman to the Defence Intelligence at the time of the Red Fort Trial has either been destroyed withheld from the Commission.
- (7) The 75-page report of Shri B. C. Chakravarty, who was deputed by the War Secretary, Government of The statement made by Col. India Combined Services Detailed Interrogation Centre (SSDIC) to interrogate at Red Fort in 1948 Col. Habibur Rehman and others top-ranking INA officers, and doctors and nurses who claimed to have treated Netaji in Taipei hospital and the high Japanese military personnel who planned Netaji's escape, and whose report of interrogations was scrutinised by the highest British Military Intelligence sent from England and counter-signed by Col. Stevenson, charge of the Indian section of in CSDIC, and which was submitted to the UK Government and the Government of India as well on 30th December, 1945 and which concluded that 'Col. Habibur Rehman told lies or the Japanese Government concealed facts' -the Government of India did not submit this vital document of the CSDTC to the Commission. If it is missing or destroyed, the Government did not make any effort to get it from the Government of the UK. This document would have revealed many vital facts about Netaji-mystery.
- (8) Correspondence between Pandit Nehru and President Chiang Kai-shek about Netaji and the inquiry made by President Chinag Kai-shek at the request of Panditji, through the Mayor of Taipeh regarding the alleged plans crash, the findings of which contradicted the death report of Netaji have not been submitted to the Commission. Copies of these correspondences are still available in the archives of the

of Formosa, which the Government Latter is ready to send to the Government of India, provided an official request is made for the purpose. But the Government of India have declined to write to the Government of Formosa.

MR. CHAIRMAN: The hon. Member may pass it on the hon. Minister and he would look into it.

SHRI SAMAR GUHA: Then, (9). the Government of India inhibited the Netaji Inquiry Commission from acting freely while it visited Taiwan. Affairs. Shri Minister of External Swaran Singh in a letter dated August 14, 1973 wrote to me stating:

"As we do not have diplomatic relations with Taiwan. neither the Government of India nor Judicial bodies appointed by the Government of India can enter into direct or formal contacts with the Government of Taiwan and its departments ...It was natural that we should suggest to the Commission not to make any formal approach to the Taiwan authorities and to make an independent enquiry without enlisting the formal co-operation of any official or non-official body there..".

"The Commission in its judgment accepted this suggestion".

But strangely our STC and MMTC are having trade and business with Taiwan worth crores of rupees, disregarding the qualms of diplomatic formalities.

If the Commission was permitted to seek the co-operation of the Taiwan Government, it could secure official meteorological reports from the Taipei Airport Authority which would have definitely proved the untenability of the plane crash theory involving Netaji. It could get photographs of the Taiper airport and its surrounding terrains which would have conclusively established that the three photographs of the alleged ruins of the

same crashed plane carrying Netaji, which were submitted to the Shahnawaz Committee by Col. Rehman, were actually photographs of three separate crashed planes having dissimilar features of the surrounding terrains. The Commission could also get roof from the Government of Taiwan that a plane crash took place with Japanese military officials at the reported place, as allegedly involving Neaji, in 1944 and not in 1945.

MR. CHAIRMAN: Please conclude.

SHRI SAMAR GUHA: I have specially prepared this. This is of very very great significance for the future.

The Commission could further secure official death certificate and crematorium certificate issued as that of Netaji, but would have found that these certificates were actually of a Japanese soldier and not of Netaji. Finally, the Commission would have got all the documents and reports of findings of a number of inquiries conducted by the Government of Taiwan about the alleged plane crash involving Netaji and the copies of the correspondence between Pandit Nehru and President Chiang Kai-shek as well, which would have finally convinced the Commission that the plane crash theory involving Netaji was a planted story to ensure safe escape of Netaji. The Commission would have found, on the basis of such documents, that any further inquiry was unnecessary and could have straightway concluded that Netaji's death story was a myth.

Will it be overdoing it if I say that by not permitting the Commission to seek the co-operation of the Government of Taiwan, the Government of India can be accused of sabotaging the main objective of the Commission?

(10) The complete copy of Mountbatten's Diary about Netaji and a document that was purposely left by the Government of Japan at Saigon at the end of the war, although they destroyed all other documents, intending to [Shri Samar Guha]

mislead the Allied Army about the alleged death of Netaji, were not submitted to the Commission.

- (11) The report submitted by Mr Alfred Wagg, a correspondent of the Chicago Tribune to Pandit Nehru in early 1946 after his investigations at Saigon and Taipei about the plane crash story, in which he challenged its veracity and provided Panditji with a photograph of Netaji reportedly taken after the date of alleged plane crash has also not been supplied to the Commission by the Government.
- (12) A very important Japanese who was a high military officer during the war and who knows many things about the Netaji mystery, is living at Rajgarh in a Japanese Buddhist temple under an assumed name of 'Bikshu Sato'. But the Government made no effort to produce him before the Commission.
- (13) The Government conducted many inquiries about Netaji for many years along the Himalayan frontier, particularly during 1962 Indo-Chinese war, the reports of which have also been withheld from the Commission. The Government have also conducted inquiries about many 'Sanyasis' in India, but only partial reports of those inquiries have been sent to the Commission.
- (14) Whether Netaji's name was enlisted as a war criminal or not, about which the Government gave many misleading informations to Parliament. As revealed from the Files of the External Affairs Ministry supplied to the Commission according to four Confidential Notes (i) No. 136 ASW dated 20-12-67, (ii) No.-375-FS|67, (iii) No. HAG: 151 2:67 and (iv) No. NY (PM) 352(14)/67, it is clear that the Government did not make serious efforts to conclusively know whether Netaji was declared as a war criminal. This issue is very pertinent to understand why Netaji did not reappear after the war.

MR. CHAIRMAN: You have focussed attention now.

SHRI SAMAR GUHA: In two minutes I will conclude.

- (15) The secret documents pertaining to transfer of power to India related to Netaji and facts about the undisclosed chapter of Maulana Azad's book India Wins Freedom, which reportedly contain matters regarding Netaji still remain secret even for the Commission.
- (16) Dubiously, the Government changed three Secretaries and many members of the staff of the Commission during the last three years and now, at the penultimate stage of finalising the report, the Government have strangely changed almost the entire staff of the Commission without giving any plausible reason for such steps.

The Government of Japan left many hints to disbelieve Netaji's death story. The unsually photo-minded Japanese could not produce any photo of the dead-body of Netaji to convince the Allied Powers about the report of Netaji's death, as the reported death of Netaji was just a mere fiction. The death certificate and crematorium certificate supplied by the Japanese Government ,as purported to be that of Netaji, were found, after scrutiny, to be that of a Japanese soldier. death certificate of General Sedei, the Manchurian expert of the Japanese Army, who was given the assignment to escort Netali to a safe destination, after careful examination, was discovered to be a fraudulent certificate.

General Fuziyara, the highest liaison officer, working as the link between Netaji's Azad Hind Government and the Government of Japan significantly told a friend of mine in Calcutta that "the Government of Japan left enough hints about Netaji, and it was the responsibility of the Government of India to pursue the matter." It is known to the country what the Government

of Free India did for the greatest Revolutionary Pilgrim of the Indian Freedom.

MR. CHAIRMAN: Your time is up.

SHRI SAMAR GUHA: I am finishing I have firm reasons to believe that the story of Netaji's death is a myth. In hit historic that journey in quest of Indian freedom, before Netaji got into the Frontier Mail at the midnight of the fateful day of 17th January, 1941, the Indian pilgrim paused for a moment to utter a few significant words, and told his nephew, "Sisir, either I will return during the war or it may take even more than 20 years after the war."

Sir, I shall conclude by saying what Sardar Patel said at a meeting in Calcutta, at Deshapriya Park, in February, 1946, "Bhagwan, Hamare Netaji ko wapas do." "God' give back Netaji."

I may recall, before finally concluding what Rabindranath Tagore said. He said: "Tomar asan shunya aji; He veer! Purna karo!"-"Thy throne lying empty. Oh the Hero! Thou adorn it today!"

As I said, I consider Netaji's death story in a myth and I shall believe that he is in the world of the living.

SHRI KARTIK ORAON (Lohardaga). Mr Chairman, Sir, I rise to support the Demands for Grants for the Ministry of Home Affairs. This is the most important Ministry in Government in the sense that is responsible for the actions and ommission of ohe Ministries, and therefore, this Ministry has the onerous responsibility of guiding the destiny of the nation today.

Today, the entire country is in a state of turmoil. We are living in a society which is plagued by the scourge of materialism. There are cases of violence, loot and arson all over the country, as a matter of course, particularly the cases in Gujarat and Bihar.

If the development of nuclear weapons represented the beginning of one age or one era, an increased consciousness of the environment limitations may be the beginning of another. A vicious circle, a vicious environment in which popular wrath it manifested is infinitely a more powerful force for destruction than nuclear might. The greatest danger to the continuance of a good and stable government is a stage in which the politicians are looked down upon.

In the good old days, crimes of the type now coming to light were very rare and unusual. We had the Indian monarchy, the British monarchy and then the Indian Independence, but never before had we such an alarming situation of law and order. The law and order situation of this country has been growing from bad to worse, while it should have gone from good to better. It is indeed a very sad commentary on the performance of the Indian administrators in the democratic setup.

16.00 hrs.

Sir, many problems are raising ugly heads and we must solve them dispassionately. For instance, there the spiralling prices of all essential commodities; the students' unrest, public anguish, law and order, the nonavailability of essential commodities, Today we find rampant corruption. that 45 per cent of our Indian population is living below the poverty line; 30 per cent of the poor people live in Bihar and Uttar Pradesh, and 50 per cent of the poor people live in Bihar Madhya pradesh and Uttar Pradesh. It is right of Andhra Pradesh. discuss public to everv citizen affairs frankly and freely but such discussion must never be directed towards inciting the public to indulge in loot, arson and violence. If they do so, then deterrent punishment must be given. The question of party or caste or group should not arise. In the eyes of law everybody should be treated equally. It is rather a peculiar situation that is developing in

[Shri Kartik Oraon]

our country. We call ourselves a strong democratic nation. We should hang our heads in shame because not only have we miserably failed in providing two square meals a day to every citizen in the country, but we have also failed to create confidence in the minds of the people free from fear. It is not the change in civil or criminal law or law of defection or Constiutional law but a law of convention based on strong national character. which is the need of the hour. The greatest breeder of national character is the sense of justice and a human belly well fed, which we failed to establish.

We are at the threshold of a crumbling economy and it is about time for all political parties in this country to sink their differences and put their heads together to sort out the problems that face the country. It is not the problem of any political party. It is the problem of the country. At the time of the national struggle, most of the political leaders of various parties were all Congressmen. They known as Indians and as Indians they fought for the liberation of this great country. I am reminded of what Sir Winston Churchill said. Please do not misunderstand what I say.

At that time every Indian was considered to be a Congressman. While opposing the Bill to grant Independence to India, introduced by Mr. Clement Attlee in the British House of Commons, Sir Winston Churchill had this to say:

"Liberty is man's birthright. However to give the reins of the Government to Congress at this juncture is to hand over the destiny of hungry millions to the hands of rogues, rascals and free booters. Not a bottle of water or loaf of bread shall escape the taxation. Only the air will be free and the blood of these hungry millions will be on the head of Mr. Attlee. India will be lost in politi-

cal squabbles. It will take a thousand year for them to enter the periphery of philosophy or politics. Today we hand over the reins of Government to men of straw of whom no trace will be found after a few years."

Don't we think that it is a challenge to Indians as a whole regardless of party affiliations. Let us see to what extent we can get over the present situation. Once again I request you not to misunderstand me but take it in the spirit in which I have said it.

The Home Ministry has a special responsibilty for the Scheduled Castes and Scheduled Tribes. I must congratulate the hon. Home Minister for having brought a sub-plan for the development of the tribal people under article 275 of the Constitution. Subplans have been asked for from various State Governments. I want to suggest only one thing. Most of the time the amount which is allotted to the states by the Centre for the development of Scheduled Castes and Scheduled Tribes is diverted to other purposes. My request is this; if you are going to provide any outlay under this sub-plan, please ensure that this outlay is non-divertible to things which do not form part of the sub-plan.

Then, in regard to the scheduled castes and scheduled tribes, we had the Scheduled Castes Scheduled Tribes Order (Amendment) Bill. This was discussed in 1970. Then, it has gone into cold storage. Many scheduled castes and scheduled tribes have been deprived of the facilities which they would have received by now. Four years have passed. I hope something will be done to bring this up so that a larger number of scheduled castes and scheduled tribes can take advantage of the privileges. So far as scheduled castes and scheduled tribes are concerned, sometimes I feel they are scheduled not for development but for exploitation. The way in which they are being treated makes me feel so.

what I feel.

We come to know that there are some cases where in spite of the best intentions of the Prime Minister and in spite of the best intentions of the Home Minister, the officers feel that it is not their duty. They do not share the responsibility with the Minister. This is

I will give one instance where I am rather surprised to find how Government could try to refrain from helping Scheduled Castes and Scheduled Tribes where they have got a way to help. For instance, there is the DANI (Delhi Andaman and Nicobar Islands) service Rule. According to Rule 31 of DANI Services, promotion to Grade I officers from Grade II officers is to be on the basis of merit with due regard to seniority. Now, by giving one grading higher the officers belonging scheduled castes and scheduled tribes opportunity of being have an But, during the last 13 promoted. years, the Ministry of Home Affairs, have not been following this rule. They have been following something else. They have been following what is called 'seniority-cum-fitness method' so as to deprive these schedule caste their and scheduled tribe officers of Then, Government of promotion. India issued another order. This was by the Cabinet Secretariat (Department of Personnel) dated 27th Novem-Under this, Government ber 1972. issued instructions introducing reservation to matter of promotion to be made on the basis of 'seniority-cumfitness'. This covered all classes. Class I, II, III and IV posts. Under these orders, the officers belonging to scheduled castes and scheduled tribes were to get reservation in matters of promotion. They stood a very good chance and they had an edge over others. But, now, the Ministry of Home Affairs-I do not know whether it is a fact is contemplating to go back again to the 'merit with due regard seniority'. This is the way of having circumventive designs to obstruct or prevent the scheduled caste and scheduled tribe officers from getting their due share. This has got to be looked into.

Then, I would like to make another point. In Bihar, there was one superintendent of police who was, without any Cabinet decision, made to unceremoniously hand-over charge at the instance of some of the politicians, big motion and corrupt politictians of Bihar. Then, Sir. mv Mr. Bhagwat Jha Azad made 's reference to the Godda Integrated Development Committee where he said that all the big shots are associated. That part falls in the Chota Nagpur Santhal parganas region. This region is the richest area in India. One-third of the mineral wealth of the country comes from this area. But, the people in the area are the poorest. They have all sorts of dissatisfaction. The Government of Bihar set up the Chotia Nagpur Santhal Parganas Autonomous Development Authority. But, this is. They are not just a show piece. giving any funds. There is no authority, nothing of the kind. I would Minister of Home request the hon. Affairs to see that if the State Government is not looking after them, then, the Central Government should step in and try to adopt the same formula i.e., six point Formula, as they have in the case of Telangana. adopted There is no difference. The problems are of the same nature.

Then, I would like to refer to another matter. Sometime back, I mentioned about the traficking of tribal girls from Orissa. From the industrial area, of Ranchi, there had been traficking of tribal girls to Arrah and other places.

I would like to mention only one other point and I would not take much of your time. The point is, we have already completed two decades of planning and we have always said that we have been trying to improve the living conditions of our people. The Plan spelt out the First Five Year with central objectives of planning initiation of 'a process of development which will raise the living standards and open out to the people new opportunities for a richer and a more varied life. Obviously, we have not been able to reach our pre-determined tar-

[Shri Kartik Oraon]

gets. Our Prime Minister said in April 1971:

"We do not have all the time in the world. We must make a dent in the next three years or four years at the very most."

Now three years have passed. I personally think we have visibly failed in cashing her popularity. Even though we have got very stable Governments, we have not been able to cash her popularity.

Since independence, during the last 27 years we have had many trials and errors. We have experimented and gained results We have had failures also.

Indian polity, I believe, by now is mature enough to arrive at objective conclusions even on issues generate controversies and conflicts. For instance, we in India today are still thinking a lot about our bureaucracy. There is a wrangle between the bureaucrats and technocrats. During the British regime we had the Indian Civil Service, the Indian Educational Service and the Indian Service of Engineers, Indian Medical Service and so on. Now that our country is development-oriented, it is all the more necessary that these services should be restored But that has not been done.

During the British regime the ICS officers were the backbone of British imperialism. In the changed context the concept of administration should change. During the British regime they had to carry out the orders of the masters. Now they have to carry out the will of the people. This is the difference.

In any task of national importance, authority and responsibility must go together. Under the existing administrative set up, authority and responsibility do not go together, since the

authority vests with the generalist administrators whereas the responsibility to deliver the goods is with the field functionaries, that is, the technocrats or the specialists. If there are shortfalls or failures. It is either the engineer who gets the blame, or it is the Minister who gives an explanation in Parliament, and the generalist-administrator goes on merrily without any direct involvement of public accountability. To day the engineers have got the responsibility while the IAS officers have got the authority without any responsibility.

It has been rightly said that power with responsibility is democracy, power without responsibility is autocracy and responsibility without power is bankruptcy. The technocrats come under the last category and hence bankruptcy in our plan implementation.

Pandit Jawaharlal Nchru, Shrimati Indira Gandhi and our worthy President have all the time laid so much stress on the dignity and status of the technocrats in the present context. But we have not been able to do anything for them. We are doing things lightheartedly. We are not realistic or pragmatic in our approach.

In Specialists and Generalists, edited by F F. Ridley, it is stated:

"None of the countries has anything like our Administrator class, generalists in function and generalists in background in Irdia they are Specialists in function, Generalists in background. Recruitment to higher Civil Service on the basis of an entirely non-vocational education is rare.

In America, a man trained in sciences and the professionals based on the sciences finds it easy to move up into higher administrative posts. A large proportion of senior officials have qualifications in engineering, the sciences, business and public

administration, medicine and law The Federal Services is one of the specialised offices doing either specialists jobs or general administrative work in offices in which their particular knowledge considered is essential.

In Sweden, where jurists occupy many of the policy posts, professionals in turn fill many of those in the top management of public services.

In France, the professionals hold a large share of the directional posts in those branches of the administration for which their training prepared them

The Australian system is one in which professionals are dominant, it is heavily weighed to give preference to the Officer who can demonstrate competence in his particular Specialists generally enjoy parity of esteem, in some cases their prestige is actually higher than that of generalists. As a rule career opportunities are as good, if not better and salary scales are often advantageous.

"Can one tell a man that he must remain a Scientist or 'rig' the system to this end, when he wants to become a manager, particularly the manager enjoys a nigher status, exercises more power and recoives a higher balary?"

No service should be treated as inferior or superior. The goal of socialism can only be achieved if the different sections of the community work together in a spirit of cooperation and mutual assistance. The Government must come above petty prejudices and take a realistic decision in the matter of fixing the pay-scales. It has been rightly/pointed out to some members of the Third Pay Commission:

Pay-scale is not merely provision for the needs of the employees but a impetus for efficiency and an instrument for social change.'

Therefore these thing have to be taken in the correct perspective.

SHRI R. P. ULAGANAMBI (Vellore): Mr. Chairman, Sir, we are today discussing the Demands for Grants under the Control of the Ministry of Home Affairs. I would like to bring certain important issues before this House.

Under the Chapter "Offical language" in the Report for the year 1973-74, the Ministry of Home Affairs have taken many steps to introduce and impose Hindi in all fields of the Central Government Departments. According to the directives issued by the Home Ministry, even the international agreements should be translated into Hindi and the correspondence of the Central Government with all the Departments should be increased from 30 per cent to 50 per cent. Even for Hindi translation, there are targets fixed, that is, 60,000 standard pages should be translated into Hindi.

What about other 15 languages enshrined in the Constitution in Eighth Schedule? There is nowhere any mention made about the development of translation in other languages of international agreements or of Central correspondence to be Government into other national translated languages.

As regards the implementation of a two-year phased programme for the progressive use of Hindi for the year 1973-74 and 1974-75, the Home Ministry has issued a directive that in the Union Territory of Delhi, which is the capital of India and new schools to be opened after 1-1-74 should not have English as the midium of instruction but they should have either mother-tongue or Hindi as the medium of instruction. They chould not have English as the medium of instruction in the Union Territory of Delhi which is the capital of India. This is an indirect imposition of Hindi on non-Hindi speaking people.

I have received many complaints from the employees of the Central

[Shri R. P. Ulaganambi]

Government and the employees of the Railways that the Home Ministry has issued many directives to impose Hindi 25 2 condition for promotions. The promotions of some of the non-Hind: speaking employees overlooked because of their not knowing Hindi or not attending the Hindi Classes conducted by the Department. Such is the state of affairs prevailing in the Home Ministry. It is against the assurance given by the hon. Prime Minister in this House

This Report is published in both the languages, English and Hindi. I have no objection to its being published in English as well as in Hindi. But the Hindi words should be in Hindi langu-Here, it is published-Government of India (Bharat Sarkar). The words "Bharat Sarkar" are published in English letters. So also Published-Ministry of Home Affairs Mantralaya). (Griha The words "Griha Mantralaya" are published in English letters You can have "Griha Mantralaya" but not in English letters When this thing was introduced in this House, we opposed it. Our Prime Minister promised in this House that they would replace it We are not objecting to have it in both English and Hindi. But we are objecting the language in which the Hindi words are published You can publish Hind! in Hindi language, not in English letters So, this is against the promise given by the Prime Minister in this House If you go on imposing Hindi in this manner, directly or indirectly imnosing Hindi on all Gov-Departments ernment and through Parliamentary papers, I tell you that what happened in 1965 may be repeated You know what happened in 1965. Tamil Nadu was in At that time I was a student turmoil leader and I was one of those many victims who were beaten by the police. I was imprisoned. There are lakhs of young people who are prepared to shed their blood against imposition of The tigers are sleeping. Do not try to awaken the sleeping tigers. My request is that Hindi should not be imposed in such an indirect manner. It is against the promise given by the Prime Minister in this House.

Whenever we demand State autonnmy, the Congress people say that the DMK's demand is for Secession, for separation. The Tamil Nadu Assembly recently passed a Resolution urging the Centre to amend the Constitution for establishing a truly federal set-up with full State autonomy; the Resolution wanted the State to have autonomy to secure the integrity of India, to promte the economic development and to enable the State Government to have close contact with the people and to function without restraint the fundamental idea behind our demand for State autonomy. When we arc demanding State autonomy, you are saying that it is a demand for secession, for separation Mr. Sheikh Abdullah demands autonomy for Jammu and Kashmir. The Central Government is prepared to discuss it with him. What are you having is double standard? Mr Sheikh Abdullah at one time was asking for more than State autonomy; now he has come down to this level, and the Central Government are prepared to have parleys with Mr. Sheikh Abdullah

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE: Kashmir has a special status

SHRI R. P ULAGANAMBI: Why? Even Mr. Vajpayee. ..

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEF: I am saying. Do not blame me

SHRI R P ULAGANAMBI The Central Government have no compunction to discuss with Sheikh Abdullah who once demand d self-determination But they have not get the guts to discuss the question of State autonomy with a duly elected State Government They are discussing, negotiating and also wooing ...

SHRI ATAL BIHARI VAJPAYEE Behind the purdah.

SHRI R. P. ULGANAMBI: I do not know what is going on behind the purdah. Mr. Vajpayee may be knowing because he met the Prime Minister recently. I look only from outside.

The DMK is second to none in patriotism. We have already proved it. In 1962 when India was aggressed by China, our late lamented leader, Aringyar Anna, set aside our demand for separation and we rose as one nation. gain in 1965 when there was an aggression from Pakistan and also in 1971, we made our stand very clear. We collected Rs. 6 crores and handed over to the Prime Minister....

SHRI UMA SHANKAR D!KSHIT-That is why he became so popular.

SHRI R. P. ULAGANAMBI: demand is: Why do you doubt our sincerity, why do you doubt our bona

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: No: we do not.

SHRI R. P. ULAGANAMBI: Then why not enter into a discussion? Why not invite and open a discussion? The Government of Tamil Nadu had appointed a Committee under the chairmanship of Shri Rajamannar and it submitted its report. The report has been circulated to all Members Parliament....

SHRI K. S. CHAVDA: I have not received one.

SHRI R. P. ULAGANAMBI: I am prepared to supply it to each and every Member of Parliament. It was sent to the hon. Minister. The Resolution passed by the Tamil Nadu Assembly has also been sent. The Tamil Nadu Government have written many times. But so far nothing has happened. Why not invite them and open a discussion and appoint a committee to deal with this?

We demand State autonomy because that would enable the States to devote more attention to the economic development of the people in the States. So, my appeal to you is that you should not have any suspicion about our demands. While you can enter into negotiations with Sheikh Abdulla cannot you talk with the

Tamil Nadu Government because. there is no difference between demand and demand?.... (Interruptions) dulla's In what manner the powers can be shared and what are the powers that should remain with the Centre and what should go to the States, and what powers they are prepared to offer to the States --- all these may be sub-' ject for negotiations. Hon. Members from the ruling party talked of defending democracy and our friend, Shri Darbara Singh also talked that democracy is in danger and it should be defended. Here, the Home Ministry's report says:

"Several political parties organised agitations on issues like price rise, shortages of foodgrains essential commodities, unemployment....etc."

It i stated in the annual report, 'several political parties'. I do not know whether by that it includes the Congress Party or does it exclude Congress Party ?

Our hon Defence Minister, Shri Jagjivan Ram, stated a recently, ---- this is the press report:

"Shri Jagjivan Ram, Defence Minister yesterday warned that the slightest abridgement of the democratic rights in the Congress Party would pose a great danger to the democratic set up of the country."

He meant that the danger was not so much from the Opposition parties as from his own party. So, the danger to democracy is not from the Opposition parties. 'It is from our party' he has stated. I do not know comments the hon Home Minister has on this. The danger to democracy is from the ruling party itself, which we have witnessed already through what happened in Andhra, what happened in Gujrat and what is now going on in Bihar and what happened in Orissa and U. P.

SHRI K. GOPAL (Karur): Tamil Nadu also.

SHRI R. P. ULAGANAMBI: Never. That will not happen because in Tamil Nadu the Congress Party is not the ruling party.

So, the danger to democracy is only from the ruling party and not from the opposition parties.

Then coming to the concept of Union Territories, several Union Territories have been given statehood. even small territories were given I do not know why they are having Union Territorics when the Home Ministry is unable to maintain law and order in the country in spite of Defence of India Rules being in force. I demand that the concept of Union Territories should be re-considered. I request that all the Union Territories should be conferred State-hood including Pondicherry.

Then, Sir, apart from the Army, under the Home Ministry's control are Assam Rifles, Border Security Force the Central Reserve Police and the Central Industrial Security The CISF is created to give protection to industrial units. If industries are located all over India, why should it be kept under the control of the Central Government? It should be manned by the State Government so that they can easily go to assist and help in the maintenance of the security of the industries wherever they are located.

With regard to the Border Security Force, instead of guarding our borders, they are raping the Harijan girls. You know the incident in Meghalava where the Harijan girls were raped by the Border Security Force and physically assaulted....

SHRI M MUTHUSWAMY (Tiruchengode): Even in Tamil Nadu.

SHRI R. P. ULAGANAMBI: If such things happen in Tamil Nadu, we will take stern action.

The problems of the scheduled castes and scheduled tribes are increasing day by day. The Government of India appointed the Elayaperumal Committee on Untouchability to go into the economic educational development of the Scheduled Castes and they submitted report with many recommendations. Commissioner for Scheduled and Castes Scheduled Tribes is submitting every year reports many recommendations. with But the Government of India have not come forward to implement those recommendations. This Government either does not have the guts to do it or the heart to do it. This problem is a national problem and it is not the problem of any particular community. In persuance of one of the of Elayaperumal recommendations Committee Report, the Government of Tamil Nadu passed an amending Bill to abolish the Hereditary priesthood. But it has been struck down by the Supreme Court. The Tamil Government has asked the Central Government to bring forward amendment of the Constitution in this matter. So, I request the hon. Minister to consider all those problems as national problems and not as problems of any particular community.

(Kokra-SHRI D BASUMATARI jhar): I support the Demands Grants of the Ministry of Home Affairs. This Ministry deals with not only with the maintenance of the law and order but this Ministry is in charge of internal security of the Indian Union and assists the State Governments in its security and also the welfare of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes, which is a most important subject. Unfortunately the Department of the Welfare of SC and ST has been kicked like a ball from here and there. At one time it was with Education Ministry, then with Law Ministry, then with Social Welfare Ministry and now it has come to the Home Ministry. In those days this was with late lamented national leaders like Mr. Gobind Vallahh Pant and Shastri ji. Now it has come under the charge of my esteemed leader Mr. Uma Shankar Dikshit who is being assisted by his two able colleagues, Mr. Mirdha and Mr. Moshin. Now many of my friends have spoken about the scheduled castes and scheduled tribes and so I am not going into the details But I would like to make a few points on this.

Before independence the percentage of literary for the whole of India was five only Now it is 29.45 per cent, for the general, and for the Scheduled Castes it is 14.71 per cent and for the Scheduled Tribes it is 11.29 per cent My contention is this. Before independence the general section of people took advantage of the welfare activities. Before independence the percentage for scheduled castes and scheduled tribes was nil when the general figure was five per cent for the whole of India.

Now the development of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes has been incorporated in the Constitution and a Constitutional provision is for the development of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes a special officer had been appointed. He is known as the Commissioner for Scheduled Castes and Scheduled Tribes. The reports submitted by him are discussed here in this House. Every year the reports are stereotyped You and the hon. Members of the House have chosen it fit to appoint a Parliamentary Committee to go into the developmental activities for the welfare of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes. I was the first Chairman of this Committee and I took my office on 18-12-1968 The First Committee submitted 19 reports. The Second Committee submitted 24 reports in all I have again become the Chairman of this Committee for a second term. But I doubt whether the reports are being taken note of by the Minister and the Ministry for implementation.

Sir, the important question is how to develop these Scheduled Castes and the Scheduled Tribes.

I have visited as Chairman of the Committee many of the areas in India, especially, the areas predominantly inhabited by the scheduled castes and scheduled tribes people. I find that education still requires to be developed among them. They are not developed compared to the tribals living in the hills of Assam where missionary schools are functioning and there the percentage of literacy is upto 66 per cent. In Meghalaya it is 66 per cent in Nagaland it is 65 per cent and in Lusai Hills it is about 62 per cent. My object in saying all this is this. Unless you educate them by starting Ashram in missionary type schools, how can you develop them.

We have repeatedly been requesting the Home Minister to increase amounts of scholarships for pre-matric as also to post-matric students. It is heartening to find the answers given by the Deputy Minister for Home Affairs. Shri Moshin. He replied in answer to one question on 19th December. 1973 that it has been deceided to increase the post-matric scholarships to Scheduled Castes and Scheduled Tribes by 50 per cent with effect from 1st April, 1964. At the same time, the same Deputy minister contradicated that when he said the following-I am so ry to say that-He says:

"The question of enhancing the rate of scholarships for post-matric students is also receiving the attention of the Government."

He said that they had already declared in public at a conference of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes that they would increase the quantum of post-matric scholarship amounts by 50 per cent.

Shri Moshin in reply to a question said that the Government's attention has been drawn to it. It shows that they are not at all serious in thinking. I do not know, why.

[Shri D. Basumatari]

Coming to employment, Shri Frank Anthony's community was getting the highest number in the matter of emplayment in British times. Now two departments have been reserved for thern-Railways and communications. There the percentage of people employed may not be less than 80 per cent of his community people. But in regard to scheduled tribes, it is not even 1 per cent- it is 0.29. In the case of scheduled castes, it is 2.39 per cent only. We have been thinking developing the areas of these people so as to bring them on par with the advanced sections of the society. I was one of the members of the Constituent Assembly, and I know how we had blessings of the Father of the Nation Mahatma Gandhi, who wanted that there must be special provision for reservation for the scheduled castes and scheduled tribes. We were given reservation for 10 years first. And then, when our Constitution was framed, Dr. Ambedkar felt that it was necessary to extend this period fur-Similarly we now feel that it should be extended still further. Now, it has been extended upto 30 years. Development of scheduled castes and scheduled tribes needs to be stepped up.

I have no ray of doubt regarding the sinessity of the Ministry or the sincerity of our leaders like Shri Uma Shankar Dikshit and Shri Ram Niwas Mirdha. But the question is about implementation. Who implements it? It is the bureaucrate who implement it. As chairman of the Committee on the welfare of Scheduled Castes and Scheduled Tribes, I have been examining the various Ministries and the variot - public undertakings including the Reserve Bank of India. You will be surprised to know that the Reserve Bank of India have submitted a memorandum to us where in they made 50 per cent of the post are to be reserved for the staff candidates, that is for the sons and relatives of the departmental officials not for the sons of the soil even, and reluctantly lately in 1966 they had accepted the principle of reservation for Scheduled Castos and Scheduled Tribes, and that too after a good deal of correspondence becomen the Home Ministry and the Resulte Bank of India. I am nentioning the example of the Reserve Bank only, but this is the attitude generally in almost all departments I examined. Then, take the case Air India or the Indian Airlines. They are also very allergic even to the concept of reservation for Scheduled Castes and Scheduled Tribes. I mention all this in the Committee meetings, they thought that the government itself is injecting into the administration and creating a situation of bad blood-bath in the Indian body-politic and so on so forth. So, I would say that there is article 335 which has also to be taken into consideration. I would like to point out that article 335 does not stand in the way of making available opportunities for recruitment to the services for Scheduled Castes and Scheduled Tribes. The framers of the Constitution did not mean that at all. Article 335 says:

"The claims of the members of the Scheduled Castes and the Scheduled Tribes shall be taken into consideration, consistently with the maintenance of efficiency of administration, in the making of appointments to services and posts in connection with the affairs of the Union or of a State."

Maintenance of efficiency is not meant only for Scheduled Castes and Scheduled Tabes. At present we find that whenever the question of employment of Scheduled Castes or Scheduled Tribes comes up, we are told that suitable candidates are not available under the plea of this Article who says that suitable candidates are not available? It is not the Deputy Minister or the Minister of State or the Home Minister, but it is the appointing authority which says so. That is why the percentage of Scheduled Castes

and Scheduled Tilbes in the field of employment is slow I would therefore, request the hon Home Minister to see that this article which stands in the way of employment of Scheduled Castes and Scheduled Tribes candidates is suitably amended

Then, there is the question of the When I raised this blocks point in the Home in the form of a question, Shri Mirdha had said that what I was saying that only 25 per cent goes to the benefit of the tribals was not correct. In the tribal blocks, no doubt Government spend a lot of money for the development of Scheduled Castes and Scheduled Tribes do admit this But if you look at the uctual development of the Scheduled Castes and Scheduled Tribes which has taken place you will find that only 25 per tent only has gone to their benefit For instance, a road is constructed as a result the area which was not accessible becomes accessible Ten years before in a tribal block of 504 tribals people living in that area had lands of their own Today, after the constitution of the road. I find that they have no land of their own, because there is no law under which their land can be protected. And who are the tribal, who are now living in fulls other than Assam? Except the t thals of Assam and the tribal people of the hills of other parts of Assam, tribals who were in the plains had been pushed up there by the sahukars and money lenders

You must see the fate of these people I ask Shri Miidha whether he has got any machinery to look into what I have said that only 25 cent benefit goes to the tribals assure him that if he comes with me over there, he will find that roads do not go to the tribal villages, roads go only to the land which have been possessed by the general category or other people

श्री रामधन(लालगज) बोलने दं जिए भाग बालने है तब तो भटी नहीं सुनने हैं। क्तीं पर बैठ गर् धार मूल गए।

MR CHAIRMAN This will not be tolerated, not from the Chair

SHRI D BASUMATARI So I say with heavy heart that what all said the other day which the Minister characterised as not correct is correct I have stated what I have said from my experience and from my knowledge and I repeat that what I have said is rue and correct

MR CHAIRMAN Let me make a request The Minister is to reply at 515 PM Therefore, the question of time is there Otherwise, I do not mind members speaking even longer. We have on the Congress side about 6 peakers still and on the opposition side about 5 I am in the hands of the House If you want the Minister to speak later on it is for you

THE MINISTER OF PARLIAMENT-ARY A FAIRS (SHRI K RAGHU-The guillotine comes at RAMAIAH) 6 pm He cannot speak later

श्री टी ब्सोहन लाल (र त्वाम) गृह मन्त्रालय बहुत बड़ा है, इसके लिए टाइम नही वटाया जाएगा श्रीर किसी को श्रपनी बात इनने का भीवा नहीं मिलेगा तो सदस्यों के लिए ग्रपने कर्तव्य का पालन करना कठिन हो जाएगा । मैं मन्त्री महोदय से प्रार्थना करूगा कि इसके लिए टाइम बढाया जाय ।

सभापति महोदय: 6 बजे गिलाटिम है ता क्या वरे। कैसे टाइम निकाले ।

SHRI PILOO MODY The Minister must speak at 5 15 Cancel the Congress speakers and have the 5 opposition speeches-What have you deciled?

श्री सनादि धरण दास (जाजापुर) : मभापति गहोदय, शेड्युल्ड कास्ट भीर शङ्युल्ड ट्राइव्स तथा क्लासेज का मुहकमा गृह मन्द्रालय मे भ्रा गया है। हम लोगों ने उस के लिए प्रार्थना की थी कि यह डिपार्टमेंट गृह मन्त्रालय के ग्रन्दर कर दिया जाय ताकि ग्रादिवासियो. हरिजनो भीर पिछड़ी जातियों का मंगल हो जाय। लेकिन मेरा यह भावजर्वेशन है भौर यह हमारा दावा है कि हरिजनों के साथ जिस परिमाण में अत्याचार हो रहे हैं उन को रोका में शासन ग्रसमर्थ है। इन जातियों के विकास की जो स्पेशल स्कीमें चलाई गई हैं उनसे हम देखते हैं कि उन का कल्याण नहीं हो रहा है। ये स्पेशल स्कीमें ठीक तरह से चलती नहीं हैं। एक तरफ तो स्पेशल प्रोजेक्टस बनाते हैं उन के विकास के लिए दूसरी तरफ उन का शोषण करते हैं। यह शोषण कैसे होता है यह मैं आप को बताता हुं। ग्रभी हमारे कोरापुर जिले में एक ट्राइवल डेबलमेट स्कीम चल रही है। हम ने कलेक्टर से पूछा कि शराब से तुम्हें कितनी रेबेन्यू आती है तो कलेक्टर ने कहा कि 53 लाख रुपये हम को सिर्फ शराब से रेबेन्यू मिलती है। तो भाप उस स्कीम पर पांच साल के प्रन्दर 2 करोड़ रुपया खर्च करेंगे भीर 2 करोड़ 65 लाख रुपया इस तरह से उन से ले नेगे। दो करोड भाप ने दिया भीर 2 करोड 65 लाख ले लिया। यह तो गवनं मेंट इस तरह से शोषण करती है। उस के बाद वंडर्स ने जा कर हर एक गांव ो दुकान खोली है। जहां पर दकान का ठेका ले लिया उस को छोड कर हर गांव मे मभी उन्होंने दुकान लगा ली है।

हमने इस बारे में सरकार से कहा कि इन आदिवासी और हरिजन इलाकों में प्राहीविशन लागू कीजिये, शराब-बन्दी लागू कीजिये, कोई सुनता नहीं हैं। एक तरफ़ से आप पैसा देते हैं, लेकिन दूसरी तरफ़ से उन से ले लेते हैं। सरकार इसको चलाती हैं, इससे हमको और ज्यादा बच्ट होता है। कुपा कर ऐसा सत्त कीजिये, इससे हमारा मंगल नहीं होता है, बल्कि नुकसान होता हैं।

मापने इन मादिवासी भौर हरिजनों की माधिक उन्नति के लिये ट्राइव डवलपमेंट स्कीम चलाई है, इसके मन्तर्गत म्राप उनको मैन्योर देते है, बैल देते है, दूसरी सुविधाय देते हैं—लेकिन इनका लाभ उनको नहीं मिल पाता है। मादिवासियों के नाम पर दूसरे लोग इसका लाभ उठाते हैं। ये ऊचे वर्ग के लोग उनके नाम पर मैन्योर ले जाते हैं, बैल ले जाते हैं लेकिन इन गरीव मादिवासी भौर हरिजनों को उसका लाभ नहीं मिलता है। माप जो भी पैसा खर्च करते है वह दूसरों के हाथों में चला जाता है—इस तरह का जो मोषण चल रहा है उसको बन्द की जिये।

बहां जो साहुकार लोग हैं, वे इनको ऋण देते हैं, लेकिन ब्याज किसना लेते हैं— 200 परसेंट, 300 परसेंट । ये नंगे और गरीब लोग इन साहुकारों के चंगुल में फंसे हुए हैं— इन के लिये आप क्या कर रहे हैं। मैं चाहुना हूं कि जहा ऐसा मनी-लैंडिंग होता है, उसको बन्द करना चाहिये। आप अपने नैशनलाइण्ड बैंकों को कहिये कि वे इन आदिवासी और हरिजनों को बैल दें, दूसरी सुविधाये दें, उनकी उन्नति के लिये पैसा खर्च करें, बना आपने जो प्लानिंग बनाया है, इस से कोई लाभ नहीं होता हैं, नुकसान होता हैं।

ग्राप कुछ ग्रादिवासी हरिजनों को स्टाइपेंड्स देते हैं--लेकिन कितना देते हैं--हाई स्कृल तक 32 स्पया ग्रार कासिज बासो को 50 रुपया देते हैं। श्राप विचार कीजिए कि इस महंगाई के जमाने में क्या 50 रुपये में काम चल सकता है या 32 रुपये में काम चल सकता है। ग्रगर कोई ग्रादमी चावल खायेगा तो वह भी पूरा नहीं हो सकता-2 रुपया भीर ढाई रुपये किलो चावल मिलता है। हम होस्टल चलाते हैं, हमे मालूम है कि कितनी मुक्ति में बता है। मेरी यह श्ररज है कि इस स्टापैण्ड को बढाया जाय श्रीर जिम जिस स्कीम से मैटोरियल गेन हो सकता है उनको दिया जाय । ग्रगर मरकार नही कर मकती है तो इसको बन्द कर दीजिये, नेकिन हमारे बच्चो की शिक्षा पर विशेष ध्यान दीजिये, माज केवल 14 प्रतिशत की लिट्रेसी है, वें बच्चे पड़ाना चाहते हैं---उनकी तरफ ज्यादा से ज्यादा ध्यान दोजिये ताकि उनका कुछ मगल हो सके

एम्प्लायमेट मे क्या होता है--ग्राप लिख देते है कि इतनी नौकरी उनको मिलेगी लेकिन मिलती नही है। जितना आप बोलते है उतना कर नहीं पाते हैं। ग्राप लिखते हैं कि हरिजन बस्तियों को इनैक्ट्रिसिटी देगे, लेकिन जितना करते है उसमे ज्यादा बोलते हैं। दूसरो को सब कुछ मिलत। है, नौकरिया भी मिलती हैं, सुविधाये भी मिलती हैं, लेकिन इनको नहीं मिलती । ग्राप भपने कागजों में बड़ा बडा प्रोपेगण्डा करते हैं हम इतनी मदद करते हैं, एक तरफ तो उतनी मदद इन लोगों को नहीं मिलतो, दूसरी तरफ जो दूसरे लोग हैं, उच्च वर्ग के लोग हैं उनको गुस्सा भाता है कि सरकार इन के लिये इतना कर रही हैं। मैं चाहता हू कि ग्राप जितना करते हैं उनना ही सहि। एक गाव को इलैक्ट्रिसटी देते हैं तो कहते हैं कि हर एक हरिजन बस्ती को इलैंक्ट्रिमिटी दी जायेगी—यह फालतू बात क्यों करते हैं—इसमें हरिजन और आदिवासियों के मन को चोट लगती हैं। दुनिया को दिखाते हैं कि आप उनकी भलाई कर रहे हैं, लेकिन उस भनाई में नुकमान होगा है। कम में कम इस तरह के प्रचार को कम कीजिये।

हमने देखा है कि ग्रापने जिननी जमीन उनको दी दै वह 2 डिसमल में 10 डिसमल नक है। हमने इसके बारे में क्वश्चन भी किया था। हमने देखा कि कुछ ग्रादमियों को ही जमीन मिली दें, उसके लिये भी उनको 50 म्पया खर्च करना पडा, घुस देकर उन्होंने वह जमीन ली हैं। इधर घूस लेते है, उधर सरकार कहती है कि हमने मुक्त मे दिया है। इसके लिये ग्राप एन्क्वायरी कराइये । वास्तव में भ्राप लोग देहात में रहने वाले नहीं हैं, शहरो में रहते हैं, वहा क्या होता है आप को मालूम नही हैं। हम देहात में रहते है, हम उनके बीच मे रहने बाले हैं, इसलिये भुक्तभोगी हैं--हम सब जानते हैं कि वहा क्या क्या होना है। इसी लिये मैं इस चीज की तरफ़र ग्रापका ध्यान ग्राकृष्ट करना चाहता हूं ।

मापने को आपरेटिव के लिये कुछ पैसा रखा है— ने किन इसमें कोई जायदा नहीं होता है । हमने भी एक को आपरेटिव चलाया था— फारेस्ट मार्केटिंग को आपरेटिव सोसाइटी, जिसको श्री प्रश्नासाहब सहस्वबुद्ध ने उड़ीसा के कोरापुट जिने में मुक्त किया था, हमने भादि-वासियों को काम में लगाया, लेकिन दूसरे लोगों ने, साहूकारों ने हमारे ऊपर भारोप लगाया। उच्च वर्ग के ग्रफमरों का भी एक सर्कल ऐसा होता है जो इन साहूकारों की मदद करता है भीर हमारे कामों में क्काबट डालता है। इस तरह के को आपरेटिक्ज में जो पैसा लगता है उसका फायदा इन हरिजन लोगों को नहीं होता है, इस तरह में तो इसको बन्द ही कर देना च हिये।

श्रिं भ्रमादि चरण दास]

प्रापने डवेलपमेंट के बारे में कुछ कदम उठाये हैं—इसके लिये मुझे बहुत खुशी है। अगर आप लैंड के साथ उनको इरिगेशन की सुविधा भी दे दे तो इससे उनको फायदा हो सकता है, वे खंती कर सकेंगे।

पोल्ट्री के लिये पिग्स, शीप्स आप उनको देते है-ऐसा भापकी रिपोर्ट में कहा गया है, खेकिन बास्तव में आप उनको नहीं दे पाते है। सिर्फ आपकी किताब में ही लिखा है। मैं 17 सालों से आदिवासी इलाको मे काम कर रहा हं--मेंने कही नही देखा है कि उनको पिग्स मिले है या शीप्स मिले है। बस म्रादि-बासियों के नाम पर दस्तखत हो जाने है लेकिन इसरे लोग उस को लेजा कर फायदा उठाते है । जमीनों में क्या होता है-- री श्रापके सामने रायगढ शृगर फैक्टरी का उदाहरण देता ह- दूसरे लोग उनकी जमीनो को ले लेते हैं, शुगर केन पदा होता है सब मिल वाले ने जाते है, उसका फायदा उठाते हैं भीर इन लोगों को साल में 50 रुपये एकड के हिसाब से दे देते हैं। इन के साथ जो इस तरह का श्रत्याचार हो रहा है, इस पर खास ध्यान रखना चाहिये।

हरिजन और भादिवासियों के लिये हमें ज्यादा से ज्यादा होस्टल्ज खोलने चाहिये। होस्टल्ज खोलने चाहिये। होस्टल्ज खोलने कुछ ऐसे लोग भी है जो प्राइवेंट स्कूल चलाते हैं, जब इनके यहा 10 हरिजन या भादिवासी लड़के हो जाते है तो उन लड़का के नाम अपने 'रोल पर दिखा कर मरकार से होस्टल के लिये पैसा ले लेते हैं और होस्टल न बना कर अपने घर को स्कूल बना देते हैं, जिसमें लड़के रह नही पाते। इस तरह के होस्टल से कोई फायदा उनको दही होता इसलिये सरकार को पूरी तरह से जांच करने के बाद ज्यादा से ज्यादा होस्टल बनाने चाहिये।

MR. CHAIRMAN: Mr. Karnesh Marak and then Shri Birender Singh Rao-each five minutes.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: (Mahendragarh): I should have my allotted time. I did not speak on any demand.

MR. CHAIRMAN: Your allotted time is 9 minutes for Independents—unattached; that has all been exhausted already.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: I have not spoken on other demands. There is something wrong with the office in calculating the time for members; it is bad.

MI. CHAIRMAN: You can discuss it in the Business Advisory Committee.

SHRI K MARAK (Tura): Mr. Chairman, I thank you for the opportunity to bring certain deplorable conditions prevalent in the hill-tribal areas of Meghalaya, Mizoram, Nagaland, Arunachal Pradesh and other backward States to the notice of the Central Government.

17.00 hrs.

Commissioner for scheduled The scheduled tribes made castes and various observations, suggestions and recommendations for improvement of the conditions of scheduled castes and scheduled tribes in his reports for 1970-71 and 1971-72. The reports made a reference to scheduled castes and scheduled tribes in certain areas of the country and suggested specific plans such as Tribal Research Institute. Cultural Research Institute, survey and study by the research staff of the Commissioner for scheduled castes and scheduled tribes. But, there is little or no mention of such plans institutions for the scheduled castes and scheduled tribes inhabiting the north-eastern regions of small mentioned states and territories above. The people of these areas are very much aggrieved for not getting the due share of his benign attention. Practically, they have not felt the very existence of such a Commissioner so far.

There are more than a lakhs of scheduled tribe people living in the plain districts of Assam, the kith and kin of those living in the hill districts, who are not recognised as scheduled tribes, and as such, they are not entitled to the privileges offered by the Central Government. For instance, there are more than a lakh of Garos living in Goalpara, Kamrup and other plain districts who are still deprived of whatever privileges being enjoyed by their brothers and sisters in Garo Hills district of Meghalaya.

The fruition of Independence and democracy has not taken place to an appreciable extent in those hill areas and social suppression and economic stagnation are still unbridled and rampant in these remote parts of the country. The closed and separatist policy of the British Government is still holding the fort in these hill areas. If the democratic Government of independent India does not give a special and sincere care, the stagnation, suppression and injustice will not move out of these areas and the gap will remain as wide or even wider between the scheduled and the nonscheduled. The no-progress or little progress state is due mainly improper and partial implementation of measures so far undertaken by the Government, lack of sense of importance and urgency, inadequate provision of funds and want of zeal.

MR. CHAIRMAN: Are you going to read the whole thing? You make the points. Otherwise, your time will be up.

SHRI K. MARAK: The demand of the Garos living in the contiguous border areas of Goalpara and Kamrup districts of Assam for inclusion of 360 Garo villages in Garo Hills district of Meghalaya should be treated as a national problem and should be approached from the humanitarian point of view. It is the genuine desire of the democratic people to be grouped together with their Kith and kin separated by imaginary boundary line, drawn by the British Government for their own convenience of administration, but practising the same social life and culture and having the same tradition and custom. It is a natural desire to be associated with an administration run in their own language and an aspiration for educational, social and economic development according to their own genius. Their desire to live together, to grow together and work together is a corollary of the accepted principle of creating a linguistic State. The demand had been voiced even before independence, after independence, and during struggles for Hill State by interviews, by memoranda etc. The reticence of the Central Government and the Assam Government has created a considerable frustration and despair amongst the said border people, and is also responsible for creation of complication and unpleasant repercussion.

When the people started holding meetings and resorting to peaceful demonstration fo voice their demand and to register their protests against the backdoor attempts of the Assam Government to impose Assamese language upon them, the Goalpara sub-divisional authorities.

MR. CHAIRMAN: Please cooperate. How long will you take for reading all that?

SHRI K. MARAK: Two or three minutes only.

MR. CHAIRMAN: How many more pages have you?

SHRI K. MARAK: One more page only.

MR. CHAIRMAN: No. no. You make the points and conclude. You can lay the page on the Table, Now, Mr. Jamilurrahman.

SHRI K. MARAK:took a wrong decision of suppressing the movement under false accusation and uncalled for provacation and started a wanton show of force, which was not justified at all under the circumstances.

MR. CHAIRMAN: Another Member is to speak. Please conclude. Thank you very much.

श्री मुहःसद अमील्र्रहमान (किशनगज): मोहतरम चंयरमैन साहब, मेंने बहुत ही गौर से होम मिनिस्ट्री की डिमाण्ड्स की रिपोर्ट्स को पढा है। इसको देखने के बाद मै महसूस करने लगा हूं और महसूस करता हूं कि जितनी मांग होनी चाहिये थी उतनी नहीं हुई है। इस मांग में कंजूसी की गई है। चुंकि इस डिपार्टमेंट की जिम्मेदारिया बहुन हैं भीर इसको किसी तौर पर नजरश्रन्दाज नहीं किया जा सकता है। जब इसको नजर-अन्दाज नहीं किया जा सकता है तो इसकी माग में बढ़ोतरी होनी चाहिये थी। बहरहाल, जो भी माग की गई है उसकी पुरकोर ताईद करते हुए में प्रपनी चन्द बात कहना चाहता हु। होम मिनिस्ट्री की बहुत ज्यादा जिम्मे-दारियां है इससे इकार नहीं किया जा सकता है। यह महकमा सिर्फ जान माल की हिफाजत का जिम्मेदार नहीं है बल्कि इसे एक ऐसा माहील भी कायम करना है जिससे मुल्क मे श्रमन चैन कायम रह सके भीर गरीबी हटाओ का जो एक फलसफा हमारे लीडर और हमारी पार्टी ने दिया है वह पूरा हो सके, उसमे किसी तरह की कोई क्कावट पैदा न हो। खाम कर हालिया माहोल में अभी जो हमारी जमहूरियत पुरुता नही हुई है इस जमहूरियत को रएक इनरी सियामतदा मिटाने पर तुले हुए 훈 1

मुल्क में माशी बदहाली है, इसमें कोई दो रायें नहीं हैं। इस माशी बदहाली की बहुत सारी बजुहात हैं जैसे गल्खे की कमी, सुखाड़, होडिंग, बाढ़ भीर पाकिस्तान से लड़ाई। इन बातों का ग्रसर तो होना ही था। हमारी वर्षा र भाषम ने बहुत पहुले ही चेतावनी दे दी थी और मुल्क को आगाह कर दिया था कि लड़ाई के बाद इसका ग्रसर मुल्क पर होने वाला है लेकिन उम वक्त तो दूसरी तरफ़ के हमारे कुछ दोस्त, खास तौर से वाजपेयी जी जो इस वक्त यहां पर नहीं हैं, वे बहुत चुप भौर खामोश थे। वे खामोशी से सारी बाते सुन रहे थे । शायद वक्त का इन्तकार कर रहे थे कि मौके से फायदा उठा लें। (क्यबचान) मैं यह अर्ज कर रहा था कि अभी जो हगामी दौर चल रहा है इस मौके का बे बेजा फायदा उठा रहे है भीर गरीब भवाम की जिन्दगी को दूभर करने पर तुले हुए हैं। भाप देखे उसके लिए यह सब क्या कुछ नहीं कर रहे हैं ? रिएक्शनरी सियासतदा ताकतें जिनको बारहा मुह की खानी पडी है, सन् 1971 में, 1972 में भीर फिर 1974 में यु० पी० के एलेक्शन में भी उन्हें मुह की खानी पड़ी है लेकिन उससे भी उन्हें सबक नहीं मिला । वे हर जगह पर फसादात बरपा करने के लिये तुले हुए है। वक्त ऐसा थाकि सभी लोग सिर जोड़ कर बैठने भीर मुल्क की भावाम की भलाई के लिए क्या कदम, उठाये जा सकते है उस पर गौर करते, मुल्क को आगे बढ़ाने में मदद करते लेकिन उनके बरधक्स वे क्या कर रहे हैं? यह लोगों को गुमराह कर रहे है, प्रावाम में फिरफेवाराना फसादात फैला रहे हैं।

वेयरमैन साहब, एक जोडी ऐसी बनी है जिसकी मिसाल मैं भापको पेश करता हु। सी० पी० एम०, सोशलिस्ट भीर जनसंघ-कैसी जोडी बनी है ? जमहरियत मे ऐसी जोडी दुनिया मे नहीं मिलेगी लेकिन भारत मे जरूर देखेंगे।

म्रापने देखा कि गलने की कमी, कीमतो मे इजाफा और रिश्वत के नाम पर फिरके-बाराना फपाद होने लगे है ग्रीर खासतीर से म्सलमानो का जीना दूभर हो गया है। उन दोस्तो में में कुछ लोग तो ग्रभी एक शाध मौजद हैं जिन्हांने मुसलमानो का जीना हराम कर दिया है, भीर खास कर गरीब हरिजन ग्रीर मुमलमान मौत की साया मे चल रहे है इन लोगों के खौफ की वजह से। कोई भी बात भगर देश में हो तो उसको फौरन फ़िरकेवाराना शक्ल दे देते हैं। ग्राप देखे गुजरात में ग्रान्दोलन के नाम पर फिरकेवाराना फसादात हुये और मुसलमानो का काफी जानी भौर माली नुकसान हमा। यह किसी से छिपा नहीं है। बिहार में राची से जहां में भी गया या, श्री नवल किशोर सिंह ग्रीर श्री कार्तिक उराव ग्रीर घोष साहब भी गये थे हमने देखानेमादर्दनाक मजर या जादेखने से ताल्लुक रखता था। पुलिस ने एक तरफा बात की है, लोकल दरोगा ने एक तरफा बात की है भौर जितने मकानात जलाये गये हैं वह मुसल-मानो के ही जलाये गये।

६सी तरह से गुजरात के अन्दर कुछ जग हो को लीजिये जैसे महमदाबाद, मुदासा, राजकोट, हरसोल बोरमद मे जबरदस्त फिरके-वारानाफसादात हुये हैं भीर मुसलमानो का काफो नुकसान हुआ है। श्राप बिहार को लोजिये वहा कुल मिनिम्टर्स का पुतला गर्धे पर निकाला गया भीर चीफ मिनिस्टर के प्रतले को सुम्रर पर चढ़ा कर के जलाया गया। च्कि मुसलमान सुग्रर को हराम मानते हैं और चुकि बिहार का चीफ मिनिस्टर मुसल-मान है इमलिये उसके पुतले को स्घर पर बढ़ा कर चलाया गया। यह किस बात की निशान-

देही करता है। यह लोग कहते है कि हम कौम के हमदर्द हैं, इसमे बढ कर ग्रीर क्या मिसचीफ हो सकती है कि मुसलमानों के जजवात को हर तरह से भड़काया जा रहा है, थीर दूसरी तरफ कहते है कि हम श्राजादी को वरवरार रखना चाहते हैं। ऐसा मुझे गुमान होता है इन सब हरकती की देखकर कि कुछ दोस्त जो दूसरी तरफ बैठे हुए हैं एक सेक्यूलर स्टेट में मुसलमान चीफ्र मिनिस्टर को बिहार में नहीं देखना चाहते हैं। एक कामप्रेसी रची गयी है कि इनको किसी तरह से गिराया जाय । नाम स्टूडेट्म ग्रान्दोलन का है लेकिन सही माना मे कुछ रिएक्शनरी फोसज एक साथ मिल कर ऐमी हरकत कर रही हैं, ब्रावाम को गुमराह कर रहे है। यह ऐसी ही फोर्सज की हरकत है। अगर फिरके-वाराना फसादात को फौरन न रोका गया तो सियासी जमाते भीर यह सारे लोग सियासी जिन्दगी को ब्रान्दोलन के नाम पर मल्क को तबाह भीर बरबाद कर देंगे। वक्त प्रागया है कि हक्मत इस बात पर गौर करे।

माननीय दीक्षित जी जैसे बुलन्द हिम्मत भीर साबित कदम मिनिस्टर भीर मिर्धा जी जैसे जवान भौर एक्टिव स्टेट मिनिस्टर भौर मोहसिन साहब जैसे मतीन ग्रौर मुनक्तिसरल मिजाज डिप्टी मिनिस्टर बहुत कम मिलते हैं। भीर इस मिनिस्ट्री मे गोया एक मिक्स्ड मिनिस्ट्री है भीर मैं चाहगा कि इसी तरह की एक मिक्स्ड पुलिस होनी चाहिये ताकि एक दूसरे तबके पर भरोसा हो और वह सब मिल कर उस मिक्स्ड पुलिस फोस में रहेगे तो एक दूसरे पर किसी को श्वहा नही होगा भीर ज्यादती नही होगी।

1973 में मुदासा में जी फसाद हुये, दको मे भर कर लडको को, विद्यार्थी परिषद के लोगो को लाया गया भीर लूटपाट मे मार० एस० एस० मीर विद्यार्थी परिषद

[श्री मुहम्मद जिमल्रेंहमान]

के लोग शामिल ये और उनकी मददगार पुलिस थी । कोई भी आज तक कानन की जद में नहीं लाया जा सका । पुलिस ने मिलकर सक्लियत के लोगों को मारा है और उनको लूटा है। और जो कुछ गुजरात में हुआ वह आपको मालूम हैं।

इसी तरह से यू० पी० में पी० ए० सी० ने फिरोजाबाद और वाराणसी मे जुल्म ढाये और उन्होंने बाद में रिवोल्ट कर दिया। इमलिये इस मिनिस्ट्री में इन मब बातों को रोकने के लिये टोम कदम उठाया जाय और सारी चोजों में नबदोली लायी जाय जिसमें कि सही मानों में मेक्युलर स्टेट बन मके।

सभापति महोदय श्रव श्राप भ्रपना भाषण खन्म कीजिये।

भी मुह्म्मव जमीलर्रह्मान मोहतरम चेयरमैन साहब, में घडी देख रहा हूं। मुझे अभी थोडा मा मौका और विया जाय क्योंकि काफो कुछ कहना हं।

सभापति महोबय: होम मिनिस्टर साहब को भ्रापर 5.30 पर नहीं बुलाऊगा तो कैंस काम चलेगा। वैसे मुझे कुछ एतराज नहीं है, श्राप मिनिस्टर का वश्त काट रहें हैं।

श्री महम्मद जमील्र्रहमान होम मिनिस्टर साहब ने मारं० एस० एस० का हाथ इन फसादात में देखा है भीर गुजरात भीर बिहार के मन्दर । फिर उनको क्यों नहीं कानन की जद में जाना जाता, यह मैं जानना चाहता हूं। मैं कहना चाहता हूं कि प्राप जितनीं देर करेंगे जम्हूरियत कें। उतना ही खतरा बढता जायगा। मुस्क को खतरे से बचाने के लिये जरूरी है कि प्रार० एस०एस० हो या प्रानन्द मार्ग हो, ऐसे जो भी डदारे भारत में हो उनपर बैन लगाया जाय और सिर्फ आई० पी० मी० की दफा 153 मे तबदीलं लाने से काम नही चलेगा, उस पर आपको मख्नी से ध्रमल करना होगा।

श्री पन्ना लाल बारूपाल (गंबानगर):
समापित महोदय वाग्रमी समद् सदस्यों में
बहुत रोष है समग कम होने की वजह
में। मैं चाहता ह िं स्थित्र प्राप्त कार्या
जाये।

श्री मुहम्मद जमील्रंहमान श्रडल्टरेटमं, होडंमं श्रीर ब्लैंब मार्हि स्थित को सख्त से सख्त सना दी जाय, श्रीर श्रगर कान्न दे सबदीली लाने से मीन के सजा हा सबती है तो बह भे विया जाय।

जहां तक उदू वा सवाल है उस शरे में कबल सर्कलर जारी करन में काम नहीं चलेगा, विलंग जा उसका कानूनी हैमियत है उस पर असल किया जाय। साथ ही जो मुसलमानों की नुमाइन्दगी है चाहें पुलिस हो, बी० एस० एफ० हो, सी० आर०पी० हो, पिल्लव अन्डर हेविग्स हो, इटेलीजेस डिपार्टमेट हो उतकी नुमाइन्दगी दीजिये बहाली के तौर पर ताकि सात, आठ करोड मुसलमानों को इत्मीनान हो। हमेणा से मुसलमानों का नुकसान हो रहा है, इसलिये मुसलमानों ो भी बहाली मुनासिब तौर पर इन सब फोर्सेंज से होनी चाहिये।

ملک میں سعاشی ید حالی ہے۔ اس میں کوئی دو رائے نہیں عیں -اس معاشی بد حالی کی بہت ساری وجوهات هیں - جیسے غلے کی کمی - سوکھا ا، کستان سے لوا^ای-ان باترن کا اثو تو هوتا هی دیا ه هماری وزیرافظم لے بہت پہلے هی چینارسی دے فی تھی - اور ملک کر آگاہ کر دیا تھا۔ که لوائی کے بعد اس کا أثر ملك ير هونے والا هے - لهكي اس وقمع تو درسری طرف کے همارے حجم دوست خاص طور سے باچہائی چی جو اس وقت يهان پر نهين هين -وہ بہت چپ اور خاصوص تھے۔ رہ خاموشی سے ساری ہائیں سن رہے تھے - تاید وقت کا انتظار کر رہے تھے کے سرقعہ سے فائیدہ اتھا لیں - میں یه موض کر رها تها که ابهی جو هنگامی دور چل رها هے - اس موقعه کا وہ ہے جا فائدہ اُٹھا رہے ھی -اور ان غریب عوام کی نداوی کو دوبهر کرنے ہر تلے ھولے ھدی۔ آپ دیکھیں اُس کے لئے یہ سب کھا کچھ نهیں کر رہے هیں۔ رہے ایکشلوبی سیاست دان جن کو باره مهینه کی کھائی ہی ھے - سکہ ۱۹۷۱ میں -سلم ۱۹۷۲ مین - آور ۱۹۷۳ یو پی کے المکشن موں - انہیں مذہبه دی کھائی ہوی ھے: لیکن اس سے بھی اتہیں سبق نہیں ملا - 85 ھر جکہ فسادات بریا کرنے پر تے

شرى مصدد بهبيل الوهبان -متعلرم چیر میں صاهب - مهل نے ہت ھی عرر سے ھو ملسٹوی کی تایمانڈز کی رپورٹ کو پڑھا ھے ۔ اس کو دیکھئے کے بعد میں محصوس کرتے لكا ول او، منصبوس كوتا هار -که جتلی مانگ هونی جاهگے تھی انتی نہیں عوثی ہے ۔ اس مانگ میں کلجوسی کی وٹی ہے ۔ چونکه اس دَپارتمهات کی دمهواریان بهت هیں ور اس کو کسی طور پر نظر انداز نهیں کیا جا سکتا ہے ۔ جب اسكو نظر الداز نههن كها جا سکتا ہے اس کی مانگ میں برَهاري هوني چاديهه - تهي -بهرحال جو بھی مالکیں کی گئیں میں میں ان کی پو زور نائید کرتا هوں -ھوم منستری کی بہت زیادہ ذمے داریاں میں - اس سے اکار نہیں کیا دا سكنا ه _ يه محكمه صوف جان و مال کی حناظت کا ذمیدار نهیں ھے - ہلکہ اسے ایک ایسا ماحوں بھی قائم کونا ہے جس سے ملک میں امن چين قائم رة سكے اور عويهي هتاو کا عو یا فلسعه همارے لیدر اور هماری پارتی ہے دیا ھے - وہ پررا ھو سکے - اس میں کسی طوح کی کوئی رکاوت یودا نه هو خاص کر حاليه ماحول مين ابهي جو هناري جمهوريت يحقق نهن هوتي هي -اس ج-پورت کو ری ایکشفری سهاست دان همّانے ہو تلے هوأيہ ھين –

مسلمانوں کا کائی جان والمال کا تصان موا - یہ کسی سے چھھا ھوا نہیں ہے - بہار رانچی میں جہاں میں بھی گیا تھا۔ شد، نول کشور سلکھ۔ شری کارتکہ اورین اور نہوھے صاحب بھی گئے نہے۔ ھم نے دیکھا کیسا دون ناگ مظر پولس نے دیکھا کیسا دون ناگ مظر پولس نے ایک طرف بات کی ہے اور جتنے مکاناے جائے گئے ھی - جتنے مکاناے جائے گئے ھی -

اس طرے کجرات کے الدر کچھ جگهول کو لهجلے - جهسے احمدآباد مرداسا - راجكوت - هر سول - يورس مان زيردست فاقتداراته فسادات هوئے هیں - اور مسلمالوں کا کافی نقصان هوا هے۔ آپ بہار کو لیجئے۔ رهاں کل منسترز کا بعد گدھے پر نکالا گھا۔ اور چیف منستر کے پانے کو سور پر چوھا كركي جلايا كيا- چونكه مسلمان سور کو حوام مانتے هيں۔ اور چونکه بہار کا چيف منستر مسلمان هے- اس لئے اس کے پتلے کو سرر پر چوھا کر جالیا کیا۔ بع کس بات کی تھان دھی کرتا ھے۔ یہ لوگ کہتے میں که هم قوم کے همديرد هيں۔ اس سے بوھ کو اور کیا مستجف هو سکتی هے۔ که مسلمانوں کے جزبات کو ہو طرب سے بهوکایا جا رها هے۔ اور دوسری طوف کہتے ھیں که هم آزادی کو برقرار رکھنا چاهتے هيں۔ ايسا مجھ گيان هوتا هے

[هرى معتمد جمهل الرحمان]
هوئه ههى يه وقت ايسا تها كه سههى
لوگ سر جور كر بهتهتے اور ملك كے
عوام كى بهتائى كے لئے كها قدم الهائے
جا سكتے هيں ان ير غور كرتے ملك كو آئے بوهانے ميں مدد كرتے لفكن اسكے برعكس وہ كها كر رہے

چیر مین صاحب - ایک جوزی ایسی بلی هے - جس کی مثال میں آپ کو پیش گرتا هوں - سی - پی ایم اسی سرشلست اور جن سلکھ کیسی جوزی بلی هے - جمہوریت میں ایسی آجوزی دنیا میں نہیں ملیکی - لیکی بھارت میں شرور دیکھیلگے -

آپ یے دیکھا کہ غلے کی کسی
قیمتوں میں اضافہ اور رشوس کے نام
پر فرقہ دارانہ فسادات ہونے لگے ہیں۔
اور خاص طور سے مسلمانوں کا جیانا
سے کچھ لوگ تو ابھی ایک آدھ
مرجود ہیں - جنہوں نے آمسلمالوں
کا جہنا حرام کر دیا ہے ۔اور خاص کر
فریب ہری جن اور مسلمان موس کے
مائے میں چل رہے ہیں - ان لوگوں
پات اگر دیھی میں ہو تہ فورؤ فوقہ
پات اگر دیھی میں ہو تہ فورؤ فوقہ
دیکھیں گھرات میں آندولن کے نام
دیکھیں گھرات میں آندولن کے نام

سقه ۱۹۷۳ میں مداسہ میں جو فسادات هوئے۔ ترکوں میں بھر کر نوکوں کو- ودھهارتای پریشد کے لرگوں کو لایا گیا اور لوگ مار مهن آر-ایس-ایس اور ودههارتهی پریشد کے لوگ شامل قهے۔ اور ان کی مددکار پولیس تھی- کوئی بھی آج تک قادون کی فد مهن نههن اليا جا ساء يوليس نے مل کو اقلیت کے لوگوں کو مارا هے اور ان کو لوٹا ہے۔ اور جو کجهة **گنجرات میں ہوا ہے وہ آپ کو** معلوم ہے۔

لس طرم ہو۔ پی۔ میں پی۔ اے۔ سی۔ نے فہرورآباد اور دادا ناسی میں انہوں نے ظلم قامائے اور ديولت كر ديا- اس لئے اس منستری میں ان سب باتوں کو روکنے کے لئے تھوس قدم اتھائے حاثیں۔ اور ساری چیروں میں نہدیلی لانی چائے۔ جس سے مصیم معلوں میں سیکولر سلیت ہی سکے -

سِبهاي ِ مهوره - تب آب اينا به شی ختم کسٹے -

شرى محمد جمهل الرهان -محترم چهر مين صاحب ميں گهري ديكة رها هون - مجهر أنهى تهورا سا موقعه أور ديا جائے - ايونكه كافي کچے کہنا ہے۔

که ان سب حرکتوں کو دیکھه کو که کچهه دوست جو دوسری طرف بیتی ھوئے ھیں۔ آیک سیکولر سٹیٹ میں مسلمان چیف منستر کو بهار میں نہیں دیکیا جاہتے ہیں۔ ایک کانسبریسی رچی گئی ہے۔ کہ ان کر کسی طرح سے گرایا جائے۔ نام ستودینتس أندولن کا ہے۔ ليكن سحيم معنون مين كجهه رى أيكشفري فورسز أيك سأتهه ملكو حرکت کر رهی هیں۔ عوام کو کمرالا کو رهی هیں۔ یه ایسی هی فورسز کی حركت هي- اكر فرقهدارانه فسادات کو فوراً نه روکا گیا دو سهامی جماعدوں اور یه ساوے لوگ سهاسی زندگی کو آندولن کے نام پر ملک کو تباہ اور برباد کر دیلئے۔ وقت آگیا ہے که حکومت اس بات به عود کرے۔

مانهة ذكشت جي جيسے بلند همت اوو دُايت قدم منستر اور موديا جي جهسے جوان اور لیکٹھو ستدت ملستر اور موهسن جیسا تهلی منسلر بهت کم ملتے میں۔ اور اس منستری میں گویا۔ که ایک مکسد منستری هو- اوو میں چاهوں کا که ان کی ایک مکست پولیس فورس هونی چاهیه- تاکه ایک دوسری طبقے ہو بهروسة هو سکے- اور ولا سب ملكر اس مكسد يوليس فورس مين رهینگے۔ تو ایک دوسرے پرکسی کو شبہ نہیں ہوکا ارو زیادتی نہیں ہوگی۔

[شرى متصد جميل الوهمان] سههایتی مهودیه - هوم منست صلحب کو اگر ۳۵. پر نهین بولاونکا تو کہسے کام چلیکا - ویسے منجھے کوئی اهتواض نهیں هے - آپ ملسقو کا وقت کات وقع ههور -

شرى محمد حميل الرحمان -ھوم منسٹر صاحب نے آر ایس ایس کا هانه ان فسادات مهن دیکها هے -گجرات اور بہار کے اندر - پہر ان کو کیوں نہیں قانون کی ضد میں الیا -جانا - مين جانفا چاغتا هون - مين كهنا جاهنا هول كه أب جتنى دبر کرینگے - جمہور ت کو اتفا هی خطوہ بوهتا جائها۔ ملک دو خطوے سے بچاہے کے لئے ضروری ہے کہ اُر- ایس- ایس-هر - آنند مارکه هو ایسے جو یهی ادارے بھارت میں عوں - ان ربین لكايا جائے۔ اور صرف آر- ہی- سے - كى دفعہ ۱۵۳ سپل تبدیلی لاتے سے کام نهيو بديا -

شربی پذا لال بارو پال - کانگویس سلسد ہوں میں بہت دوش ہے سمیر کم هوئے کی وجه سے۔ میں چاهنا ھوں کہ سمے اور بومایا جائے -

شرى مصند جديل الرحمان-إيدَلتُويتر- موردوز اور بليك ماركيتُوز كو سخت سے سطت سزا دی جائے۔ اور اگر قانون میں تبدیای لانے سے موت کی سزا هو سکتی هے تر وہ بھی کیا جائے۔۔

جہاں تک اردو کا تعلق ہے اس بہارے میں کوول سرکلر جاری کرنے سے کام نہیں چلےگا۔ بلکه جو اس کی قانونی اهمت هے اس یو عمل کیا جائے - ساتھ ھی جر • سلمانوں کی تما تدكي هے جاهے يولس هو يہ - ايس -ابف- هو- سي- أو- پي- هو انتهليجدس ديهار الملت هو - ان كي نمائلدگي حیجئے بصالی کے طور پر - تاکھ سات آته کرور مستمانون کو اطمهان هو- همیشه سے مسلمانوں کا لاقصان هو رها هے - اس لگے مسلمانوں کی یہی بحالی مناسب طور یو آن سب فوروز میں ہونی چاھئے]

BIRENDER SINGH RAO SHRI (Mahendragarh): Mr. Chairman, Sir, the Home Minister carries a very important charge, and some of the more important responsibilities which he has to discharge are maintenance of internal security, law and order, eradication of corruption, national integration, election- and reorganisation of States In some of these matters. I believe, the achievements of the Home Ministry are not very creditable. I will mention only a few of them

In the matter of national integration, it is necessory that there should by a uniform civil code as provided for in the Constitution. But, unfortunately, article 44 of the Constitution has been completely ignored by Government It is also necessary for purposes of national integration that there should be a link language for the country and that the official language which is Hindi should be progressively introduced and should be treated as the national language. Articles 343 and 344 provide for the appointment of a Commission and a Committee of Parliament, but I do not think that anything tengible has been done.

Very strange things are happening in the country and yet, the Home Ministry has not been able to put its foot strongly down to stop this. In Tamil Nadu we have recently seen that a resolution was passed by the Assembly, unanimously, that States should have autonomy. It is not a question of autonomy, it is a step towards demanding of secession, and what is worse, in Tamil Nadu there is so much allergy to Hindi ... (Interruptions) What are you laughing? They are giving pensions to people who took part in the Anti-Hindi agitations. Is this the way of running a government in the Union of India?

And yet, the Home Ministry which is responsible for making Hindi as the official language is keeping silence... (Interruptions) It will soon be, if the Government takes proper steps.....

SHRI R P. ULAGANAMBI: You please ask my friend to go through the Constitution. Hindi is not at all a national language. It is only an official language.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: It is the official language of the country.

SHRI R. P ULAGANAMBI: Please go through the Constitution before speaking.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: Other languages are only the regional languages Hindi is the official language and the national language of the country. The official language only is the national language of the country...

AN HON. MEMBER: All languages are national languages

SHRI BIRENDER SINGH RAO: Call it official language or any language you like.

655 LS-15.

I would suggest that Hindi should be made compulsory to be learnt in all States of the South as a secondary language and one language from the South must be learnt in all the schools in the northern States as a secondary language so that the nation may soon integrate (Interruptions) The Eastern States also should do the same....

MR CHAIRMAN: Your time is over.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: No. Sir I have not even started.

The other point that I want to make was about the question of the Prime Minister's award on Chandigarh. You kindly bear with me for 2 or 3 minutes...

MR. CHAIRMAN: I think this is the last point you have to make.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: Then, one or two more.

Four years have elapsed since the Prime Minister's award was announced. Chandigarh, under that award, is to go to Punjab next year. Haryana has no capital yet and the transfer of Fazilka and Abohar which are Hindispeaking areas is linked up with the Commission which is to be set up to go into other boundary disputes. More than four years have passed but no Commission has been established. We have seen the fate of Mahajan Commissoion. There has been no implementation of its recommendation so We also know what was the fate of the Shah Commission Report. So my request

AN HON. MEMBER: Also on Nar-mada project.

SHRI BIRENDER SINGH RAO:
So, my request is: the question of
Fazilka and Abohar should not be
linked with the setting up of the
Commission for other boundary disputes. and for transfer at the time
of implementation of the recommendations of that Commission. We do

[Shri Virender Singh Rao]

₄19

not know when the Commission will be set up and when its recommendations will be implemented. Therefore, I suggest that if Chandigarh should go to Punjab, then Fazilka and Abohar simultaneously should go to Haryana. At least they should both be turned into a Union Territory so that Fazilka-Abohar can be transferred to Haryana at the same time as Chandigarh goes to Punjab.

MR. CHAIRMAN: Shri Kushok Bakula.

SHRI BIRENDER SINGH RAO: Let me at least give my suggestions. I will take only two minutes

MR. CHAIRMAN: Shri Kushok Bakula

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT): The hon. Member may send his suggestions to me, and let us proceed.

MR, CHAIRMAN: You can send them in writing. He will reply.

भी कृतोक बाकूला (लहाख): सभापति महोदय, गृह मंद्रालय की मांगों का मैं समर्बन करता हुं लेकिन इस के साथ साथ बेद प्रकट करना चाहता हु कि जब मैं ने 1973-74 की रिपोर्ट का भध्यायन किया, तो उस में लहाख के बारे में विशेष उल्लेख नहीं किया गया था मैं बार वार सदन में, जब से मैं भाया है, 1967 से, यह कहता रहा हूं कि लहाख में कोई तरकी नहीं हो रही है बाबिक, सामाजिक और जिला में भीर वह इन क्षेत्रों में पिछड़ा हुमा है। राज्य सरकार भी हम को बिल्कुल भलग समझतं। है भीर मुझे ऐसा मालूम होता है कि केन्द्रीय सरकार भी लद्दाख को कुछ नहीं समझती। में दीक्षित जी से कहना चाहता हूं कि लहाब की शैड्यल्ड द्राइब्स भीर शैड्यूल्ड एरिया कोवित वर दिश जाना चाहिए।

मैं ने प्रश्न के जरिये और चिट्टियों के जरिये आप का अ्यान इस ओर विसाया है और काम्मीर के मुख्य मंत्री से भी बात की है। उन्होंने कहा है कि हम ने आप की इस बात को मान सिया है और केन्द्रीय सरकार को भेज विया है लेकिन मैं ने जब यह रिपोर्ट पढ़ी हो कहीं पर भी इस का उल्लेख नहीं पाया है।

दूसरी बात यह है कि जन्मू भीर काश्मीर का विकास करने के लिए आप ने एक मंत्री समिति बनाई है लेकिन मैं पूछना बाहता हं कि क्या के कभी लहाब की तरफ़ गये हैं ? आज केन्द्रीय सरकार में हमारे चार मंत्री है, दो जम्म के भीर दो कामीर के। मैं जानना चाहता हं कि क्या इन में से कोई मिनिस्टर कभी लहान गया है? क्या माप लहान को जम्मू काश्मीर से भलग समझते हैं? हम ने प्राज तक नहीं कहा कि लहाख जम्मू काश्मीर से भलग हो जाए। 1949 मे जरूर हम न नेहरूजी से कहा था कि लद्दाख को ग्रलग कर दिया जाए। हमारी काश्मीर की जनता के माथ कोई धापत्ति नहीं है लेकिन काश्मीर के शासन ने ऐसा रुख भपनाया है कि वहा कोई तरक्की नहीं हुई है। उस वक्त जवाहर लाल जी ने कहा था कि भभी बक्त नहीं भावा है। फिर 1962 में हम ने कहा या कि भव तो वस्त या गया है। भाप ने चाइनीज से दोस्ती कर के तिव्यत को तो चाइनीज के हाथ में भंज दिया। सन् 1954 में तिव्वत के बारे में मैं ने कहा या कि प्राप इस के बारे में सोचें लेकिन उस वक्त ग्राप ने नहीं सोचा भीर ग्राज तिव्यत चीन का इलाका बन गया है भीर उस के चारों तरफ से हिन्दुस्तान को नुकसान पहुचता है भीर करोडों को नकसान हुमा है। नया लहाख को भी भाप चाइनी ' के पास जाने देना चाहते हैं ? उस वक्त जब हमने कहा या तो स्व॰ प्रधानमंत्री जी ने कहा कि सभी वक्त नहीं है भीर हम चप बैठे रहे। भगर यही हालत रही, तो लहास में भी दंगे-फ़साद हो सकते हैं और भाज चारों तरफ़ समान्ति फैली हुई है। क्या साप

समझते हैं कि काश्मीर में शान्ति है? वहां पर सशान्ति है भीर लोग डरे हए है। क्या भाप सहाख में भी भशान्ति व हते हैं। में ने लहाज के बारे में बार बार कहा है कि वहा के लिए भाष कुछ करिए और इन्दिरा जी से भी कहा था। उस वक्त चव्हान साहब गृह मंत्री थे। हम ने कहा था कि नेफ़ा पेटर्न आप वहां पर लाइए। हम जम्मू काश्मीर से भ्रलग करने की बात नहीं करते हैं क्योंकि इस में कन्द्रीय सरकार के सामने कुछ मध्किलात कुछ कठिनाइयां घाएगी। उस वक्त उन्होंने कहा था कि अभी यह मुश्किल है। इस के बाद आप ने गजेन्द्रगडकर कमीशन नियक्त किया सौर उस ने भपनी रिपोर्ट दे दी। उस में कुछ सजेशन्स उस ने दिये हैं, लेकिन जम्म काश्मीर की गर्बमेंन्ट ने उन पर कोई ध्यान नहीं दिया था। मेरे पास गजेन्द्रगहकर कमीशन के सजेश-न्स पढ़ने का समय नहीं है, ले कन मैं उस को सभा पटल पर रखान। * व हता हं। उस में उन्होंने कहा है कि लहाख में कोई खास तरकी नहीं हुई है। भीर इस के साथ में यह बुकलैट "ईको भाफ लहाख" भी सभा पटल पर रखना चाहता हु जो कि हम ने गजेन्द्रग इकर कमीशन को देदी थी।

म्राप विजली को ले। एक ही वह। स्तकना प्राजेक्ट चल रहा है लेकिन उसके बारे मे भी कहते हैं कि यह 1978 तक पूरा होगा लेकिन कारगिल में कोई भी पन बिजली प्राजे-क्ट नहीं चल रहा है। यह बिजली की हालत है।

द्यापने अपनी रिपोर्ट में कहा है कि आप सारनाथ में पढ रहे लहाखियों को स्कालरशिप दैग । इसका मतलव यह है कि वहा इस वक्त लड़के जो पढ़ रह है। उनको ही यह मिलेगे । मैं चाहता ह कि भापको पंद्रह बीस लड़कों को स्कालरशिप देने की व्यवस्था करनी चाहिए।

दीक्षित जी तथा मिर्घा जी पर हम लीगों को पूरा भरौसा है। उन्होंने भी भगर हमारी समस्याओं की तरफ ध्यान नहीं दिया तो यह श्रच्छा नहीं होगा।

लहाख में मांग चल रही है कि वहा सेटर का शासन होना चाहिए, सेन्टर इटरवशन की माग चल रही है ? मैं इसको नहीं कर रहा ह लेकिन कुछ लोग कर रहे हैं। मैं इस मांग का पूरा समर्थन करा है। इसके विना कभी लहाख की तरक्की नहीं होगी। भाज मैंने कुछ कहा तो शायद कल को अम्म काश्मीर मे कोई ब्यान दे दें गा जिसके जबाब में मुझे जो कहना हुमा में कह द्गा। मैं इस पर मीर मधिक नहीं कहना चाहता किन्तु यह अन्रोध करूगा कि एक ससर्दाय प्रतिनिधि मंडन लहाख भेज। जाय नाकि सार्रः स्थिति स्पष्ट होज य। सटर का शासन होने मैं देरी लगे ती तुना आपका लहास के जो तरक्कीयाती काम है उसको भपने हाथ में ले लेना चाहिए।

माप बताए कि क्या लहास में सिविल इंजीनियर्ज ने या वहा की गवर्नमेंट ने एक भी सडक बनाई है? हमारा 59 हजार मुख्बा मील का रकवा है। क्या जजरक मे एक भी वडा पूल बना है ? क्या नुबामें एक भी सड़क पक्की बनी है ? क्या कारगिल में एक भी पक्की सडक बनाई गई है? नहीं बनाई गई है। में चाहता ह कि भाप इन सारी बातों की तरफ ध्यान दे और वहां के जो तरक्कीयाती काम है उनको भाप हाथ में ले ले । मैं चाहता ह कि सभापति महोदय, एक संसदीय मंडल लहान समस्या क प्रध्ययन के लिए भेजे जिससे वहा का हालत माल्म हो सके।

MR CHAIRMAN: Mr. Satyanarayana Rao, you may ask questions at the end. I shall allow you to do that.

SHRI M. SATYANARAYANA RAO (Karımnagar): Sir, you are doing a greatest injustice to me.

^{*}The speaker not having subsequently accorded the necessary permission, the documents were not treated as laid on the table.

MR. CHAIRMAN: Where is the time?

SHRI M. SATYANARAYANA RAO: I must be given time. Otherwise I won't allow the Minister to speak.

MR. CHAIRMAN: You go ahead.

SHRI M. SATYANARAYANA RAO: I want only two minutes and I shall finish my speech ln two minutes' time.

MR. CHAIRMAN: Sir, when there is agitation then only the Government wakes up. You know what has happened to Telengana-Andhra.

I am very happy that the Home Minister was successful in formulating the Six-Point formula. We were also to some extent satisfied. So far as I am concerned, I am not satisfied. But, at the same time, I may tell you that we will not create a problem for you.

We wanted a Central University for this region. You know the problems of these people. Telengana is the most backward region. This Government promised to give us at least Rs. 400 to 500 crores Only recently when the Prime Minister came to our region, the people were anxiously expecting from her that she would make an announcement about this. Unfortunately she has not made any mention about it. When she was asked by a responsible member of the Congress, she said that she will do the needful if the situation demands. I want to tell the hon. Minister that if this is the kind of atiitude that he takes, he will again see the agitation.

You may be under the impression that people are satisfied now and no agitation will come about. But, I would like to warn you that although the Chief Minister of Andhra Pradesh is making his own efforts to see that there is a stable Government in Andhra Pradesh and that developmental activity takes place there, that is not the case there. I request the Government that the agitation that was witnessed by us should not be repeated again.

That is all what I want to say. _

THE MINISTER OF HOME AFFAIRS (SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT): Last year, at this time, when I came to this House and requested for the passing of the grants under the control of my Ministry, the problem uppermost in our minds and before the country was that of Andhra Pradesh. and the six-point formula had been Thereafter, the constiformulated. tutional amendment Act was passed. It was necessary that the majority of the States should pass resolutions ratifying it. The House will be glad to know that recently, the majority of the States have ratified it by resolutions. In the meantime, the Ministry of Education has gone into the subject of planning the Central University at Hyderabad and all the necessary formalities have since been completed. The fact of the ratification has been conveyed to the President of India and I am glad to announce that within a short time, the decision to setup the Central university at Hyderabad will be taken up.

I would also ilke to take this opportunity to assure the hon. Member who spoke last and the House that we stand by the six-point formula and there is no question of our going back on it. As for the figures, I need not go into the kind of figures that he has mentioned. I had spoken in this House, Mr. Pant also had spoken here and in the other House, and we have committed ourselves. I do not want to go into the details of all the commitments that we had made. But I would only any that all the commitments that we had made would be carried out subject to any legal formalities or other procedural difficulties that might cause delay, but the delay also will not be allowed so far as it lies in our power to prevent it.

Today, the central fact or the historical fact of the situation is the law and order situation. It is true

that it arose out of, and it has still much to do with, the condition of shortages of commodities and high prices and prices which are still rising. The Government of India and Governments of the States have been endeavouring to their utmost capacity to tackle these problems. Along with this problem, so far as my Ministry is concerned, it is also essential that law and order must be maintained in the country.

One unfortunate development that has taken place recently is that deliberate attempts have been made to divert the attention of the Government of India from solving these problems and to aggravate the law and order situation. You would have seen, Sir, that in State after State, instead of

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Aggravated by whom?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: By Opposition parties, and particularly parties like the one headed by Shri Jyotirmov Bosu. Every time there is a discussion m this House, Shri Jyotirmoy Bosu revels in a kind of phrascology and in a kind of condemnatory personal and other attacks, assessination of character and other kinds of methods designed to demoralise the forces which have to keep law and order in the country.

Today also he has mentioned certain high officers and other officers who have very high reputation and whose integrity has never been doubted. He had written a letter to me and in that letter which he sent to the Speaker and through the Speaker to me.. .

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Four days ago.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT In that he mentions the name of the Director-General, and he says that he is trying to appropriate to himself the powers of a dictator and so on. What kind of allegation is this?

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Where have I said it?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Does he expect the head of an armed police organisation not to make himself responsible for....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: is not correct

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: That is the first sentence. About other persons he has said other things.

Now he has to ensure and enforce discipline among the Force, to command respect from them....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: On a point of order. I have got a copy of the letter....

SEVERAL HON. MEMBERS: No, no.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: No lying on the floor of the House. I have got a copy of the letter here. The hon. Minister has chosen to mislead the House. I have written in the letter:

"Under rule 353, I hereby give no ice that during the Home Ministry's grant debate I shall be mentioning the following names: Shri Rustomji, Director General ... Against these persons there are charges of misuse of funds, corruption and malpractice on various counts

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: No. Sir He is misleading the House.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Here is a copy of the letter. Let the Secretariat provide the original. It is dated 24-4-74

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: He is misleading the House, The first portion which applies to Rustemii does not refer to that. So far as the other officers are concerned...

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Do not mislead the House.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: You read it.

SHRI JYOTIRMOY BOSU; Let the hon. Chairman read it for the benefit of the House. The great House Minister is in the habit of doing this.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Author important fact...

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I ask you to read that letter.

SHRI PILOO MODY: Who is the liar?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: What are you?

MR. CHAIRMAN: When the Minister is speaking, I do not want anyone to disturb him in between....

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Kindly read the letter.

MR. CHAIRMAN:. If there is any issue you want to raise, I will allow it after the speech is over. Otherwise, we will be eating into the time. Therefore, you must co-operate. Whatever points you have to raise, I will fully listen to you after the speech is over. Will you kindly co-operate? In the meantime, I will read your letter.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Please read it.... On a point of order.

MR. CHAIRMAN: In the meantime, I will read it first, Then I will read it to the House. First I must read it myself before I read it to the House.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You should have seen it long ago. This was given to the Secretarist four days ago.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I read the copy where in the first protion this was so. If that is not so, I stand corrected.

MR. JYOTIRMOY BOSU: Ah......

[Mr. Speaker in the Chair]
SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT:
The important fact is...

SHRI JYOTIRMOY BOSU: It is not clear. Who told the lie before the House? That is the point before the House. I had written to the hon. Speaker a letter which says.... (Interruptions). What is happening in this House? The hon. Home Minister tells certain things which are absolutely.... (Interruptions). Sharam...

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Let him not use unparliamentary language. He is vitiating the entire atmosphere (Interruptions). The important point about this complaint is that two letters were received, one in March and the other in April. Both were anonymous. Normally in the Home Ministry, we do not take notice of such complaints ... (Interruptions).

MR. SPEAKER: No interruptions please.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: On a point of order.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Both were anonymous.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: On a point of order.

MR. SPEAKER: No point of order.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: You have allowed many points of order.

MR. SPEAKER: No.

SHRI NOORUL HUDA: You are quoting from Shri Jyotirmoy Bosu's letter.

SHRI UMA SHANKAR DEKSHIT: No, I um not quoting from his letter.

We have received two letters about the BSF, one in March and the other in April. Both are anonymous.

SHRI JYOTIRMOY BOSU; To come out with untruth every day—it is a trial of our patience (Interruptions).

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: There are two communications .

SHRI JYOTIRMOY BOSU. On a point of order

MR SPEAKER. You have raised some points, You expect them to reply At the same time, you have no patience to listen

SHRI JYOTIRMOY BOSU He abused me

SHRI UMA SHANKAP DIKSHIT No.

SHRI JYOTIRMOY BOSU On a point of order

MR SPEAKER No please. These points of order are just meant for interrupting

SHRI JYOTIRMOY BOSU The hon Minister has said that I have described the Director General, BSF, as a big dictator and all that. I have not written any such thing in my letter which I have addressed to you on 24th April I had said. Under rule 353, I hereby give notice

MR. SPEAKER. I am not allowing this. I am really very sorry that he is interrupting him.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Efforts are being made to give the law and order aspects a dimension

and a direction which will destroy all that constitute the norms and traditions of parliamentary democracy. One would not have been surprised if such efforts were instigated only by those who do not really have any faith in democracy. A matter of far more serious implication is that even those who profess faith in parliamentary democracy have also taken a prominent part in these efforts to undermine the democratic life in the country. In these circumstances, it becomes the unpleasant ..d unavoidable duty of Government to deal firmly according to the law with the law and order situation whose logical outcome can only be to overwhelm democracy and destroy our Constitution

SHRI PILOO MODY Whom is he referring to a Interruptions) The first was an anonymous letter, then, it is an anonymous charge

MR SPEAKER No interruptions please

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT Even while the country is faced with difficult economic problems, attempts are often made and threats are being given to aggravate these problems. The tasks of the different State Governments are not going to be easy during the coming months. I would request the House to extend its mould request the States in dealing firmly with these problems so that democracy and our Constitution are nat imperilled (Interruptions)

SHRI SAMAR GUHA. Moral support to immoral politicians.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Reference was made to our relations with the Government of Nagaland and the overall situation in the north-eastern region. More than one hon. Member referred to this subject. The House will recall that I had stated in no uncertain terms that certain elements in the country had cost doubts even before the elections were held on

[Shri Uma Shankar Dikshit]

the character of the elections in Nagaland, whether they will be free and fair. This country has anenviable reputation for strict adherence to the best traditions of democratic life. If any example was needed—let Mr. Piloo Mody note this—the elections in Nagaland would be one such. I do not have the time to go into this aspect in greater detail, but after the elections, the UDF formed a government in Nagaland. It was an Opposition party and it had got two more votes; there were 12 Independents of which seven joined them.

SHRI JYOTIRMOY. BOSU: Why did you not broadcast them over the All India Radio?

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Well, broadcasting is something that will cause unnecessary envy and jealousy on your part, and I want to avoid all that sort of thing. Now, after the elections, the UDF has formed the Government in Nagaland. The Manipur People's Party also formed a coalition government in Manipur. We wish them well, and like any other government in a State, they can be assured of our full support and cooperation.

It is a matter of gratification that the UDF Government in Nagaland has reaffirmed its allegiance to the On another occasion, I Constitution had informed the House of the discussions I have had with the Chief Minister of Nagaland. We and the country as a whole would be only too happy in extending our support to all well-conceived measures the Government of Nagaland may take for maintaining peace and order in that State, and for rapid development. Our efforts and our policy all along have only been in this direction, and there is no reason why any doubts should be entertained about our attitude to the Government of Nagaland.

SHRI S. M. BANERJEE: What about the rape? (Interruptions)

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Wherever there is any wrong committed by any officer, all such cases are being examined. In the particular case referred to by the hon. Member, the persons concerned are under arrest. Enquiries are being made, and the law will take its own course. There will be no variation allowed in the situation.

The whole question is this. Something happens in a large organisation which is spread in various parts of the country. You cannot prevent everything in advance. But the important thing is that the Government does respond to situations quickly and takes strong and suitable action.

Reference was made by Jyotirmoy Bosu to the notice Railway strike. We are still engaged in a sincere and earnest effort to avert the strike. Negotiations are going on and I do hope that wiser councils would prevail and the strike may not take place. But all the same if our efforts do not bear fruit it must be understood that this House and the country would expect the Government to maintain a minimum level of essential traffic. (Interruptions). The nonmovement of foodgrains and other essential commodities will seriously jeopardise the economic life in different parts of the country. So the Government are determined to ensure that the minimum level of traffic is not disturbed. Any attempt to interfere with the maintenance of such essential minimum traffic will have to be firmly dealt with under the law. It is precisely for such a situation that the Parliament enacted the Maintenance of Internal Security Act. The use of MISA in order to ensure services essential for the community cannot be objected to .. (Interruptions).

SHRI S. M. BANERJEE: On a point of order.

MR. SPEAKER: There is no point of order.

SHRI'S. M. BANERJEE: Kindly hear me. Nothing is lost by hearing me.

MR. SPEAKER: Let him finish his speech, only a few minutes are left. I am not going to listen to any point of order now.

SHRI S. M. BANERJEE: Are you going to guillotine at 6 P.M.? Will you stick to that schedule?

MR. SPEAKER: I will have to. Why not?

SHRI S M. BANERJEE: The Law Minister is to make a statement at 6 P.M. I have seen it in the Notice Board

MR. SPEAKER: It is after that... (Interruptions).

SHRI S. M. BANERJEE: If they are serious in negotiations, why they have issued this letter on 7th April. They are arresting the Railway employees and the leaders of the unions under the Defence of India Rules and MISA. Do they want to settle the matter?

SHRI JYOTIRMOY BOSU; We want to know whether a letter was issued or not.

MR. SPEAKER: I will not take notice of any interruptions in the proceedings. May I appeal to the Opposition not to use such tactics. Everytime, you do it.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: I will reply to all these questions, if the gentlemen on the other side, do not disturb me.

MR. SPEAKER: Only one man is holding us to ransom. All of us are so helpless Either we go to the extreme or he accepts our advice.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I have raised certain basic issues.

MR. SPEAKER: Every minute, you raise some issue and you interrupt the proceedings. This is pure interruption.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: Sir. on a point of order.

(Interruptions)

Sir, on a point of order.

MR. SPEAKER: No point of order. Not at all. You are deliberately interrupting the proceedings. The point of order is meant only to interrupt the proceedings. I will not allow the point of order which is purely meant to interrupt the proceedings. Everytime, you get up and interrupt the proceedings. I am not going to allow it.

(Interruptions)

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: Sir, from West Bengal one of the hon. Members said that a Bill had been sent to the Centre by the West Bengal Government dealing with prevention of adulteration in food and drugs and he complained that no action has been taken. I may inform the House that President's assent to the Bill was given and it was communicated to the West Bengal Government some time ago. Probably, this gentlemen did not know it. I hope he will be satisfied that this was done.

Sir, several Members referred to the welfare measures taken to help the backward classes and there was also mention about the pre-matric and post-metric scholarships.

MR. SPEAKER: You have only half a minute left.

SHRI UMA SHANKAR DIKSHIT: With these words. I am glad to commend the Demands to the unanimous acceptance of the House.

436

MR SPEAKER: We will now take up the Cut Motions Nos. 7 to 15, 27, 28, 30 to 41 and 45 to 47 moved by Shri Jvotirmov Bosu.

18.00 hrs.

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I want my cut motion No 7 to be put separately.

MR SPEAKER. The question is

That the Demand under the Head 'Ministry of Home Affairs' be reduced to Re. 1"

[Bugging of the offices and residences of the leaders of Congress-opposed political parties (7)]

SHRI JYOTIRMOY BOSU We want division

MR SPEAKER All right Let the lobbies be cleared Now the lobbies are cleared The question is

"That the Demand under the Head Ministry of Home Affairs' be reduced to Re 1"

[Bugging of the offices and recidences of the leaders of Congress-opposed political parties (7)]

The motion was negatived

MR SPEAKER I will now put cut motion Nos 8 to 15, 27, 28 30 to 41 and 45 to 47 moved by Shri Jyotirmoy Bosu to the vote of the House

The above cut motions were put and negatived

MR SPEAKER I now put Cut Motion No 26 moved by Shri Frank Anthony to the vote of the House

Cut motion No 26 was put and negatived.

MR. SPEAKER. I put cut motions Nos 48 to 55 in the name of Shri Dasaratha Deb to vote

Cut motions Nos 48 to 55 were put and negatived.

MR SPEAKER:: Then I put Cut Motions Nos. 69 to 73 moved by Shri R V Bade to the vote of the House.

Cut motions Nos. 89 to 73 were put and negatived.

MR. SPEAKER: Now. I put the Demands relating to the Ministry of Home Affairs to the vote of the House.

The question is:

'That the respective sums not exceeding the amounts on Revenue Account and Capital Account shown in the fourth column of the Order Paper be granted to the President to complete the sums necessary to defray the charges that will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of the heads of demands entered in the second column thereof against Pemands Nos 45 to 56 relating to the Ministry of Home Affairs"

The motion was adopted

MR SPEAKER Now, I put all the other outstanding Demands

SHRI S M BANERJEE Sir, I rise (n a point of order

My apprehension was correct

MR SPEAKER: No point of order at the time of Guillotine It is all guillotined!

The question is

That the respective sums not exceeding the amounts on Revenue Account and Capital Account shown in the fourth column of the Order Paper be granted to the President to complete the sums necessary to defray the charges that will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of the heads of demands entered in the second column thereof against --

(1) Demands Nos. 13 to 17 relating to the Ministry of Communications:

- (2) Demand No. 27 relating to the Ministry of External Affairs:
- (3) Demands Nos. 28 to 39 relating to the Ministry of Finance:
- (4) Demands Nos. 40 to 42 relating to the Ministry of Health and Family Planning:
- (5) Demands Nos. 43 and 44 relating to the Ministry of Heavy Industry;
- (6) Demands Nos. 63 to 65 relating to the Ministry of Irrigation and Power:
- (7) Demands Nos. 66 and 67 relating to the Ministry of Labour;
- (8) Demands Nos. 71 to 73 relating to the Ministry of Planning:
- (9) Demands Nos. 74 to 77 relating to the Ministry of Shipping and Transport;
- (10) Demands Nos. 81 to 83 relating to the Ministry of Supply and Rehabilitation;
- (11) Demands Nos. 84 to 87 relating to the Ministry of Tourism and Civil Aviation:
- (12) Demands Nos. 88 to 92 relating to the Ministry of Works and Housing:
- (13) Demands Nos. 93 to 95 relating to the Department of Atomic Energy:
- (14) Demand No. 98 relating to the Department of Electronics;
- (15) Demand No. 102 relating to the Department of Space:
- (16) Dmeand No. 103 relating to Lok Sabha:
- (17) Demand No. 104 relating to Rajya Sabha;
- (18) Demand No. 105 relating to the Department of Parliamentary Affairs; and

(19) Demand No. 106 relating to the Secretariat of the Vice-President."

The motion was adopted.

[The motions for Demands for Grants, which were adopted by the Lok Sabha are reproduced below-Ed]

DEMAND No. 13-Ministr y of Communications

"That a sum not exceeding Rs. 66,77,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 2,29,17,000 Capital Account to be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Ministry of Communications'."

DEMAND No. 14-Overseas Communications Service

"That a sum not exceeding Rs 5.70.75.000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 3,16,67,000 Capital Account to be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st March, 1975, in respect of 'Overseas Communications Service'."

DEMAND No. 15-Costs and Telegraphs-Working Expenses

"That a sum not exceeding Rs. 312,21.67,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Posts and Telegraphs-Working Expenses.".

DEMAND No. v6-Posts and Telegraphs —Dividend to General Revenues Appropriations to Reserve Funds and Repayment of Loans from General Revenues

"That a sum not exceeding Rs. 69.45.52,009 on Revenue Account be granted to the President to

[Mr. Speaker]

complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975. in respect of 'Posts and Telegraphs-Dividend to General Revenues Funds and Repayment of Loans, from General Revenues'."

DEMAND No.17—Capital Outlay on Posts and Telegraphs

"That a sum not exceeding Rs. 1,23,69,17,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Capital Outlay on Posts and Telegraphs'."

DEMAND No. 27-Ministry of External Affairs

"That a sum not exceeding Rs 62,63,06,000 on Revenue Acount and not exceeding Rs 26,00,00,000 on Captial Account be granted td the President to complete the defray sum necessary to the charges which will come in course of payment during year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Ministry of External Affairs'."

DEMAND No. 28-Ministry of Finance

"That a sum not exceeding Rs 20,52.82,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Ministry of Finance'."

DEMAND No. 29-Customs

"That a sum not exceeding Rs 14,71,16,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come m course of payments during the year ending the 31st day of March 1975 in respect of 'Customs'."

DEMAND No. 30-Union Excise Duties

"That a sum not exceeding Rs. 23,61,57,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Union Excise Duties'."

DEMAND No. 31—Taxes on Income, Estate Duty. Wealth Tax and Clift Tax

"That a sum not exceeding Rs. 26,19,44,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Taxes on Income, Estate Duty, Wealth Tax and Gift Tax."

DEMAND No. 32-Stamps

"That a sum not exceeding Rs 5,18 74,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 59,80,000 on Capital Account to be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charge-which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'stamps'."

' DEMAN4 No. 33-Audit

"That a sum not exceeding R-43,54,17,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of Maich 1975, in respect of 'Audit'."

DEMAND No 34—Currency, Coinage and Mint

"That a sum not exceeding Rs 25,79,48,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 14,11,08,000 on

Captial Account be glanted to the President to complete the sum accessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975. in respect of 'Currency, Coinage and Mint'."

DEMAND No. 35-Pensions

"That a sum not exceeding Rs. 15,02,71,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in comes of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Pensions'."

DEMAND NO. 36—OPTIUM AND ALKAEOID FACTORIES

"That a sum not exceeding Rs. 2,86,11,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 53,74,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect 'Opium and Alkaloid Factories'."

DEMAND No. 37-Transfers to State and Union Territory Governments

"That a sum not exceeding Rs. 208,69,85,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Transfers to State and Union Territory Governments'."

DEMAND No. 38—OTHER EXPENDITURE OF THE MINISTRY OF FINANCE

"That a sum not exceeding Rs. 158,73,64,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 204,72,75,000 on Capital Account to be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of pay-

ment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'other Expenditure of the Ministry of Finance'."

DEMAND NO. 39-LOANS TO GOVERN-MENT SERVANTS. ETC

"That a sum not exceeding Rs. 46,43,22,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defial the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Loans to Government Servants'."

DEMAND No. 40-MINISTRY OF HEALTH AND FAMILY PLANNING

"That a sum not exceeding Rs. 45,95,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of Murch, 1975, in respect of 'Ministry of Health and Family planning'."

Demand No 41-Medical and Public Health

"That a sum not exceeding Rs. 46,33.37,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 19,59,26,000 on Capital Account to be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Medical and Public Health'."

DEMAND NO. 42-FAMILY PLANNING

"That a sum not exceeding Rs. 48,39,40,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 16,67,000 on capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Family Planning'."

[Mr Speaker]

443

DEMAND NO 43- VINISTRY OF HEAVY INDUSTRY

'That a sum not exceeding Rs 24,02,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of Maich 1975, in respect of Ministry of Heavy Industry'"

DFMAND NO 44-HEAVE INDUSTRIES

That a sum not exceeding Rs. 4,30,81,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 26,79,02 000 on Capital Account to be granted to the President to complete the sun necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Heavy Industry'"

DEMAND NO 63 MINISTRY OF THREE A TION AND POWER

"That a sum not exceeding Rs 3 78,05 000 on Revenue Account and not exceeding Rs, 5,96,67,000 on Capital Account to be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March 1975, in respect of 'Ministry of Irrigation and Power'"

DEMAND NO 64-WATER AND POWER DEVILOPMENT

That a sum not exceeding Re 9,68 45,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 1,53,77,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in espect of Water and Power Development'"

DEMAND NO 65-POWER SCHEMES

"That a sum not exceeding Rs 9.29.97.000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 58,51,46,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Power Schemes'"

DEMAND NO 66-MINISTRY OF LABOUR

'That a sum not exceeding Rs 45,97,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the vear ending the 31st day of March 1975, m respect of 'Ministry of Labour'"

DEMAND NO 67-LABOUR AND EMILOY-MENT

"That a sum not exceeding Rs 24.52 09.000 on Revenue Account and not exceeding Rs 1,68,78,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Labour and Employment'"

DEMAND No 71-MINISTRY OF PLANNING

"That a sum not exceeding Rs 9,60,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March 1975 in respect of Ministry of Planning'"

DEMAND NO 72-STATISTICS

"That a sum not exceeding Re 7 24 27,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in Course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975. in respect of 'Statistics'."

DEMAND No. 73-PLANNING COMMISSION

"That a sum not exceeding Rs. 2,62,90,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Planning Commission'."

DEMAND No. 74—MINISTRY OF SHIPPING AND TRANSPORT

"That a sum not exceeding Rs. 1,58,09,000 on Revenue Account be granted to the President to Complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Ministry of Shipping and Transport'."

DEMAND No. 75-ROADS

"That a sum not exceeding Rs. 51,46,75.000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 56,18,57,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of Roads."

DEMAND NO 76—PORTS, LIGHT HOUSES AND SHIPPING

"That a sum not exceeding Rs. 11,36.49,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 150,50,09,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of Ports, Light Houses and Shipping."

Demand No. 77—Road and Inland Water Transpoint

"That a sum not exceeding Rs. 86,14,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 12,70,08,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Road and Inland Water Transport'"

DEMAND No. 81—DEPARTMENT OF SUPPLY

"That a sum not exceeding Rs 17,28,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Department of Supply'."

DEMAND No. 82—SUPPLIES AND DISPOSALS

"That a sum not exceeding Rs. 6,25,58,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Supplies and Disposals'."

DEMAND NO. 83—DEPARTMENT OF REHABILITATION

"That a sum not exceeding Rs. 21,77,26,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 4,43,33,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Department of Rehabilitation'."

DEMAND No. 84—MINISTRY OF TOURISM AND CIVIL AVIATION

"That a sum not exceeding Rs. 27,29,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Ministry of Tourism and Civil Aviation'."

DEMAND NO. 85-METEOROLOGY

"That a sum not exceeding Rs 7,07,26,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 1.25,50,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Meteorology'."

DEMAND No. 86-AVIATION

"That a sum not exceeding Rs 12.15.17,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 19.79,89,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of Aviation'."

DEMAND No. 87-Tourism

"That a sum not exceeding Rs. 2,49,62,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 5,26,67,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of Tourism'"

DEMAND NO 88-MINISTRY OF WORKS AND HOUSING

"That a sum not exceeding Rs. 35,46,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Ministry of Works and Housing'."

DEMAND No. 89-PUBLIC WOPKS

"That a sum not exceeding Rs. 42,39,37,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 9.93,03,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Public Works'."

DFMAND NO 90-WATER SUPPLY AND SEWERAGE

"That a sum not exceeding Rs. 63,42,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Water Supply and Sewerage'."

DEMAND NO 91 -HOUSING AND URBAN DEVELOPMENT

"That a sum not exceeding Rs. 6,77,46,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 8,18,71,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Houring and Urban Development'."

DEMAND No. 92—Stationery and Frinting

"That a sum not exceeding Rs. 15,89,08,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during

the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Stationery and Printing'".

DEMAND No. 93-DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY

"That a sum not exceeding Rs \$0,46,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Department of Atomic Energy".

DEMAND No. 94—ATOMIC ENERGY RESEARCH DEVELOPMENT AND INDUS-TRIAL PROJECTS

"That a sum not exceeding Rs 30 46,97,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 49,47,07,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March 1975, in respect of 'Atomic Energy Research, Development and Industrial Projects'".

DEMAND NO. 95—NUCLEAR POWER SCHEMES

"That a sum not exceeding Rs 25,49 98,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 29,78,52,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of Nuclear Power Schemes'".

DEMAND No. 98—DEPARTMENT OF ELECTRONICS .

"That a sum not exceeding Rs. 7,80.69,000 on Revenue Account and not exceeding Rs. 3,33,98,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges

655 LE-18

which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March. 1975, in respect of 'Department of Electronics''.

Demand No 102—Department of Space

"That a sum not exceeding Rs 17,48 91,000 on Revenue Account and not exceeding Rs 5,92,36,000 on Capital Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of pavment during the year ending the 31st day of March 1975, in respect of 'Department of Space'".

DEMAND NO 103-LOK SABRA

"That a sum not exceeding Rs 25837,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the vear ending the 31st day of March, 1975, in respect of Lok Sabha'"

DEMAND NO 104-RAJYA SABHA

"That a sum not exceeding Rs 11452000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Rajya Sabha'".

DEMAND No. 105—DEPARTMENT OF PARLIAMENTARY AFFAIRS

"That a sum not exceeding Rs 13,94 000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of Department of Parliamentary Affairs".

DEMAND NO. 106-SECRETARIAT OF THE VICE-PRESIDENT

"That a sum not exceeding Rs. 3,70,000 on Revenue Account be granted to the President to complete the sum necessary to defray the charges which will come in course of payment during the year ending the 31st day of March, 1975, in respect of 'Secretariat of the Vice-President'".

18.10 hrs.

STATEMENT RE: PRESIDENTIAL **ELECTIONS**

MR. SPEAKER: Now the statement by the Law Minister.

SHRI SEZHIYAN (Kumbakonam): On a point of order. Has the Minister the right to make a statement in the House like this without its being put on the order paper?

MR. SPEAKER: The other day we had arranged that, at least two hours before, the Minister would intimate his intention to make a statement. Sometimes the circumstances are such that he must make a statement even without that much notice.

श्री मधलिमये (बांका): इसके बारे में उस दिन मांग की थी कि ग्रार्डर पेपर पर य्राना चाहिए, यह कोई इमर्जेन्सी का मामला नहीं है। उसी दिन मैंने कहा था कि इसकी म्रार्डर पेपर बर रखा जाये । म्राप इंस की कल लें तो मुझे कोई एतराज नहीं है।

श्री ग्रटल बिहारी वाजपेयी (ग्वालियर): ऐसा मामला क्वैश्चन ग्रावर के बाद ग्राना चाहिए, 6 बजे के बाद नहीं।

श्री मध लिमये : मैंने तो एस्पेसिफिकली कहा था कि 6 बजे इस तरह हमला नहीं होना चाहिए।

MR. SPEAKER: Proper notice was given. Two hours, notice was given. A Minister can make a statement at any time. In spite of that, we agreed that he would give notice.

SHRI H. N. MUKERJEE (Calcutta-North-East): It is a matter which goes to the root of the parliamentary procedure. (Interruptions) we not have the courtesy of being intimated early enough?

MR. SPEAKER: It was intimated early enough.

THE MINISTER OF PARLIAMEN-ARY AFFAIRS (SHRI K RAGHU RAMAIAH); We have got practical difficulties in making ministerial statements. Suppose a decision is taken by the Government during the course of the day and if we do not make a statement and something appears in the press the next day, then the members would point out that we did not take the House into confidence.

MR: SPEAKER: Yes. If the Minister does not make the statement today and something appears tomorrow in the press, then you will all come out saving that he did not take the House into confidence. What the members wanted was his statement, and when he has come to make it, what is the difficulty about it?

SHRI H. N. MUKERJEE: I wish to make a very serious submission. The point is that the Lok Sabha is being converted into a non-existent institution. We have stultified ourselves by guillotining everything.. (Interruptions).

MR. SPEAKER: Guilloting is done as a matter of procedure.

SHRI H. N. MUKERJEE:....We have the exhibition of the Lok Sabha being treated in this cavalier fashion by the Government. If the Minister Parliamentary Affairs arrang the programme better, should not be where he is

MR. SPEAKER: Mr. Samar Cuha.

SHRI JYOTIRMOY BOSU (Diamond Harbour): Sir, we have come prepared....(Interruptions).

MR. SPEAKER: I have not called you. Mr. Jyotirmoy Bosu. I have called Mr. Samar Guha. This gentleman is holding the House to ransom. Some remedy should be found. How long can we tolerate this? I have used the word 'Gentleman' for you in spite of my wishes otherwise (Interruptions).

SHRI JYOTIRMOY BOSU: I will call you, 'Hon. Gentleman'.

MR. SPEAKER: You do not know with what a heavy heart I have used it.

SHRI PILOO MODY (Godhra): Had you preferred to call him as an 'Hon Member', then you would not have had to go through all this pain, because an 'Hon. Member' does not have to be a gentleman:

MR. SPEAKER: I stand guided by you, Mr. Piloo Mody. You will use this word 'honourable' for the Speaker also; in this sense!

SHRI SAMAR GUHA (Contai): wanted to draw your attention that just now in your wisdom you said that for some special reason you have allowed the hon. Minister to make the Now, the Minister Parliamentary Affairs also said something very significant. He made a significant point and said that if something appears in the Press tomorrow, the House should not take it otherwise. It immediately creates an impression in us that already the Law Minister has made some kind of a statement to the Press..

MR. SPEAKER: Not at all.

SHRI SAMAR GUHA: Only just to forestall our criticism about that, he is going too make this statement and that is what is occurring to me.

THE MINISTER OF LAW, JUSTICE AND COMPANY AFFAIRS (SHRI H. R. GOKHALE): This House is aware that the term of office of the present President of India expires on the 24th August, 1974.

Under Article 62(1) of the Constitution an election to fill a vacancy caused by the expiration of the term of office of the President is required to be completed before the expiry of the term. This House is also aware that the Gujarat State Legislative Assembly was dissolved on the 15th day of March 1974.

A question has been raised as to whether election to the office of the President can be held notwithstanding the dissolution of the Gujarat State Assembly.

The Government is prima facie of the view that on a true and correct interpretation of articles 54, 55, 56, 62 and 71 of the Constitution, the electoral college consists only of the electmembers ofsuch of the Assemblies of Legislative States as are in existence at or before the expiry of the term of office of the President. However, a contrary view has been expressed both inside outside this House.

Questions of far-reaching importance have arisen as to the composition of the electoral college where Legislative Assemblies of one or more States stand dissolved and in view of the fact that a question of great public importance has arisen, the Government has decided to recommend to the President to obtain the opinion of the Supreme Court under article 143 of the Const tution...,

SHRI MADHU LIMAYE: Very goo

SHRI H. R. GOKHALEas 1 gards the true and correct interpret tion of articles 54, 62, 71 and the oth relevant provisions of the Constitut so far as they concern the election the President to fill up the vaca caused by the expiration of the t of office of the President.

SHRI PILOO MODY: **

MR. SPEAKER: It will not ge record.

^{**}Not recorded.

18.19 hrs.

APPROPRIATION (NO. 2) BILL* 1974

THE MINISTER OF FINANCE (SHRI YESHWANTRAO CHAVAN): I beg to move for leave to introduce a Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1974-75.

MR. SPEAKER: Now, the question is:

"That leave be granted to introduce a Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1974-75."

The motion was adopted

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: I introduce the Bill.

I beg to move; that the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for services of the financial year 1974-75. be taken into consideration

MR. SPEAKER: Motion moved:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sums from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1974-75, be taken into consideration"

Now, Shri Madhu Limaye.

भी भधु लिमये (बांका): प्रध्यक्ष महोदय, मने जो मुझे पहले ही लिखकर भेजे हैं उन्ही के बारे में सक्षेप में कुछ बातें कहना चाहता ğ I

सबसे पहले म पेटोलियम निनिस्टी के बारे में एक गम्भीर मामला उठाना चाहता हं। 16 दिसम्बर, 1971 को हमारे नैवल हेडक्वार्टर्स ने पैटोलियम मिनिस्टी के हारा उनको जो निकष्ट किस्म का तेल दिया जा रहा का उसके बारे में अपना ऐतराज इस पत्र के द्वारा प्रकट किया है। उस का कुछ हिस्सा भै सदन के सामने रखना चाहता हं।

"Your suggestion to give effect to supply of FFO of higher viscosity limit immediately on issue of the amendment to ISI specification is not acceptable. The very intention of asking for a 2 months period before effecting the change in the viscosity is that during this period, the necessary trials can be carried out before finally accepting the higher viscosity.

In fact one of the I.N. Ships has reported that on 6-8-71 and 11-10-71, FFO of viscosities higher than 80 and less than 100 was supplied at Madras and that the burning this oil had presented considerable difficulties. The above wrong supply has resulted in continuous emission of greyish smoke from the funnel and various other consequential operational difficulties. Continuous emission of smoke from the ship's funnel apart from giving the positions of the ship to the enemy, can completely hamper the flying operations on an aircraft carior."

भकेला विकरान्त एक मात्र जहान है इस तरह का औप के पास।

"The above experience has made it, all the more essential that extensive trials should be carried out before a decision can be taken.

^{*}Published in Gazette of India Extraordinary, Part II, Section 2, dated 29-4-74-†Introduced/Moved with the recommendation of the President.

The ill effects of burning FFO of higher viscosity in Naval Ships described in para 2 above had already been reported to the Indian Standard Institution by NHQ The Indian Standard Institution has also been requested to hold in abeyance the promulgation of the amendment to IS-1593-60 for the period of the present emergency and iform all the oil companies accordingly. In view of the above, it is imperative that the viscosity of FFO supplied to Naval Ships should not be raised at this stage."

ग्रध्यक्ष महोदय, मैं पहले ही विनती कर बुका हु कि इन दस्तावेजों को सदन के सभा पटल पर रखने की मुझे ग्रनुमति दी जाएं, यह मेरा ग्रधिकार है। सदन का भी ग्रधिकार है इन दस्तावेजों को देखने का, इसलिये मुझे ग्रनुमति दी जाय।

भ्रष्ट्यक्ष महादय, इस मत्रालय के सम्बन्ध मे भीर कुछ बाने में कहना चाहता ह। कुछ साल हमारे एयर फोर्स ने भी पैट्रोलियम मिनिस्टी सामन ग्रपना पत्न रखा था कि एयर फार्स का जा ऐवियंशन फ्युमल दिया जाता है वह भी दोषपूर्ण है निकृष्ट है भीर उस म मुधार किया जाये। उस के बारे में पैटोलियम मिनिस्टी ने क्या काय-बाही की कोई पता नहीं है। श्रोर इस सदन की जानकारी के लिए यह भी गै कहना चाहता ह कि इछापुर तथा अन्य आर्डनेम फैक्ट्रीज मे जो भायल दिया जाता है वह भी इसी तरह निकृष्ट पाया गया है भीर उस के बारे मे भी इन लोगो ने अपना प्रोटेस्ट दर्ज किया है। तो अध्यक्ष महोदय, सरक्षा दल का कौना सा विभाग बचता है, आईनेस, एयर फींं, नेवी, सब लोग इस व बारे मे एतराज प्रकट कर रहे हैं। बहुत गम्भीर मामला है। मैं ने सुरक्षा मत्री, श्री जगजीवन राम में विनती की थी, लेकिन प्रब पैट्रोलियम मत्रा त्य से जानना चाहता ह, कि बो तीन साल स मामला पड़ा हुआ है इम में जो बोशी आधिकारी है जिन्होंने भागत को सुरक्षा को खतरे में डाला है उन व खिलाफ़ क्या कार्यवाही की गई है, यह मदन जानना चाहेगा और उम की जानकारी आज हम को भिननी चाहिए।

458

ग्रधाक्ष महोदय. इस वे सम्बन्ध मे तीसरी बात श्रीर कहना चाहता हु हम लोगो क कहने पर गैगा वाटर पोल्यशन इनक्वायरी कमेंडी नियक्त की गई थी 1968 मे उस दिन माननीय भ्रमल जा य भीर उहोने भी यह मामला हमार साथ उठाया था कि बरौनी में जो नेल छोड़ा गया था जिस ने चनने मुगेर मे भाग लगी थी, वाटर वक्से जल गए थे। इस इनक्वारी कमीशन की रिपोर्ट 1969 में ब्रायी। उसके बाद कैबिनेट ने फैमला किया कि डाबी श्रक्रमरी को सजा दी जाए। नेविन इस निर्णय पर अमल बरने की जिस्सेदारा जिस शक्स पर थी उम न इस पर अमल नहीं किया। क्या नतीजा हुमा बरौनी रिफाइनरी का जो जनरल मैनैजर था उस का सेवा निवृत हाने का मीका मिला। उस का सजा नहीं मिर्ना मीर दूसरे जा माधनारी है उन के खिलाफ भी कोई कार्यवाही नहीं की गई, उन का एक्जोनरेट किया गया और इस के बारे मे मती महोदय [औं मधु लिमवे]

सक्काई हैं। मोर कैबिनेट के निर्मय को कार्याम्बित करने की जिस अफ़सर पर जि मेबारी थी उस को आप ने पढ़ोक्रित दे कर आई० मो० मी० का चेयरमैन बना दिया। जब कि हक्सर कमेटी इस निर्णय पर आयी आई० मो, सी० के तीन अफ़सरों का इंटरब्यू लेने के बाद, कि तीना में कोई भी उग्युक्त नहीं है इस मर्वोच्च पद के लिए, यानी चेयरमैन, इंडियन आयल कीर-पोरेशन के पद के लिए। तो इस का खुलाशा में पैट्रोबियम महालय में बाहता हु।

धष्यक्ष महोदय ने, कुछ मई/ना पहले मैन हैवी इडस्ट्री मिनिस्ट्री का ध्यान टाटा द्रक्म मे, सभी मंश्रियों ने एक के बाद एक ने जबाब दिया था, में बाहता ह कि शाधने अपने विभाग के मती जबाब है, तो हैशी इडस्ट्रीज मिनिस्ट्री को मै ने पक्ष लिखा था भीर उन का ध्यान सीव्या था প্^ক 15,000 ়. হ৹ का प्रीमियम चल रहा है इन दिना। पाच, छ, मर्दिन के ग्रन्दर यह प्रीमियम भव 25,000 रू० हा गया हे भार इस बीच में मैं ने यह भी मती महोदय को कहा था, मुझे खबरे मिली है कि टेलको वालो को कहा गया है कि 500 ट्रक्स कागेस पार्टी के चुनाव के लिए दिए जाये भीर डिस्ट्रिब्यूटर उस में से कुछ हिस्सा रखे भीर 10,000 रु० प्रति दक कागेस के चन्दे में जमा कर दिया जाए। इस तरह की जो व्यवस्था है वह सुविधापूर्ण हंग से ही इसलिए बिहार मरकार ने गंजट नोटिफिकोशन निकलकर जमशेदपुर के जो बिस्ट्रिक्ट ट्रांपोर्ट ग्राफीसर है जिनको टेम्पोरेरी रजिस्ट्रेशन नम्बर देने का ग्रधिकाऱ था, शध्यक्ष महोदय, ता जुब की बात है कि विहार सरकार ने गजट में ने टिफ़िकेशन कर के बहु शक्तिकार टेलको तक को विया है।

नतीजा यह हुआं कि यह टेम्पोरेरी रजिस्ट्रेशन इन के नाम से है भीर बो साल के अन्दर ट्रक ट्रांसफ़र करने के बार मे काम जो हुआ है वह मोटर कट्रोल आईर के तहत गैरकानूनी काम है। इस के बार मे अब जानपारी नहीं मिल सकती। फिर भी विश्वस्त सुत्रों से चार केसेज मैं ने पकडे हैं। जिस दिन चेमिस को टैप्पोरेरी रजिस्ट्रेशन नम्बर मिला है 24 घटे के अन्दर यह ट्रक गैर कानूनी ढग से ट्रांसफर किए गए दें है। मंत्री महोदय ने कुछ कार्रवाही नहीं की है। पहले उन की सूचना देने वे बाद में उम मामले का यहा उटा रहा है। यह नम्बर इस प्रकार है,

BHA/6872 BHÁ/6951 BHA/7351 BHA/7134

स्रध्यक्ष महोदय, में जानना नाट्ता हूं कि 500 टूक्स चृकि टेलका ने चुनाव के लिए दिए थे क्या उमीलिए इस का जाच नहीं की जा रही है। कम में कम जा चार नम्बर में ने दिए हैं क्या था। का न कर्ष नहीं है कि स्नाप इस की जान कर थे मुझ को जबाब दिया जाए स्रगर इस तरह के भायों को प्रोत्माहन देंगे तो उम के बहुत खतरनाक नतीजे निकलेंगे।

ग्रध्यक्ष महादय, भव व्यापार मतालय का जहा तक सम्तन्ध्र हे व्यापार मती ने कई बार इस गदन का ग्राण्यासन दिया था वि बिड़ला परिवार के सेवृरी ऐनका ग्रीर उसी तरह बागड परिवार के श्री नियोदिक्स को बौलेन्द्री प्राइस कंट्रोल स्कीम में लाया जाएगा। यह ग्रगस्न मं ग्राण्यासन दिया था विगत माल मेरं द्वारा मवाल उठाय जाने पर श्रीर भाज है श्रील का ग्राह्मिय ग्रार ग्रामी तक श्री मिथेटिक्स वागड परिवार श्रीर सब्री एनेका, चिडला परिवार को श्राप ने बौलेट्री प्राइस कट्रोंल के तहत नहीं लाया। क्यों कि वह लोग बुनाव का चदा देते हैं इर्मालए श्राप उन के साथ रियायत कर रहे हैं, लेकिन हजारों छोटे बुनकरों को बडी परेशानी हो रही है।

वित्त मत्नी महोदय हमेणा रेवेन्यू की खोज में रहते है। कम से कम 55 60 तरींड ह० कैसे रेवेन्य बढाया जाएगा वह में उन को बताना चाहता हु। अध्यक्ष महादय गृजरा में पब्लिक सैक्टर में दो हमारी कम्पनिया है-एक इंडियन पैट्रां कै। मक्तम भीर दूसरी गुजरात ग्टेट फाटिलाउजर भ्रीर कीरपोरेशन । इन ने दारा ऋमग 20000 टन कैप्राप्तैक्टम भीर 20 000 दन डी॰ एम॰ टी॰ ग्रव पैदा विया जाएगा एक साल में डी० एम० टी० में पोलि-मैस्टर फाइवर व गा है और कैशो-लैक्टम में नाडलान फिलेमेन मार्न पैदा हाता है। अब रूम से जा हम कैपोलैक्टम भ्रीर कच्चा माल श्रायात वन्ते है उस पर ऐक्साइज इयुटी लगा कर का दाम हा जाता है 38 000 ए० पर टन विकी दाम। और अब आप ने इस सरकारी कम्पनियों के दामों के बारे में ऐसा धपला विया ग्रध्यक्ष महोदय, इसके ऊपर ऐक्साइज इयुटी नहीं लगने वाली है, जब कि रूम से जो माल ग्राता है उस पर इयुटी लगेगी। नतीजा यह हागा कि रुम से भायान किया हमा कैप्रोलैक्टम या डी० एम० टी०, इस के दामों में और जो हमारी कम्पनियो में कच्चा माल बनेगा उसमे प्रति टन 18.000 रु० का जर्क होने वाला है। श्रीर प्रति टन 18,000 रु० की छुट झाप लोग सेचुरी ऐनका,

बिडला, मादि जे० के० पंजीपतियों को दे रहे हैं। श्रीर में जानना चाहता है कि इन दोनो का भगर विकी मल्य समान किया जाएगा और उस के लिए धगर ऐक्साइफ इप्टी लगायी जाएगी तो जो 5, 6 कम्पनिया हैं, जिन में मोदी जी भी है।, पीलू मोदी जी नहीं, बल्कि गजर मल मोटी जिन को श्रीमती इन्दिरा जी ने पदमभ्षण की पदबी दे रखी है, तो यदि इस तरह की ऐक्साइज इयुटी लगायी जाएगी और दोनो का विकी दाम समान किया जाएगा तो कम से कम 55 करोड २० इन को मिल जाएगा और एस ० टी० सी० का कमीशन, जा रूस से ग्रायातित वच्चा माल है, एस० टी० सी० को मिलता है वह भी यदि ग्राप इस के ऊपर लगायेगे तो भीर 5. 6 करोड़ रु० भीर भाप को मिल जाएगा। तो इस तरह लगभग 60 करोंड रूपया जो ग्राप को मिल सकता है, वह ग्राप क्यों खो रहे हैं। इस के पीछे रहस्य क्या इस में भी जनाक की राजनीति है।

SHRI S. R. DAMANI (Sholapur): I would like to ask one question. What is the annual production of these companies?

श्री सधू शिल्मिये। इन की बात का क्या जवाब देन। है। मैं तो मत्नी महोदय को जवाब दगा।

प्रध्यक्ष महोदय कई महीने पपले मैं ने बैको के नायों के बारे में यहा एक चर्चा उठाई थी ग्रीर कुछ दस्तावेज के ग्राधार पर मैंने यह साबित किया था किकानपुर में नया गज में जो शाखा है पंजाब नेजनल बैंक की, कोई गलती से न छपे मैं पंजाब नेजनल बैंक की

[श्री मधु लिमये]

चर्चा कर रहा हूं, उस में जे० के० ग्रुप कम्पनी के 70 चैव राऊसहो गए भीर में ने यह सवाल उठाया था कि इस तरह से चैक बाऊस हो जाएगे तो क्या इस को ऋमिनल भ्राफेम माना जाएगा तो इस का यह जबाब दिया गया है कि हम विचार करेगे। 70 चैक बाउस हो गये हैं लेकिन उस के बारे में सही जानकारी सदन के साम ने नहीं ब्राई है। साथ साथ मैं यह जानना चाहता हुं कि इस बैक का मैनेजर ज० के प्राप के हथियार के रुप में काम कर रहा है भीर पंजाब नेशनल बैंक के हैड-क्वार्टर से उन्हें प्रोत्माहन मिल रहा है। तो इन ग्रधिवारियो को तन्वाल सस्पेन्ड करने का नाम कीजिए ताकि रिजर्व बैक का जो डिपो-जिट है, वह इस तग्ह से खत्म न हो ।

ग्रध्यक्ष महोदय, मेरा ग्राखरी मुद्दा यह है कि डी० जी० एम० एण्ड डी, डाइरेंस्टर जनरल ग्राफ मप्लाइज एण्ड डिस्पाजल, यह स्प्लाई मिन्दिं के तहत में भाता है भीर इस के द्वारा टिफेन्स मन्नालय की जा कर ड़ो रुपये की माग हाती है, उस की पूरा किया जाता है? मब में बड़ी माग डिफ़ेन्म की होती है 250 वरोड रुपये की भीर भ्रध्यक्ष महोदय, सूरक्षा मत्रालय की कमल्डेटिव कमेटी में यह भी मामला उठा कि क्या कुछ सप्लायसे के द्वारा डिफेन्स की सप्लाइज के ऊपर 60 प्रतिशत का मुनाफा कमाया जाता है, तो यह यामला सेकेटरीज से जुड़ा रहता है। जब सुरक्षा मती भौर सुरक्षा राज्य मती ने उन को डाटा, तब जा कर यह बात निकली कि यह बात सही है कि कुछ सप्लायसे 60 प्रतिशत मुनाफ़ा कमाते

हैं। माज जान बूझ कर इन्फार्मेल कंट्स्टेटिय कमेटी की बात में यहां रख रहा हूं क्योंकि रघरमें या जी का भावेश चलता है और हम रघुरमें या जी का भावेश चलता है और हम रघुरमें या जी की डिक्टेटरिशप को यहां मानने वाले नहीं है। यह कोई पालियामेंटरी कमेटी नहीं है। मगर वह बन्द करना चाहते हैं, तो कर सकते हैं। हमारे पास विशेष जानकारी है। इसलिए में सिबिल सप्लाइज की बात कहना चाहता हूं लेकिन खाडेलकर साहब का पता नहीं है। इसलिए मैं यह जानना वाहता हूं कि इस के बारे मैं कौन सी कार्यवाही वे कर रहे हैं क्या कोई ममेटी नियुक्त की जार्येगी कि स्प्लाइज में वितना मुनाफा कमाया जाएगा प्रीर जिन्नत मुनाफा वितना होगा?

इत शब्दों के साथ मैं भ्रयनी बात खाम कर रहा हू।

भध्यक्ष महेदय, डिपार्टमेंटल कमेडीज में जो बाते हेर्ति है, भ्रगर उन का आराप रेफोर्स करेरे, ताफि व बात इस्कर्मल कैरे रहेर्ति?

भी मधु किमये . क्या वे गुप्त है। वे ची जीं को दवाना चाहते हैं भीर जब पूछते हैं तो कहते हैं कि भाप के पास क्या जानकारी है।

द्धध्यक्ष महोदय वे मीटिंग तो इन्फार्मेल होती है भौर उन में जो चीजे पता चलती है, वे भगर बाहर जाने लगी, तो वे वहा नहीं भागा करेंगी। 465

SHRI S. M. BANERJEE (Kanpur): Mr. Speaker. Sir, with your permission, I would like to mention three or four points. Three or four days back, we had a meeting, members of the Standing Louncil of JCM. They met the Finance Secretary and his other collegues and come decisions take 1 to remove the anomalies found in the Third Pay Commission Report. Some good decisions have been taken. One of the decisions is that the Pay Commission's recommendations regardof children's allowance ing grant which adversely affected the Central Government employees should withdrawn and should not be implemented in the case of the existing employees. That was really a good decision. The Finance Ministry was waiting patiently for the Finance Minister to reach India back from Malaysia and issue a statement. would request the hon. Finance Minister to make a statement in this House so that the necessary orders might be issued for the benefit of the Central Government employees. other decisions were also taken. I hope the hon. Minister will take this opportunity to make an announcement regarding them also in this House. But no decision could be taken rearding house rent allowance and city compensatory allowance. Our demand is that the Pay Commission's recomregarding house rent mendations allowance should be implemented in all fairness from 1st January, 1973. The railwaymen are going on strike. I hope that they will definitely welcome any decision if it is implemented from 1st January, 1973. I hope the Finance Minister will kindly make the statement as early as possi-

During the time when Shri Uma Shankar Dikshit was replying to the debate on the Home Ministry's Demands. I wanted to invite your kind attention to the letter issued by the Ministry of Home Affairs. Shri Uma Shankar Dikshit wanted to convince the House that Government were very 655 LS—17.

sincere in arriving at a negotiated settlement with the railway employees. I welcome that, I take his statement as correct and honest. But if that was so, why was the letter issued from the Home Ministry on the 7th April. 1974 on the threatened all-India strike by the railway employees wherein it has been stated how the leaders should be arrested and put in jail under MISA? The relevant portion of the letter reads:

"The provisions of the Maintenance of Internal Security Act (MISA) could be profitably invoked while undertaking preventive action."

It is really a sad commentary on their assurances. When negotiations going on in the country, and all the leaders of the workers are trying, whether it be the convener of the Coordination Committee, Shri George Fernanades or the President of the All India Railway Workers Union, Shri S. A. Dange or the representative of the other federations and associations. when they are honestly trying to have a negotiated settlement, this letter dated 7th April, 1974 was issued. At that time, there were no negotiations, and only statements were being issued that it was a politically strike. Further, motivated have been issued in the letter to arrest the following categories of persons:

"Activists and militants amongst the railway employees who are known to be taking prominent part in planning and organising the strike and who are likely to indulge in intimidatory activities against other railway employees who may not be willing to participate in the strike."

Persons other than the railway employees who are influential among railway employees or actively instigating them to participate in the strike."

468

, [Shri S. M. Banerjee]

So. not only employees but others also who are trying their utmost to bring about a settlement are also sought to be arrested.

In all fairness, I would request that this better should have been withdrawn by Government. The Minister should have explained to this House the necessity of having issued that letter. The MISA is already in their armoury, the DIR are in their armoury, and there are other nefarious pieces of legislation also in their armoury, under which people can be arrested, workers can be arrested without assigning any reason whatsoever. When their armoury was full of these arms, where was the necessity to issue this letter of 7th April 1974?

Let me make it very clear that the railway employees and their leaders are genuinely for a settlement. But unless something is done and there is it will be a step by Government, difficult for anyone to suggest to them not to go on strike. The Railway Minister is trying his best. I have no doubt about it; I compliment him for that But what about the other Ministers?

MR. SPEAKER: You gave only one point, about the Pay Commission recommendations.

SHRI S. M BANERJEE: No I was not allowed to speak on this. I was told not to interrupt. So I did not interrupt him.

MR. SPEAKER. I wonder if that could be connected with this. Here is a definite point which you wanted to raise.

SHRI S. M. BANERJEE: I wrote about bonus also.

MR. SPEAKER: This is what is given here.

SHRI S. M. BANERJEE: I will conclude in two minutes.

So is the Cabinet prepared to consider this. If the unanimous recommendation of the bonus Review Committee is that those who are in the Departmental undertakings should also be given Bonus, how can Bonus be denied to the railway employeeswhen there are so many working in the public undertakings who are given bonus? Unless this matter is decided and a solemn assurance given, it will be difficult for anyone to suggest to the railway employees that should not go on strike. I am one of those who sincerely want a settlement. But I would urge upon the hon. Minister to rise above the suspicion that it is politically motivated. The railway employees are not indulging in politics. The leaders might be connected with politics. It is the demands of the railway employees which are troubling them for going strike. The railway employees helped in 1962, in 1965 and in 1971. They stood like one man, whether it was the defence employees, railway employees, P & T employees or other employees. They will again unite for any eventuality. So let not the strike be castigated as politically motivated. That is what I would request him.

Today is the 29th. The strike will take place on the 8th. Negotiations are going on. I urge upon Government to realise the gravity of the situation and not damn the strike as politically motivated.

Another point. I have already written to the Home Minister. I took a letter and representation from the UP Census Employees Association. Lucknow. The services of 200 census employees are going to be terminated on 1st May 1974. I took up the matter with the Cabinet Secretariat six back. Their services were months extended and they were given 3 months extension. But on 1st May, 1974, the day on which Parliament

will not transact any business, May Day, a day of international solidarity of the working people of the world and of the country, these 200 employees are going to lose their jobs. They have been working in their own departments. Only to accommodate the deputationists, these 200 people are going to be thrown out. I make a fervent appeal on their behalf. I have already written to him. I wanted to interrupt him and get some sort of assurance. But I did not do it. Now in all humility with all earnestness and honesty at my command, I appeal on behalf of these employees who have worked for more than 21 or 3 years. Due to their labours, the They are Census report came out. working so efficiently. They from ordinary middle class families. I would request you to convey these feelings to the hon. Home Minister and see that their period of service is extended.

With these words, I thank you very much.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN Both the hon members have raised usues, most of which were raised previously also. I do not think even they would expect me by way of answer to go into details.

As for the points raised by Shri Madhu Limaye, one or two are directly concerned with my Ministry. I would like to inform him that as far as the question of the cheques which bounced is concerned, it was discussed during a call attention motion given notice of by him sometime in 1973. It is a fact that a number of cheques were refused to be accepted. The Punjab National Bank has certainly gone into it. As for some person or officer that he referred to, I do not know what defect I can find in him, because he rightly refused to accept the cheques.

As far as the accommodation, etc., are concerned, I tried to get information from the bank, and their point is that cases relating to the enhance-

ment of limits or the problems of readjustment of accounts or fresh limits in respect of any large account are invariably placed before the Board of Directors and it is not a Branch Manager who takes up these matters for the sake of a decision at his level. I would like to say that the Punjab National Bank is certainly aware of it and I think they have sent some instruction team which has also gone into some of the irregularities which are being rectified.

As far as the general question whether we can make the bouncing of cheques per se a crimina offence, is concerned this was one of the questions which he had raised before and I had told him of the difficulty that if at all we have to make it a criminal offences, it is necessary to have some sort of criminal intention in giving that cheque with a view to defraud somebody. That is what called the presence of mens rea.

SHRI S M BANERJEE: I can produce a cheque tomorrow, for Rs. 25,000 issued by Alok Udyog to a poor contractor which has bounced I can bring it if you want

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN. It is quite possible. I am not saying yes or no. This is a matter which requires very careful consideration. Automatically when you make a law that when a cheque is bounced, it will be treated as a criminal offence, then it would be unjust to a large number of new people coming into the field of banking

भी मधुलिमये : किमिन व उट्टेशन हाना चाहिए यह यात ठीक है।

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: That is the major difficulty. This question, I think, has been looked into by the Committee headed by Dr. Rajamannar: it is being examined and I think I will have to wait for the recommendations of that Committee.

[Shri Yeshwantrao Chavan]

Then, there were three or four points, mentioned by the hon. Member,

भी मध लिसये: 55 करोड एक्साइज इयटी के रूप में भ्रापको देना चाहता हु। मरकार की धामदनी बढाने का मैं जरिया बता रहा हु। एक्साइज इपटी और कस्टम ड्यूटी को आप इक्तेलेट बना दे, इडी-जिनस प्रोडकशन और इमार्ट की हुई चीजा पर। आपको पचास वर्शंडवम म कम मिल जाएगा।

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN. When he is making a profitable suggestion I must take advantage of discussing this matter a little in depth with him Certainly I would welcome this suggestion because I am in search of such resources.

भी मधुलिसये वर्ष राम्ते बनाए ह लेकिन उनको इसलीनंट भी किया है प्रापने?

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: As far as the other suggestions are concerned, I cannot undertake to give a detailed answer. I know these are some of the cases where the facts have to be verified, and I do not want to make a statement which would unnecessarily commit the Government one way or the other.

भी मध् लिमधे: 1967 में एक मती ने जबाब दिया था। इनको दो दिन का नोटिस दिया था मैने शनिवार को दिया था । इन हो तथार होकर माना चाहिए था। यह श्रास डेरें निक्शन भाफ इयुटी है। भाप हमें प्रोटेक्शन दे ।

अध्यक्ष महोदय इनको ग्राप मान्ति से मूर्ने । क्यो इंटरप्ट करते हैं ऐसे जेम कमेटी मीटिंग चल रही हो।

भी मब शिमये व्यापार मर्जा जबाब दे पेट्रोलियम मन्नी गायब है। क्या करे हम ली।?

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: As far as the Petroleum and Chemicals Ministry is concerned, I think this question was raised by the hon. Member with the Defence Ministry also, and they have told him that they will go into the case and find out the facts.

As far as the truck business is concerned, he mentioned certain specific cases; four specific cases.

irterruption

MR, SPEAKER, Let him answer, SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: Naturally I got notice this morning and I tried to get as much information With the things that I as possible have, I cannot give a detailed and satisfactory answer, but I can give him some information on the points he mentioned. He referred to 'some specific cases about the trucks. information is that these cases have been referred to the State Governments for investigation and I hope we will get a report as soon as possible. As far as the resale of trucks at a premium is concrned, I may say that this matter has been considered by the concerned Ministry and they have issued orders restricting the resale.

'It is therefore felt that it would be advasable to impose comprehensive control on the sale and redistribution of commercial vehicles. However, it was considered with a view to securing equitable distribution and availability at a fair price of commercial vehicles, a ban should be imposed on resale within the period of two years from the date of the original purchase. Accordingly the Government issued an order called the Commercial Vehicles Restriction and Resale Order of 1974 under the Industrial Development and Regulations Act of 1951 on 11th January 1974."

SHRI MADHU LIMAYE: It is daily being violated. I gave you four instances.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: Now you have raised a new point. I have explained the Governmnt policy. I guite agree that it would have been good if the Minister could be present here, but I would certainly convey the points that he has raised.

Mr. Banerjee has been tirelessly raising the important points about the implementation of the Pay Commission Report.

SHRI S. M. BANERJEE: We are waiting for you to make the announcement.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: I need not repeat all those things. As far as Class II, Class III and Class IV are concerned, detailed instructions and notifications have been issued.

SHRI S. M. BANERJEE: That was not my point. In the meeting of the Anomaly Committee, some decisions have been taken and I want you to make an announcement about them.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: Some of the points were discussed at that meeting with the representatives of both sides. I shall find out what is the conclusion of the meeting. I can tell the hon. Member that before we take a decision in this matter, I am going to discuss it.

SHRI S. M. BANERJEE: It was decided at the meeting that you would make an announcement in Parliament about certain decisions which were already reached. We are waiting for you to announce that.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: There is no difficulty about announcing the decisions. I thought that if the Government were to make a statement, it should make a statement on all the issues, whatever points were accepted and whatever points were not accepted. Before saying that we are not accepting any point. I wanted to have some discussions with them on the different problems. If you want an announcement about the agreed points we can consider that

MR. SPEAKER: I think that in future when a notice is given in advance, the Minister concerned should be present in this House. It is embarrassing for the Finance Minister, because he can answer on behalf of his own departments and not others.

SHRI K. LAKKAPPA (Tumkur): There was no notice.

SHRI MADHU LIMAYE: There was. How do you know?

SHRI K. LAKKAPPA: During the debate, he mentioned all the names. (Interruptions)

MR. SPEAKER: I made the observation. That is over

THE MINISTER OF PARLIAMEN-TARY AFFAIRS (SHRI K. RAGHU RAMAIAH): Sir, in this case, I understand notice was given only to the Finance Minister. I, myself, have no notice. May I request you that in such cases you may direct the office to give notices to all the Ministers concerned?

MR. SPEAKER: I really do not know where the fault lies. I will examine this and we will set some procedure for future.

SHRI K. NARAYANA RAO (Bobilli): Sir my humble submission is this. If notice has been given relating to a particular item concerning a particular Ministry, this should he confined only to the Ministry concerned and he should not bring in all points covering the entire grant of the working of the Government. That cannot be.

SHRI MADHU LIMAYE. We are passing demands relating to all the Ministries

SHRI K. LAKKAPPA Sir, you should give specific...

MR. SPEAKER: Don't assume my powers also. I am in a better position. I must say that there are many points which do not concern the Finance Ministry; they also concern the other Ministries. We will see and set some procedure for future There is nothing of a sort of a dispute. Why should you be worried about it?

Now, the questions is:

"That the Bill to authorise payment and appropriation of certain sum_s from and out of the Consolidated Fund of India for the services of the financial year 1974-75 be taken into consideration."

The motion was adopted.

We shall now take up the Bill clause by clause.

The question is:

"That Clauses 2, 3 and the Schedule stand part of the Bill."

The motion was adopted.

Clause 2, 3 and the Schedule were added to the Bill.

Clause 1, the Enacting Formula and the Title were added to the Bill.

SHRI YESHWANTRAO CHAVAN: Sir, 1 move:

"That the Bill be passed."

MR. SPEAKER: The question is:

"That the Bill be passed."

The motion was adopted.

19 01 hrs.

RE HALF-AN-HOUR DISCUSSION

MR SPEAKER What about Halfan-hour Discussion? Mr. Shenoy do you want that this should be taken up now?

SHRI P R. SHENOY (Udipi). No objection if it is taken up tomorrow

MR. SPEAKER: This will be taken up to morrow if we find time Otherwise, this will be taken up on a subsequent date.

19,01 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Tuesday, April 30, 1974/Vatsakha 10, 1896 (Saka)